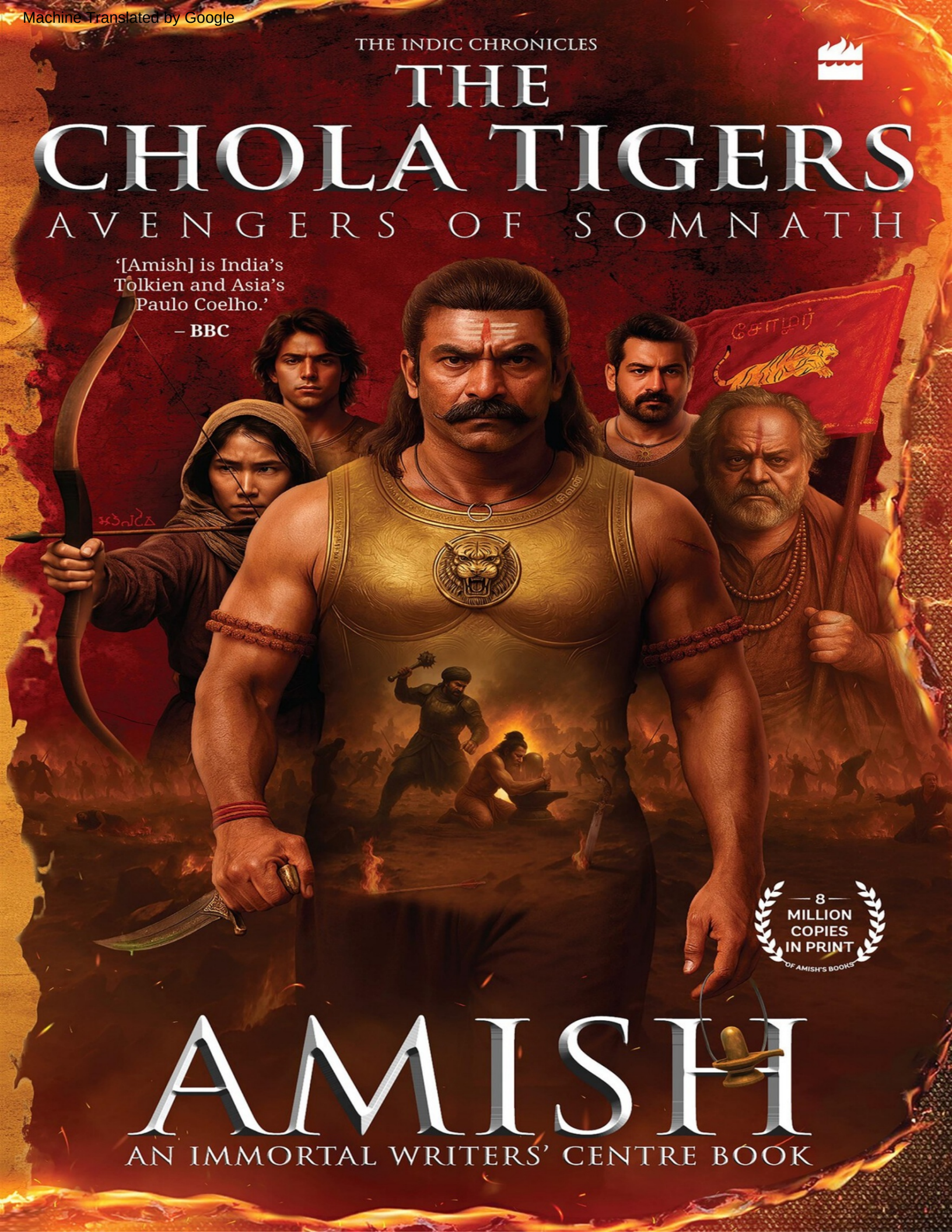
Machine Translated by Google

THE INDIC CHRONICLES

THE CHOLA TIGERS

AVENGERS OF SOMNATH

'[Amish] is India's Tolkien and Asia's Paulo Coelho.'
– **BBC**

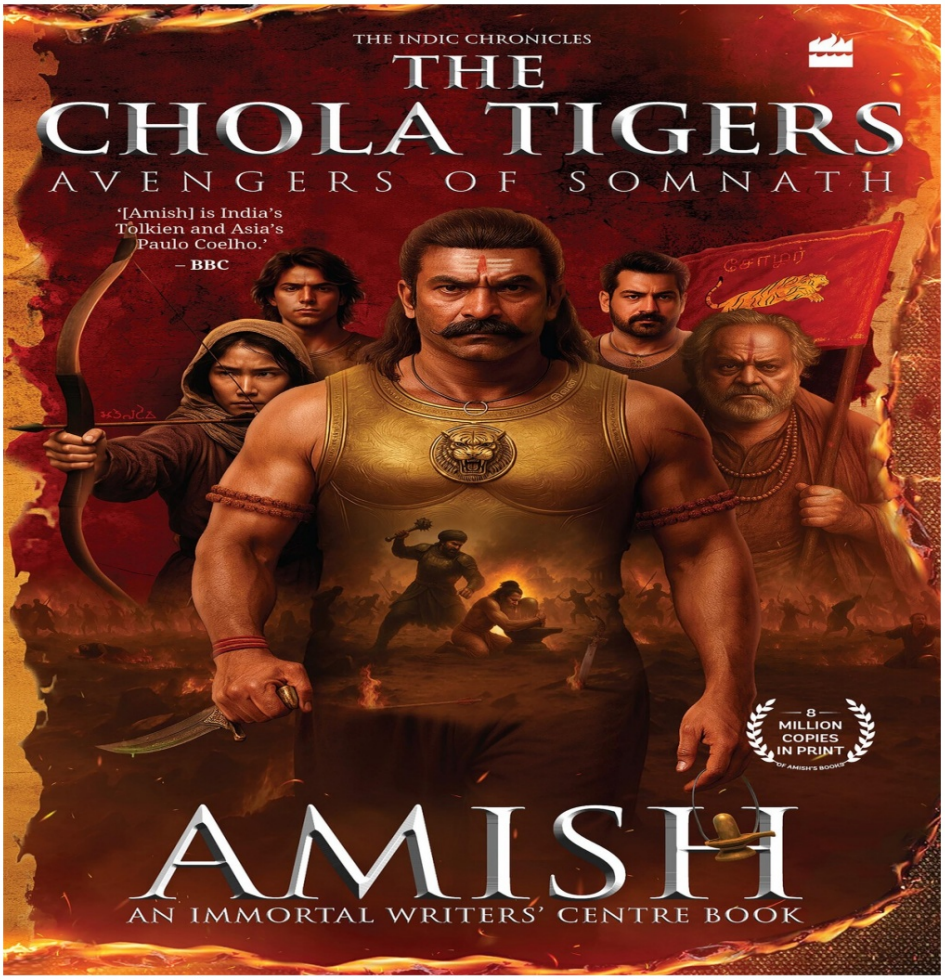


8 MILLION COPIES IN PRINT OF AMISH'S BOOKS

AMISH

AN IMMORTAL WRITERS' CENTRE BOOK

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

THE CHOLA TIGERS

अमीश 1974 में जन्मे, भारत में रहने वाले, बेस्टसेलर और पुरस्कार विजेता लेखक हैं।
वह एक प्रसारक, एक वीडियो-गेमिंग कंपनी के सह-संस्थापक, एक फिल्म निर्माता और एक पूर्व भारतीय राजनयिक भी हैं।

उनकी पुस्तकों की 8 मिलियन से अधिक प्रतियां बिक चुकी हैं और उनका अनुवाद भी किया जा चुका है।
21 भाषाओं में उपलब्ध। उनकी शिव त्रयी भारतीय प्रकाशन इतिहास में सबसे तेज़ी से बिकने वाली और उनकी राम चंद्र श्रृंखला दूसरी सबसे तेज़ी से बिकने वाली पुस्तक श्रृंखला है। मध्यकालीन भारतीय इतिहास पर आधारित उनकी इंडिक क्रॉनिकल्स पुस्तकें भी ब्लॉकबस्टर बेस्टसेलर हैं।

अमीश ने भारत में निर्मित कई प्रशंसित वृत्तचित्रों का निर्देशन किया है
वह कई वर्षों से पॉडकास्टिंग के क्षेत्र में सक्रिय हैं और एक सफल पॉडकास्टर हैं। उन्होंने प्रतिष्ठित बी-स्कूल आईआईएम कलकत्ता से स्नातक किया है और उससे पहले मुंबई के सेंट जेवियर्स कॉलेज से गणित में बीएससी की डिग्री हासिल की है।

आप यहां अमिश से जुड़ सकते हैं:

www.facebook.com/authoramish

www.instagram.com/authoramish
www.twitter.com/authoramish

Machine Translated by Google

अमीश की पुस्तकें

शिव त्रयी

भारतीय प्रकाशन के इतिहास में सबसे तेजी से बिकने वाली पुस्तक श्रृंखला

मेलुहा के अमर लोग (त्रयी की पुस्तक 1)

नागाओं का रहस्य (त्रयी की पुस्तक 2)

वायुपुत्रों की शपथ (त्रयी की पुस्तक 3)

राम चंद्र श्रृंखला

भारतीय प्रकाशन के इतिहास में दूसरी सबसे तेजी से बिकने वाली पुस्तक श्रृंखला

राम: इक्ष्वाकु के वंशज (श्रृंखला की पुस्तक 1)

सीता: मिथिला की योद्धा (श्रृंखला की पुस्तक 2)

रावण: आर्यावर्त का शत्रु (श्रृंखला की पुस्तक 3)

लंका युद्ध (श्रृंखला की पुस्तक 4)

भारतीय इतिहास

सुहेलदेव की कथा: भारत को बचाने वाले राजा

चोल टाइगर्स: एवेंजर्स ऑफ सोमनाथ

नॉन-फिक्शन

अमर भारत: युवा देश, कालातीत सभ्यता

धर्म: सार्थक जीवन के लिए महाकाव्यों का विश्लेषण

मूर्तियाँ: मूर्ति पूजा की शक्ति का अन्वेषण

Machine Translated by Google



'अमीश के लेखन ने भारत के समृद्ध अतीत और संस्कृति के बारे में अत्यधिक जिज्ञासा पैदा की है।'

-नरेंद्र मोदी

(भारत के माननीय प्रधानमंत्री)

'अमीश का लेखन युवाओं को प्राचीन मूल्य प्रणालियों से परिचित कराता है और उनकी जिज्ञासा को जगाता और संतुष्ट करता है...'

—श्री श्री रविशंकर

(आध्यात्मिक नेता और संस्थापक, आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन)

'अमीश का लेखन दिलचस्प, रोचक और जानकारीपूर्ण है।' - अमिताभ बच्चन (अभिनेता और जीवित किंवदंती)

'अमीश भारत के महानतम कहानीकारों में से एक हैं, वे रचनात्मक और कल्पनाशील हैं, इसलिए आपको उनके पन्ने पलटने ही होंगे।'

—लॉर्ड जेफरी आर्चर

(सभी समय के सर्वाधिक बिकने वाले लेखकों में से एक)

'अमीश का लेखन इतिहास और मिथक का एक बेहतरीन मिश्रण है... दिलचस्प और पढ़ने लायक नहीं।'

-बीबीसी

'विचारशील और गहन, अमीश, किसी भी लेखक से अधिक, नए भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं।'

—वीर संघवी

(वरिष्ठ पत्रकार एवं स्तंभकार)

'{अमीश} भारत की ओर से दुनिया के लिए एक असाधारण उपहार हैं। उन्होंने प्राचीन मिथकों को आधुनिक समय में प्रासंगिकता प्रदान करके एक महान सेवा की है।

Machine Translated by Google

'कई बार.'

—दीपक चोपड़ा

(विश्व प्रसिद्ध आध्यात्मिक गुरु एवं सर्वाधिक बिकने वाले लेखक)

'अमीश अपनी पीढ़ी के सबसे मौलिक विचारकों में से एक हैं।'

—अर्नब गोस्वामी

(वरिष्ठ पत्रकार एवं रिपब्लिक टीवी के एमडी)

'अमीश के पास बारीकियों पर गहरी नज़र और सम्मोहक कथात्मक शैली है।' -डॉ. शशि थरूर (संसद सदस्य और लेखक)

'अमीश के पास एक गहन विचारशील दिमाग है, जिसमें अतीत के बारे में असामान्य, मौलिक और आकर्षक दृष्टिकोण है।'

—शेखर गुप्ता

(वरिष्ठ पत्रकार एवं स्तंभकार)

'नए भारत को समझने के लिए आपको अमीश को पढ़ना होगा।' -स्वपन दासगुप्ता (सांसद एवं वरिष्ठ पत्रकार)

'अमीश की सभी पुस्तकों में उदारवादी, प्रगतिशील विचारधारा की धारा बहती है: लिंग, जाति, किसी भी प्रकार के भेदभाव के बारे में। वह एकमात्र भारतीय बेस्टसेलिंग लेखक हैं जिनमें सच्ची दार्शनिक गहराई है - उनकी सभी पुस्तकें ... वह जबरदस्त शोध और गहन चिंतन पर आधारित हैं।' - संदीपन देब (वरिष्ठ पत्रकार और लेखक)

'अमीश का प्रभाव उनकी पुस्तकों से परे है, उनकी पुस्तकें साहित्य से परे हैं, उनका साहित्य दर्शन में डूबा हुआ है, जो भक्ति में निहित है, जो भारत के प्रति उनके प्रेम को शक्ति प्रदान करता है।'

—गौतम चिकरमाने

(वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक)

'अमीश एक साहित्यिक घटना है।'

—(स्वर्गीय) अनिल धारकर

(वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक)

Machine Translated by Google

THE INDIC CHRONICLES

THE CHOLA TIGERS

AVENGERS OF SOMNATH



AMISH

&

THE IMMORTAL WRITERS' CENTRE

In this book, the commissioned writers were
Ram Sivasankaran and Bhavna Roy

HARPER FICTION

An Imprint of HarperCollins *Publishers*

Machine Translated by Google

Machine Translated by Google

भारत में पहली बार हार्पर फिक्शन द्वारा प्रकाशित 2025 हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स
की एक छाप हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया, साइबर सिटी, बिल्डिंग
10-ए, गुरुग्राम, हरियाणा - 122002, भारत www.harpercollins.co.in

2 4 6 8 10 9 7 5 3 1

कॉपीराइट © अमीश त्रिपाठी 2025

पी-आईएसबीएन: 978-93-6989-609-7

ईपब संस्करण © सितंबर 2025 ई-आईएसबीएन: 978-93-6989-492-5

यह एक काल्पनिक रचना है और इसमें वर्णित सभी पात्र और घटनाएँ लेखक की कल्पना की उपज हैं। किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति से इसकी कोई भी समानता पूरी तरह से संयोग मात्र है।

अमीश त्रिपाठी इस कृति के लेखक के रूप में पहचाने जाने के नैतिक अधिकार का दावा करते हैं।

कॉपीराइट अधिनियम, 1957 के तहत सभी अधिकार सुरक्षित हैं। आवश्यक शुल्क का भुगतान करके, आपको इस ई-पुस्तक के पाठ को स्क्रीन पर पढ़ने और पढ़ने का गैर-अनन्य, गैर-हस्तांतरणीय अधिकार प्रदान किया गया है।
इस पाठ के किसी भी भाग को हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स इंडिया की लिखित अनुमति के बिना, किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, चाहे इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक, वर्तमान में ज्ञात या इसके बाद आविष्कृत, किसी भी सूचना भंडारण और पुनर्प्राप्ति प्रणाली में पुनरुत्पादित, प्रेषित, डाउनलोड, डीकंपाइल, रिवर्स-इंजीनियर या संग्रहीत नहीं किया जा सकता है।

इस प्रकाशन के किसी भी लेखक, योगदानकर्ता या प्रकाशक के अनन्य अधिकारों को सीमित किए बिना, जनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) तकनीकों को प्रशिक्षित करने के लिए इस प्रकाशन का कोई भी अनधिकृत उपयोग स्पष्ट रूप से निषिद्ध है। हार्पर कॉलिन्स डिजिटल सिंगल मार्केट डायरेक्टिव 2019/790 के अनुच्छेद 4(3) के तहत अपने अधिकारों का भी प्रयोग करता है और इस प्रकाशन को टेक्स्ट और डेटा-माइनिंग अपवाद से स्पष्ट रूप से सुरक्षित रखता है।

कवर डिज़ाइन: ओक्टोबज़

Machine Translated by Google

अंतर्वस्तु

स्वीकृतियाँ

प्रस्तावना: सोमनाथ पर अंतिम मोर्चा

अध्याय 1: खून बहाने वाला सोना

अध्याय 2: जंजीरों में जकड़ा एक भाई

अध्याय 3: प्रतिशोध का आह्वान

अध्याय 4: आखिरकार घर

अध्याय 5: दो सम्राट और उनके स्वामी

अध्याय 6: एक पत्नी की सलाह

अध्याय 7: योजनाएँ और तीर्थयात्री

अध्याय 8: पछतावा एक ब्लेड है

अध्याय 9: ढोंगी की साजिश

अध्याय 10: रक्त और अपनापन

अध्याय 11: अजनबियों के बीच

अध्याय 12: पलायन की कीमत

अध्याय 13: तकिये के नीचे साँप

अध्याय 14: दुश्मन के पिछवाड़े में

अध्याय 15: एकमात्र आशा

अध्याय 16: न्याय की कीमत

अध्याय 17: दर्रे पर छायाएँ

अध्याय 18: हड़ताल से पहले का तूफान

अध्याय 19: खुज़दार का युद्ध

Machine Translated by Google

अध्याय 20: पिछले पापों का ऋण
अध्याय 21: वह आदमी जिसने सब कुछ शुरू किया
अध्याय 22: असंभावित सहयोगी
अध्याय 23: भ्रम का दरबार
अध्याय 24: राह में एक मोड़
अध्याय 25: पवित्र संधि
अध्याय 26: प्रभु को पुनः प्राप्त करना
अध्याय 27: प्रतिशोध
अध्याय 28: पुनर्निर्माण का समय

उपसंहार: एक भविष्यवाणी
संदर्भ
अमीश की पुस्तकें
प्रकाशक के बारे में

Machine Translated by Google

यह एक ऐतिहासिक कथा-साहित्य है। यह वास्तविक ऐतिहासिक पात्रों, स्थानों और घटनाओं पर आधारित है, लेकिन पात्र, संवाद, प्रेरणाएँ और कथानक विकास कहानी कहने के उद्देश्य से काल्पनिक हैं। इसमें पाए जाने वाले चित्रण, जिनमें युद्ध या युद्ध जैसी परिस्थितियाँ, यौन हिंसा सहित हिंसा, धार्मिक, सांस्कृतिक या राजनीतिक विषय आदि शामिल हैं, नाटकीय रूपांतरण हैं और लेखक, प्रकाशक या किसी भी संबद्ध व्यक्ति के विचारों या समर्थन का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।

धार्मिक ग्रंथों, सिद्धांतों या सामाजिक रीति-रिवाजों का कोई भी संदर्भ केवल कथात्मक उद्देश्यों के लिए शामिल किया गया है और इसका तात्पर्य ऐसी विचारधाराओं की प्रामाणिकता, सटीकता या समर्थन से नहीं है। पात्रों द्वारा प्रयुक्त शब्द उनकी ऐतिहासिक परिस्थितियों के संदर्भ में प्रस्तुत किए गए हैं और इन्हें किसी भी समूह के प्रति घृणा, पूर्वाग्रह या शत्रुता को बढ़ावा देने के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए।

इस पुस्तक का उद्देश्य किसी व्यक्ति, समुदाय या धर्म की भावनाओं को ठेस पहुँचाना नहीं है। इस पुस्तक को इतिहास की एक रचनात्मक खोज के रूप में पढ़ा जाना चाहिए, न कि समकालीन या ऐतिहासिक सामाजिक या धार्मिक गतिशीलता पर एक तथ्यात्मक विवरण या टिप्पणी के रूप में।

Machine Translated by Google

ॐ नमः शिवाय

ब्रह्मांड भगवान शिव को नमन करता है

मैं भगवान शिव को नमन करता हूँ

कंदनाक्कु अरोगरा, मुरुगनक्कु अरोगरा

भगवान शिव के पुत्र, पराक्रमी मुरुगन, भगवान कार्तिक की जय हो

हे हमारे प्रभुओं, हमें धर्म की ओर ले चलो

Machine Translated by Google

मेरे भाई-बहनों को,
भावना दीदी, अनीश दादा और आशीष

रास्ता पथरीला हो सकता है, जीवन
कठिन हो सकता है, लेकिन
पूरी दुनिया एक साथ, हमें अलग नहीं कर
सकती ...
यदि दबाव हीरे बनाता है तो हमारा प्यार ...
अब तक हीरा बन चुका है।

हम एक साथ बहुत कुछ झेल चुके हैं, भाग्य ने एक साथ
हमारी परीक्षा ली है, हम एक साथ अधिक मजबूत हैं।

मैं तुम लोगों से प्यार करता हूं.

(डॉन विलियम्स से उनके दिव्य गीत को विकृत करने के लिए उचित क्षमा याचना सहित)
'दबाव हीरा बनाता है')

Machine Translated by Google



स्वीकृतियाँ

उन लोगों के लिए जिन्होंने जीवित रहते हुए मेरा मार्गदर्शन किया और अब जब वे पितृलोक में हैं, मुझे प्रेरित करते रहते हैं। स्वर्गीय विनय कुमार त्रिपाठी, स्वर्गीय हिमांशु रॉय, स्वर्गीय डॉ. मनोज व्यास।

मेरा छोटा बेटा, नील। मेरा सबसे बड़ा गौरव, मेरी सबसे बड़ी खुशी, मेरी सबसे बड़ी प्रिय रचना.

मेरी पत्नी, शिवानी। जब मैं डूब रहा था, तब उसने मुझे बाहर निकाला। और अब मैं ऊँचा उठता हूँ क्योंकि वह मेरे पंखों के नीचे की हवा है।

प्रतिभाशाली लेखक राम शिवशंकरन और बुद्धिमान लेखक को भावना रॉय (जो मेरी बड़ी बहन भी हैं) जिन्होंने राइटर्स सेंटर के तहत इस किताब पर मेरे साथ काम किया। और शिखा, जिन्होंने शुरुआती संपादन में मदद की।
कैसी यात्रा रही है यह। वीरावेल। वेट्रीवेल।

अनीश, मीता, आशीष और डोनेट्टा, मेरे भाई-बहन और भाभियाँ, उनका निरंतर समर्थन और सलाह।

मेरे परिवार के बाकी सदस्य: उषा, शारदा, सुरेन्द्र, पंखुड़ी और सिद्धार्थ। उनके निरंतर विश्वास और प्रेम के लिए। परिवार की अगली पीढ़ी—मितांशु, मानवी, निकिता, डैनियल, वरुण, एडेन, केया, यश, अनिका और आशना—हमारे बड़े परिवार का भविष्य हैं। ईश्वर करे इनकी संख्या बढ़ती रहे!

नील की माँ प्रीति और उनका परिवार शेरनाज़, स्मिता, अनुज, रुता, उनका निरंतर समर्थन.

हार्पर कॉलिन्स की टीम। मेरी प्रकाशक, पौलोमी; नंदिनी, शबनम, नवीन, अमेय और आकृति के नेतृत्व में पूरी मार्केटिंग टीम; विकास, गोकुल, श्रेया और राहुल के नेतृत्व में पूरी सेल्स टीम; कॉपी एडिटर रचिता, प्रूफरीडर पालोमा और एडिटर स्वाति; करेन, सेरेना, डैरेन और सिनैड की हार्पर360 टीम; सभी का नेतृत्व हार्पर कॉलिन्स के प्रतिभाशाली सीईओ कर रहे हैं।

Machine Translated by Google

भारत, अनंत, हार्पर कॉलिन्स यूके, आयरलैंड, भारत और ऑस्ट्रेलिया के सीईओ चार्ली रेडमेन के मार्गदर्शन में, और हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स के अध्यक्ष और वैश्विक सीईओ ब्रायन मरे द्वारा संचालित। जैसे-जैसे वे मेरी किताबों को दुनिया भर में पहुँचाते हैं, उनके साथ हमारी साझेदारी लगातार मज़बूत होती जा रही है।

प्रतिलिपि की टीम। वेस्टलैंड के बिज़नेस हेड गौतम, संपादक कार्तिका, मीनाक्षी, विधि और इस किताब के भारतीय क्षेत्रीय भाषाओं में संस्करण प्रकाशित करने वाली टीम के बाकी सदस्य। गौतम डेढ़ दशक से मेरे दोस्त हैं और प्रकाशन जगत के सबसे अच्छे लोगों में से एक हैं।

अमन, विजय भाई, पद्मा, स्मृति, मेहुल, कृष्ण, जश, प्रेरणा, गौरी, खुशी, धनजी, मिताली, अनीषा, शुभांगी और मेरे ऑफिस के बाकी सहकर्मी। वे काम संभालते हैं, जिससे मुझे लिखने के लिए काफ़ी खाली समय मिल जाता है। मैं अपने एक पूर्व सहकर्मी शौर्य का भी ज़िक्र करना चाहूँगा, जो अब लंदन चले गए हैं।

हेमल, नेहा, विनीत, हर्ष, लियोनार्ड, केविन, शुभम, विश्रुति, अनुष्का, मसीरा और टीम ओक्टोबज़। उन्होंने किताब का कवर बनाया है, जो मुझे बहुत अच्छा लगता है। और वे सभी डिजिटल गतिविधियों का संचालन भी करते हैं।

संदीप, कालेब, ईशा, मनीष भाई, डोमिनिक, नेहा, मेघना, दिशा, जयेश और उनकी संबंधित टीमें, जो अपने व्यवसाय, कानूनी और विपणन सलाह के साथ मेरे काम का समर्थन करती हैं।

आदित्य, मेरी किताबों का एक उत्साही पाठक, जो अब मेरा मित्र बन गया है साथ ही एक तथ्य जांचकर्ता भी।

मैंने इस किताब के कुछ अंश कोयंबटूर के ईशा आश्रम में भी लिखे। जब मैं, मेरी बहन और मेरी पत्नी वहाँ ठहरे थे, तो दिव्याजी और श्वेताजी ने जो स्नेह और सहयोग दिया, उसके लिए मैं उनका आभारी हूँ।

और अंत में, लेकिन निश्चित रूप से कम महत्वपूर्ण नहीं, आप पाठक। मुझे पता है कि इस फिक्शन किताब को लिखने में समय लगा है; मेरी पिछली फिक्शन किताब के लगभग तीन साल बाद। क्षमा करें। हालाँकि, अपनी सफाई में, मैं आपके लिए डॉक्यूमेंट्री और पॉडकास्ट बनाने में भी व्यस्त रहा हूँ, साथ ही " द एज ऑफ़ भारत" नामक एक उच्च-स्तरीय वीडियो गेम पर भी काम कर रहा हूँ। मुझे उम्मीद है कि आपको यह सब भी पसंद आया होगा। और मैं वादा करता हूँ कि अपनी अगली फिक्शन किताब आप तक और भी तेज़ी से पहुँचाऊँगा।

आपका निरंतर स्नेह, समझ और प्रोत्साहन ही मुझे प्रेरित करता है। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। भगवान शिव आप सभी पर कृपा करें।

Machine Translated by Google

उत्तरं यत् समुद्रस्य, हिमाद्रेश्चैव दक्षिणं, वर्षं तद् भारतं नाम, भारती यत्र संततिः

महासागर के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में
भारत राष्ट्र है और वहां भारत के वंशज रहते हैं

—विष्णु पुराण से

Machine Translated by Google

कुछ लोग कहते हैं कि प्राचीन काल में भारत का अस्तित्व नहीं था, ब्रिटिश राज ने भारत राष्ट्र का निर्माण किया।

असत्य।

इंडिया यानि भारत का निर्माण हमारे पूर्वजों ने किया था।
हम मानव सभ्यता के आरंभ से ही अस्तित्व में हैं।

कांस्य युग से पूर्व की प्रत्येक सभ्यता समाप्त हो चुकी है।

लेकिन हम अभी भी यहाँ हैं। हम अभी भी खड़े हैं।
और हम अंतिम मानव जीवन तक वहां रहेंगे।

क्योंकि हमारी मातृभूमि सनातन है, वह अमर है।

वह हम बच्चों की आत्मा में निवास करती है।

यदि हममें से कोई एक भी जीवित रहे, तो भी वह जीवित रहेगी।

भारत. कभी. नहीं. मरेगा.

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

प्रस्तावना

सोमनाथ में अंतिम मोर्चा

सोमनाथ, भारत, अंत 1025 ई.

अरब सागर के झिलमिलाते क्षितिज के पार सूरज ढल गया। गोधूलि बेला ने रात का रूप ले लिया और लगभग बादल रहित आकाश लाल, नारंगी और बैंगनी रंगों की जीवंत छटाओं से जगमगा उठा। लहरें प्रेमपूर्वक समुद्र तट पर रेंग रही थीं और रेत को धीरे से सहला रही थीं, मानो पानी, शांत और करुणामय, पीड़ित धरती को सुकून देने की कोशिश कर रहा हो। कई जगहों पर रेत असामान्य रूप से लाल थी, मानो ज़मीन से खून बह रहा हो। पानी ने कुछ लालिमा धो दी, और पीछे हट गया, मानो उस भयावह दृश्य से सिकुड़ रहा हो। और फिर भी, अविचलित, जैसे कोई प्रेमी अपनी पीड़ित प्रेमिका को छोड़ने से इनकार करता है, समुद्र किनारे पर लौट आया। बार-बार। खून को धोने की कोशिश में।

उपचार का पहला चरण घावों को धोना है।

लेकिन समुद्र ने चाहे कितनी भी कोशिश की हो, लाल रंग बरकरार रहा। बहुत ज़्यादा खून था। बहुत सारी लाशें थीं।

मौत जैसी शांत हवा में एक चीख गूंजी। एक तुर्क सैनिक ने आगे की ओर इशारा करते हुए चिल्लाया, "रुको, चोर!" तुर्क। बड़ी आँखों वाले, भूरी चमड़ी वाले भारतीयों से दिखने

और शारीरिक बनावट में बहुत अलग। किसी भी विशेषज्ञ के विश्लेषण के अनुसार, भारतीयों को तुर्कों को हरा देना चाहिए था। भारतीय लंबे, स्वस्थ, बेहतर पोषण और बेहतर हथियारों वाले थे। तुर्क गोरे, छोटे और दुबले-पतले थे। वे दुनिया के सबसे खूँखार हत्यारे नहीं लग रहे थे। लेकिन दिखावे में धोखा हो सकता है।

तुर्क। भारतीयों को वे कुछ-कुछ चीनियों जैसे लगते थे, गोल-मटोल चेहरे और संकरी आँखों वाले। हालाँकि, वे चीन से नहीं थे; वे सुदूर उत्तर से थे। मध्य एशिया से आए इन क्रूर आक्रमणकारियों से, जो स्टेपीज़ के विशाल, लहराते घास के मैदानों में रहते थे, चीनी भी डरते थे। वे पहले अपने चचेरे भाई, मंगोलों के गुलाम सैनिक थे, लेकिन अब वे अपने आप में विजेता थे।

Machine Translated by Google

तुर्क। क्रूर आक्रमणकारी जो अपने रास्ते में आने वाले सभी लोगों का नरसंहार करने के लिए जाने जाते थे। लूटपाट, बलात्कार करना, खोपड़ियों के पिरामिड बनाना। अपनी बर्बरता का आनंद लेना।

'रुको, कमीने!' एक अन्य तुर्क सैनिक चिल्लाया।

दो तुर्क थे, जिनमें से एक बौना था। वे एक का पीछा कर रहे थे।
पुजारी जैसे कपड़े पहने एक भारतीय। मुंडा सिर, सिर के ऊपर बालों का एक गुच्छा। दुबला-पतला और घुंघराले। सांवला। भगवा धोती पहने।
उसके दुःखी चेहरे पर आँसू बह रहे थे। वह तेज़ी से दौड़ रहा था, खून से सने रेतीले तट पर बिखरे शवों की बाधाओं को पार करता हुआ। ये शव उन भारतीय सैनिकों के थे जो अभी-अभी हुए युद्ध में शहीद हुए थे।

ब्राह्मण दौड़ते हुए अपने हाथों में कुछ पकड़े हुए था।
अत्यंत कीमती, केसरिया रंग के कपड़े में कसकर लपेटा हुआ।

'रुको!' एक तुर्क सैनिक फिर चिल्लाया। 'रुको, कमीने!'

'बेकारिस!' छोटे तुर्क ने हांफते हुए अपने साथी सैनिक से चिल्लाकर कहा।

'बेकारिस... बस... सकता। बेकरीस रुका और ... बस... चाकू!' अब और नहीं भाग

जल्दी से अपना चाकू निकाला। तुर्क धनुष-बाण चलाने में माहिर निशानेबाज़ थे। या चाकू। वह बस एक पल के लिए रुका, एक आँख बंद की, हाथ पीछे किया और चाकू फेंक दिया। सब कुछ एक झटके में।

पल।

दाँतेदार चाकू हवा में तेजी से उछला और बेरहमी से जमीन पर जा गिरा।
ब्राह्मण की पीठ पर। दूर से ही सही, वार इतना ज़बरदस्त था कि पुजारी दर्द से चीखते हुए पीछे की ओर झुक गया। शुक्र है कि अपनी कमज़ोर काया को देखते हुए, वह गिरा नहीं। उससे भी ज़्यादा सराहनीय बात यह रही कि उसकी बाँह में पड़ी वह अनमोल चीज़ उसकी पकड़ से नहीं छूटी।

असहनीय दर्द के बावजूद वह बुदबुदा रहा था, 'गणेशाआ ...
गणेशाआआ...'

वह लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ा, अब उसकी गति काफ़ी धीमी हो गई थी। तुर्क तेज़ी से आगे बढ़ रहे थे। तभी उसकी ठोकर समुद्र तट पर पड़े एक मृत भारतीय सैनिक के शरीर पर लगी। वह मुँह के बल गिरा, और उसने अपने हाथ में जो चीज़ थी उसे कसकर पकड़ लिया और उसे अपने शरीर से ढक लिया।

तुर्कों ने आखिरकार उन्हें पकड़ लिया था। बेकरीस का साथी ज़ोर-ज़ोर से हाँफ रहा था।
'भगवान इस पर लानत है ...'

बेकरीस गुर्राया, "अरे गंदे हिंदुस्तानी कुत्ते! तूने मेरे दोस्त को थका दिया!" ब्राह्मण चीख रहा था।

हताश। घबराहट से आँखें चौड़ी हो गईं। उठने की कोशिश कर रहा था। "प्लीज़, प्लीज़, मुझे जाने दो। प्लीज़!" ...

Machine Translated by Google

बेकरीस नीचे झुका और धीरे से ब्राह्मण की पीठ से चाकू निकाला, ऐसा करते हुए उसने चाकू को घुमाया, जिससे दाँतेदार धार और ज़्यादा मांसपेशियों और ऊतकों को चीरती चली गई। खून की धार फूट पड़ी। पुजारी दर्द से चीख पड़ा।

वह अपनी मां के लिए चिल्ला रहा था, जैसा कि सभी पुरुष असहनीय दर्द में चिल्लाते हैं।

'माआआआआ' ... माँ...'

तुर्की बौना अब अपनी साँसें संभालते हुए हँसा। 'आवाज़ मत उठाओ! तुम बेकरीस की ज़बरदस्त भूख नहीं जानते! वह तुम्हारी माँ के लिए, हिंदुस्तानी ... शेर है! वो तुम्हारी माँ की आत्मा का एक इंच भी ज़ख्म कर देगा!'

बेकरीस अपने दोस्त के साथ हंसते हुए बोला, 'खैर, देखते हैं हमें क्या मिला?' हमारी परेशानियाँ...'

बेकरीस ने ब्राह्मण को लात मारी और उसे तब तक पलटने पर मजबूर किया, जब तक वह लेटा नहीं रहा। उसकी पीठ पर गीली रेत थी, और उसके चेहरे पर चिपकी हुई थी। लेकिन इतनी गहरी पीड़ा के बावजूद, उस भारतीय ने जो कुछ भी पकड़ा था, उसे छोड़ने से इनकार कर दिया।

वह अब भी भगवा कपड़े में कसकर लिपटा हुआ था, जो अब उसके खून से सना हुआ था। उसने गुस्से से सिर हिलाया। 'नहीं।' बौना तुर्क लालच से मुस्कुराया। 'अगर यह काफिर इसे अब भी नहीं देगा, तो इसकी ... नहीं ...' कीमत हज़ारों स्वर्ण मुद्राएँ होंगी।'

बेकरीस पुजारी पर हँसा, 'अरे बेवकूफ बकरी... यह माल-ए- है।' ग़नीमत। यह हमारा हक़ है। इसे हमें दे दो, हम मेहरबान होंगे। हम तुम्हें तुरंत मौत देंगे। इसे सौंप दो।'

माल-ए-ग़नीमत, इस्लाम की व्याख्या के अनुसार तुर्कों के लिए, इसका अनुवाद युद्ध की लूट के रूप में किया जाता है। और यह सिद्धांत विशेष रूप से दार अल-हरब, जिसका अर्थ है युद्ध का घर, में लागू होता था, यानी दुनिया का कोई भी ऐसा हिस्सा जहाँ किसी इस्लामी शासक का शासन न हो और जहाँ इस्लामी शरिया के अलावा अन्य कानून लागू हों। माल-ए-गनीमत के अनुसार, तुर्कों को उनके धर्म द्वारा काफ़िरों या अविश्वासियों की संपत्ति पर दावा करने की अनुमति थी , जिसमें सोना, ज़मीन, कीमती सामान, और यहाँ तक कि पत्नियों और बच्चों को भी गुलाम बनाकर रखना शामिल था।

कहा जाता है कि कई मुसलमान, जिनमें मूल अरब भी शामिल थे, इस व्याख्या से असहमत थे। बहरहाल, तुर्क भी कई अरबों पर हमला कर रहे थे और उनका नरसंहार कर रहे थे। और उनसे लूटपाट भी कर रहे थे।

बौना पीछे मुड़ा और दूर स्थित मंदिर परिसर को देखने लगा।

'बेकारियों, वे छोटे मंदिरों को जलाने लगे हैं। हमें वापस भागना होगा। वहाँ और भी सोना है...'

बेकरीस ने अपनी तलवार खींची और नीचे झुका। "छोड़ दे, भारतीय!" वह चिल्लाया। 'नहीं तो मैं तुम्हारा हाथ काट दूँगा!'

Machine Translated by Google

ब्राह्मण ने कपड़े से ढकी वस्तु को और भी ज़ोर से पकड़ लिया। 'नहीं गणेशा...' ...
... नहीं ... गणेशा 'यह गणेश ...
कौन है?' तुर्की बौना चिल्लाया।

बेकरीस का बस चल रहा था। वह पीछे हटा और तलवार ऊपर उठाई।
उसके सिर पर। पुजारी, अजीब तरह से, झुका और वस्तु को घेर लिया
वह अपने दोनों हाथों से उसे पूरी तरह से पकड़ लेता है, तथा अपने शरीर से उसकी रक्षा करता है।

बेकरीस की लालच भरी आँखें चौड़ी हो गईं। यह वाकई बहुत कीमती होगा!

तुर्क ने अपनी तलवार को क्रूरता से नीचे घुमाया, बाएं हाथ को काट दिया
पुजारी की कोहनी के ठीक नीचे, मांस, ऊतक और
हड्डी। घुमावदार तलवार का वार इतना भयंकर था कि वह हड्डी तक भी पहुँच गया।

पुजारी के दाहिने हाथ में, जो बाएँ हाथ के नीचे था, गहराई तक, काटता हुआ
आधी हड्डी में। यहाँ, ब्लेड फँस गया। हड्डी में।

पुजारी भयानक पीड़ा में चिल्लाया क्योंकि उसके शरीर से खून की लहरें बह रही थीं।
उसके कटे हुए हाथ का जो कुछ बचा था।

'हे भगवान!' बेकरीस चिल्लाया और ब्लेड को खींचने की कोशिश की। उसने
पुजारी के दाहिने हाथ से उसे खींचकर अलग कर दिया गया। आखिरकार, वह वस्तु ढीली हो गई।
बौने तुर्क ने तुरंत इसे उठा लिया, उत्सुकता से खून से सने कपड़े को खोल दिया
भगवा कपड़ा। 'यह क्या बकवास है?'

बेहोशी की कगार पर पहुंचे भारतीय पुजारी ने विनती की
हताश होकर, 'कृपया बाल गणेश...' ... नहीं ... गणेश को.चोबालगी ... ... नहीं ... आहत ...
...

बेकरीस ने मूर्ति को घूरा। 'यह तो बस पत्थर है!' वह गुस्से से चिल्लाया।
माप से परे।

यह गणेश की एक पत्थर की मूर्ति थी, लेकिन उनका रूप एक बाल या शिशु का था। छोटी
बच्चों जैसे हाथ-पैर। मोटा धड़, ढेर सारी शिशु-चर्बी से भरा।
हाथी का सिर जो आराम से मोटा था। एक लंबा दाँत, और दूसरा जो
टूट गया था। और सबसे प्यारी बात, उसके चेहरे पर एक मासूम और बच्चों जैसी मुस्कान थी
चेहरा।

लेकिन कई अन्य हिंदू मूर्तियों के विपरीत, इस मूर्ति पर सोने की परत नहीं चढ़ी थी।
हीरे जड़े हुए। कोई कीमती पत्थर जड़ा हुआ नहीं।

तुर्कों के लिए मूर्ति बेकार थी।

हालाँकि, भारतीयों के लिए यह मूर्ति अमूल्य थी।
मौत के कगार पर, पुजारी बार-बार दोहराता रहा, 'मत करो, मत करो... कृपया...' ... गणेश को.चोबालगी ...
...

बौने ने क्रोधित भाव से दूर मंदिर परिसर की ओर देखा।
क्रोध. 'हमने वहाँ सारी लूट खो दी ... इसके लिए?'

Machine Translated by Google

वह उन्माद में चीखा और मूर्ति को ज़मीन पर पटक दिया। समुद्र की लहरें उसके पैरों के चारों ओर तेज़ी से आ गईं।

इस बीच, बेकरीस ने अपना चाकू निकाला और ब्राह्मण पर क्रूरतापूर्वक वार किया।
एक निर्दयी वार से उसके दिल पर वार किया - जिससे वह तुरंत मर गया।

बौना तुर्क मुड़ा और मंदिर परिसर की ओर दौड़ा। "जल्दी करो, बेकरीस!" बेकरीस तेज़ी से अपने दोस्त के पीछे-पीछे चला।

भारतीय तो मर चुका था, लेकिन उसकी कटी हुई भुजाओं से खून बहता रहा। समुद्र की लहरें उमड़ रही थीं और बाल गणेश की मूर्ति ब्राह्मण की ओर खिंच रही थीं। बाल भगवान की मूर्ति मानो पुजारी को गले लगा रही थी, उसकी तड़पती आत्मा को सांत्वना दे रही थी।



देर रात का समय था जब हज़ारों लोग मंदिर परिसर की खंडहर हो चुकी चारदीवारी के बाहर खड़े थे, और अंदर की हज़ारों सालों पुरानी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर को भस्म करती आग की लपटें भड़क रही थीं। बेबस भीड़ को सामूहिक रूप से घेर लिया गया था। यह अपनी संपत्ति और वैभव के लिए प्रसिद्ध शहर पर हुए क्रूर हमले की पराकाष्ठा थी।

और एक मंदिर.
एक मंदिर जिसका नाम महान शहर के समान था।
सोमनाथ। चंद्रदेव के स्वामी। सबसे महान देव के अनगिनत नामों में से एक। भगवान शिव। महादेव। देवों के देव।

फिर भी, पवित्र नगरी की विशिष्ट दंतकथाओं और स्मारकों की भव्यता के बावजूद, प्राचीन काल के अमर नायकों से कोई मदद नहीं मिली। सोम, शुभ चंद्र, ऊपर आकाश से भयानक शांति से नीचे देख रहे थे। शिव, कल्याणकारी, देवों के देव, मंदिर के धुएँ और धूल में लिपटे रहे—अपने घर और अपने लोगों पर हो रहे आक्रमण के सामने अलग-थलग।

क्या महादेव अपने अनुयायियों की परीक्षा ले रहे थे? सभी एक ही विचार से ग्रस्त थे... हे प्रभु, हमने क्या गलती की है? आपने हमें क्यों त्याग दिया? आपने इन बर्बर लोगों को जीतने क्यों दिया?

लगभग दो हज़ार तुर्की योद्धाओं की एक मानव श्रृंखला ने भीड़ को नियंत्रित किया। वे समुद्र तट के उस हिस्से पर इकट्ठा हुए थे जो सबसे नज़दीक था।

Machine Translated by Google

मंदिर, उस जगह के दूसरी तरफ़ जहाँ दिन में पहले लड़ाई हुई थी। यहाँ दीवार की ऊँचाई कम थी, क्योंकि यह समुद्र तट शहर के ज़्यादा क़रीब था। इसका मतलब था कि समुद्र तट पर जमा भारतीय, मंदिर परिसर पर ज़हरीले तुर्कों द्वारा ढाए जा रहे विनाशकारी विनाश को असल में देख सकते थे।

व्यापारी सोमेश्वर झुंड के बाहरी किनारे पर खड़ा था, उसकी आँखें
दानेदार रेत पर दबा हुआ। मोटे और गंजे, गोरे सोमेश्वर के चेहरे पर तीखी दाढ़ी थी और आँखें जो आमतौर पर दयालु और मिलनसार होती थीं। इस समय उनमें सिर्फ़ दर्द और निराशा थी।

वह सिहर उठा। शहर का सबसे धनी और प्रतिष्ठित व्यवसायी - बल्कि दुनिया के सबसे धनी लोगों में से एक - चौंसठ वर्षीय युवक ने अपना जीवन भगवान की छत्रछाया में बिताया था। महादेव के गर्भगृह में, भगवान के नाम पर ही उसका नामकरण हुआ था। आठ साल की उम्र में, सोमनाथ मंदिर में उसे जनेऊ, पवित्र धागा, प्राप्त हुआ था । पंद्रह साल की उम्र में, उसने मंदिर के खजाने में ज़मीन और धन समर्पित करने के बाद, अपने पिता के व्यवसाय की बागडोर संभाली थी। तब से, निकट और दूर के स्थानों की हर यात्रा सोमनाथ मंदिर में भगवान की प्रार्थना से शुरू होती थी, जिनकी देखभाल में उसने अपनी अनुपस्थिति में अपने परिवार को सौंप दिया था।

भगवान की उपस्थिति में सोमेश्वर का भाग्य उज्ज्वल हो गया था।
यहोवा जीवित था और उसने साँस ली थी। उसका नाम यहोवा था।

और अब उसने शहर की सुरक्षा की एक के बाद एक पंक्तियों को एक क्रूर दुश्मन के हाथों गिरते देखा था। यह हमला उसकी कल्पना से भी परे था और उसके दिमाग को झकझोर गया था।
दिव्य गुरु पर उनका विश्वास डगमगा गया।

प्रभु मुझे परखते हैं। प्रभु हम सबकी परीक्षा लेते हैं। वह चाहते हैं कि हम परीक्षा में सफल हों।
इन विकट समयों को छलनी से छानकर, दृढ़ विश्वासियों को पाखंडियों और अवसरवादियों से अलग करो। मुझे दृढ़ रहना होगा। मुझे सच्चा रहना होगा। मुझे निष्ठावान रहना होगा, क्योंकि सातों लोकों में कोई भी शक्ति ऐसी नहीं है जो देवों के देव महादेव की शक्ति का मुकाबला कर सके।

और फिर भी, वह विदेशी आक्रमणकारी, वह राक्षस, गजनी का तुर्की जानवर जीत गया था।

सुल्तान यामीन-उद-दावला अबुल-कासिम महमूद इब्न सेबक्तेगिन। आमतौर पर गजनी के महमूद के नाम से जाना जाता है।

सोमेश्वर को उस समय का पता ही नहीं चला जब तुर्कों ने विशाल मंदिर परिसर के मध्य स्थित मुख्य मंदिर पर आक्रमण किया था। तुर्कों की क्रूरता का प्रतिरोध करने के अंतिम प्रयास में, भारतीय रक्षकों की अंतिम बटालियन ने दो स्तरों में मोर्चाबंदी कर ली थी। एक पलटन

Machine Translated by Google

एक मुख्य मंदिर के छोटे द्वार पर तैनात था, जबकि दूसरा मंदिर के पुजारियों के साथ गर्भगृह के विशाल द्वार के पीछे था।

सोमेश्वर का सबसे छोटा पुत्र ध्रुव मुख्य मंदिर में अंतिम मोर्चा संभालने वाले वीर सैनिकों में शामिल था। वह श्रावस्ती के वीर योद्धा राजकुमार मल्लदेव के नेतृत्व में युद्ध में गया था। ध्रुव कोई महान योद्धा नहीं था।

वह शहर की रक्षा वाहिनी में एक मध्यम श्रेणी के अधिकारी थे, जिसमें अधिकांश स्वयंसेवक थे। और उन्होंने सोमनाथजी की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था —एक सैनिक की वर्दी में।

सोमेश्वर अपने बेटे को जानता था। उसके औसत युद्ध कौशल, मध्यम कद और दुबले-पतले शरीर को जानता था। लेकिन ये गुण उसके शक्तिशाली हृदय और शिव के प्रति अगाध निष्ठा के सामने बौने थे। वह जानता था कि उसका बेटा मरते दम तक लड़ेगा। सम्मान के साथ। लेकिन उसे अभी तक यह नहीं पता था कि क्या यह उस मुकाम तक पहुँच गया है।

समय दर्दनाक, कष्टदायक मिनटों में बीतता गया जो एक गति से आगे बढ़ता गया
अत्यंत धीमी गति.
सोमेश्वर और शहर के व्यापारिक संघों के उनके साथी प्रतिनिधि सुल्तान के प्रधानमंत्री ख्वाजा हसन को भेजे गए प्रस्ताव के जवाब का इंतज़ार कर रहे थे। ख्वाजा फ़ारसी थे, मध्य एशिया के तुर्कों की तुलना में ज़्यादा सभ्य जाति, जो कविता, ज्ञान और व्यावहारिक व्यापारिक विकल्पों में ज़्यादा पारंगत थी।

सोमेश्वर का संदेश सरल था और ग़ज़नी के लिए बहुत लाभदायक होता: मृत और नष्ट हो जाने पर, हम ग़ज़नी के शासक सुल्तान महमूद के किसी काम के नहीं रह जाएँगे। अगर मंदिर में पवित्र मूर्ति, शिवलिंग, अपवित्र हो जाए, तो आप हमें मृत ही मान सकते हैं। हमारे भगवान ही वह पात्र हैं जो हमारी आत्माओं, हमारे जीवन को धारण करते हैं। मंदिर को बख्श दो। लिंग को बख्श दो। लिंग की रखवाली करने वाले लोगों को बख्श दो, और मैं, सोमेश्वर, यह सुनिश्चित करूँगा कि सुल्तान को इस शहर से साल-दर-साल उसका उचित कर और राजस्व मिलता रहे। अपने लिए और अपनी संतानों के लिए।
हमेशा के लिए।

ख्वाजा हसन की आँखों में लालच की चमक थी। और सोमनाथ के कंगाल व्यापारियों को इससे उम्मीद जगी थी।

"मैं अंदर जाकर सुल्तान से तुम्हारी तरफ़ से बातचीत करूँगा," उस मोटे, बेहद गोरे फ़ारसी ने सोमेश्वर और बेचैन प्रतिनिधियों से कहा था। फिर वह अपनी भारी-भरकम काया की रफ़्तार से, ग़ज़नवी सैनिकों की कतारों के बीच से तेज़ी से भागा, जो उसे जाने देने के लिए अलग हो गए थे। उन्होंने उसे मंदिर के मुख्य द्वार से गायब होते देखा था।

काफी समय बीत जाने के बाद भी उन्हें कोई जवाब नहीं मिला...
सोमेश्वर को लगा जैसे उसका दिल सिकुड़ रहा है, मानो उसकी कमज़ोर पसलियों की सलाखों से बाहर निकलने को तैयार हो। क्या यह हताश करने वाली विनती उसे बचा पाएगी?

Machine Translated by Google

महादेव का सम्मान? क्या उसका बेटा, जो उसके शरीर और आत्मा का एक अंश था, एक और दिन देखने के लिए जीवित रहेगा? क्या महमूद गजनवी नरम पड़ेगा?

और फिर भी, ख्वाजा हसन के लचीले कदमों में सभी आशावाद के बावजूद, एकमात्र मंदिर के भीतर से जो आवाज़ आ रही थी, वह एक बार-बार आने वाली और क्रूर गड़गड़ाहट थी, मानो किसी विशाल मंदिर की घंटी किसी अचल चट्टान से बार-बार टकरा रही हो। यह लयबद्ध रूप से धड़क रही थी, मानो गड़गड़ाहट हो रही हो और उसमें एक ठंडी धातु जैसी झनझनाहट हो।

झनकार.

झनकार.

झनझनाहट... झनझनाहट... झनझनाहट...

दोबारा और दोबारा और दोबारा।

दरवाज़ा बंद रहा, जबकि अबू क़ासिम, जो कि काफ़ी ख़तरनाक जनरल था,

महमूद की सेना ने पाँच हज़ार सैनिकों की एक टुकड़ी के साथ मंदिर परिसर को बाहर से घेर लिया। बर्बर लोग शहर की रक्षा सेना के पकड़े गए सदस्यों के साथ खिलवाड़ करते थे, उन्हें क्षत-विक्षत करते थे, उनकी हत्या करते थे, मानो खेल के लिए। सबसे हट्टे-कट्टे लोगों को घसीटते हुए, लात-घूंसों और चीख-पुकार के साथ, ग़ज़नवी के गुलामों के रूप में काम करने के लिए ले जाया जाता था। या फिर गुलामों के रूप में उनका व्यापार किया जाता था।

शहर पहले ही दिन अबू क़ासिम की क्रूरता का दंश झेल चुका था। औरतों, यहाँ तक कि बच्चों, लड़के-लड़कियों, सभी के साथ ज़्यादती की गई थी। मर्दों के सिर काटे गए, उनकी खोपड़ियों के पिरामिड बनाए गए। मवेशियों का क़त्लेआम किया गया। कुओं में ज़हर डाला गया। और इन अपराधों के साथ एक ख़ौफ़नाक नारा भी लगाया गया: काफ़िर।

काफिर.

झनकार!

झनकार!

झनकार!

साफ़ था कि मंदिर के अंदर कुछ तोड़ा जा रहा था। सोमेश्वर के गाल पर एक आँसू बह निकला। यह सिर्फ़ एक ही बात हो सकती थी। तुर्क सेना ने शहर के मूर्तिपूजकों की धार्मिक मान्यताओं और रीति-रिवाजों को नीचा दिखाने में बहुत मेहनत की थी। सच कहें तो, उन्हें अपनी बर्बरता से उत्साहपूर्ण संतुष्टि मिलती थी। सोमनाथ मंदिर परिसर का अस्तित्व, जिसमें देवी-देवताओं के छोटे-छोटे मंदिर और भगवान शिव को समर्पित मुख्य मंदिर था, उन्हें अपमानित करता प्रतीत होता था। हिंदुओं को अपमानित करने के लिए कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं थी। मूर्तिपूजक के रूप में उनका अस्तित्व ही महमूद और इस्लाम की उनकी तुर्क व्याख्या के लिए अपमानजनक था।

सोमनाथ की प्रसिद्ध शिवलिंग मूर्ति को तोड़ना भारत में अत्याचारी तुर्क अभियान का चरमोत्कर्ष होगा।

लगातार होने वाली झनकार ने रुग्ण पुनरावृत्ति के साथ तनावपूर्ण शांति को भंग कर दिया।

Machine Translated by Google

झनकार! झनकार! झनकार!

सोमेश्वर रो पड़ा जब उसके मन में उस भयानक दिन की घटनाएं उमड़ने लगीं।
अपनी सारी उम्मीदों के बावजूद, वह जानता था कि वह क्या सुन रहा है। उसका मन उसे भ्रम का सुख नहीं दे रहा था। वह रोया, क्योंकि वह और क्या कर सकता था? उन्होंने उसकी पत्नी, उसके बेटों, उसकी बेटी, उसकी बहुओं को मार डाला था... उसके
नाती-पोते। ओह! उसके नाती-पोते। सब एक ही दिन में। और अब वह अपने आखिरी जीवित बेटे को भी स्वयं शिव के गर्भगृह में खो देगा।

अचानक, खनखनाहट की आवाज बंद हो गई।

क्षण भर में अबू कासिम की गगनभेदी आवाज ने सुल्तान के आगमन की घोषणा कर दी।

राक्षस।

महमूद गजनवी.

सोमेश्वर ने सूजी हुई, जलती हुई आँखों से देखा, उसकी दृष्टि धुंधली हो गई थी
उम्र और आँसू दोनों। महमूद अपने पहरेदारों और मंडली के साथ मंदिर परिसर से बाहर निकला। वह भारत के अभागे लोगों की नज़रों में कुरूप, कुरूप और घृणित था। आमतौर पर मिलनसार सोमेश्वर के मन में जानलेवा क्रोध की लहर दौड़ गई।

'सोमेश्वर भाई,' उनके मित्र और व्यापारिक साझेदार इकबाल ने फुसफुसाते हुए कहा।
सोमेश्वर उसके लिए भाई जैसा था । 'वह सीधा हमारी तरफ़ आ रहा है। वह हम सबको मार डालेगा!' सोमेश्वर की धड़कनें घबराहट से तेज़ हो गईं।

भयानक राक्षस—
उसके जीवन के सबसे बुरे दिन का सूत्रधार—धमकी भरे अंदाज़ में उसकी ओर बढ़ा। एक तरफ़ उसके बगल में बेचैन, घबराया हुआ ख्वाजा हसन खड़ा था; दूसरी तरफ़ एक हट्टा-कट्टा, साफ़-सुथरा, मध्यम कद और मांसल भुजाओं वाला युवक था। वह सुल्तान के पीछे-पीछे मंदिर में दाखिल हुआ था।

'ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय,' सोमेश्वर बार-बार बुदबुदा रहा था। वह एक प्राचीन हिंदू मंत्र पढ़ रहा था जिसका अर्थ था कि पूरा ब्रह्मांड और वह, एक भक्त, भगवान शिव को नमन करते हैं। जैसे ही तुर्क पास आया, भारतीय व्यापारी ने घबराहट में अपना गला साफ़ किया और बुदबुदाया, 'हे प्रभु, मेरी रक्षा करो।'

राक्षस खतरनाक तरीके से भारतीय व्यापारियों के समूह की ओर बढ़ा।

महमूद ग़ज़नी। एक तुर्क के लिए असामान्य रूप से लंबा। अपने चारों ओर जमा हुए अपने दल से कहीं ऊँचा, कुछ लोग आग की मशालें उठाए हुए थे, तो कुछ खून से लथपथ हथियार लहरा रहे थे। सोमेश्वर ने अपनी यात्राओं के दौरान उन्हें पहचानना सीख लिया था: जाम्बिया, कटार, पेशकब्ज़ ...

महमूद ने कर्कश स्वर में कहा, 'किसने मुझे रिश्वत दी थी?
अपने विधर्मी ईश्वर को छोड़ रहा है? आगे बढ़ो!'

Machine Translated by Google

सोमेश्वर कुछ कह पाता, उससे पहले ही हृष्ट-पुष्ट ख्वाजा हसन चीख़ उठे, "यह वाला, मेरे रब!" फ़ारसी वज़ीर आगे बढ़े और सोमेश्वर के मुँह पर अपनी उँगली मारी। "यह

काफ़िर। वह चाहता था कि तुम अपना ईमान और अपनी इज़्ज़त मामूली दौलत के बदले बेच दो। अपने बुतपरस्त ख़ुदा की इज़्ज़त के बदले में सिर्फ़ सोना! हा!" महमूद की बुरी नज़रें सोमेश्वर को चीर गईं। वह डर के मारे सिमट गया।

सुल्तान ने अपनी उंगलियां चटकाईं और दो पहरेदारों ने तेजी से व्यापारी की बाहें पकड़ लीं।

'दया करो!' सोमेश्वर चिल्लाया। 'दया करो, मेरे प्रभु! मुझे छोड़ दो! मेरा यह मतलब नहीं था
"मैं तुमसे अपनी इज़्ज़त कुर्बान करने के लिए कह रहा हूँ! मैंने तो बस तुम्हारी दया माँगी है!"

पहरेदारों ने उसके कंधों को ज़ोर से दबाया। सोमेश्वर के जोड़ों
वह घुटनों के बल गिर पड़ा।

"दया करो," सोमेश्वर ने डर के मारे गिड़गिड़ाते हुए कहा। "दया करो, मेरे मालिक!" महमूद बगल वाले युवक की ओर मुड़ा और एक

भयानक लकड़बग्घे की तरह हँसा। "क्या तुमने वो देखा, मकसूद?! क्या तुमने वो देखा?! वो बकरी की तरह मिमिया रहा है!"
हट्टे-कट्टे, मांसल युवक ने कोई आवाज़ नहीं निकाली, लेकिन उसकी भूरी आँखें द्वेष से चमक रही थीं, और उसके मुँह के किनारे हँसी-मज़ाक से

तिरछे हो रहे थे। सालार मकसूद। महमूद ग़ज़नी का प्रिय भतीजा। उसके चेहरे पर अपने चाचा जैसा पाशविक भाव था, करुणा और गर्मजोशी से रहित।

अवसरवादी ख्वाजा हसन अपनी घबराहट छिपाने की कोशिश में ज़ोर से हँसा। क्योंकि वही सुल्तान के पास यह प्रस्ताव लेकर गया था। एक ऐसा प्रस्ताव जो उसे पसंद नहीं आया था। उसने खुशी से ताली बजाई और उस बेचारे भारतीय व्यापारी को गालियाँ दीं, जब तक कि उसके मालिक ने उसे सख्त नज़रों से चुप नहीं करा दिया।

'यही तुम्हारे देश का भाग्य है। तुम्हारे विधर्मी ईश्वर का। तुम्हारी औरतों का,'
महमूद ने भौंककर बायाँ हाथ आसमान की ओर उठाया, "तुम्हारे बच्चों का..." वह थोड़ा झुका और सोमेश्वर के दाहिने गाल पर ज़ोर

से तमाचा जड़ दिया।
फिर बायाँ. फिर दायाँ...

'अपने सैनिकों का। अपने बेटों का। अपने राजाओं का। अपनी हर प्रिय चीज़ का, कुत्तों!' महमूद ने सोमेश्वर के दोनों गालों पर, अब मज़ाकिया

अंदाज़ में, वार करना जारी रखा।
बूढ़े के होठों के कोनों पर खून की बूँदें बिखरी हुई थीं। महमूद ने उसकी आँखों में देखा। "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझसे व्यापार करने के लिए कहने की?" उसने फुसफुसाया।
'हारे हुए लोग व्यापार नहीं करते। वे भीख मांगते हैं। मैं अपना लूंगा, चाहे तुम

Machine Translated by Google

चाहे तुम्हें पसंद हो या न हो। मैं तुम्हारी मूर्तियों को तोड़ दूँगा। तुम्हारे बेटों को गुलाम बना लूँगा। तुम्हारी बेटियों और पत्नियों को ग़ज़नी के वेश्यालयों में भर दूँगा।'

कमज़ोर बूढ़ा आदमी घुटनों के बल पड़ा रो रहा था। महमूद ने अपना हाथ थाम लिया।
गर्दन को एक मज़बूत पकड़ में जकड़ लिया, मानो वह बलि का बकरा हो। उसने बूढ़े की ठुड्डी को पीछे धकेला और एक लंबी कील से एक रेखा खींच दी।

" दया की भीख माँग," महमूद फुसफुसाया। "मुझसे अपनी जान बख्शने की भीख माँग।" उसने राक्षस जैसी खुशी से घूरा और धीरे से, गीतात्मक स्वर में कहा, "शायद मैं भीख माँग लूँ। हमारा ईश्वर, हमारा एकमात्र सच्चा ईश्वर, हमें कहता है कि जब दुश्मन झुक जाए तो दया और कृपालु बनो। क्या तुम आज मेरे सामने झुकोगे?" सोमेश्वर ने सुल्तान की ओर देखने की कोशिश की,

लेकिन उसकी आँखें उसकी खोपड़ी में घुस गईं।
वह कराह उठा।

'मैं तुम्हें सुन नहीं सकता,' महमूद ने कान पकड़कर चिढ़ाते हुए कहा। 'क्या तुम मान जाते हो?' 'मैं मान जाता हूँ।' महमूद ने उसकी पकड़ ढीली कर दी और

सोमेश्वर पीछे गिर पड़ा। तानाशाह हँसा। 'तुम मूर्तिपूजक आदमी नहीं हो। तुम हिजड़े हो। हम मर्दाना मोमिनों के लिए शिकार बनो।' तब सुल्तान ने किसी मसीहा की तरह अपनी बाहें हवा में फैला दीं। 'लेकिन मैंने तुम्हें दया का वादा किया था और मैं अपने वचन का पक्का हूँ। मैं तुम्हारी दयनीय ज़िंदगी बख्श दूँगा। मैं तुम्हें एक बिदाई उपहार भी दूँगा। तुम इसे अपनी दयनीय बाहों में ज़िंदगी भर समेटे रह सकते हो, गंदे काफ़िर। यह तुम्हें हमेशा मेरी दया की याद दिलाए... और एकमात्र सच्चे ईश्वर, अल्लाह की दया की ।' सोमेश्वर ने आशंकित होकर ऊपर देखा। महमूद ने अपना दाहिना हाथ हिलाया और कंधों पर बड़े-बड़े बोरे लटकाए दो हट्टे-कट्टे आदमियों को इशारा किया।

वे आदमी अपने मालिक की ओर दौड़े। महमूद ने उनमें से एक पर उँगलियाँ चटकाईं। उसने जल्दी से अपना बोरा ज़मीन पर गिराया, हाथ अंदर डाला और मुट्ठी भर टूटे हुए पत्थर जैसे टुकड़े निकाले। उसने झुककर महमूद को थमा दिए।

सोमेश्वर ने नीचे देखा। वह जानता था कि ये टुकड़े क्या थे।
पत्थर और धातु का मिश्रण, जादुई विज्ञान और उत्कट भक्ति का परिणाम। एक ऐसे पूरे के टुकड़े जो हिंदुओं के लिए उनके प्राणों से भी ज़्यादा कीमती थे। उसकी इच्छा थी कि धरती फट जाए और उसे निगल जाए, ताकि उसे यह दृश्य न देखना पड़े। लेकिन वह वहीं रहा जहाँ था। स्तब्ध।

गजनी के सुल्तान ने सैनिक से शिवलिंग का एक टूटा हुआ टुकड़ा ले लिया, जिसे उसने कुछ समय पहले ही तोड़ा था।

"लाओ, मैं इसे तुम्हारे लिए साफ़ कर दूँ," महमूद व्यंग्यात्मक लहजे में बुदबुदाया। उसने उस छोटे से पत्थर के टुकड़े पर ज़हर थूका। उसे अपनी आस्तीन पर रगड़ा और

Machine Translated by Google

उसने बनावटी संतुष्टि से उसे देखा। फिर सुल्तान ने पत्थर का टुकड़ा ज़मीन पर फेंक दिया। वह सोमेश्वर के घुटनों के पास गिरा।

सोमेश्वर के आस-पास शोकग्रस्त भीड़ हतप्रभ थी, लेकिन बोलने से डरते हुए, वे चुप रहे।

"इसे घर ले जाओ और इसकी पूजा करो," महमूद हँसा। "या फिर इसे हज़ारों सालों तक लाखों लोगों के पैरों तले रौंदने के लिए यहीं छोड़ दो। क्या फ़र्क़ पड़ता है? यह तो बस एक पत्थर है!" वह ज़ोर से हँसा। "खैर, तुम्हारी अनमोल मूर्ति के बचे हुए टुकड़ों का यही हश्र है। मैं इन्हें वापस ग़ज़नी ले जा रहा हूँ, जहाँ मैंने दुनिया की अब तक की सबसे बड़ी मस्जिद बनवाई है। मैं तुम्हारे मरे हुए, बुतपरस्त ख़ुदा को अपनी मस्जिद की सीढ़ियों के नीचे दफ़ना दूँगा। उस पर एकमात्र सच्चे धर्म, इस्लाम के मानने वाले कब्ज़ा कर लेंगे।" महमूद की आवाज़ गरजने लगी थी। "और क़यामत तक यही होगा!" सुल्तान अपने भतीजे की ओर मुड़ा। "पूरे मंदिर परिसर को आग लगा दो, मकसूद। और अंदर मरे हुए काफ़िरों को भी। वे अपने मुर्दों को जलाते हैं, है ना?"

आज वे अपने तुच्छ देवी-देवताओं के साथ जलेंगे।'

सालार मकसूद तेज़ी से चला गया, जबकि महमूद ने सोमेश्वर को आखिरी बार तिरस्कार भरी नज़रों से देखा, उसे लात मारी और दूसरी तरफ़ चला गया। उसके पहरेदार साये की तरह उसके पीछे-पीछे कदमताल करते हुए चल पड़े।

सोमेश्वर के आसपास की भीड़ समुद्र तट पर अपनी जगह पर जमी हुई थी। शोकाकुल। झिझक रही थी। इस उलझन में कि राहत महसूस करें या तुर्कों से और हिंसा की उम्मीद करें। तुर्कों को आखिरकार जाते देख, कुछ भारतीय तितर-बितर होने लगे, जबकि कुछ लोग हिचकिचाते हुए उनके पीछे-पीछे चल पड़े।

लेकिन सोमेश्वर घुटनों के बल बैठा रहा। उसने सोमनाथ के शिवलिंग का वह अनमोल टूटा हुआ टुकड़ा धीरे से उठाया और अपनी छाती से लगा लिया। शिवलिंग भले ही टूट गया था, फिर भी सोमेश्वर को उसके टुकड़े से शक्ति मिल रही थी। आँसू थम गए थे। उसका हृदय पीड़ा से जल उठा था।

उन्होंने अपनी आंखें बंद कर लीं और बार-बार फुसफुसाते रहे... 'ओम नमः शिवाय ... ॐ
नमः शिवाय ...' इकबाल उसके बगल
में ज़मीन पर दुबक गया। उसने अपना हाथ अपने माथे पर रखा।
दोस्त के कंधे पर.

'चलो, सोमेश्वर भाई, थोड़ी देर के लिए कहीं बाहर चलते हैं,' उसने धीरे से कहा। 'चलो,
जब तक यह ठीक नहीं हो जाता, हम इस ज़मीन से दूर चले जाएँ। मेरे साथ बंगाल चलो, मेरी मातृभूमि। यह इस बर्बर की पहुँच से बाहर है। हम वहाँ भारतीय इस्लाम का पालन करते हैं। यह इन नीच तुर्कों जैसा कुछ नहीं है। हम वहाँ अल्लाह और माँ दुर्गा, दोनों की पूजा करते हैं। मेरे साथ घर चलो। हम बंगाल में आराम करेंगे और अपना इलाज कराएँगे।' सोमेश्वर ने धीरे से अपने दोस्त का हाथ झटक दिया।

Machine Translated by Google

'मेरा परिवार भले ही यहीं मर गया हो, लेकिन मेरी संपत्ति और संपत्ति यहां फैली हुई है।
बहुत सी ज़मीनें, जिनमें तुम्हारी भी ज़मीन शामिल है।' सोमेश्वर की आवाज़ शांत थी, मानो कोई दिल बर्दाश्त की सीमा से परे दर्द का सामना करने पर खुद को शांत कर लेता हो। 'मेरे पास उस शापित सुल्तान जितनी दौलत है। मैं इसे सिर्फ़ एक ही काम के लिए इस्तेमाल करूँगा। हम चैन से नहीं बैठेंगे, इक़बाल। हम अपना बदला लेंगे।'

इन बर्बर लोगों को धर्म का प्रकोप झेलना पड़ेगा । भारत माता का क्रोध झेलना पड़ेगा।
हम अपने महादेव का सम्मान पुनः स्थापित करेंगे।' इकबाल चुप रहा।

उसने अपने दोस्त की ओर कोमल सहानुभूति से देखा, क्योंकि उसे विश्वास था कि वे कुछ नहीं कर सकते। तुर्क क्रूर योद्धा थे जिन्होंने सभ्य दुनिया के अधिकांश हिस्सों को पराजित किया था। सभ्य लोग, अपने मूल्यों और नैतिकता के बावजूद, अक्सर बर्बर लोगों से लड़ना नहीं जानते।

'क्या तुम मेरे साथ हो, इकबाल?' 'सोमेश्वर

भाई ...' इकबाल की आवाज़ टूटी हुई थी। 'क्या हमने काफ़ी नहीं देखा? ये लोग राक्षस हैं, जैसा दुनिया ने कभी नहीं देखा।
हम व्यापारी हैं। इस क्रूर सुल्तान के ख़िलाफ़ हमारा क्या दम है, जब एक दर्जन भारतीय राज्यों के पचास हज़ार अनुभवी योद्धा उसे रोक नहीं पाए?' सोमेश्वर उठे और अपनी कमीज़ पर पत्थर का टुकड़ा पोंछा। उन्होंने

आदरपूर्वक उसे अपने सिर के पास लाया, फिर धीरे से उसे चूमा।

"हम भगवान शिव के वाहक कबूतर होंगे, इकबाल," उसने कहा। "हमें दुश्मन के दिल पर वार करना होगा। हम दूर-दूर तक घूम चुके हैं, और मैं सिर्फ़ एक ही आदमी को जानता हूँ जिसके पास ग़ज़नी तक लड़ाई लड़ने की इच्छाशक्ति और शक्ति है।" सोमेश्वर ने उत्तर-पश्चिम की ओर इशारा किया, जहाँ ग़ज़नी था। "उत्तर-पश्चिम के इस राक्षस का जवाब दक्षिण में है, जहाँ भगवान शिव के सबसे बड़े भक्तों में से एक रहता है। आओ, अभी बहुत काम करना है।"

इक़बाल अपने दोस्त के पीछे चला गया। उसे नहीं लगता था कि बदला लेना मुमकिन है।
उनका मानना था कि तुर्क इतने निर्दयी और क्रूर थे कि सभ्य मानदंडों पर चलने वाला कोई भी उन्हें हरा नहीं सकता था। लेकिन इक़बाल एक अच्छे इंसान थे, एक अच्छे मुसलमान। और एक अच्छा मुसलमान अपने दोस्त का साथ कभी नहीं छोड़ता।

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 1

वह सोना जो खून बहाता है

गंगईकोंडा चोलपुरम, चोल साम्राज्य की राजधानी, दक्षिण भारत

1029 ई. (सोमनाथ मंदिर पर हमले के लगभग चार वर्ष बाद)

नरसिंह गौंडर पीठ के बल लेटे थे, उनका बायाँ हाथ उनकी पत्नी के गले में लिपटा हुआ था और वह करवट लेकर उनके कंधे पर सिर रखे हुए थीं। उनकी उंगलियाँ उनकी छाती पर लिपटी हुई, उनके हृदय पर टिकी हुई थीं। उन्होंने अपना दाहिना हाथ उनकी सुडौल कमर पर फेरा। हरिनी किसी तृप्त फ़ारसी बिल्ली की तरह गुर्राई, धीरे से खिंची और उनके और करीब आ गई।

शहर के पुलिस के नवनियुक्त कप्तान ने आधी बंद आँखों से अपने शयनकक्ष के दाहिनी ओर लगी लकड़ी की खिड़की से बाहर देखा। उसने नवनिर्मित शहर को, जो भोर की कोमल धूप में चमक रहा था, और चौड़ी सड़कों पर अभी भी जलती हुई कई मशालों और लैंप टावरों को निहारा।

गंगईकोंडा चोलपुरम। धरती का सबसे महान शहर। तमिलों का रत्न। भारत का गौरव।

गंगईकोंडा चोलपुरम। शक्तिशाली चोल सम्राट, जिन्हें गंगईकोंडान के नाम से भी जाना जाता है, द्वारा निर्मित भव्य नई राजधानी , जो पवित्र गंगा के जल को दक्षिण में लाए थे।

वह शहर जहां से पृथ्वी के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति ने भारत से लेकर दक्षिण-पूर्व एशिया तक फैले अपने विशाल साम्राज्य पर शासन किया।

राजेंद्र चोल.

महान राजराजा चोल के पुत्र, युवा राजेंद्र ने सत्ता का केंद्र तंजावुर से, जहाँ उनके पूर्वजों ने लंबे समय तक शासन किया था, गंगईकोंडा चोलपुरम स्थानांतरित कर दिया था। सावधानीपूर्वक योजना और दूरदर्शिता के साथ निर्मित, नए शहर में चौड़ी मुख्य और किनारे की सड़कें थीं, जो एक सुव्यवस्थित ग्रिड में व्यवस्थित थीं, और व्यस्त पैदल यात्रियों के उपयोग के लिए पेड़ों से घिरे पर्याप्त पैदल मार्ग थे। इमारतों को सौंदर्य और दक्षता, दोनों को ध्यान में रखते हुए व्यवस्थित किया गया था।

Machine Translated by Google

नागरिक कार्यालय आवासों और मनोरंजन चौकों से दूर स्थित थे।
राजा का भव्य महल उत्तरी छोर पर प्रतिमानुमा भव्यता में स्थित था, जबकि शहर के केंद्र में महान भगवान शिव के सम्मान में प्रतिष्ठित बृहदीश्वर का भव्य मंदिर था।

शक्तिशाली चोल साम्राज्य ने भारत की कल्पना पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था, और
इसकी शक्ति और महिमा ने अधिकांश सभ्य विश्व पर प्रभाव डाला।

नरसिम्हन के विचार सड़कों पर गश्त कर रहे अपने बीट कांस्टेबलों की ओर मुड़ गए, जिनके कान किसी भी मदद की पुकार या किसी भी छोटे-मोटे अपराध पर ध्यान देने के लिए तैयार थे। कांस्टेबलों के पास तलवारें, भाले और मशालें थीं। नरसिम्हन ने हाल ही में उन्हें अहोम चाकू-कुल्हाड़ियों से लैस किया था, जो भारत के पूर्वी भाग के कामरूप से आयातित थीं। इस हथियार में कुल्हाड़ी की तरफ एक धार वाला ब्लेड था, जिसका सिरा कुछ मुड़ा हुआ था। मानक डिज़ाइन में हाथी के सिर की सजावट होती थी जो कुल्हाड़ी के ब्लेड को शाफ्ट से जोड़ती थी। इसमें हैंडल के घुंडी में बड़े करीने से छिपा हुआ एक खंजर भी था। कुछ लोग कहेंगे कि एक बड़े पैमाने पर सुरक्षित शहर की सड़कों पर पुलिसिंग करने वाले बीट कांस्टेबलों के लिए यह हथियार ज़रूरत से ज़्यादा था। लेकिन फिर, शहर के कप्तान का सर्वोपरि कर्तव्य अपने नागरिकों को सुरक्षित महसूस कराना था। और नरसिम्हन का मानना था कि सभ्य समाज में हिंसा पर राज्य का एकाधिकार है। उनके शासन में किसी भी
तरह की सतर्कता या बेतरतीब हिंसा बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

सुबह-सुबह झींगुरों ने अपनी नीरस धुनें तीखी आवाज़ में गाईं
रोशनी, गुज़रते हुए पहरेदारों के कदमों की अनियमित, अचानक आने वाली आवाज़ों को लगभग दबा रही थी। नरसिंह का
मध्यम आकार का सादा घर शाही चोल परिवार के महल से कुछ ही गलियों की दूरी पर था। जैसे ही कुछ पहरेदार वहाँ से गुज़रे, उनकी मशालों की रोशनी खिड़की की बेंत की ग्रिल से कुछ देर के लिए छनकर आराम कर रहे दंपत्ति के कमरे में आ गई।

अड़तीस वर्षीय पुलिस प्रमुख की नंगी शक्तिशाली छाती पर साये नाच रहे थे। उसकी पत्नी हिली और उसने अपना हाथ उसके दाहिने कंधे पर रख दिया। उसने उसकी ओर देखा। सांवली, दुबली-पतली, बेहद खूबसूरत। उसने एक लंबी बेज स्कर्ट और उससे मैचिंग ब्लाउज पहना था। उसका नीला अंगवस्त्र उसके धड़ और कंधों पर ढीला-ढाला फैला हुआ था। लंबी पलकें उसकी बड़ी, बादाम के आकार की आँखों को घेरे हुए थीं। उसकी नाक अपनी परिष्कृत सुंदरता में मनमोहक थी, जिसका पुल बिल्कुल सीधा था, जिसमें कोई उभार या मोड़ नहीं था। उसके काले, घुंघराले, चमकदार बाल उसकी गर्दन के पिछले हिस्से पर आधे खुले जूड़े में बंधे थे। उसकी नाज़ुक छाती फैलती और गिरती रहती थी, जैसे वह एक हल्की लय में धीरे-धीरे साँस ले रही हो।

हरिनी सुन्दर और सुरुचिपूर्ण भारतीय नारीत्व का सर्वोच्च उदाहरण थी।
दूसरी ओर, उनके पति का शरीर,
मर्दाना पौरुष। छह फीट से ज़्यादा लंबा, गोरा रंग

Machine Translated by Google

उनकी पत्नी के सांवले रंग की खूबसूरती निखर रही थी। उनकी करीने से कटी हुई दाढ़ी उनके चेहरे के किनारे तक फैली हुई थी और उनके ऊपरी होंठ पर लगी हैंडलबार मूंछों के साथ एकाकार हो गई थी। ठोड़ी और गर्दन पर क्लीन शेव, नरसिंह की नाव के आकार की दाढ़ी उनके सुंदर, सिंह जैसे चेहरे पर एक भयंकर अयाल की तरह उनके गालों से लिपटी हुई थी। उनकी शक्तिशाली टाँगें उनकी धोती की तहों से ढकी हुई थीं।

हरिनी एक शहरी कुलीन परिवार से थीं, जबकि नरसिम्हन एक ग्रामीण किसान परिवार से थे।
एक ऐसा रिश्ता जिसके बारे में कई लोगों का मानना था कि यह ज़्यादा दिन नहीं टिकेगा। लेकिन ऐसा हुआ।
कभी-कभी, चरित्र और वर्ग के अंतर दिलों को और भी करीब ला देते हैं।
और एक स्नेहपूर्ण हृदय उस विष को ठीक तो नहीं कर सकता जो उसे पीड़ित करता है, लेकिन वह उसे इतनी गहराई में दफना सकता है कि वह कम परेशानी पैदा करे।

नरसिंह ने सोने की अपनी कमज़ोर कोशिशें छोड़ दीं क्योंकि सूरज हमेशा की तरह जल्द ही अपने शानदार आगमन की घोषणा करने वाला था। वह कई घंटों तक बिस्तर पर जागे हुए, फिर भी पूरी तरह स्थिर, लेटे रहे थे ताकि अपनी पत्नी की नींद में खलल न पड़े। उन्हें अपने अंगों में सुन्नता महसूस हो रही थी।

बहुत सावधानी से, बहुत धीरे से, उसने अपने गले में एक लंबे काले धागे से लटके सोने के वलय को छुआ। वलय: अंगूठी के लिए बहुत बड़ा, और एक वयस्क महिला के कंगन के लिए बहुत छोटा। उसे छूते ही उसे लगा जैसे उसके अंदर आग लग गई हो।

वह धीरे से कराह उठा।
महादेव: कप्तान ... दया करना ...
की आँखें थोड़ी नम हो गईं। उसने धीरे से अपनी पत्नी का हाथ अपनी छाती से हटाकर उसे पीठ के बल लिटा दिया। उसने धीरे से उसका सिर ऊपर उठाया और अपना बायाँ हाथ छुड़ाया। वह किंग साइज़ बेड पर बैठ गया और अपने शरीर के ऊपरी हिस्से को तान दिया, इस बात का ध्यान रखते हुए कि हरिनी को कोई परेशानी न हो।

फिर वह घूमा और ठंडे, मिट्टी से बने फर्श पर पैर रख दिए। पल भर में वह अपने पैरों पर खड़ा हो गया। उसने अपनी पत्नी को एक प्यार भरी नज़र से देखा और फिर अपने कंधों पर शॉल ओढ़ ली।

वह अपने शयनकक्ष से बाहर निकला और स्तंभों वाले रास्ते से होते हुए आँगन की ओर बढ़ा, जिसके दूसरी ओर एक और रास्ता था जो मुख्य द्वार की ओर जाता था। रास्ते में, वह एक कमरे के पास रुका और अंदर झाँका।
उसके लड़के। नौ साल का बेटा फैला हुआ सो रहा था, उसकी रजाई ज़मीन पर पड़ी थी। छह साल का बेटा उसकी रजाई में दबा हुआ था। नरसिम्हन अंदर आया और चुपचाप अपने बड़े बेटे को ओढ़ा दिया।

दरवाज़ा बंद करते हुए उसने सोने के छल्ले को फिर से छुआ—और तुरंत अपना हाथ वापस खींच लिया, मानो जल गया हो। उसे तब कोई परेशानी नहीं हुई जब

Machine Translated by Google

अंगूठी उसकी छाती को छू गई, लेकिन वह उसे अपने हाथों में नहीं पकड़ सका। इससे सारी यादें ताज़ा हो गईं।

नरसिम्हन ने सिर हिलाया और खुले केंद्रीय आँगन में चला गया। उसने अपने बाहरी चप्पल पहने और बीम-युक्त सागौन की लकड़ी के प्रवेश द्वार पर लगे भारी बोल्टों को धीरे से खोल दिया।

कप्तान सड़क पर निकल आया और उसने अपने घर का दरवाज़ा सावधानी से बंद कर लिया।
घर। पहरेदारों ने चुपचाप उसे सलामी दी, और ऊपर के तारों को उन्हें जगाए और सतर्क रखने के लिए मन ही मन धन्यवाद दिया। अपने आदमियों की कर्तव्यहीनता पर नए पुलिस प्रमुख का क्रोध तीव्र था; एक ख़तरनाक पूर्व जनरल के रूप में उनकी प्रतिष्ठा दूर तक फैल चुकी थी। हालाँकि वर्तमान समय में उनका शांतिपूर्ण, लगभग जैन-सा हिंसा से परहेज़ उनकी योद्धा प्रतिष्ठा के विपरीत था। उन्होंने गहरी साँस ली और अपने आस-पड़ोस के घरों जैसी काली आकृतियों को देखा। खिड़कियाँ खोलीं और दरवाज़े कसकर बंद किए।

दूर एक भव्य महल दिखाई दे रहा था, जहाँ सम्राट सो रहे थे। नरसिंह उसे एकटक देख रहे थे।

नरसिम्हन को राजेंद्र चोल बहुत प्यार और सम्मान देते थे। श्रीविजय साम्राज्य के विरुद्ध शानदार नौसैनिक विजयों में वे सम्राट के दाहिने हाथ थे। और चोल शासन अब दक्षिण-पूर्व एशिया में गहराई तक फैल चुका था। दक्षिणी और पूर्वी भारत पर उनके पहले से ही मौजूद नियंत्रण के साथ, पूर्वी सागर राजेंद्र चोल का तालाब बन गया था।

यह नरसिम्हन के लिए गौरव का क्षण होना चाहिए था। विजय का।
क्योंकि वह हमेशा से यही बनना चाहता था। एक महान योद्धा। अपनी धरती, अपनी प्रजा और अपने राजा की रक्षा और सेवा के लिए लड़ना।
अब उसे पता चल गया था। अब उसे समझ आ गया था।
माँ सही थीं... हमेशा की तरह...
उसे अपनी माँ के शब्द याद आ गए। ज़िंदगी के सबसे बड़े अभिशापों में से एक है वो चीज़ न मिलना जो आप हमेशा से चाहते थे। लेकिन उससे भी बड़ा अभिशाप है वो चीज़ पाना जो आप हमेशा से चाहते थे।

उसने फिर से अपनी छाती पर रखे पेंडेंट की ओर देखा।
उन्होंने आँखें मूँद लीं।
महादेव ... महादेव... मेरी मदद करो ...
नरसिम्हन ने सम्राट के सबसे विश्वसनीय व्यक्ति का पद त्याग दिया था।
कुछ हफ़्ते पहले ही जनरल से मुलाक़ात हुई थी। उन्होंने दक्षिणी कर्नाटक स्थित अपने विशाल ग्रामीण इलाक़े में लौटने की इच्छा जताई थी, एक रमणीय क्षेत्र जहाँ कावेरी नदी युवा, तेज़ और गहरी बहती थी। वह अपने पूर्वजों की तरह खेती-बाड़ी करेंगे। अपने भाइयों की तरह, वह धान बोएँगे और काटेंगे।

Machine Translated by Google

सम्राट—उनके मित्र और विश्वासपात्र—ने उन्हें जाने देने से इनकार कर दिया था। आंशिक रूप से। वे अपने सबसे भरोसेमंद व्यक्ति को चोल सिंहासन की सेवा से पूरी तरह मुक्त नहीं कर सकते थे। उन्होंने सेनापति से चोलपुरम में ही नगर पुलिस प्रमुख के रूप में रहने को कहा था। यह एक बहुत ही वरिष्ठ पद था जिसकी सम्राट तक सीधी पहुँच थी। और यह काम भी आसान लग रहा था, क्योंकि शहर अपेक्षाकृत अपराध-मुक्त था। इसके अलावा, यहाँ हिंसक अपराध लगभग अनसुने थे।

नरसिम्हन ने चोल में दिया था। ... राजेंद्र को कोई आसानी से 'नहीं' नहीं कह सकता था

उसने अपने चौड़े कंधे पर एक नन्हा सा हाथ महसूस किया और चौंक गया। फिर मुस्कुराया। उसे पता था कि उसकी पत्नी उसे अच्छी तरह जानती है। उसने उसे थोड़ी देर के लिए अकेले रहने के लिए कमरे से बाहर जाने दिया होगा। और वह उसे यहाँ, घर के सबसे नज़दीक वाली गली में, जहाँ से महल दिखाई देता था, ढूँढ़ना जानती होगी।

'सिंह?' हरिणी ने अपनी मधुर आवाज में उसका नाम पुकारते हुए उसे दुलारा।
केवल उसने उसे बुलाया।

उसने धीरे से उसका हाथ पकड़ लिया। उसने सहज ही उसे टेढ़ा कर लिया और अपनी पूरी नज़र से देखने लगा।
दोस्त, तेरह सालों से उसका सहारा। उसकी गहरी-भूरी आँखों में उसे वो चीज़ मिली जो अल्फ़ा पुरुष हमेशा अपनी साथी से सबसे ज़्यादा चाहते हैं—शांति।

वह तूफ़ान से उसकी शरणस्थली थी। जीवन के रेगिस्तानी संघर्ष में उसका मरुद्यान।

और सभी अच्छी पत्नियों की तरह, उसके पास इस बात का त्रुटिहीन अंतर्ज्ञान था कि उसे क्या करना चाहिए।
उसके आदमी को परेशान किया.

"प्लीज़, मेरे प्यारे," वह फुसफुसाई। "भगवान शिव के प्रेम के लिए, इसे उतार फेंको। मैंने तुमसे कभी नहीं पूछा कि इसमें क्या है..."
हरिणी ने वलय पेंडेंट की ओर देखा। "बस... अब बहुत हो गया, इसे माँ कावेरी में विसर्जित कर दो।"

...

जाने दो...' नरसिम्हन
चुप रहे।

हरिनी का मानना था कि उस पेंडेंट पर जादू कर दिया गया था। किसी दुष्ट आत्मा का संचार हो गया था। मानो कोई जादू का श्राप हो। अनंत पीड़ा का एक कुआँ जिसने उसके पूजनीय पति को डुबो दिया था।

और नरसिम्हन ने वही किया जो वो हमेशा ऐसे मौकों पर करते थे। उन्होंने माहौल बदल दिया
विषय: 'चलो घर चलें, मेरे प्यारे।'

Machine Translated by Google

हरिनी और नरसिम्हन अपने घर वापस आ गए थे। घर के कर्मचारी जाग चुके थे और सुबह के काम शुरू कर चुके थे। उनके बेटे जाग चुके थे, नहा-धो चुके थे और योग कर रहे थे। हरिनी एक अच्छी माँ थीं, और अपने बच्चों के दैनिक कार्यक्रम को लेकर सख़्त थीं, जैसा कि एक अच्छी माँ को उस उम्र के बच्चों के साथ होना चाहिए।

"लो," हरिनी बोली, जैसे ही एक नौकर दो गिलास छाछ लेकर उनके कमरे में आया। उसने नरसिंह को एक गिलास दिया और फिर खुद भी एक गिलास लिया।

नरसिम्हन ने एक घूंट लेते हुए कहा, 'मैं तुमसे प्यार करता हूं।'

'मुझे पता है,' हरिनी ने छेड़खानी से कहा और खुद भी पीने लगी।

नरसिम्हन मुस्कुराये।

हरिनी हिचकिचाई और बोली, 'मैं कुछ पूछना चाह रही थी...' नरसिंह मुस्कुराया। 'ज़रूर, जानू। पूछो...' 'विजयन के बारे में क्या?' विजयन पिछले कई सालों से चोलपुरम के कार्यवाहक पुलिस प्रमुख थे। और ज़्यादातर लोगों

के अनुसार, उन्होंने अच्छा काम किया

था। अब, बिना किसी गलती के, उन्हें असल में पदावनत करके सम्राट के पसंदीदा सेनापति के अधीन कर दिया गया था, सिर्फ़ इसलिए कि राजेंद्र चोल किसी तरह नरसिंह को अपना शहर छोड़ने से रोकना चाहते थे।

"मेरी नियुक्ति को अभी एक हफ़्ता ही हुआ है, हरिनी," नरसिम्हन ने उसे याद दिलाया। "विजयन एक अच्छा आदमी है। वह एक महान धनुर्धर है। और उसके पास अपमानित महसूस करने का हर कारण है। उसे अब मेरे अधीन काम करना होगा—एक ऐसे आदमी के अधीन जिसे अपने काम का कोई अनुभव नहीं है।"

'तुम कोई साधारण आदमी नहीं हो। तुम चोल सेना के सबसे महान सेनापतियों में से एक हो।' 'लेकिन मुझे पुलिसिंग का क्या पता? मैं विजयन को

पकड़ लूँगा। चिंता मत करो। वह पांड्य क्षेत्र से है, यह बात चीज़ों को और भी पेचीदा बना देती है।' चोल का गढ़ पवित्र कावेरी नदी के किनारे स्थित था। पांड्य, एक और महान योद्धा राजवंश, दक्षिण में, पवित्र वैगई नदी के किनारे बसा था। चोल और पांड्य की प्रतिद्वंद्विता कई सदियों पुरानी

थी।

एक समय था जब पांड्यों का शासन था और चोल उनके सामंत थे। लेकिन पिछली शताब्दी में स्थिति बदल गई। पांड्य अब अपने चोल अधिपतियों के अधीन जागीरदार थे। चोलों ने पांड्य राजवंश की सेवा करने वाले कई प्रभावशाली कुलीनों को अपने प्रशासन में वरिष्ठ पद प्रदान किए, ताकि उन्हें साम्राज्य में शामिल किया जा सके। लेकिन कभी-कभी, प्राचीन प्रतिद्वंद्विता के तनाव बने रहे।

Machine Translated by Google

'मैं चाहूंगा कि विजयन को उसकी पुरानी नौकरी वापस मिल जाए और हम चले जाएं'
नरसिम्हन ने कहा, "हम अपनी जागीर के लिए चोलापुरम जाएँगे। और वहाँ शांति से रहेंगे... खेती-बाड़ी करेंगे, मवेशी पालेंगे... शायद कुछ और बच्चे भी होंगे।"

'मुझे यह पसंद आएगा। खासकर ज़्यादा बच्चे पैदा करने वाला हिस्सा!' पति-पत्नी धीरे से हँसे।

'लेकिन,' नरसिंह ने आगे कहा, 'मैं सम्राट की अनुमति के बिना नहीं जा सकता...
मैं फिर कोशिश करूँगी। मैं उससे विनती करूँगी कि मुझे जाने दे।' हरिनी ने अपने पति की तरफ़ देखा, यह सुनिश्चित करते हुए कि उसके अंदर का दुख दूर हो जाए।
उसके चेहरे पर इसका कोई प्रभाव नहीं दिखाई देता।

उसके पति ने चोल सेना के लिए दस युद्ध लड़े थे। उनमें प्रसिद्ध विजयें हासिल की थीं। लेकिन दक्षिण-पूर्व एशिया की विजय सबसे कठिन थी, जो चार साल से भी ज़्यादा समय तक चली। वह बदले हुए इंसान के रूप में लौटे थे। कुछ मायनों में, क्षतिग्रस्त भी।

मैंने अपना शेर चोल सेना को दे दिया। सम्राट को। उन्होंने मेरे आदमी के साथ क्या किया?

नरसिम्हन ने अपनी पत्नी का हाथ पकड़ लिया, 'चिंता मत करो... याद रखो, वो सब...'
'सबसे महत्वपूर्ण बात आप और मैं हैं।'

हरिनी रोने लगी। उसने एक कदम आगे बढ़कर अपने पति को कसकर गले लगा लिया।



नरसिम्हन घर पर अपने निजी कार्यालय में बैठकर दिन भर के लिए पन्ने पलटते रहते थे। पुलिस मुख्यालय जाने से पहले, उन्हें यह उबाऊ काम सुबह-सुबह जल्दी खत्म करना पसंद था। चोल सेना और पुलिस बल में अगर कोई एक समानता थी, तो वह थी कागजी कार्रवाई के प्रति उनका जुनून।

'सिम्हा!' हरिणी ने जोर से पुकारा।
नरसिम्हन ने उत्तर दिया, 'मैं यहां हूं।'
हरिनी चाँदी की थाली लिए अंदर आई। "मैं मंदिर गया था..." नरसिंह अपनी मेज़ से उठे, जूते उतारे और आदरपूर्वक हाथ जोड़कर सिर झुकाया ताकि पत्नी को आसानी हो।

हरिणी ने अपनी तर्जनी, मध्यमा और अनामिका उँगलियों को थाली में रखी पवित्र भस्म की कटोरी में डुबोया। नरसिंह ने अपना दाहिना हाथ सिर पर रखा। उनकी पत्नी ने उनके माथे पर एक सुंदर त्रिपुंड बनाया — शैव हिंदुओं द्वारा धारण की जाने वाली भस्म की तीन धारियाँ, जो महादेव, भगवान शिव की पूजा करते हैं। उन्होंने

Machine Translated by Google

अपनी उंगलियों से बची हुई राख को अपने गले पर और फिर अपने अंगवस्त्रम के किनारे पर पोंछा ।

'जाओ, अब,' उसने प्यार से कहा। 'काम पर जाओ। यानी, अगर तुम अपनी किताबें देख चुके हो।' 'लगभग हो गया।' 'वैसे, विजयन मंदिर में थे। ऐसा लग रहा था जैसे आज

वे खुद उस इलाके की

सुरक्षा देख रहे थे।' नरसिम्हन ने सिर हिलाया। हरिनी समझ नहीं पा रही थी कि यह उसके पति के लिए अप्रत्याशित खबर थी या नहीं।



सुबह का समय था, लगभग दोपहर का समय था, जब नरसिम्हन वृहदेश्वर मंदिर परिसर में पहुंचे।

उन्होंने सफ़ेद धोती पहनी हुई थी और कमर में केसरिया रंग का कमरबंद बाँधा हुआ था। उन्होंने अपने दाहिने कंधे पर सफ़ेद अंगवस्त्रम डाला हुआ था और कपड़े का एक सिरा अपनी बांह पर लपेटा हुआ था। उनके सिर पर लाल कपड़े की एक लंबी पट्टी से बंधी पगड़ी थी। उनके दोनों कानों में साधारण स्टड थे, और एक धार्मिक जनेऊ, जो उनके बाएँ कंधे से धड़ के पार, दाहिनी ओर लटक रही थी। अपनी विशाल मांसपेशियों और ऊँचाई के बावजूद, वे एक आकर्षक लेकिन भयावह व्यक्तित्व के धनी थे, फिर भी वे सादे और सादे कपड़े पहने हुए थे।

दिन के इस समय शहर में चहल-पहल थी। फल और सब्ज़ी विक्रेता
सड़कों पर कतारें लगी थीं, अपनी दुकानों में ताज़ा उपज सजाए हुए। मोलभाव करते ग्राहक जगह के लिए धक्का-मुक्की
कर रहे थे, जबकि स्कूली लड़कियाँ और लड़के दोपहर के भोजन के लिए घर लौट रहे थे, कुछ फुर्तीले, कुछ थके और उदास, क्योंकि दोपहर की कक्षाएं अभी बाकी थीं।

मंदिर की दहलीज़ पर पहुँचकर, नरसिंह ने पास ही एक दुकान पर अपनी पादुकाएँ उतार दीं और द्वार में प्रवेश किया। वह झुका और गोपुरम के नीचे पत्थर की पहली शिला को छुआ । गोपुरम एक विशाल मीनार थी जो मंदिर परिसर का एक औपचारिक द्वार भी थी। उसने हाथ उठाकर आदरपूर्वक अपना माथा छुआ।

"मेरे भगवान बृहदीश्वर," उन्होंने अपने महान भगवान शिव से फुसफुसाते हुए कहा। "ब्रह्मांड के स्वामी। मैं यहाँ हूँ। मुझे अपनी कृपा प्रदान करें।" आज भक्तों की भीड़ अपेक्षाकृत कम थी। भीड़ के बीच, नरसिंह की नज़र दूर खड़े पुलिस

अधिकारी पर पड़ी, जिसने अपनी आँखें बंद कर ली थीं।

Machine Translated by Google

उसकी ओर वापस.

विजयन.

उनकी तनी हुई, सुडौल पीठ पर तीरों से भरा एक तरकश लटका हुआ था, जबकि उनके दाहिने कंधे पर एक रिकर्व धनुष लटका हुआ था। मंदिर प्रांगण में उन्हें पुलिसवालों ने घेर रखा था, सभी पीली धोती और पतले चमड़े के कवच पहने हुए थे। उनकी कमर से एक मानक सैन्य-श्रेणी का लड़ाकू चाकू लटक रहा था। अधिकारी अपने आदमियों को निर्देश दे रहा था।

नरसिम्हन ने एक खुशनुमा मुस्कान दी और समूह की ओर चल पड़े।
जैसे ही उनके नए नियुक्त प्रमुख का आगमन हुआ, उत्साहित लोग एक असहज सन्नाटे में डूब गए। विजयन मुड़े। नरसिम्हन ने उस विद्वेष को महसूस किया, इससे पहले कि वह बनावटी शिष्टाचार से कुशलतापूर्वक छिपाया जा सके।

"शुभ दोपहर, महोदय," विजयन ने औपचारिक पुलिस सलामी देते हुए सुस्ती से कहा। उसने सभी चीज़ें सही ढंग से कीं। अभिवादन, सलामी। यहाँ तक कि हल्की सी मुस्कान भी। सब कुछ विनम्र और उचित था। लेकिन सलामी में वह तीखापन गायब था।

अच्छे नेता हमेशा पहचान लेते हैं कि कब कोई अधीनस्थ अनादर कर रहा है, भले ही वह ऊपर से सब कुछ सही कर रहा हो। नरसिम्हन ने अपमान को नज़रअंदाज़ कर दिया।

'शुभ दोपहर, विजयन,' उन्होंने विनम्रतापूर्वक सिर हिलाकर और सलामी देकर जवाब दिया।

विजयन ने इशारे से अपने आदमियों को वापस भेज दिया। हालाँकि नरसिम्हन से चार इंच छोटे, चोलपुरम पुलिस बल के दूसरे नंबर के अधिकारी का साफ़-सुथरा, सुंदर, सांवला चेहरा किसी भी तरह की धमकी का संकेत नहीं दे रहा था। इसके विपरीत, वह निष्क्रिय रूप से आक्रामक था।

"आप यहाँ क्यों आए हैं, महोदय? यह सप्ताह का वह पारंपरिक दिन नहीं है जब आप भगवान शिव की पूजा करते हैं," विजयन ने शांत स्वर में अपने धनुष की डोरी को ठीक करते हुए कहा। "हम आपके बिना भी काम चला लेंगे" वाला उनका सूक्ष्म भाव इस बार उतना सूक्ष्म नहीं था।

'नरसिम्हन...' नरसिम्हन ने कहा। 'तुम मुझे नरसिम्हन तब कह सकते हो जब
हम दोनों ही हैं और आसपास कोई अन्य पुलिस अधिकारी नहीं है।'

'नहीं,' विजयन ने अपना सिर थोड़ा हिलाते हुए कहा। 'मैं 'सर' ही कहूँगा।' कैसे?
क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ... सर?'

'मुझे जाँच के लिए बल चाहिए...' नरसिंह अचानक रुक गया क्योंकि उसकी योद्धा प्रवृत्ति ने किसी की मौजूदगी को उससे ज़्यादा करीब महसूस किया जितना होना चाहिए था। उसकी मांसपेशियाँ तनावग्रस्त हो गईं, तुरंत हरकत में आने के लिए तैयार। उसकी आँखें अपने आप चौड़ी हो गईं। वह तुरंत घूम गया, उसका हाथ आराम से उसकी बगल में चला गया और उसने एक हाथ खींचा।

Machine Translated by Google

एक चाकू। सब कुछ एक ही सहज गति में। पलक झपकते ही। जैसे कोई कुंडली मारे बैठा तेंदुआ किसी खतरे पर तुरंत प्रतिक्रिया करता है।

नरसिम्हन का चाकू चौंके हुए बूढ़े आदमी के गले पर था
उसके पीछे खड़ा है.

'सर!' विजयन ने घबराकर ऊँची आवाज़ में कहा। वह डाक वाले सैनिकों को जानता था-
अभिघातज तनाव विकार किसी को बिना इरादे के मार देते हैं।

गंजे सिर और काली-काली दाढ़ी वाले उस मोटे आदमी ने समर्पण भाव से अपनी दोनों बाँहें ऊपर उठा रखी थीं। उसके बगल में खड़ा एक और आदमी भी, जो लगभग उसी उम्र का था, ऐसा ही कर रहा था।

विजयन ने कहा, “आराम से रहिए, महोदय।” “मुझे नहीं लगता कि उनका कोई बुरा इरादा है।” “हमारा

कोई बुरा इरादा नहीं है, महाराज,” मोटे आदमी ने शुद्ध तमिल में कहा, लेकिन चोल भूमि के लिए एक विदेशी लहजे में।

'मुझे माफ़ करना...' नरसिंह ने माफ़ी माँगते हुए चाकू वापस खींच लिया। 'मुझे माफ़ करना...' 'नहीं, हमें माफ़ करना, महाराज,' बूढ़े ने कहा।

'हमारा आपको परेशान करने का कोई इरादा नहीं था।' 'आपको किसी पर इस तरह छिपकर हमला नहीं करना चाहिए।' 'मैंने आपको
पुकारने की कोशिश की

थी...' उस आदमी ने क्षमा याचना करते हुए कहा, उसकी हथेलियाँ पश्चाताप भरे नमस्ते में

जुड़ गईं। 'लेकिन शायद आपने मेरी बात नहीं सुनी। इसलिए मैंने सोचा कि मैं ऊपर आकर आपसे बात करूँ। आख़िरकार यह एक मंदिर है, और हम सब भगवान शिव के भक्त हैं।'

'हम वही हैं,' नरसिम्हन ने खुद को शांत करने के लिए गहरी सांस लेते हुए कहा।
‘ओम नमः शिवाय।’ बाकी सभी

ने मंत्र दोहराया। ॐ नमः शिवाय।

नरसिम्हन ने कहा, "तुम यहाँ के नहीं हो।" उनका दिल और दिमाग़ शांत था।
अब. 'मैं आपका उच्चारण नहीं समझ पा रहा हूँ.'

'यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप 'यहाँ' से क्या मतलब रखते हैं, महाराज,' उस आदमी ने कहा।

नरसिम्हन धीरे से हँसे। विजयन भी हँसे।

'मेरा उच्चारण गुजराती हो सकता है, महाराज, लेकिन मेरे शब्द तमिल हैं...' उस आदमी ने कहा। 'और मेरा "यहाँ" भारत माता है।' 'ठीक कहा...' नरसिम्हन हँसे और आगे

बोले। 'हालाँकि मुझे...'
"मान लो, मैंने पहले कभी तमिल को गुजराती लहजे में नहीं सुना। यह अलग लगता है..." वह मोटा-ताजा बूढ़ा हँसा। ...

'तुम क्या चाहते हो, अन्ना?' नरसिम्हन ने बूढ़े आदमी की ओर इशारा करते हुए पूछा
तमिल में बड़े भाई की तरह । 'मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ?'

Machine Translated by Google

'हम बस सम्राट राजेंद्र चोल के महान सेनापति, योद्धा नरसिंह से बात करना चाहते हैं।' 'तुम भाग्यशाली हो, क्योंकि मैं नरसिंह हूँ, लेकिन अब सेनापति

नहीं हूँ। मैं

मैं यहाँ का पुलिस प्रमुख हूँ। मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ?' 'मैं

सोमेश्वर हूँ,' बूढ़े ने कहा। 'पश्चिमी क्षेत्र का एक व्यापारी

हमारे देश के तटों से; कभी गौरवशाली रहे सोमनाथ शहर से।'

नरसिम्हन का चेहरा उतर गया, उनका दिल भारी हो गया। लगभग तुरंत ही उनकी आँखों में आँसू आ गए। और विजयन की भी। उनकी प्रतिक्रिया देखकर, सोमेश्वर और इकबाल की भी आँखें भर आईं, और उन्हें वह सबसे भयानक दिन फिर से याद आ गया।

नरसिम्हन ने कहा , 'मैं आपकी पीड़ा समझता हूँ, सोमेश्वरजी।' 'हमला

सोमनाथ मंदिर के महान मंदिर पर ...' नरसिम्हन ने सम्मान के लिए तमिल में ' अर' शब्द जोड़ा । 'कुछ हफ़्ते पहले जब मैं और सम्राट लौटे थे, तो मेरी पत्नी ने सबसे पहले यही बात कही थी...'

अब सम्राट को भी इसकी जानकारी हो गई है। हम... हम इसके

पुनर्निर्माण में मदद करने का इरादा रखते हैं ... और...' 'हम

पुनर्निर्माण करेंगे, महाराज,' सोमेश्वर ने भावुक होकर कहा। 'लेकिन पुनर्निर्माण तो हम व्यापारी, पुजारी और आम लोग ही कर सकते हैं...'

पुनर्निर्माण हमारे योद्धाओं का काम नहीं है। योद्धाओं का कर्तव्य अलग है। उनका धर्म अलग है।' नरसिंह चुप रहे।

सोमेश्वर की आँखों से आँसू बह निकले। उसकी मोटी मुट्ठियाँ उसकी ढलती उम्र और टूटे हुए दिल की वजह से कसी हुई थीं। उसका शरीर धर्मी क्रोध से हल्का-सा काँप उठा। 'वे...'

वह राक्षस महमूद और उसकी सेना... उन्हें अपने पापों का उत्तर

देना होगा। हमारे योद्धाओं को उन्हें धार्मिक न्याय का पाठ पढ़ाना होगा.::' 'भारत के अन्य राज्य पिछले चार वर्षों से क्या कर रहे हैं?

महमूद को रोकने के लिए आपके उत्तर भारतीय राज्यों ने क्या किया?

'पश्चिमी और उत्तरी भारत के राजा भी किसी भी प्रकार से कम साहसी नहीं हैं।

दक्षिण में, सरदार नरसिम्हन। उन्होंने कड़ा संघर्ष किया। उन्होंने बहादुरी से लड़ाई लड़ी। उन्होंने जो गलती की वह यह थी कि वे अलग-अलग लड़े। महमूद से लड़ते हुए हजारों बहादुर भारतीय सैनिक और राजा मारे गए। उन्होंने वीरगति प्राप्त की, लेकिन विजय नहीं। क्यों? हमारी सामान्य समस्या के कारण, महाराज। आंतरिक विभाजन। और चूँकि उत्तर भारत में अब कोई एकीकृत साम्राज्य नहीं है, इसलिए विभिन्न समूहों को गजनी पर विजय पाने के लिए एक आम रणनीति पर सहमत कराना लगभग असंभव है। मुझे पता है, क्योंकि हमने हाल के दिनों में उन्हें एकजुट करने की पूरी कोशिश की है। उन्होंने वीरतापूर्वक लड़ाई लड़ी है, लेकिन एकजुट होकर नहीं। और तुर्कों के खिलाफ यह पर्याप्त नहीं था। हमें भारत के सबसे महान सम्राट, राजेंद्र चोल की आवश्यकता है।

Machine Translated by Google

जिसका साम्राज्य देश के अन्य राजाओं के संयुक्त साम्राज्य से भी बड़ा है, वह हमारे प्रतिशोध की लड़ाई का नेतृत्व करेगा... लेकिन वह पिछले कुछ सालों से दक्षिण-पूर्व एशिया में लापता था। जैसे ही हमें पता चला कि वह लौट आया है, मैं और मेरा दोस्त इक़बाल उसकी मदद के लिए यहाँ दौड़े।'

नरसिंह सम्राट की बनाई जा रही योजनाओं से वाकिफ था। वह यह भी जानता था कि इन योजनाओं को पूरा करने में समय लगेगा। लेकिन वह नहीं जानता था कि वह इस बूढ़े गुजराती पर कितना भरोसा कर सकता है। 'आप एक व्यापारी हैं, सोमेश्वरजी ...'

इसे चोल सम्राट पर छोड़ दो। वह भगवान शिव के महान भक्त हैं... शायद इस देश में महादेव के सबसे बड़े भक्त। हम...' 'महान नरसिंह, आपको बीच में रोकने के लिए क्षमा चाहता हूँ,' सोमेश्वर ने कहा। ...

'लेकिन भगवान राम को भी लंका तक पुल बनाने के लिए गिलहरियों की मदद की ज़रूरत पड़ी थी। गिलहरी जो कर सकती है, वो सिर्फ़ एक गिलहरी ही कर सकती है।' रामायण की इस पौराणिक कथा

को सभी भारतीय जानते थे। यह तब की बात है जब भगवान राम और उनकी सेना समुद्र के किनारे आए थे और राक्षसराज रावण को हराने के लिए लंका जाने के लिए एक पुल का निर्माण कर रहे थे। उस समय, एक गिलहरी ने पुल के निर्माण में मदद की पेशकश की थी। दूसरों ने हँसते हुए सवाल किया था कि एक छोटी·सी गिलहरी क्या कर सकती है। लेकिन भगवान राम ने, अपनी आदत के अनुसार, गिलहरी के हृदय में क्षमता की कमी के बजाय साहस देखा था। उन्होंने छोटी गिलहरी की मदद स्वीकार कर ली थी।

नरसिम्हन चुप रहे।

'मैं वहां था...' सोमेश्वर ने रोते हुए कहा।

नरसिम्हन अचानक सीधे खड़े हो गए। उन्होंने विजयन की ओर देखा, जो भी उतना ही स्तब्ध था, और फिर सोमेश्वर की ओर देखा। वे यही समझ रहे थे कि सोमनाथ मंदिर का विध्वंस देखने वाला हर भारतीय महमूद गजनवी द्वारा मारा गया था।

सोमेश्वर के दोस्त इकबाल ने कहा, 'हम दोनों वहां थे।'
पहली बार - उनके उच्चारण से उनकी बंगाली विरासत स्पष्ट रूप से प्रकट हो रही थी।

'मुझे तुम्हें कुछ दिखाना है...' सोमेश्वर ने कहा।

सोमेश्वर ने इकबाल की ओर रुख किया, जिसने सावधानीपूर्वक पॉलिश किया हुआ एक टुकड़ा निकाला। कंधे पर टंगे थैले से एक काला पत्थर निकाला। उसने आदरपूर्वक उसे गुजराती व्यापारी को थमा दिया।

सोमेश्वर ने पत्थर को अपने दाहिने हाथ में किसी नाज़ुक, कमज़ोर बच्चे की तरह थाम लिया। उसका बायाँ हाथ नीचे पड़ा था और दाहिने हाथ को छू रहा था—जैसा कि किसी पवित्र चीज़ को थामे हुए हमेशा होता है।

नरसिम्हन की मुट्ठियाँ कस गईं, दाँत भींचे। क्रोध और दुःख एक साथ उसके अंदर धधक रहे थे। विजयन उसके पास आया, उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे।

Machine Translated by Google

दोनों तमिल सैनिकों को एहसास हो गया कि वह पत्थर किस चीज़ का हिस्सा था।

'यह सोमनाथ शिवलिंग का एक टुकड़ा है जिसे महमूद गजनवी ने
चार साल पहले टूट गया था।' बोलते हुए सोमेश्वर की आवाज कांप रही थी।

विजयन ने कांपते हाथों से पत्थर को छुआ।

सोमेश्वर दुःख से काँप रहा था। ... महमूद ने जो लिया है ...
"पवित्र शिवलिंग के बाकी टुकड़े अपने साथ लेकर हमें बता रहा है कि वह मूर्ति के ... उसने घोषणा की थी
टुकड़ों को ग़ज़नी की मुख्य मस्जिद की सीढ़ियों के नीचे दफ़नाना चाहता है। ताकि तथाकथित आस्तिक
दिन में पाँच बार हमारे भगवान पर पैर रख सकें..."

'हम उस बदमाश को जिंदा जला देंगे...' विजयन ने गुर्राते हुए कहा।

सोमेश्वर ने आगे कहा, "हम पिछले कुछ दिनों से सम्राट से मिलने की कोशिश कर रहे हैं, महाराज। लेकिन महल के पहरेदारों ने हमें बार-बार लौटा दिया है। उनका कहना है कि कुलीन चोल को परेशान नहीं किया जा सकता। फिर हमें सलाह दी गई कि हम महान सेनापति नरसिंहन को ढूँढ़ें क्योंकि सम्राट उनकी बात सुनते हैं। और वे महादेव और हमारी भारत माता के सम्मान के लिए लड़ेंगे।" "मैं आपको सम्राट राजेंद्र चोल से मिलवा दूँगा, सोमेश्वरजी," काँपते हुए नरसिंहन ने फुसफुसाया। ...

इकबाल ज़ोर से चीखा और नरसिम्हन के पैरों पर गिर पड़ा। नरसिम्हन ने बंगाली को खींचकर गले लगा लिया। विजयन आगे बढ़े और सोमेश्वर का कंधा पकड़ लिया, जबकि गुजराती व्यापारी टूटे हुए पत्थर को हाथों में लिए रोता रहा।

सोमेश्वर जानता था। उसकी आत्मा जानती थी। उसे बस राजेंद्र चोल से मुलाक़ात की ज़रूरत थी। फिर भगवान महादेव का क्रोधित हृदय बोलेगा और महान धार्मिक योद्धा को उसके कर्तव्य की याद दिलाएगा।

एक ऐसा कर्तव्य जिससे इनकार नहीं किया जा सकता। क्योंकि धर्म इसकी माँग करता है। इतिहास इसकी माँग करता है। पितृलोक में हमारे पूर्वज इसकी माँग करते हैं।

क्योंकि सभी मर्दाना प्रेरणाओं में सबसे शुद्ध प्रेरणा धार्मिक प्रतिशोध है।
धार्मिक प्रतिशोध में संतुलन की बहाली निहित है।
धर्मी प्रतिशोध ही धर्म है।

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय दो

जंजीरों में जकड़ा एक भाई

गुज़गान, अफ़ग़ानिस्तान

इस्माइल ने दरवाजे की ओर आती एक छाया देखी।

अल्लाह, दया करो...

उसने बेचैनी से हवा पी, अपनी उंगलियां आपस में फंसा लीं, अपनी आंखें आधी बंद कर लीं।
लगभग बच्चों जैसी आशा कि यदि आप खतरे को नहीं देखेंगे तो वह गायब हो जाएगा।

और फिर उसने उसे देखा। दीवार से सटी एक परछाईं जैसी आकृति।

एक अस्त-व्यस्त, धूसर दाढ़ी जो पास आ रहे आदमी की नुकीली ठोड़ी तक लहरा रही थी।

इस्माइल स्पष्ट रूप से शांत हो गया और उसने राहत की सांस ली।

एक दुबला-पतला बूढ़ा आदमी उसके कक्ष में दाखिल हुआ।

'क्या तुमने उसे समय रहते रोक लिया, तालिब?' इस्माइल उत्सुकता से आगे बढ़ा और अपने भरोसेमंद विश्वासपात्र और नौकर से पूछा।

बुज़ुर्ग तालिब के तीखे चेहरे पर खिंचाव आ गया। उसने अपनी झुकी हुई पीठ को थोड़ा सीधा किया, अपनी बाहें पीछे बाँध लीं। उसके चेहरे पर विचारमग्नता थी।
उसकी छोटी-छोटी काली आँखें भावशून्यता से इस्माइल को घूर रही थीं। एक बेहद घबराए हुए मालिक का शांत नौकर।
लेकिन इससे पहले कि वह जवाब दे पाता, उसका मालिक आगे बोल पड़ा।

'अगर सुल्तान के दल ने किसी को बिना इजाज़त इस किले से बाहर निकलते देख भी लिया, तो हम सबकी मौत हो जाएगी। और तुम जानते ही हो कि उसके पास क्या है...' इस्माइल साफ़ तौर पर घबराया हुआ था। उसने एक खूबसूरत लेकिन भारी-भरकम फर कोट पहना हुआ था जिससे वह असलियत से ज़्यादा भारी लग रहा था। बेशक, एक तुर्क के हिसाब से इस्माइल लंबा था। लगभग छह फुट। लेकिन वह दुबला-पतला और दुबला-पतला था। उसकी आँखें हमेशा परेशान सी लगती थीं। ठंड के बावजूद, उसे पसीना आ रहा था।

'मैं समय पर उसके पास पहुँच गया, मेरे प्रभु,' तालिब ने थोड़ा मुस्कुराते हुए आश्वस्त किया।

अपने मालिक की घबराहट देखकर। 'अस्तबल के पास। उसे तुम्हारे नए निर्देश मिल गए हैं।' 'वह अब कहाँ है?' इस्माइल ने अचानक योजना में आए

बदलाव से घबराते हुए पूछा। 'और चिट्ठी कहाँ है? मैं नहीं चाहता कि वह गिर जाए?'

Machine Translated by Google

मेरे पागल भाई के हाथों। लेकिन मैं इसे भेजने का इरादा रखता हूँ, याद रखना। बस हमारा कार्यक्रम बदल गया है। और कुछ नहीं। मुझे उम्मीद नहीं थी कि सुल्तान इतनी जल्दी लौट आएगा।' ग़ज़नी के सुल्तान महमूद के बेहद चिड़चिड़े भाई, इस्माइल, अक्सर अपना मन और इसलिए अपने निर्देश बदलते

रहते थे। इससे उनके लिए काम करने वालों के लिए बहुत मुश्किल हो जाती थी। लेकिन तालिब ने इससे निपटना सीख लिया था।

'संदेशवाहक - आपका मुख्य रसोइया - रसोई में वापस चला गया है,' कहा
तालिब। 'और मुझे यकीन है कि चिट्ठी कहीं पेंट्री में सुरक्षित रखी होगी। राशिद बहुत कुशल है। आपको चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है, हुज़ूर।' इस्माइल सलाखों वाली खिड़की के पास गया। उसने दक्षिणी सड़क की
ओर देखा जो गुज़गान के विशाल लेकिन एकांत किले तक जाती थी—जो अब तीस सालों से उसकी जेल थी।

धूल का एक विशाल बादल गढ़ की ओर बढ़ रहा था।
महमूद ग़ज़नी और उसके शाही दल।
इस्माइल को अपने अंदर काली पित्त की लहर उठती हुई महसूस हुई। वह ज़ोर से हँसा।
'चिंता की कोई बात नहीं है, है ना?' इस्माइल ने नाराजगी भरे स्वर में कहा।
"उसका क्या हुआ?" उसने खिड़की से उस तरफ इशारा किया, जहाँ से दूर उसका बड़ा भाई महमूद उसकी तरफ़ बढ़ रहा था। "हमें उस धोखेबाज़ महमूद की चिंता नहीं करनी चाहिए, है ना? मुझे भी तो कहा गया था कि चिंता मत करो, जब मैं एक ज़माने पहले शासक बना था! इससे मुझे बहुत फ़ायदा हुआ।"

जब भी मैं उस बर्बर महमूद से मिलता हूँ, मेरे लिए बस एक पीड़ा ही होती है!' इस्माइल ने सलाखों वाली खिड़की से थूका, मानो अपने बड़े भाई

महमूद पर, जिसने तीन दशक पहले उसे ग़ज़नी के शासक पद से हटाकर गुज़गान के किले में नज़रबंद कर दिया था। लेकिन इस्माइल की योग्यता, आत्मविश्वास और नियति ऐसी थी कि वह ठीक से थूक भी नहीं पा रहा था। कुछ थूक सलाखों से छलककर उसके महंगे फर कोट पर गिर गया। इस्माइल चीखा और अपना कोट पोंछने लगा, उसकी आँखों में आँसू आ गए।

तालिब वहीं खड़ा रहा। खामोश। बिना हिले-डुले। जब इस्माइल को घबराहट हो रही थी, तो उसे पता था कि उसे कोई प्रतिक्रिया नहीं देनी चाहिए।
"तीस साल, मेरे दोस्त," इस्माइल ने नाराज़गी से कहा। "तीस साल मैंने इस ख़ूनी, वीरान किले में बिताए हैं, जबकि यह हड़पनेवाला मेरे सिंहासन पर बैठा है, मेरे धन का आनंद ले रहा है, मेरी औरतों के साथ बलात्कार कर रहा है!"

तालिब चुपचाप सिर झुकाए अपनी सलाह रोके हुए था। अभी समय नहीं है।

'ज़ालिम!' इस्माइल ने आखिरी शब्द थूका। अब उसकी साँसें तेज़ चल रही थीं।
अपनी बकवास से थककर वह अपनी मेज पर गया और एक गिलास शराब उठा ली।

Machine Translated by Google

पानी को ज़ोर-ज़ोर से गटकते हुए। हाथ के पिछले हिस्से से मुँह पोंछते हुए उसने अपने नौकर और विश्वासपात्र तालिब की ओर देखा। "लेकिन मैं शुक्रगुज़ार हूँ कि वह बेचारा मेरे पास आता है, भले ही सिर्फ़ अपनी जीत का प्रदर्शन करने के लिए ही क्यों न हो।"

...

ख़ासकर पिछली दो मुलाक़ातों में... आख़िरकार उन्होंने मुझे उस जानवर की कमज़ोरियाँ दिखा ही दीं। उसकी शोषण करने लायक कमज़ोरियाँ।' 'बिल्कुल, मेरे रब,' तालिब ने ज़ोरदार मुस्कान के साथ कहा। अब

बोलने का वक़्त आ गया था।

'जानते हो, मैंने ही उसके दिमाग में वो खतरनाक विचार डाला था...' इस्माइल कुछ देर रुका और दीवार पर लगे तांबे के शीशे को देखते हुए अपनी बौद्धिक प्रतिभा की तारीफ़ करने लगा, जो उसके हिसाब से उसके क्रूर और पाशविक भाई की कुशाग्र बुद्धि से कहीं ज़्यादा थी। उसने खिड़की से बाहर उड़ती धूल को देखा। 'उम्मीद है वो मुझे ये बताने आया होगा कि उसने चारा खा लिया है।' तालिब ने सिर हिलाया। 'मुझे लग रहा है कि उसने खा लिया होगा।' 'अभी आओ,' इस्माइल ने आग्रह करते हुए अपने कमरे के दरवाज़े की तरफ़ चलना शुरू किया।

'पहरेदारों और गायकों को तैयार करो। महमूद लगभग आ ही गया है। उसके आने पर हम सब किले के फाटक पर मौजूद रहें, कहीं ऐसा न हो कि वह हमारी अनुपस्थिति का बहाना बनाकर हम सबको मरवा डाले।'



ग़ज़नवी सुल्तान महमूद एक बड़े, गोलाकार पत्थर के हॉल के बीच में बैठा था जो किले में दर्शक दीर्घा के रूप में कार्य करता था। उसकी पत्नी, कौसरी जहाँ, उसके बगल में बैठी थी। दर्शक दीर्घा की घुमावदार दीवार पर मशालों की कतार लगी हुई थी, जिनकी लपटें कमरे को आवश्यक रोशनी और कुछ गर्मी प्रदान कर रही थीं। कमरे के उत्तरी भाग में एक चिमनी थी, जिसकी लौ प्रचंड थी, जो ठंड से काफी हद तक राहत दे रही थी। खिड़कियाँ बंद थीं, और बर्फीली रात की हवाओं को बाहर रखने के लिए उन पर मोटे पर्दे डाले गए थे। लेकिन फिर भी कुछ ठंडी हवा अंदर आ रही थी। अफ़गानिस्तान में सर्दी का मौसम चरम पर था। खाने-पीने की चीज़ों और शराब से भरी एक मेज़ सजाई गई थी, और सुल्तान के भ्रमणशील दरबार के कई रईस और शाही परिवार के सदस्य, उसके चारों ओर इकट्ठा थे।

महमूद एक तुर्क के हिसाब से छह फुट लंबा था। हालाँकि उसके चेहरे के भाव उसके भाई इस्माइल जैसे थे, उसकी त्वचा गोरी और आँखें छोटी थीं, लेकिन उसके युद्ध के निशान—खासकर वह जो उसके दाहिने गाल से होते हुए उसकी अब विकृत नाक तक था—उसे एक भयानक रूप देते थे। लेकिन महमूद को इसमें मज़ा आता था, क्योंकि

Machine Translated by Google

उसे अपने सामने खड़े किसी भी आदमी को डराना पसंद था। उसका शरीर भारी-भरकम था, उसके कंधे मज़बूत और सीना चौड़ा था। वह युद्ध के लिए बना हुआ प्राणी था, जबकि उसका छोटा भाई इस्माइल दरबारी साज़िशों में माहिर था।

उनकी रानी कौसरी जहाँ अपने पति के बगल में गर्व से बैठी थीं। शाही दूरी बनाए हुए।
और बेहद खूबसूरत। लंबी, पाँच फुट नौ इंच से ज़्यादा लंबी। दुबला-पतला शरीर, पतले और सुडौल अंग। गोरी त्वचा, ऊँची गालों की हड्डियाँ जो दर्द से लाल थीं। तीखे चेहरे और जबड़े। बड़ी-बड़ी आँखें, जिनका रंग एक आकर्षक नीला-हरा था। सुंदर, लंबी गर्दन, जो अपने आप में ही एक खूबसूरती की निशानी थी। यह साफ़ था कि वह तुर्की नहीं थी; उसके चेहरे के भावों से ज़ाहिर था कि वह शायद भारत के ताज - कश्मीर से थी।

महमूद, जो अब उनसठ साल के थे, कौसरी से सिर्फ़ पाँच साल बड़े थे। लेकिन रानी उनसे कई दशक छोटी लगती थीं। कुछ लोग कहते हैं, बीस साल की उम्र में आप कैसे दिखते हैं, यह आपके माता-पिता द्वारा आपको दिए गए जीन पर निर्भर करता है, जबकि पचास साल की उम्र में आप कैसे दिखते हैं, यह आपके जीवन का परिणाम है। लेकिन कुछ लोग कहते हैं, किसी भी उम्र में आप कैसे दिखते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप कितना मेकअप करते हैं और आपके ओझा ने कौन-सा जादू-टोना किया है। कई लोग कौसरी को डायन समझते थे। लेकिन बहुत कम लोगों ने इसे खुलकर कहा। ज़ाहिर है

कारण.

यह व्यापक रूप से माना जाता था कि रानी का महमूद पर गहरा प्रभाव था, भले ही उनकी उभयलिंगी प्रवृत्ति छिपी नहीं थी। वास्तव में, कई लोगों ने दबी ज़ुबान में यह भी कहा कि अगर कौसरी जहाँ न होतीं, तो महमूद अब तक सिर्फ़ पुरुष प्रेमियों को ही अपना रहा होता। वह उनकी शारीरिक आकर्षण शक्ति, प्रचंड बुद्धि और हमेशा आकर्षक, लेकिन पहुँच से बाहर रहने वाली शालीनता के वशीभूत था। और यह भी निर्विवाद रूप से स्वीकार किया जाता था कि वह महमूद के प्रति गहरी वफ़ादार थीं।

अबू क़ासिम—महमूद का भरोसेमंद सेनापति, जिसे शांतिकाल में अंगरक्षक दल का प्रमुख नियुक्त किया गया था—अपने स्वामी के पीछे छाया में खड़ा था, उसके दोनों ओर दस अंगरक्षक थे। क़ासिम अपने सुल्तान समेत सभी पर भारी था। उसकी बेजान, अस्पष्ट आकृतियाँ उसकी भावशून्य आँखों के भीतर के अँधेरे शून्य को ढाँप रही थीं। भावशून्य, वह एक सतर्क परी की तरह स्थिर खड़ा था। उसकी पलकें झपकाने वाली आँखें इस्माइल पर टिकी थीं, जो थोड़ी दूरी पर बैठा था। महमूद के शाही दल के साथ आए कुछ रईस हॉल के चारों ओर रखी मेज़ों पर बैठे थे।

पाँच चखने वाले मुख्य मेज के चारों ओर इकट्ठे होकर, सावधानीपूर्वक स्वाद चख रहे थे।
महमूद और उसकी पत्नी को खाना परोसने से पहले ज़हर चखने की कोशिश की गई।
कौसरी किसी पर भरोसा नहीं करती थी।

Machine Translated by Google

सर आशपाज़ रशीद विनम्रता से दूर खड़ा था। मुख्य रसोइया को उसके हुनर पर गर्व था।

चखने का काम पूरा हुआ, दावत शुरू हुई। झुककर महमूद को खाना खिलाया गया।
एक ढीठ युवक, जिसकी उम्र पैंतीस साल से ज़्यादा नहीं थी, और असाधारण रूप से स्त्रियोचित
शारीरिक सुंदरता वाला। उसके गाल ऊँचे थे और त्वचा गोरी, लगभग पारदर्शी थी। उसके दुबले-पतले, तरल शरीर
में एक नर्तकी जैसी कोमलता थी। उसकी उंगलियाँ लंबी थीं, चिकनी, चमकदार त्वचा से ढकी हुई। उसकी
विस्तृत पोशाक कुलीनता का आभास देती थी, हालाँकि वह सुल्तान की चापलूसी से सेवा करता था।

'मुझे यह मांस पसंद है, अयाज,' महमूद ने कहा, और आधा पैर काट लिया।
मेमना। 'मुझे और चाहिए। और!' वह उन्मादी तीव्रता से दहाड़ा।

"मुझे खुशी है कि आपको यह पसंद आया, हुज़ूर," इस्माइल ने विनम्रता से कहा, अपनी झुंझलाहट छिपाते हुए कि उसकी तारीफ़ कहीं और की गई थी। "रशीद एक बेहतरीन रसोइया है।" "सच में, इस्माइल!" महमूद हँसा। "तुम्हें अपने रसोइए का नाम पता है?" उसके मुँह से थूक की

छोटी-छोटी बूँदें और मांस के टुकड़े उड़ गए। कुछ उसकी पतली, नुकीली दाढ़ी में फँस गए। "क्या तुम इन औरतों के नाम जानती हो जो तुम्हारी सेवा करती हैं, कौसरी?" उसने उसके बगल में खड़ी लड़कियों की ओर इशारा करते हुए पूछा।

जवाब में, रानी ने अपनी नाक उठाई और इस्माइल की तरफ़ देखते हुए घमंड से हँसी। "सच में नहीं, नहीं।" कौसरी जहाँ की रेशमी आवाज़ कश्मीर की डल झील पर कुलीन हिमालयी बुलबुल पक्षियों की राजसी चीख़ जैसी थी।

इस्माइल की कमज़ोर बुदबुदाहट और उसके बड़े भाई की अपमानजनक बातों के साथ खाने का समय बीत गया। जल्द ही महमूद खुद से बातें करने लगा, ग़ज़नी के कहीं ज़्यादा रसीले गोश्त और अपनी राजधानी के सुहावने मौसम पर भड़कने लगा। इस्माइल शर्मिंदगी से लाल हो गया और खामोश हो गया, मानो कोई मेमना जानता हो कि उसका क़त्लेआम होने वाला है।

अचानक, सुल्तान ने अपना रुख बदला। ज़ोरदार आवाज़ में उसने घोषणा की कि
उसने अपने छोटे भाई को उनके मरते हुए पिता द्वारा इस्माइल को ग़ज़नी का अमीर या गवर्नर बनाए जाने
के कुछ ही महीनों के भीतर हरा दिया था । महमूद ने इस्माइल को अपनी दया का स्मरण कराया। वह उसे
ज़िंदा खाल उधेड़वा सकता था, उसका सिर काट सकता था और उसकी लाश ग़ज़नी के दरवाज़ों पर लटका सकता
था—जैसा उसने इस्माइल के ज़्यादातर समर्थकों के साथ किया था। इसके बजाय, उसने इस्माइल को
गुज़गान के इस आलीशान किले में रहने दिया।

'क्या मैं दयालु नहीं हूँ, भाई?' महमूद ने आगे झुकते हुए पूछा,
शराब के नशे में, उसकी आँखें आक्रामक और ताना मारने वाली थीं।

Machine Translated by Google

'बेशक आप महान राजा हैं!' इस्माइल ने लगभग तुरंत जवाब दिया,
डर है कि एक क्षण की देरी को भी गलत तरीके से समझा जाएगा।

'क्या हम तुर्कों में यह परम्परा नहीं है कि कोई भी योग्य शासक सभी का नरसंहार कर देता है?
अपने परिवार के पुरुष प्रतिद्वंदी? बिल्कुल वैसे ही जैसे शेर किसी झुंड पर कब्ज़ा करने के बाद करते हैं। मैं तुम्हारे साथ भी ऐसा कर सकता था। क्या मैंने किया?' 'नहीं, मेरे भाई, तुमने

ऐसा नहीं किया,' इस्माइल ने कहा, उसकी कमज़ोर आवाज़ और भी कमज़ोर लग रही थी। उसके दिल में डर बैठ गया क्योंकि उसे समझ नहीं आ रहा था कि ये सब कहाँ जा रहा है।
'तुम्हारी दयालुता अतुलनीय है। क़यामत तक तुम्हारे सम्मान में गीत गाए जाएँगे।' 'मैं तुम्हें गुलाम बना सकता था। तुम्हें उस स्थिति में लौटा सकता था जो हमारे

पिता ने कभी झेली थी।'

महमूद और इस्माइल के पिता, सेबुकतेगीन, कभी गुलाम थे। कई तुर्क जनजातियों ने अरबों, मंगोलों और फारसियों जैसी अधिक शक्तिशाली जातियों के लिए दास सैनिकों के रूप में काम किया था। लेकिन समय के साथ, उनमें से कई ने अपनी बहादुरी और निर्दयता से अपने स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिए। यही कारण है कि दुनिया भर में, पहले तुर्क राजवंशों को अक्सर गुलाम राजवंशों के रूप में जाना जाता था।

"आपने ऐसा नहीं किया, मेरे रब," इस्माइल चीखा। "मेरे लिए आपके प्यार की कोई सीमा नहीं है।" अब लगभग सभी ने खाना बंद कर दिया था। किसी को

नहीं पता था कि यह कहाँ है।
बातचीत चल रही थी। लेकिन ज़ाहिर है यह सामान्य नहीं था। चंचल महमूद के लिए भी नहीं।

सुल्तान ने अबू कासिम की ओर मुड़कर सिर हिलाया।

'सब लोग चले जाओ,' अबू कासिम ने गहरी आवाज में घोषणा की जो हमेशा धमकी भरी होती थी।

शाही दरबार के रईस, नौकर-चाकर, सब लोग तुरंत खाना-पीना छोड़कर, महमूद के हुक्म को बेवजह जल्दी से अंजाम देने के लिए दौड़ पड़े। उन्हें यह देखकर हैरानी हुई कि अबू क़ासिम भी दरवाज़े की तरफ़ बढ़ गया, उसके पीछे-पीछे अंगरक्षक भी।

इस्माइल भी अनिश्चितता से उठ खड़ा हुआ।

'इस्माइल, बैठो,' महमूद ने आदेश दिया।

इस्माइल अपनी कुर्सी पर गिर पड़ा। अब उसे उन लोगों की सुकून भरी संगति से वंचित कर दिया गया था जिनसे अब उसका रिश्ता था: उसके नौकर।
उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे उसके पेट में कच्चा डर समा गया हो, मानो वह लगभग भारी हो गया हो। उसे गले में घुटन सी महसूस हो रही थी। उसके हाथ ठंडे और लसदार हो गए थे।

क्या उसे पता है? कैसे पता है? अल्लाह, रहम कर।

Machine Translated by Google

इस्माइल ने घबराकर इधर-उधर देखा। महमूद के अलावा, वहाँ सिर्फ़ दो ही थे।
अब दर्शक दीर्घा में अन्य लोग भी मौजूद थे। महारानी कौसरी जहाँ और हाल ही में लाहौर के राजा नियुक्त हुए मलिक अयाज़—वह सुंदर पुरुष जो पूरी शाम महमूद की खूब खातिरदारी कर रहा था। हालाँकि मलिक अयाज़ व्यावहारिक रूप से एक गवर्नर थे, उन्हें राजा की भव्य उपाधि दी गई थी।

हर कोई जानता था क्यों.

रानी और मलिक दोनों भावशून्य भाव से इस्माइल को देख रहे थे। इस्माइल ने चाहे कितनी भी कोशिश की, उन्हें समझ नहीं पाया। वह और भी ज़्यादा उदास हो गया।

अधिक घबराया हुआ.

'मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ, मेरे प्रभु?' इस्माइल ने विनम्रतापूर्वक पूछा।

महमूद ने कौसरी और अयाज़ की तरफ़ देखा। मानो वह अपनी बात फिर से पुष्ट कर रहा हो।
कुछ। और फिर उसकी नज़र अब डरे हुए इस्माइल पर पड़ी।

"मेरे भाई," महमूद बोला, उसकी आवाज़ आश्चर्यजनक रूप से दयालु थी—अविश्वसनीय, क्योंकि यह एक ऐसी आवाज़ थी जिसका महमूद को ज़्यादा अभ्यास नहीं था। "मैं बस कल्पना कर सकता हूँ कि इतने सालों में तुम्हें कैसा लगा होगा। इस वीरान किले में, जो कहीं बीच में है..." इस्माइल का दिमाग़ पहले से ही तेज़ी से चल रहा था। मैं मारा जाऊँगा। वह मुझे कैसे मारेगा? ज़हर देकर? सिर काटकर? "... हालाँकि यह एक बहुत ही आरामदायक किला है..." महमूद की आवाज़ जारी

रही। ऐसा नहीं है कि मैं...

लगभग नीरस स्वर। 'यहाँ एक बड़ा, सुंदर किला था...' ...

मुझे उम्मीद है कि मेरी खाल ज़िंदा नहीं उधेड़ी जाएगी। अल्लाह, इसे दर्द रहित बना दे। मैं आपसे विनती करता हूँ।

'लेकिन मेरे भाई, मैं बदलाव लाने आया हूँ... सुधार लाने आया हूँ...' महमूद की बात सुनकर इस्माइल चौंककर वापस ध्यान में आ गया। सुधार?

"जिन लोगों को मैं सबसे ज़्यादा प्यार करता हूँ उनकी सलाह के ख़िलाफ़..." महमूद ने जल्दी से अपनी पत्नी की तरफ़ देखा। उसने अपने होंठ भींच लिए। "हमारी तुर्क परंपरा के बहुत से विरोध के ख़िलाफ़..." महमूद अब इस्माइल की आँखों में गौर से देख रहा था। "मैं तुम्हें आज़ाद कर रहा हूँ, इस्माइल।" इस्माइल को अपने कानों पर यकीन नहीं हो रहा था। क्या?!

महमूद ने कहा, "मैं तुम्हें अपने घर ले जा रहा हूँ, मेरे भाई। ग़ज़नी। मैंने तुम्हें यहाँ से निकाल दिया है।"
योजनाएँ। मैं चाहता हूँ कि तुम उन्हें पूरा करने में मेरा साथ दो। मेरे साथ रहो।' 'मेरे... रब?' इस्माइल चीखा, बेहद स्तब्ध।

महमूद ने इस्माइल को घूरकर देखा और बोला, 'तुम गजनी के गवर्नर बनोगे।'
और जामा मस्जिद के ग्रैंड मुफ़्ती, इस्माइल। कैसा लग रहा है?' ग़ज़नी का गवर्नर राजधानी शहर के सभी गैर-शाही सरकारी विभागों का प्रभारी होगा और सीधे सुल्तान को रिपोर्ट करेगा।

यह एक वरिष्ठ प्रशासनिक पद था। इससे भी अधिक आश्चर्यजनक भूमिका थी

Machine Translated by Google

ग़ज़नी की मुख्य मस्जिद, जामा मस्जिद के ग्रैंड मुफ़्ती। यह एक पुरोहिती धार्मिक पद था। इन दोनों पदों पर नियुक्त होने से इस्माइल को लौकिक और धार्मिक दोनों तरह की शक्तियाँ प्राप्त हुईं। एक दुर्लभ संयोग।

इस खबर ने इस्माइल को मानो बिजली के झटके से झकझोर दिया। गुज़गान में बिताए दशकों के बाद, उसने यह उम्मीद छोड़ दी थी कि अपने भाई के रहते हुए वह आज़ादी की हवा में साँस ले पाएगा। लेकिन यह? ग़ज़नी का गवर्नर? जामा मस्जिद का ग्रैंड मुफ़्ती? उसे अपने कानों पर यकीन नहीं हुआ। 'मुझे यकीन है कि मैं समझ गया हूँ, हुज़ूर,' उसने सावधानी से कहा, उसके होठों के किनारों पर एक घबराहट भरी मुस्कान तैर रही थी। ... मैं नहीं

'मुझे चाहिए कि तुम मेरे लिए काम करो, बेवकूफ़!' महमूद की आवाज़ अब कर्कश हो गई थी। चिड़चिड़ा। 'मैंने अपने पिता के छोटे से राज्य को लेकर उसे दुनिया के सबसे बड़े और सबसे धनी साम्राज्यों में से एक बना दिया है, जिसमें पूरा अफ़गानिस्तान, बलूचिस्तान और पंजाब, ईरान का कुछ हिस्सा, और कज़ाख, उज़्बेक, ताजिक और तुर्कमेनिस्तान का ज़्यादातर इलाका मेरे कब्ज़े में है। अब, मुझे इसे अगले स्तर पर ले जाना है। मुझे चाहिए कि तुम मेरे प्रति अपना फ़र्ज़ निभाओ। करोगे या नहीं?' 'मैं खुश हूँ, मेरे रब,' इस्माइल ने विनम्रता से कहा, उसकी साँसें उखड़ रही थीं। उसे अभी भी अपनी किस्मत के इस बदलाव पर यकीन नहीं हो रहा था। 'मैं शुक्रगुज़ार हूँ...'

हमारे कुल और हमारे परिवार के लिए आपने जो कुछ भी किया है, उसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। मैं सदैव आपका वफादार रहूँगा। आप मुझसे जो भी कहेंगे, मैं वह सब करूँगा। मैं आपको निराश नहीं करूँगा।'

महमूद ने कौसरी और अयाज़ की ओर 'मैंने तो पहले ही कहा था' वाले भाव से देखा।

'लेकिन...' इस्माइल घबराकर बोला। 'जामा मस्जिद के मौजूदा ग्रैंड मुफ़्ती का क्या हुआ?' 'मर गया।' 'मर गया?' 'मर गया। बदकिस्मती से, वह मीनार की सीढ़ियों से गिर

गया, जबकि

प्रार्थना के आह्वान से लौटते हुए।'

इस्माइल की घबराहट दूर हो गई थी और अब वह ज़्यादा साफ़ सोच रहा था। इतना साफ़ कि वह मुस्कुराए नहीं और न ही अपने मन में चल रहे विचारों को ज़ाहिर करे। बिल्कुल। 'सीढ़ियों से गिर गया।' कितना आसान।

"लेकिन इस दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना से पहले भी, मैंने उससे आपके विचार के बारे में बात की थी। इस्माइल को ठीक-ठीक पता था कि महमूद किस विचार की ... वास्तव में यह हमारा विचार है।'

बात कर रहा था। हमारा विचार! उसने लालच में आ गया!"

'लेकिन...'

'लेकिन?' इस्माइल ने पूछा।

Machine Translated by Google

'वह मुझे विभिन्न हदीसों के उद्धरण दे रहा था, जो पवित्र कुरान के बाद हमारे द्वितीयक धर्मग्रंथ हैं... जाहिर है...' यह कहते हुए महमूद का चेहरा घृणा से तमतमा गया, '... यह हमेशा एक अरब ही होगा

... यह तुर्क नहीं हो सकता

... वह ग़लत था, ज़ाहिर है। मैं बस यह साबित नहीं कर पाया कि वह कैसे ग़लत था।' इस्माइल ने अपनी साँस रोक ली। और उसे

बात समझ आ गई। अब मुझे समझ आया कि उसे मेरी ज़रूरत क्यों है। वह जानता है कि मैंने पिछले तीस साल पवित्र क़ुरआन और कई हदीसें पढ़ने में बिताए हैं। मैं एक हाफ़िज़ हूँ, क्योंकि मैं उन लोगों में से हूँ जिन्हें पवित्र क़ुरआन कंठस्थ है। इसलिए वह चाहता है कि मैं ग्रैंड मुफ़्ती बनूँ, ताकि मैं उसके लिए उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ कोई धार्मिक आधार ढूँढ सकूँ।

इस्माइल ने गंभीरता से कहा, 'इस बात को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता कि दिवंगत ग्रैंड मुफ़्ती ख़ुद एक अरब थे... शायद इसी बात ने उनकी राय को धुंधला कर दिया। हम तुर्कों ने इस्लाम के लिए कितना कुछ किया है, इसकी उन्हें क्या क़द्र थी...' महमूद ने हाथ उठाकर इस्माइल की ओर इशारा किया, उसके हाव-भाव से पता चलता था कि

पूरी सहमति। फिर उसने कौसरी और अयाज़ की तरफ़ देखा।

'तो, आप क्या कहते हैं?' महमूद ने इस्माइल से पूछा।

इस्माइल ने गंभीरता से कहा, "आपका साथ न देना देशद्रोह होगा। और आपका साथ देना हमारे पूरे परिवार और कुल के हित में भी होगा।" कौसरी जहाँ ने अपने उत्साहित पति को देखा। उसने अपनी असहमति छिपाई। यह सब गलत हो रहा था। उसे इस्माइल

कभी पसंद नहीं था। वह बहुत ज़्यादा बुद्धिमान था। बेहद चालाक।

महमूद, जो हमेशा बड़े-बड़े काम करने में माहिर था, ने इस्माइल की तरफ हाथ बढ़ाया। "मेरे हाथ पकड़ो, मेरे भाई।" इस्माइल आगे बढ़ा। और उसने इतनी तेज़ी से आगे बढ़ाया कि शक से भरा मलिक

अयाज़ भी लगभग तुरंत अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ, और सुल्तान महमूद की तरफ़ हाथ बढ़ाकर सुरक्षा की मुद्रा में आ गया। इस्माइल घुटनों के बल बैठ गया और अपने बड़े भाई के दोनों हाथ थाम लिए, और आँखों में आँसू लिए ऊपर देखने लगा।

महमूद ने कहा, "एक और समस्या है, इस्माइल। एक ऐसी समस्या जिसका समाधान मैं तुमसे करवाना चाहता हूँ।" "कुछ भी हो, महाराज!" इस्माइल

की आवाज़ में उत्सुकता लगभग चरम पर थी।

महमूद ने आगे कहा, 'जैसा कि आप जानते हैं, मैंने गजनी में एक बड़ी मस्जिद बनवाई थी।

जामा मस्जिद। पूरे इस्लाम जगत में सबसे भव्य। एक ऐसी मस्जिद जो इस्लाम और हमारे एकमात्र सच्चे ईश्वर की शक्ति का प्रदर्शन करेगी। मैं काफ़िरों की धरती से अवशेष लाया था—उनके बुतपरस्त ईश्वरों के टूटे हुए टुकड़े। मैंने उन्हें मस्जिद की सीढ़ियों के नीचे दफ़ना दिया ताकि मोमिन उन्हें दिन में पाँच बार रौंद सकें। यह शानदार था, इस्माइल। शानदार! एक गाज़ी, काफ़िरों के विनाशक के रूप में मेरी प्रशंसा का इससे बेहतर प्रमाण और क्या हो सकता है! लेकिन फिर...' महमूद रुक गया। उसने एक गहरी साँस ली और समाधि में चला गया।

Machine Translated by Google

कमरे में सन्नाटा था। हवा बर्फ़ जैसी ठंडी लग रही थी।

'मेरे प्रभु?' इस्माइल ने फुसफुसाया।

सुल्तान ने उत्तर दिया, 'भूकंप आया।'

'भूकंप?' 'हाँ। तीन साल

पहले।' इस्माइल ने अपना आश्चर्य

छिपाया। तीन साल? और मुझे अंदाज़ा भी नहीं था? मैं कितना कटा-फटा सा रह गया था?

महमूद ने आगे कहा, "इसने शहर के बहुत से हिस्से को तहस-नहस कर दिया, इस्माइल। जामा मस्जिद समेत। मैंने बड़े पैमाने पर पुनर्निर्माण का आदेश दिया था। बहुत कुछ किया जा चुका है।"
लेकिन ज़ाहिर है, सब कुछ नहीं। तुम्हें पता है कि वे सुअर जैसे हिंदू गुलाम कितने आलसी होते हैं। ग्रैंड मुफ़्ती— दिवंगत ग्रैंड मुफ़्ती— ⋯ उन्होंने एक उंगली भी नहीं उठाई। कोई सहयोग नहीं। अगर मुझे कोई बड़ा कदम उठाना है, तो, मुझे यकीन है कि तुम समझ जाओगे, जामा मस्जिद का जल्द से जल्द पुनर्निर्माण होना चाहिए। उस मूर्ख ने मुझे अकेले में बताया कि उसका मानना है कि बुद्ध ने भूकंप करवाया था।

"खुदाओं का श्राप," उसने लगभग डर के मारे कहा! क्या पत्थर श्राप देते हैं, है ना? बताओ? बताओ?!' 'यह तो बेतुका है!' इस्माइल भड़क उठा, राजा से भी ज़्यादा

राजभक्त। ' दिवंगत मुफ़्ती एक मूर्ख थे, धर्मत्यागी की एक ही सज़ा है: सिर कलम!' बेशक, इस्माइल ने आगे यह बताने की ज़हमत नहीं उठाई कि कुछ इस्लामी हदीसों के उनके अध्ययन ⋯ इससे भी बदतर, एक मुर्तद, एक धर्मत्यागी! और एक के अनुसार, समलैंगिकता की भी सज़ा मौत है। लेकिन महमूद को कोई भी मौत की

सज़ा देने वाला नहीं था।

'बिल्कुल!' महमूद ने नाक भौं सिकोड़ी।

इस्माइल ने आगे कहा, "मुझे हमेशा से शक था कि मरहूम ग्रैंड मुफ़्ती ने अपने दिल में अपने पुराने धर्म को ज़िंदा रखा होगा। मुझे यकीन है कि आपको पता होगा कि उनके माता-पिता दोनों बौद्ध थे। और अगर मैं ग़लत नहीं हूँ, तो उन्होंने भी बहुत देर से, किशोरावस्था के बाद, इस्लाम धर्म अपनाया। लेकिन हमारे क़ानून बहुत स्पष्ट हैं। हर किसी को इस्लाम अपनाने की इजाज़त है, बल्कि प्रोत्साहित भी किया जाता है । लेकिन आप इस्लाम से बाहर नहीं जा सकते । इसकी सज़ा मौत है। और एक बार धर्म परिवर्तन करने के बाद, आप किसी दूसरे धर्म का सम्मान नहीं कर सकते या बुद्ध जैसे किसी दूसरे ईश्वर को स्वीकार नहीं कर सकते। यह धर्मत्याग है।"

ज़्यादातर तुर्क बौद्ध थे, और उनका इस्लाम धर्म अपनाना अपेक्षाकृत हाल ही में हुआ था। दरअसल, महमूद और इस्माइल के पिता सेबुकतेगीन भी बचपन में बौद्ध थे। यही कारण था कि ज़्यादातर तुर्क बौद्धों और बौद्ध धर्म, जिस धर्म से उन्होंने धर्म परिवर्तन किया था, के प्रति विशेष रूप से आक्रामक थे। यह उनके नए धर्म, इस्लाम, के प्रति अपनी वफ़ादारी साबित करने का सबसे आसान तरीका था।

Machine Translated by Google

महमूद ने पूछा, "लेकिन अगर मैंने अरब के ग्रैंड मुफ़्ती पर धर्मत्याग का आरोप लगाया होता, तो मेरी बात पर कौन यकीन करता? क्योंकि वो बहुत चालाक था, उसने मुझे ये बात सिर्फ़ अकेले में बताई। सबके सामने तो वो एक अच्छे मुसलमान होने का दिखावा करता था।"

अधिकांश इस्लामी साम्राज्यों में जनता मौलवियों को उतना ही शक्तिशाली मानती थी जितना कि इसलिए किसी राजा के लिए किसी मुल्ला को सार्वजनिक रूप से खारिज करना आसान नहीं था, खासकर अगर मुल्ला अपनी बात साबित करने के लिए किसी धर्मग्रंथ का हवाला दे रहा हो।

इस्माइल ने कहा, 'यह तो अच्छा हुआ कि वह सीढ़ियों से गिरकर मर गया।'

'हाँ। वह अल्लाह की सज़ा थी।' 'सच। अल्लाह की

सज़ा। क्योंकि अल्लाह बड़ा बुद्धिमान और दयालु है।' 'तो हम एक-दूसरे को समझते हैं,' महमूद

ने खड़े होते हुए कहा।

मीटिंग ख़त्म हो गई। कौसरी और अयाज़ भी उठ खड़े हुए।

इस्माइल एकदम जवान मुर्गे की तरह उठ खड़ा हुआ। आखिरकार उसे अपने अंदर ऊर्जा का संचार महसूस हुआ। 'हाँ, हम जानते हैं, महान राजा। या यूँ कहूँ, महान, जल्द ही होने वाले खलीफा।' खलीफा अरबी शब्द

खलीफा से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है

उप-अधिकारी या उत्तराधिकारी। ऐसा माना जाता था कि खलीफा पैगंबर के प्रतिनिधि होते थे और वे राजनीतिक-धार्मिक नेताओं के रूप में पूरे इस्लामी जगत पर शासन करते थे। राज्य की शक्ति और धर्म का अधिकार, दोनों ही उस एक पद में समाहित थे। खलीफा वह सर्वोच्च पद था जिस तक कोई भी मुस्लिम राजा पहुँचने की आशा कर सकता था। इस्लाम के आरंभ से ही खलीफा हमेशा अरब रहे थे। लेकिन अरब अब उतने शक्तिशाली नहीं रहे। तुर्क अब सबसे शक्तिशाली इस्लामी समुदाय थे। और महमूद ने निश्चय कर लिया था कि अब समय आ गया है कि एक तुर्क, विशेषकर वह स्वयं, खलीफा बने। यह तथ्य कि बगदाद में वर्तमान अब्बासिद खलीफा, एक अरब, कमजोर हो गया था और फारसी बुईद राजवंश के नियंत्रण में था, महमूद के मन में कार्य को आसान बना दिया।

महमूद मुस्कुराया। 'अच्छा। हम एक-दूसरे को अच्छी तरह समझते हैं।' इस्माइल ने झुककर प्रणाम किया। मैं तुम्हें

समझता हूँ। लेकिन तुम मुझे नहीं समझते, यह मेरा अखाड़ा है।

मूर्ख! युद्ध का मैदान, वो तुम्हारा क्षेत्र है। लेकिन ये बुद्धि और धर्म... ...

ये मेरा है। मेरा जन्मसिद्ध अधिकार मेरा ही रहेगा। ... ...

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 3

प्रतिशोध का आह्वान

गंगईकोंडा चोलपुरम

सोमेश्वर और इकबाल को नरसिम्हन से मिले हुए दो सप्ताह बीत चुके थे।
चोलपुरम के पुलिस प्रमुख व्यापारियों को अपने घर मेहमान बनाकर लाए थे। हरिणी ने उन बुज़ुर्गों का अत्यंत स्नेह से स्वागत किया था। आख़िरकार, भारतीय रीति-रिवाज़ में " अतिथि देवो भव" यानी अतिथि ही भगवान होता है , ऐसा माना जाता है । लेकिन सोमनाथ में दोनों व्यापारियों ने जो कष्ट सहे और देखे, उनके प्रति भी उन्हें अपार सहानुभूति थी—या यूँ कहें कि समानुभूति। और सबसे महत्वपूर्ण बात, वह उनके उद्देश्य से पूरी तरह सहमत थीं, क्योंकि भगवान शिव के अपमान के प्रतिशोध की आग उनके भीतर भी तीव्र रूप से धधक रही थी।

व्यापारी द्वय की उपस्थिति ने नरसिंह को भी एक नया उद्देश्य दिया था। हरिणी ने देखा था कि वह बेहतर नींद ले रहा था। वह बिना किसी हिचकिचाहट के, अपने हाथों से उस पेंडेंट को थोड़ी देर के लिए छू सकता था। पुरुष सरल प्राणी होते हैं, महिलाओं की तरह गहन भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक आत्म-विश्लेषण में लीन नहीं होते। अधिकांश पुरुषों के लिए, अतीत के आघात से निपटने का सबसे अच्छा तरीका है कि वे उसके बारे में बात न करें; इसके बजाय, वे स्वयं को किसी उच्च उद्देश्य के लिए समर्पित कर देते हैं। और भगवान शिव से बढ़कर और क्या कोई उच्च उद्देश्य हो सकता है?

विजयन के नरसिम्हन के साथ रिश्ते भी सुधर गए थे। अब उनके उद्देश्य के आगे उनकी पेशेवर ईर्ष्या नगण्य लग रही थी। जिस दिन से मंदिर में उन दो बुज़ुर्गों से उनकी मुलाक़ात हुई थी, विजयन शाम को नरसिम्हन से मिलने जा रहे थे। शुरुआत में तो साफ़ था कि वह सिर्फ़ सोमनाथ के लोगों से मिलना चाहते थे। लेकिन फिर उन्होंने काम के मामलों में भी नरसिम्हन से सलाह लेना शुरू कर दिया।

फिर भी, अपनी तमाम प्रेरणाओं के बावजूद, अनुभवी और सुप्रशिक्षित चोल योद्धा होने के नाते, नरसिंहन और विजयन ने सम्राट से मिलने से पहले व्यापारी द्वय की विश्वसनीयता की सावधानीपूर्वक जाँच की थी। नरसिंहन को स्वाभाविक रूप से उम्मीद थी कि उनके राजा, जो उनके मित्रवत थे, तुरंत उनसे मिलने की अनुमति दे देंगे। और उन्हें निराशा नहीं हुई। वे

Machine Translated by Google

अगले ही दिन के लिए अपॉइंटमेंट मिल गया था। एक स्क्रॉल आया था। उस पर चोल राजवंश की शाही मुहर लगी थी: एक क्रूर सुनहरा बाघ जिसकी आँखें तीखे काले गोलाकार थीं, एक पंजा उठा हुआ, साम्राज्य के दुश्मन पर हमला करने के लिए तैयार।

अब वे एक निजी मुलाक़ात की तैयारी करेंगे। सबसे शक्तिशाली
पृथ्वी पर मनुष्य. राजेंद्र चोल.



'महान नरसिंह, क्या आपने अपने पत्र में वह सब लिखा है जो मैंने आपको सोमनाथजी में घटी घटना के बारे में बताया था ?' सोमेश्वर ने अपने प्रश्न से घबराहट भरी खामोशी तोड़ी।

नरसिम्हन सोमेश्वर और इकबाल को अग्नि-प्रज्वलित ग्रेनाइट से नीचे ले जा रहे थे
सम्राट के महल के दालान में। सूर्यास्त के ठीक बाद का समय था, और सूरज की मंद होती रोशनी मशालों की चमक में मिल रही थी। गुफानुमा गलियारे से नीचे जाते हुए चार पहरेदार उनके साथ-साथ चल रहे थे।

"सोमेश्वर जी, उस दिन जो कुछ हुआ, उसका पूरा विवरण मैंने आपको दे दिया है," नरसिंह ने आश्वस्त किया। "और सम्राट सभी महत्वपूर्ण विवरण स्वयं और विस्तार से पढ़ते हैं। महान राजेंद्र चोल के साथ एक सुनहरा नियम था: अगर वह आपसे मिलने के लिए राज़ी हो गए हैं, तो वह मुलाक़ात के लिए पूरी तरह तैयार होंगे। वह समय बर्बाद नहीं करते। आप उन्हें जो बताना चाहते हैं, उसके बारे में गहराई से सोचें।"

वे लोग एक कतार में टेढ़ी-मेढ़ी सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे, दो गार्ड
उनके आगे दो, पीछे दो।

सोमेश्वर ने चारों ओर देखा। बाहर से, चोल महल विशाल, अलंकृत और भव्य था। इसका मूल ग्रेनाइट था और इसे बलुआ पत्थर और लकड़ी से संवर्धित किया गया था। ग्रेनाइट का काला रंग, बलुआ पत्थर का गुलाबी रंग और लकड़ी पर चित्रित अनेक रंगों ने इसे एक भव्य महल जैसा बना दिया था जो किसी परीकथा जैसा प्रतीत होता था। अधिकांश दक्षिण भारतीय राजसी इमारतों—मंदिरों, महलों, विश्वविद्यालयों—की तरह, यह महल भी जटिल नक्काशी और ऋषियों, अप्सराओं, देवी-देवताओं की मूर्तियों से आच्छादित था, जिन्हें विभिन्न रंगों में भव्यता से रंगा गया था। दक्षिण भारतीय लोग औसतन अपने निजी वस्त्रों में बहुत ही साधारण रहते थे, लेकिन अपने विश्वविद्यालयों, मंदिरों और महलों की वास्तुकला के मामले में वे अत्यधिक समृद्ध थे।

Machine Translated by Google

लेकिन महल के अंदर, सोमेश्वर को वह शान-शौकत नज़र नहीं आ रही थी जो बाहर से साफ़ दिखाई दे रही थी। वे छोटे-छोटे संकरे गलियारों से होते हुए, सादे कमरों और दीवारों के बीच से गुज़र रहे थे।

सोमेश्वर ने पूछा, "क्या यह रास्ता सम्राट नरसिंह के निजी कर्मचारियों और आगंतुकों के लिए है?" "क्योंकि अंदर वह भव्यता नहीं है जो बाहर दिखती है। मुझे यकीन है कि महल में विदेशी राजनयिकों जैसे आधिकारिक आगंतुकों के लिए भी शानदार हिस्से होंगे।" नरसिंह ने सिर हिलाया और चलते रहे।

सोमेश्वर ने कहा, "राजा शायद महल के इन हिस्सों का ज़्यादा इस्तेमाल करते होंगे।" घबराहट के कारण वह और ज़्यादा बोलने लगा था। "हो सकता है कि यह आंतरिक संरचना सुरक्षा कारणों से भी हो।" नरसिंह बस चलते रहे। कोई जवाब नहीं।

तीनों अब एक दूसरे गलियारे में दाखिल हुए, जो बीच में संकरा और बाहर की ओर चौड़ा था।
दोनों छोर। इक़बाल को ऐसा लगा जैसे वह केरल के लोगों के एक वाद्य यंत्र , एक विशाल उत्तल थिमिला के अंदर चला गया हो । पूरे दालान में पहरेदार तैनात थे, लेकिन सबसे बड़ा दस्ता बीच के संकरे सिरे पर तैनात था। एक स्वाभाविक अड़चन। एक अच्छा सुरक्षा उपाय। दालान एक ऊँचे द्वार पर समाप्त होता था जिसके दोनों ओर दो विशाल पहरेदार तैनात थे। उनके साथ चलने वाले शाही पहरेदार छाया में पीछे हट गए।

पहरेदारों ने नरसिंह को ज़ोर से सलामी दी। उस विशालकाय व्यक्ति ने अपना दाहिना हाथ अपनी छाती पर रखा और सैनिक भाव से जवाब दिया। उसने गहरी साँस ली और अपने घबराए हुए साथियों की ओर देखा।

"बस, सोमेश्वर और इकबाल। अब तुम्हारा समय शुरू होता है।" सोमेश्वर और इकबाल ने घबराहट में कहा। आगे
बढ़ते हुए उनके पैर काँप रहे थे।

बाईं ओर के पहरेदार ने विशाल दरवाजा खोला और तीनों व्यक्ति सम्राट के निजी बैठक कक्ष में पहुंचे, पहले नरसिंह, फिर सोमेश्वर और अंत में इकबाल।

एक आदमी बड़े हॉल के उत्तरी छोर पर बैठा था।
केवल एक आदमी.
और किसी की नहीं।
जैसा कि वादा किया गया था, यह एक निजी बैठक थी।
दोनों व्यापारियों की रीढ़ में मानो शुद्ध विद्युत का संचार हुआ, मानो देवी कुंडलिनी जागृत हो गई हो। पूरे भारत में, सभी ने शक्तिशाली चोल सम्राट राजेंद्र और उनके पिता, स्वर्गीय सम्राट राजराजा के बारे में सुना था। पिता-पुत्र सम्राट जीवित किंवदंतियाँ थे,

Machine Translated by Google

उनके नाम उनके कद का बोध कराते थे। राजराज का अर्थ था राजाओं का राजा।
और राजेंद्र का मतलब था राजाओं का स्वामी। कमरे में दाखिल होते ही दोनों व्यापारियों को एक चमकदार देवता की उम्मीद थी। वे मंत्रमुग्ध होकर प्रवेश द्वार पर रुक गए।

उनके सामने, सोमनाथ के व्यापारियों ने एक मांस और रक्त से बने आदमी को देखा - बस
उनके जैसा। यह अनुभव किसी देवता से मिलने से भी ज़्यादा ज़बरदस्त था।

क्योंकि वह उनमें से एक था। बिल्कुल उनके जैसा। एक भारतीय।

लेकिन साथ ही, वह इससे भी कहीं बढ़कर थे। एक ऐसा इंसान जो
एक ही समय में अद्भुत शक्ति और अदम्य विनम्रता। गुणों का ऐसा मेल जो सहज ज्ञान से परे था, और
अविश्वसनीय रूप से मनमोहक।

धर्म का आदमी .

गंगईकोंडा स्वयं.

राजेंद्र चोल.

सांवले रंग के, लंबी मूंछों वाले और लगभग छह फुट लंबे राजेंद्र चोल की मोटी, भारी भौंहें उनकी आँखों पर टिकी थीं जो नारंगी अंगारों से जड़े काले दूधिया पत्थरों जैसी चमक रही थीं। वह असाधारण रूप से सुगठित शरीर के थे, उनके कंधे और पीठ किसी कुशल धनुर्धर जैसे शक्तिशाली थे, उनकी दुर्जेय छाती पतली कमर तक सिमटी हुई थी और उनके पैर किसी योद्धा जैसे थे जो तलवारबाज़ की सूक्ष्म और चतुर चालों में भी निपुण था।

उनसठ साल की उम्र में उनका इतना फिट होना उनके अदम्य अनुशासन को दर्शाता है। उनके शरीर पर युद्ध के अनगिनत निशान थे, जो एक योद्धा के लिए गर्व की बात होती है। उनमें से एक ख़ास तौर पर बड़ा निशान उनके पेट पर एक गहरा गड्ढा था, जिसके किनारों पर पतले टांके के निशान थे; शायद हाल ही में किसी युद्ध के दौरान उनके पेट में चाकू मारा गया था और घाव अभी-अभी भरा था। सम्राट के नाज़ुक घुंघराले काले बाल, जो उम्र के साथ थोड़े पतले हो गए थे, उनके कंधों पर बिखरे हुए थे, और बड़े करीने से कंघी की गई थी। उनकी सम्मोहित करने वाली आँखें दयालुता और तीक्ष्ण बुद्धि का प्रतीक थीं।

एक जनाऊ उसके बाएं कंधे से लेकर धड़ के दाईं ओर तक फैली हुई थी।
उनके दाहिने कंधे पर रखा लाल अंगवस्त्र उनके शक्तिशाली वक्ष और पीठ पर फैला हुआ था। यह उनकी सफ़ेद धोती पर लिपटे कमरबंद के दोनों सिरों पर पिनों से बंधा हुआ था। हाथीदांत और सोने की मूठ वाला एक बाघ का दाँत उनकी छाती पर लटक रहा था, जिसे उनके गले में एक पतले काले धागे से बाँधा गया था। कानों में जड़े हीरे के जड़ाऊ रत्नों के अलावा, शक्तिशाली चोल ने कोई और आभूषण नहीं पहना था। उनका सिर नंगा था। उन्होंने राजसी मुकुट नहीं पहना था।

Machine Translated by Google

राजेंद्र चोल ने विनम्रता से सिर हिलाया और हाथ जोड़कर अभिवादन किया। उन्होंने गहरी, गहरी आवाज़ में कहा , "वणक्कम" , जो सुनने वाले की आत्मा में गूंज उठी।

"माई लॉर्ड," नरसिंह ने दूर से ही ज़ोर से घोषणा की, अपनी छाती ठोकते हुए, एड़ियाँ तेज़ बजाते हुए और झुककर प्रणाम करते हुए। "मैं आपसे मिलने की अनुमति पाकर आभारी हूँ, और आपके स्वास्थ्य लाभ के दौरान एकांत में मिलने का अनुरोध करने से हुई असुविधा के लिए क्षमा चाहता हूँ।" सोमेश्वर और इक़बाल चुप रहे। वे मंत्रमुग्ध थे। जड़वत ...

उस जगह पर। हिलते-डुलते नहीं। बोलते नहीं। उस निजी कमरे की सुरुचिपूर्ण और संयमित भव्यता पर ध्यान नहीं देते जिसमें वे चले आए थे। दीवारों पर कुछ उत्कृष्ट नक्काशी और चित्रकारी। कमरे की लंबाई में लगी मशालें, रोशनी और गर्मी फैला रही थीं। पूर्वी और पश्चिमी दीवारों पर बड़ी-बड़ी चित्र-खिड़कियाँ, जो दोनों ओर हरे-भरे बगीचों में खुलती थीं। फूलों की हल्की-सी खुशबू और पक्षियों की आत्मीय चहचहाहट, शाम की नम समुद्री हवा के साथ आ रही थी।

दूर छोर पर, राजेंद्र चोल के बैठने की जगह के पीछे, एक विशाल चित्र था जो पूरी उत्तरी दीवार पर फैला हुआ था। उस पर, बीच में, भगवान शिव अपने दक्षिणामूर्ति रूप में थे, जिसका शाब्दिक अर्थ है, दक्षिणमुखी भगवान। भगवान शिव के बाएँ और दाएँ दो पुरुष घुटनों के बल, महादेव की ओर मुख करके, हथेलियाँ नमस्ते मुद्रा में जोड़े, सिर झुकाए, मानो वे देवों के देव के सेवक हों। पुरुषों के चित्र अत्यंत सजीव और आसानी से पहचाने जा सकने वाले थे। भगवान शिव के दाएँ ओर स्वर्गीय राजराजा चोल थे, और बाईं ओर उनके पुत्र, वर्तमान सम्राट, राजेंद्र चोल थे।

शक्तिशाली चोल अपने आप को इसी प्रकार देखते थे।

राजराजा चोल और राजेंद्र चोल। अपनी सारी सांसारिक शक्ति के बावजूद, वैभव, वैभव, अधिकार और सर्वोच्चता के बावजूद, अपने अंतरतम कक्ष में वे स्वयं को केवल भगवान शिव के सेवक के रूप में देखते थे।

अद्भुत शक्ति और अदम्य विनम्रता। एक दुर्लभ संयोजन।

'आइये, बैठिये,' राजेन्द्र चोल ने विनम्रतापूर्वक कहा।

लेकिन सोमेश्वर और इकबाल घूरते रहे, जैसे कोई हिरण किसी चीज से मोहित हो गया हो। टूटता तारा। राजेंद्र चोल जानते थे कि पहली बार उनसे मिलने वाले आम लोगों पर उनका अक्सर ऐसा ही प्रभाव पड़ता था। और हमेशा की तरह, ऐसे मौकों पर उनकी करुणा और दयालुता उभर कर सामने आती थी। उन्होंने नरसिंह की ओर देखा और सिर हिलाया।

Machine Translated by Google

चोलपुरम के पुलिस प्रमुख ने सोमेश्वर को धीरे से कोहनी मारकर उसकी घबराहट से बाहर निकाला। और तीनों हॉल के आखिरी छोर की ओर चल पड़े। राजेंद्र चोल के सामने तीन आरामदायक कुर्सियाँ रखी थीं।

नरसिम्हन कुर्सियों के पास पहुंचे, एक घुटने पर बैठ गए और फिर से अपना सिर झुका लिया।

"बैठो, नरसिंह," राजेंद्र चोल ने कहा। "बैठो।" सोमेश्वर और इकबाल घुटनों के बल

बैठ गए, सिर ज़मीन से लगा लिया, हाथ आगे करके सम्राट के सामने पूरी तरह झुक गए। राजेंद्र चोल ने नरसिंह की ओर देखा और उन्हें बैठने का इशारा किया। उन्होंने वैसा ही किया।

अब कुर्सियों पर बैठे सोमेश्वर और इकबाल अभी भी काफी घबराये हुए थे।
दोनों ने हाथ जोड़कर नमस्ते किया। उन्हें पता था कि यही उनके लिए सबसे अच्छा मौका है। वे चार सालों से इस पल का इंतज़ार कर रहे थे। वे इसे बर्बाद नहीं करना चाहते थे।

राजेंद्र चोल ने एक बार फिर विनम्रता से कहा। 'मुझे पता है। नरसिंह ने मुझे सारा विवरण लिख दिया है। आपने जो देखा और जो कुछ सहा...' सम्राट ने एक गहरी साँस ली। मानो वह किसी चीज़ का मूल्यांकन कर रहे हों। 'मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ, महान सोमेश्वर? आप क्या चाहते हैं?' नरसिंह जानते थे कि राजेंद्र चोल क्या कर रहे थे। वह सोमेश्वर और इकबाल का आकलन कर रहे थे। क्या वे

विश्वसनीय और भरोसेमंद थे। एक अत्यंत आवश्यक कौशल जो सभी सफल नेताओं में होता है, वह है दूसरों का शीघ्र मूल्यांकन करने की क्षमता। कुशल नेता इतने सारे लोगों से मिलते हैं, और उनके पास इतना काम होता है कि उनके पास, आम इंसानों की तरह, दूसरों की प्रेरणाओं का सही आकलन करने में वर्षों लगाने का समय नहीं होता।

कुशल नेताओं में आमतौर पर एक सूक्ष्म अंतर्ज्ञान होता है, जो दूसरों से मिलते समय उनसे बात करता है। यही अंतर्ज्ञान उनके सफल होने का एक प्रमुख कारक है।
सफलता।

सोमेश्वर ने कहा, "मेरे सम्राट..." उन्होंने इसके लिए एक भाषण तैयार किया था।
हर पल। उसने इसका अभ्यास किया था। कई बार। लेकिन यह भूल गया था।
सोमेश्वर, इस समय अपनी तमाम भावनाओं के बावजूद, एक बुद्धिमान और अनुभवी व्यापारी थे—भारत के, बल्कि दुनिया के सबसे सफल व्यापारियों में से एक। ज़्यादातर अच्छे व्यापारियों की तरह, वह भी बातों के अर्थ समझ लेते थे। और जब आप वाकई महत्वपूर्ण लोगों से मिलते हैं, तो आप स्थिति का अंदाज़ा लगाते हैं और बिना सोचे-समझे बोल देते हैं, बजाय इसके कि आप पहले से तैयार कोई बात रट लें।

'मैं...' सोमेश्वर रुका और राजेंद्र चोल के पीछे लगे चित्र, भगवान शिव और उन्हें प्रणाम करते दो चोल सम्राटों पर एक नजर डाली।

Machine Translated by Google

'मैं अंदाज़ा लगा सकता हूँ कि क्या योजना बनाई जा रही है, महाराज। क्योंकि कोई भी जीवित मनुष्य आपकी भगवान शिव की भक्ति पर संदेह नहीं कर सकता। और ऐसा कुछ भी नहीं है जो मैं आपको दे सकूँ जो आपके पास न हो। योद्धा या संसाधन। लेकिन महान सम्राट, मैं चार वर्षों से शत्रु की योजना और अध्ययन कर रहा हूँ। मैंने अपनी सारी संपत्ति, जो कि नगण्य नहीं है, केवल इसी उद्देश्य के लिए समर्पित कर दी है। मैंने अपना परिवार, अपना शहर और वह मंदिर खो दिया है जो मेरी आत्मा थी, वह मंदिर जिसके नाम पर मेरा नाम रखा गया था। मेरे पास इस मिशन के अलावा कुछ भी नहीं बचा है। कृपया मुझे इस युग के रावण के शिकार में गिलहरी बनने की अनुमति दें।'

सोमेश्वर का सच्चा विश्वास था कि महमूद भारतीय महाकाव्य रामायण के खलनायक रावण जैसा था, जिसने भगवान राम से युद्ध किया था। लेकिन सभी वृत्तांत पढ़ने के बाद, राजेंद्र चोल समझ गए कि यह अभियान रामायण पर आधारित नहीं होगा। रावण, अपने सभी दोषों और दुष्टताओं के बावजूद, कम से कम कुछ धर्म से बंधा हुआ था। महमूद रावण से कहीं अधिक दुष्ट था। वह असीम रूप से बर्बर था। और ऐसे शत्रुओं से युद्ध करते समय भारतीय शास्त्र स्पष्ट कहते हैं: शठे शाठ्यं समाचरेत्; दुष्टों के साथ अधिक क्रूर और दुष्टतापूर्ण व्यवहार किया जाना चाहिए।

लेकिन राजेंद्र चोल का ध्यान इस ओर नहीं था। उन्होंने पहचान लिया था कि सोमेश्वर ने बहुत ही सूक्ष्म तरीके से महत्वपूर्ण संदेश दिया था।

वह चार साल से दुश्मन का अध्ययन कर रहा है। यह अमूल्य है।

राजेंद्र ने सोमेश्वर के चेहरे और उसकी आँखों में गहराई से देखा। फिर वह इकबाल की ओर मुड़ा। उसने इकबाल के गले में लटके काले धागे में बंधा एक पेंडेंट देखा। पेंडेंट पर अरबी लिपि में 7 8 6 अंक अंकित थे। यह प्रतीकात्मक रूप से 'अल्लाह के नाम पर, जो अत्यंत दयालु और कृपालु है' कहावत का प्रतीक था। और अगर आप उस वाक्यांश के अक्षरों के संख्यात्मक मानों को जोड़ें, तो यह 7 8 6 होगा। राजेंद्र चोल जानते थे कि कई भारतीय मुसलमान ठीक यही पेंडेंट पहनते हैं। लेकिन तभी उनकी नज़र इकबाल के माथे पर पड़ी। उसके माथे पर तीन क्षैतिज रेखाएँ थीं, जो धूसर पवित्र राख से बनी थीं। बिल्कुल सोमेश्वर के माथे की तरह। यह स्पष्ट था कि दोनों व्यापारी उस दिन पहले भगवान शिव की पूजा करने के लिए वृहदेश्वर मंदिर गए थे।

राजेंद्र की सहज बुद्धि काम कर गई। वह नरसिंह की ओर मुड़ा और सीधे-सादे शब्दों में बोला, "उन्हें ले आओ।" "जी, महाराज।" नरसिंह

जानता था कि उसे दोनों व्यापारियों को कब और कहाँ ले जाना है। राजेंद्र ने तय कर लिया था। सोमेश्वर और इकबाल भी इस मिशन का हिस्सा बनने वाले थे।

धर्मी प्रतिशोध। सबसे महान पुरुषोचित प्रेरणा।

Machine Translated by Google

'धन्यवाद, महाराज,' दोनों व्यापारियों ने लगभग एक साथ कहा।

वे भी राजेंद्र चोल के गुप्त आदेश का महत्व समझ गए थे।

सोमेश्वर ने इकबाल की ओर रुख किया, जिसने अपने बैग में हाथ डाला।

कंधे पर हाथ रखा और बड़ी सावधानी से, बड़ी श्रद्धा के साथ, उसमें से एक वस्तु निकाली।

सोमेश्वर ने हाथ बढ़ाकर अपने मित्र से वह छोटा काला पत्थर ले लिया।

राजेंद्र ने तुरंत अनुमान लगा लिया कि वह वस्तु क्या हो सकती है। उसने पुष्टि के लिए नरसिंह की ओर देखा। अपने पूर्व सेनापति की आँखों में भाव देखकर, सम्राट को एहसास हुआ कि उसका अनुमान सही था। उसने तुरंत अपनी चप्पलें उतारीं और खड़ा हो गया। उसे उठते देख, तीनों आदमी भी उठ खड़े हुए। राजेंद्र आँखों में आँसू लिए सोमेश्वर की ओर चल पड़ा।

सोमेश्वर ने शक्तिशाली सम्राट के चेहरे पर दुख और शोक देखा।

सिर झुकाकर और हथेलियाँ ऊपर उठाकर, सोमनाथ शिवलिंग का खंडित टुकड़ा सम्राट को सौंप दिया। राजेंद्र ने धीरे से पवित्र अवशेष उठाया। उसे अपनी छाती से लगाया और फिर दोनों हाथों से माथे तक उठाया, और काफी देर तक उसे वहीं रखा।

राजेंद्र ने अपने आधिकारिक पद में जो नाम रखा था, उनमें से एक था

शिवचरण शेखर - जो शिव के चरणों को अपने मुकुट के रूप में धारण करता है।

सम्राट ने पत्थर को इतनी ज़ोर से पकड़ा हुआ था कि उसके अंगूठे के जोड़ सफ़ेद पड़ गए थे। मुझे माफ़ कर दो, प्रभु। मुझे माफ़ कर दो कि जब यह अपवित्रता घटी, तब मैं उसे रोकने के लिए मौजूद नहीं था।

राजेंद्र हमेशा सार्वजनिक रूप से अपनी भावनाओं पर अद्भुत नियंत्रण रखते थे। दूसरों की उपस्थिति में उनकी आँखों से आँसू शायद ही कभी बह पाते थे। लेकिन यह हृदय। जैसे ही सम्राट ने अपनी आँखें बंद कीं, एक आँसू उनके गाल पर बह गया, उनका शरीर गहरे और वेदनापूर्ण दुःख से काँप उठा। राजेंद्र की बाईं ... यह शक्तिशाली चोलों के लिए भी सहन करने योग्य नहीं था

कनपटी की एक प्रमुख नस ज़ोर से धड़क रही थी।

वह भारी साँस लेते हुए, अपने मन की सीमाओं में धीरे से दोहरा रहा था।

मुझे माफ़ कर दो, प्रभु। मुझे माफ़ कर दो।

केवल भगवान शिव ही, जिनका विशाल हृदय उस टूटे हुए पत्थर के माध्यम से प्रकट हो रहा था, इस दुःखद घड़ी में सहायता कर सकते थे। उन्होंने अपने शोकाकुल भक्त को सांत्वना दी।

जैसे-जैसे दुःख कम हुआ, राजेन्द्र के हृदय में तीव्र क्रोध उमड़ने लगा।

साधारण मौत से काम नहीं चलेगा। यह क्रूर होनी चाहिए। यह कठोर होनी चाहिए।

'कभी मत भूलना, कभी माफ़ मत करना,' इकबाल ने हॉल में प्रवेश करने के बाद पहली बार अपनी मातृभाषा बंगाली में कहा।

संक्षिप्त और प्रभावशाली शब्द।

Machine Translated by Google

सोमेश्वर ने तमिल में कहा, 'कभी मत भूलना, कभी माफ मत करना।' उन्होंने अपने हाथ जोड़ लिए।

राजेंद्र ने दोनों व्यापारियों की ओर देखा, " हम भूलेंगे नहीं। हम माफ़ नहीं करेंगे।"

'सोमनाथ का बदला लिया जाएगा। भारत माता का बदला लिया जाएगा।' धर्मी
प्रतिशोध। सबसे शक्तिशाली पुरुषोचित प्रेरणा।

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 4

आखिरकार वापस घर

अफ़ग़ानिस्तान के ग़ज़नी की सीमाएँ

'आखिरकार आप घर आ गए, मेरे मालिक।' तालिब ने अपने मालिक की ओर देखा, उसका दानेदार चेहरा तीव्र खुशी से सिकुड़ गया था, उसकी नुकीली ठुड्डी पर लहराती उसकी धूसर दाढ़ी हवा के फिर से तेज होने पर बेतहाशा लहरा रही थी।

उनकी थकी हुई आँखों के सामने गजनी का बंजर सफेद परिदृश्य फैला हुआ था।

'तीस साल... तीस वर्षों से मैं इस क्षण का सपना देख रहा हूं, तालिब,' इस्माइल ने अपने प्रिय वतन की ओर देखते हुए कहा, उसकी आंखें झिलमिलाते आंसुओं से अंधी हो गई थीं।

दोनों आदमी मिट्टी और पत्थर के रास्ते के आखिरी मोड़ के ऊबड़-खाबड़ किनारे पर खड़े थे। देर शाम की रोशनी दूर-दूर तक फैली मुश्किल से दिखाई देने वाली किले की दीवारों को एक कब्र जैसा एहसास दे रही थी। उनका छोटा सा कारवां—नौकरों और दुबले-पतले पहरेदारों की एक सेना—उनके पीछे संकरे रास्ते में रुका हुआ था, जो विशाल हिंदू कुश की बर्फीली दीवारों से छिपा हुआ था। यह उन अभिशप्त स्त्री-पुरुषों का एक समूह था जो अपने स्वामी के साथ रहे थे, उनके साथ बूढ़े हुए थे, उनके साथ रोए-धोए और षड्यंत्र रचे थे। गुज़गान के हर पुरुष, स्त्री और बच्चे ने अपने अलगाव के लिए ज़िम्मेदार व्यक्ति—उनके स्वामी के भाई और उनकी शक्ति और विशेषाधिकार के हड़पने वाले: महमूद ग़ज़नी—के प्रति व्यक्तिगत शत्रुता को पाला, पोषित और प्रज्वलित किया था।

इस्माइल ने अपना घोड़ा घुमाया और पाँच सौ खच्चरों, घोड़ों और बैलगाड़ियों वाले अपने कारवाँ को देखा। थके हुए पुरुष और महिलाएँ, गिरने की कगार पर।
उन्होंने जोर देकर कहा था कि वे बहुत तेज गति से यात्रा करें।

"आओ, आराम करें, तालिब। हम सुबह के उजाले तक इंतज़ार कर सकते हैं।" तालिब के कंधे राहत

से झुक गए और उसकी झुकी हुई पीठ थोड़ी और झुक गई। बादलों ने ताज़ी बर्फ़ गिरानी शुरू कर दी थी, और उन्हें अभी भी दश्ते-नवूर पार करना था, वह विशाल जमी हुई झील जो उन्हें उनके घर से अलग करती थी।

Machine Translated by Google

राजधानी शहर। उसने अपने फर कोट का कॉलर कानों पर खींचा और दस्ताने पहने हाथ उठाकर रुकने का संकेत दिया। कारवां जल्द ही बिखरने और बिखरने लगा। घुड़सवार घोड़े से उतरे और पहाड़ के बाईं ओर खाली ज़मीन पर डेरा जमा लिया। आग जलाई जा रही थी और थके हुए बच्चे थके हुए बड़ों के चारों ओर भाग रहे थे।

इस्माइल घोड़े से उतर गया और अपने सुन्न जबड़ों को कड़कड़ाने से रोकने के लिए दाँत पीसने लगा। बर्फीली हवा का एक ठंडा झोंका उसकी आस्तीनों के बीच से अंदर आ रहा था। उसने अपनी ठंडी उँगलियों से आस्तीन के सिरे पकड़े हुए थे।

ग़ज़नी के नवनियुक्त गवर्नर और ग्रैंड मुफ़्ती एक नीची चट्टान की ओर बढ़े, उनकी नज़र उस शहर पर टिकी थी जो तमाम मुश्किलों के बावजूद, फिर से उनकी सत्ता का केंद्र था। दश्ते-नवूर की शीशे जैसी सतह उस वीरान विस्तार में एक विशाल नीलम की तरह चमक रही थी जहाँ बर्फ के टुकड़े अँधेरे में हीरे की तरह गिर रहे थे। उन्होंने अपनी नज़र दूर से चमकती ग़ज़नवी सल्तनत की राजधानी की आग की लपटों पर टिका दी।

'बहुत सुंदर,' तालिब ने धीरे से कहा।

'बेहद खूबसूरत।' इस्माइल मुस्कुराया, अपनी आज़ादी का आनंद लेते हुए। 'यह अवर्णनीय है। यादें, तालिब। यादें। उन लोगों और घटनाओं की जो बहुत पहले बीत चुकी थीं—मेरे माता-पिता, मेरा बचपन और मेरा सिंहासन पर बैठना... क्या हो सकता था? 'यह जल्द ही फिर से आपका होगा, मेरे प्रभु,' तालिब ने अपने स्वामी की ओर विजयी दृष्टि डालते हुए और परोक्ष सत्ता की संभावना का आनंद लेते हुए कहा। 'आपने ... लेकिन महमूद के लिए...'

सुल्तान के मन को प्रभावित करने का असाधारण काम किया है। उसकी महत्वाकांक्षा बाकी काम कर देगी। अब तक, गजनी से बगदाद तक आने वाले पत्रों में केवल महमूद द्वारा मारे गए कई काफिरों और उसके द्वारा नष्ट की गई कई मूर्तियों की खबरें होती थीं। जाहिर है, ऐसी खबर पर उनकी प्रतिक्रिया खुशी से होती। लेकिन अब, जब उन्होंने सुना कि महमूद उन्हें भी लेने आ रहा है... खैर...' तालिब हंसने लगा।

अब्बासिद खिलाफत उनकी राजधानी बगदाद में स्थित थी। लेकिन अब्बासी पहले जितने शक्तिशाली नहीं थे। वे एक शक्तिशाली फ़ारसी राजवंश, बुयिड्स के प्रभावी नियंत्रण में थे, जो शिया मुसलमान थे। दूसरी ओर, तुर्की ग़ज़नवी और अरब अब्बासी सुन्नी मुसलमान थे। जैसा कि सर्वविदित है, अधिकांश शिया और सुन्नी राजवंश एक-दूसरे से घृणा करते थे और एक-दूसरे को धर्मत्यागी कहते थे।

इस्माइल ने कहा, "हमें चाहिए कि बुईद लोग यह सोचें कि महमूद उन्हें इसलिए मार रहा है क्योंकि वे शिया हैं। और अब्बासी लोग यह सोचें कि महमूद उन्हें हटाकर खलीफा बनना चाहता है।"

Machine Translated by Google

'और वे ज़रूर हमला करेंगे... मेरे रब, आप ही उनके लिए सुल्तान की जगह लेने वाले स्पष्ट सहयोगी होंगे। जल्द ही, हमारा प्यारा वतन उस से आज़ाद हो जाएगा। इस्माइल ने अपने सेवक की ओर मुड़कर हँसते हुए कहा। 'यह क्या है, तालिब? अपने नेक गुस्से को रोको मत!' ... वह ...'

तालिब अंदर से खुश था। उसने देखा था कि उसके मालिक की सर्वव्यापी घबराहट गायब हो गई थी। अब उसे खुद पर भरोसा और भरोसा था, तीस साल की यातनाएँ जल्दी ही भुला दी गईं। वह साथ खेल रहा था, क्योंकि वह अपने मालिक का भरोसा और निर्भरता जारी रखना चाहता था। 'वह राक्षसी जानवर...' तालिब के चेहरे पर एक ज़बरदस्त गुस्सा झलक रहा था जो उसके अंदर के गुस्से से कहीं ज़्यादा गहरा था। 'आप कितने अच्छे बादशाह होते, मालिक। ग़ज़नी और इस्लाम ने आपके रूप में एक महान पुत्र खो दिया, मेरे रब इस्माइल। लेकिन अब, समय की क्रूर धारा अंततः पीछे मुड़ जाएगी। आपका सिंहासन पर अपना उचित स्थान लेना दुनिया के लिए अच्छा होगा।'

"हाँ! और हम सिर्फ़ अमीर और मुफ़्ती की उपाधि तक ही सीमित नहीं रहेंगे..." इस्माइल ने कहा। "महमूद एक कठपुतली मौलवी चाहता है जो उसे ख़लीफ़ा घोषित कर दे।" लेकिन बहुत जल्द, कठपुतली खुद ही डोरियाँ काट देगी और कठपुतली चलाने वाले को उसकी हक़दार, गुमनाम कब्र में भेज देगी!' 'ज़रूर, आप ऐसा करेंगे, मेरे रब।' इस्माइल जमी हुई नदी को घूरता रहा। 'लेकिन हमें सावधानी और धीरे-धीरे चलना होगा।

पिछले तीन दशकों में कई गठबंधन बदल चुके होंगे। हमें ग़ज़नी के कुलीनों और पादरियों का समर्थन जीतना होगा। महमूद ने जो खलीफ़ाई का कारनामा शुरू किया है, उसे पूरा करना आसान होगा। सब्र। सब्र। थोड़ा और सब्र।' तालिब मुस्कुराया और सहमति में सिर हिलाया, और गर्मजोशी पैदा करने के लिए अपने हाथों को आपस में रगड़ा। पिछले कुछ हफ़्तों में उसका मालिक सचमुच अपनी क्षमता का परिचय दे चुका था।

'शराब, मेरे प्रभु?' एक कांपती हुई महिला की आवाज पीछे से आई दो आदमी.

वे घूम गये। एक पतली, छोटी हड्डियों वाली नौकरानी भेड़ की खाल का एक छोटा सा थैला पकड़े खड़ी थी एक हाथ में शराब और दूसरे में दो मिट्टी के प्याले थे।

"बिल्कुल सही समय पर," इस्माइल ने ताली बजाते हुए कहा। "शुक्रिया, रेशमा। तुम इसे तालिब को दे देना। जब खाना तैयार हो जाए तो हमें बता देना।"

महिला ने झुककर मदिरा की मशकें और प्याले तालिब को दे दिए, जिन्होंने उसे एक हल्की सी मुस्कान दी। वह अपने कानों और आधे चेहरे को ढके पतले दुपट्टे को काटते हुए भाग गई। इस्माइल उसे पीछे हटते हुए देख रहा था।

Machine Translated by Google

'हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि वह इस तरह हम पर आक्रमण न करे, महाराज,' उन्होंने कहा।
तालिब. 'पता नहीं उसने कितना सुना।' 'बकवास है, तालिब,' इस्माइल बोला।

'उसका दिमाग़ एक नासमझ बच्चे जैसा है जो
"उसके सिर पर पैदा होने के बाद से हर रोज़ मार पड़ती है। उसे याद भी नहीं रहेगा कि उसने कल क्या पहना था, हमारी बातचीत तो दूर की बात है।"

तालिब ने नीचे देखा और चुप रहा। अच्छा हुआ। उसे कुछ शक नहीं है।

"लेकिन उसकी बात करें तो, ग़ज़नी लौटने का एक और फ़ायदा है," इस्माइल ने धूर्त मुस्कान के साथ कहा। "अब मुझे सुख के लिए चमड़ी और हड्डियों से काम नहीं चलाना पड़ेगा। मुझे जिन औरतों के साथ मैं सोता हूँ, उनमें थोड़ी चर्बी और थोड़ी उछाल चाहिए। हम दोनों अब अपनी खोई हुई जवानी की भरपाई कर लेंगे!" "ज़रूर!" तालिब मुस्कुराया। उसने मशक खोली और दोनों प्यालों में शराब डाली।

'खाना तैयार है, हुज़ूर!' रेशमा फिर से बेसहारा सी, बिना किसी की नज़र पड़े, उनके पास आ गई। 'आइए। खाना और शराब आपके तंबू में पहुँच गए हैं।' इस्माइल ने सिर हिलाकर औरत को विदा किया और दोनों आदमी उनकी ओर चल पड़े।

पूरी तरह कार्यात्मक शिविर.

'आओ, खाएँ, पिएँ और सोएँ। और मेरे अपरिहार्य उत्थान के लिए जागें, तालिब।' 'और अत्याचारी के पतन के लिए, मेरे प्रभु।'

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 5

दो सम्राट और उनके स्वामी

गंगईकोंडा चोलपुरम

नरसिम्हन ने अपनी गति धीमी कर दी, जिससे सोमेश्वर और इकबाल उसके साथ आ गए। उसने जलती हुई मशाल ऊपर उठाई। भोर होने में बस कुछ ही देर बाकी थी, और पूर्णिमा की रात ने चोलपुरम के खूबसूरत शहर को शांति से रोशन कर दिया था।
लेकिन मशालों की रोशनी से फिर भी मदद मिली।

यह रात्रि का वह भाग था जिसे पूर्वज पारंपरिक रूप से कहते थे
ब्रह्म मुहूर्त के रूप में। यह सूर्योदय से पहले रात्रि का अंतिम पहर था, और रचनात्मकता के लिए अत्यंत शक्तिशाली माना जाता था, क्योंकि इस समय पीनियल ग्रंथि सबसे अधिक सक्रिय होती है। ऐसा माना जाता था कि इस समय सर्वोत्तम चिंतन और आविष्कारशील कार्य किए जा सकते हैं। वृद्ध व्यापारियों के लिए जागना बहुत जल्दी था, लेकिन हाथ में मौजूद कार्य के महत्व ने उन्हें अपनी नींद त्यागने के लिए प्रेरित किया।

राजेन्द्र चोल के साथ शाही महल में उनकी मुलाकात को पांच दिन हो चुके थे।
और सोमेश्वर इस सुबह का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था।

वे चुपचाप ब्रहदीश्वर, महान भगवान शिव को समर्पित मंदिर की ओर चले, जहां राजेंद्र चोल ने महमूद गजनवी पर हमले की योजना बनाने के लिए अपने प्रमुख सलाहकारों के एक समूह को इकट्ठा किया था।

जैसे ही सोमेश्वर अंतिम मोड़ पर पहुंचा, मंदिर का विशाल सिल्हूट दिखाई दिया
अचानक पूरी तरह से नज़र आने लगा। वह विशाल वैभव में उभर आया, और उसकी परिष्कृत सुंदरता, चमकदार चाँदनी में और भी ज़्यादा निखर गई।

बृहदीश्वर मंदिर परिसर का निर्माण एक उत्कृष्ट योजना के अनुसार किया गया था,
एक-दूसरे के बगल में रखे गए दो वर्गों से बना यह प्रांगण, उत्तम ज्यामितीय समरूपता प्रदर्शित करता है। प्रांगण में कई प्रवेश द्वार थे, जिनमें से प्रत्येक पर अलंकृत नक्काशीदार गोपुरम थे।

परिसर के अंदर मंदिर थे, जिनमें से अधिकांश पूर्व-पश्चिम अक्ष पर संरेखित थे। ये मंदिर विभिन्न धार्मिक परंपराओं के देवी-देवताओं को समर्पित थे, जिनमें भगवान राम और भगवान कृष्ण भी शामिल थे।

Machine Translated by Google

विष्णु परंपरा से भगवान गणेश और भगवान कार्तिक, शिव परंपरा से भगवान शिव और देवी शक्ति के रूप।

लेकिन परिसर के मध्य में स्थित मुख्य मंदिर भगवान शिव को समर्पित था। यह मंदिर विशाल था, जिस चबूतरे पर इसे बनाया गया था वह बीस हज़ार वर्ग मीटर का था। इस विशाल चबूतरे के प्रवेश द्वार पर भगवान नंदी का प्रतीक एक विशाल बैठा हुआ बैल था, जो मंदिर के मंडपों से उस गर्भगृह की ओर, जहाँ उनके स्वामी, भगवान शिव विराजमान थे, श्रद्धापूर्वक देख रहा था। मुख्य मंदिर संरचना में एक महामंडप था, जो एक विशाल स्तंभों वाला मंडप था, जिसके अंत में भगवान नंदी की मूर्ति के पास एक विशाल मंडप था, और संरचना के दूसरे छोर पर गर्भगृह था। एक अर्ध मंडप, या आंशिक मंडप, विशाल स्तंभों वाले मंडप को गर्भगृह से जोड़ता था, जिसकी रक्षा दो पत्थर की मूर्तियों से बने, अद्भुत रूप से जीवंत द्वारपाल करते थे, जिनकी ऊँचाई छह फुट थी। गर्भगृह के भीतर शिवलिंग के रूप में भगवान शिव विराजमान थे। विशाल मूर्ति ऊँची उठी हुई थी, लिंग तेरह फुट ऊँचा था और आधार योनि की परिधि लगभग साठ फुट थी।

गर्भगृह के ऊपर विमान या शिखर विस्मयकारी रूप से एक सौ अस्सी फीट ऊँचा था। यह दुनिया के सबसे ऊँचे मंदिरों में से एक है, लेकिन चोल साम्राज्य की पुरानी राजधानी तंजावुर के भगवान शिव मंदिर से दस फीट छोटा है। इस मंदिर का निर्माण राजेंद्र के दिवंगत पिता राजराजा ने करवाया था। विनम्रता के कारण, राजेंद्र अपने पिता की उत्कृष्ट कृति को पार नहीं करना चाहते थे और उन्होंने जानबूझकर अपने मंदिर के विमान को थोड़ा छोटा बनवाया। मंदिर का शिखर नौ मंजिलों तक ऊँचा था, लेकिन इसकी आकृतियाँ नाजुक रूप से वक्रीय थीं और ऊपर की ओर थोड़ी अवतल थीं, जिससे विमान को एक असामान्य लेकिन आकर्षक परवलयिक आकार मिला। शिखर पर एक पारंपरिक कलश या कलश के आकार का कलश था, जिस पर सोने की परत चढ़ी हुई थी, और एक जटिल नक्काशीदार कमल की कली थी जो आकाश की ओर खुली हुई थी।

पूरा मंदिर गंभीर पुरुषोचित ज्यामितीय आकृतियों और मनोहर स्त्रियोचित घुमावदार मीनारों का एक अद्भुत संयोजन था। यह सचमुच भगवान महादेव का प्रतीक था, क्योंकि उन्हें अर्धनारीश्वर, यानी आधे पुरुष और आधे स्त्री रूप में भी पूजा जाता था।

भगवान शिव को समर्पित उस अद्भुत वास्तुशिल्प को एक बार फिर देखकर सोमेश्वर का गला रुँध गया। उसे पश्चिमी समुद्र के किनारे स्थित सोमनाथ के भव्य मंदिर की याद आ गई।

यह उचित है कि हम इस मिशन के लिए प्रभु के निवास में मिलें
महादेव, देवों के देव।

Machine Translated by Google

मुख्य द्वार पर स्थित मीनार के पास सौ शाही सैनिक खड़े थे।
मंदिर परिसर, अभी भी सो रहे शहर की सुनसान सड़कों की रखवाली कर रहा है।
पुलिसकर्मी मंदिर परिसर की ऊंची दीवारों के ऊपर बने रास्ते पर तथा पूरे परिसर में तैनात थे।

सैनिकों ने अपने पूर्व जनरल नरसिम्हन को सलामी दी और उन्हें, दोनों व्यापारियों के साथ, शारीरिक तलाशी के बाद ही जाने दिया।
नियमों का पालन तो करना ही था, पूर्व जनरलों के लिए भी। आख़िरकार, यही चोल शासन था।

जैसे ही वे परिसर के अंदर पहुँचे, तीनों अपने जूते रखने के लिए बाईं ओर बने बड़े स्टॉल पर चले गए। नरसिम्हन जब अपनी चप्पलें उतारने के लिए झुके, तो उन्होंने अपने कंधे पर किसी का हाथ महसूस किया।

'सम्राट पहले से ही अंदर हैं,' विजयन ने अपने प्रमुख को सूचित किया।
"मुझे तो यही उम्मीद है।" नरसिंह मुस्कुराए। "मुझे नहीं लगता कि यह धूमधाम और जागरण मेरे सुबह-सुबह मंदिर जाने के लिए है।"

नरसिंह को सम्राट के कर्मचारियों द्वारा पहले ही सूचित कर दिया गया था कि
उन्होंने मंदिर में जल्दी आने की योजना बनाई थी, क्योंकि वे बैठक से पहले महादेव की पूजा करना चाहते थे। इसलिए, उन्हें विजयन के इस कदम से कोई आश्चर्य नहीं हुआ।
समाचार।

विजयन बोलते रहे। 'लेकिन उन्होंने मुझे देख लिया, सर।' डिप्टी पुलिस चीफ अपनी खुशी रोक नहीं पाए। 'सम्राट मेरे ठीक सामने से गुज़रे। उन्होंने सिर हिलाकर मेरा अभिवादन किया। मैं इतना स्तब्ध था कि झुक भी नहीं सका।' नरसिम्हन ने उनके कंधे पर थपथपाया और मुस्कुरा दिए। यह एक दुर्लभ सम्मान था।

सम्राट से बात करने की दूरी के भीतर होना, जिन्हें उनके साम्राज्य के अधिकांश निवासी लगभग दिव्य मानते थे। 'चलो चलें।' अब विजयन के साथ चार और लोग शामिल हो गए थे, और वे मंदिर परिसर से होते हुए भीतरी द्वार की ओर
चल पड़े, जो मुख्य मंदिर की ओर जाता था।

'रुको।'

शाही पहरेदार भीतरी प्रवेश द्वार को अवरुद्ध कर रहे थे, उनके भाले एक दूसरे पर तान दिए गए थे
एक-दूसरे से भिड़ गए। उनके सेनापति, कन्नन, नरसिम्हन के पास गए और उन्हें तुरंत पहचान लिया। सेनापति के पीछे एक दर्जन सैनिक पहरा दे रहे थे, उनके भाले भी एक-दूसरे पर चढ़े हुए थे।

'गुड मॉर्निंग, जनरल,' कन्नन ने कहा।
नरसिम्हन ने सुधार करते हुए कहा, 'अब यह पुलिस प्रमुख है।'
'आप हमेशा हमारे जनरल रहेंगे, सर।' कन्नन मुस्कुराया और झुक गया। 'आप
हो सकता है कि आप मुझे पहचान न पाएँ, जनरल। मैं कन्नन हूँ, चोल शाही रक्षक दल का सेनापति। आपने एक बार मेरी जान बचाई थी।'

Machine Translated by Google

'सचमुच?' नरसिम्हन आश्चर्यचकित हुए।

"आपने बहुतों की जान बचाई है, जनरल। लेकिन मैं आपको और देर नहीं करूँगा। मुझे पता है कि बादशाह आपका इंतज़ार कर रहे हैं। कृपया कागज़ात दिखाइए।" नरसिंह मुस्कुराए। चोल अधिकारी के मन में भय के बावजूद, वह

नहीं माने।

प्रोटोकॉल तोड़ो। नियमों का पालन करना ही होगा। शेर जैसी प्रतिष्ठा वाले जनरल के लिए भी।

नरसिंह ने अपने अंगवस्त्रम की तहों में हाथ डाला और सम्राट की मुहर लगी एक आधिकारिक सम्मन की प्रति निकाली। कन्नन ने जल्दी से उस प्रति का निरीक्षण किया। सब कुछ व्यवस्थित था, नरसिंह और उनके साथियों को अंदर जाने की अनुमति थी। संतुष्ट होकर, उन्होंने वह प्रति नरसिंह को वापस सौंप दी और अपनी छाती थपथपाई। उन्होंने सम्मानपूर्वक अपना सिर झुकाया, सेना के लिए निर्धारित औपचारिक सलामी दी, और रास्ता साफ़ करने का संकेत देते हुए एक तरफ हट गए।

चोल सैनिकों ने अपने भाले अलग कर लिए और एक विशिष्ट लड़ाकू बल की तरह सुंदर तालमेल के साथ एक तरफ खड़े हो गए। वे स्वयं राजेंद्र चोल के निजी सैन्य रक्षक थे।

नरसिम्हन ने अपनी मुट्ठी छाती पर थपथपाई और हल्का सा झुककर सैन्य सलामी स्वीकार की। ठीक वैसे ही जैसे एक जनरल या पूर्व जनरल को करना चाहिए।

उसके बुज़ुर्ग साथी सोमेश्वर और इक़बाल उसके पीछे-पीछे चल दिए। जैसे ही वह मीनार के गलियारे में कदम रखा, उसके मन में एक विचार कौंधा। वह पलटा। विजयन गेट के दूसरी तरफ़ से उन्हें देख रहा था।

नरसिम्हन ने त्वरित निर्णय लेते हुए कहा, 'हमारे साथ आओ, विजयन।'

विजयन दंग रह गया और स्वाभाविक रूप से उत्साहित भी, क्योंकि सोमेश्वर और इकबाल को नरसिम्हन के साथ देखकर वह अंदाज़ा लगा सकता था कि बादशाह से क्या बात होने वाली है। उसने कन्नन की तरफ़ एक नज़र डाली, जिसने उसे रोकने की कोई कोशिश नहीं की। विजयन तेज़ी से प्रवेश द्वार में दाखिल हुआ और अपने कप्तान को कृतज्ञता में सिर हिलाया।

चार लोगों का समूह तेज़ी से आगे बढ़ा। उनका ध्यान भटक गया।

दाहिनी ओर के गोलाकार रास्ते में हलचल से पता चला कि चोल साम्राज्य के प्रधानमंत्री, काथिरवन आ चुके थे। दूधिया सफेद रेशमी धोती और अंगवस्त्रम पहने , जो उनकी आबनूस-काली त्वचा के साथ बिल्कुल मेल खा रहा था, काथिरवन अपनी बढ़ती उम्र के हिसाब से आश्चर्यजनक रूप से तेज़ गति से आगे बढ़े। उनकी सफ़ेद दाढ़ी, करीने से कटी हुई, और मोम से बनी सफ़ेद मूंछों पर कुछ जिद्दी काले बाल, उनके दुबले-पतले शरीर की चमक को और बढ़ा रहे थे। काथिरवन के दोनों ओर के रक्षक आधे मार्च करते, आधे दौड़ते हुए उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की कोशिश कर रहे थे।

Machine Translated by Google

कथिरावन चोल वंश का अब तक का सबसे विश्वसनीय अधिकारी था। उसने सम्राट राजेंद्र के परपिता, राजराजा चोल की सेवा की थी। और अब, प्रधानमंत्री होने के अलावा, वह राजकुमार राजाधिराज चोल का सलाहकार भी था, जो सिंहासन के अगले उत्तराधिकारी थे। सम्राट के लंबे नौसैनिक अभियानों के दौरान उसने साम्राज्य की बागडोर संभाली थी। वह चोल दरबार की आवाज़ था।

कथिरावन ने उस सम्मानित जनरल को देखा और बायीं ओर मुड़कर उसकी ओर चला गया।

"आदरणीय प्रधानमंत्री कथिरावन," नरसिम्हन ने हाथ जोड़कर और सच्चे सम्मान से झुककर कहा। विजयन और दोनों व्यापारी उनके पीछे-पीछे चल दिए।

"चलिए, आगे बढ़ते हैं। सम्राट हमारा इंतज़ार कर रहे हैं," कथिरावन ने कहा, उसकी पतली, वृद्ध आवाज़ उसकी शानदार आभा को किसी भी तरह कम नहीं कर रही थी। कथिरावन चलने लगा और बाकी लोग भी उसके साथ चलने लगे। या कम से कम उन्होंने कोशिश तो की।

नरसिम्हन ने कहा, "प्रधानमंत्री जी, आप अभी-अभी चेरा भूमि से लौटे हैं। आप थके हुए होंगे।"

"दुष्टों को चैन नहीं मिलता, मेरे दोस्त," कथिरावन ने कहा, उसकी आँखें खुशी से नाच रही थीं। प्रधानमंत्री अपनी हास्य-भावना और आत्म-निंदा के लिए जाने जाते थे। लेकिन उनकी शुष्क बुद्धि एक धूर्त, निर्दयी मन को छुपाए हुए थी जो साम्राज्य के हितों के प्रति पूरी तरह वफ़ादार था।

'नरसिंह, गंभीरता से कह रहा हूँ... मेरा दिल सम्राट के साथ है... आप महादेव के प्रति मेरी भक्ति जानते हैं लेकिन मुझे चोल वंश के सर्वोत्तम हितों को ध्यान में रखना चाहिए। हमारी सेना पर्वतीय युद्ध के लिए प्रशिक्षित नहीं है। आप यह जानते हैं। मैं साम्राज्य को नुकसान पहुंचाने वाले पूर्ण युद्ध की अनुमति नहीं दूंगा, भले ही इसका कारण सम्मानजनक हो। कोई और रास्ता निकालना होगा।' नरसिम्हन को यह एहसास होने लगा था कि शायद बैठक से पहले कथिरावन का उनसे टकराना कोई दुर्घटना नहीं थी। और निश्चित रूप से उन्होंने केवल सम्राट के बजाय चोल वंश का सूक्ष्म उल्लेख नहीं छोड़ा। उन्हें एक ऐसी योजना तैयार करनी होगी जिसे

कथिरावन की भी स्वीकृति मिल सके। इसके अलावा, प्रधानमंत्री, निश्चित रूप से पर्वतीय युद्ध के बारे में सही थे, क्योंकि गजनी ठंडे हिंदू कुश पहाड़ों में ऊँचाई पर था, और चोल सेना को नौसैनिक और समतल भूमि युद्ध के लिए प्रशिक्षित किया गया था।

सोमेश्वर प्रधानमंत्री की बातें सुन रहे थे, जबकि वह
रईस के तेज़ कदमों के साथ कदम मिलाने के लिए संघर्ष कर रहा था। उसका दिल बैठ गया। वह सोच रहा था कि क्या बदला लेने की उसकी उम्मीद उसके जीते-जी पूरी हो पाएगी। या
कभी।

Machine Translated by Google



कथिरावन, नरसिंह, सोमेश्वर, इकबाल और विजयन मुख्य मंदिर के महामंडप में बैठे थे । उनके सामने अर्धमंडप था, और आगे गर्भगृह था। मंदिर की असाधारण सममित वास्तुकला और निर्माण के कारण, इस दूरी से भी, दल को गर्भगृह में, ठीक सामने, शिवलिंग का सीधा दर्शन हो रहा था। उन्होंने पीछे से राजेंद्र चोल को शिवलिंग की पूजा करते देखा। राजेंद्र चोल के बगल में, भाई की तरह, एक और व्यक्ति बैठा था। दूरी के कारण नरसिंह उसे पीछे से पहचान नहीं पाए। राजपुरोहित सम्राट और उनके मित्र के दोनों ओर खड़े थे।

प्रधानमंत्री ने कहा, 'हम सम्राट के बुलाने तक यहीं प्रतीक्षा करेंगे।'

नरसिम्हन ने कहा, 'बेशक, महान काथिरावन।'

कथिरावन ने दोनों व्यापारियों की ओर देखा।

नरसिम्हन ने कहा, "प्रधानमंत्री जी, मुझे उनका परिचय कराने की अनुमति दीजिए।" "यह है सोमेश्वर, सोमनाथ का एक गुजराती व्यापारी। और वह इकबालार, पूर्वी भारत का एक बंगाली व्यापारी। वे...'

'हाँ, मुझे बताया गया था,' कथिरावन ने कहा। 'वे सोमनाथर में थे।'

उस भयानक दिन पर।' प्रधानमंत्री ने सोमेश्वर की ओर देखा। 'महान सोमेश्वर, आपने शायद मेरी बात सुन ली होगी। मुझे इसके लिए खेद है। मैं उस वीभत्स महमूद से भी बदला लेना चाहता हूँ। लेकिन... बदला कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसका पीछा क्रोधित, अधीर हृदय से किया जाए। इसे एक ठंडे, निर्दयी, धैर्यवान मन की शांत गणनाओं के साथ किया जाना चाहिए।

हम बदला लेंगे, लेकिन अपनी पसंद के समय और जगह पर। न सिर्फ़ समय सही होना चाहिए, बल्कि रणनीति भी त्रुटिहीन होनी चाहिए।' सोमेश्वर ने दुनिया का इतना हाल देख लिया था कि उसे पता था कि प्रधानमंत्री

मंत्री जी वाकई चाहते थे कि उनकी बात पहले ही सुनी जाए। और वह उस व्यक्ति की बात का मर्म समझ रहे थे। उन्हें पता था कि उन्हें क्या कहना है। 'आप सही कह रहे हैं, महान प्रधानमंत्री जी। जैसा कि हमारे गुजरात में कहा जाता है, हथौड़ा तभी मारना चाहिए जब लोहा गरम हो। सीधे शब्दों में कहें तो, सही समय पर काम करना सबसे अच्छा होता है। लेकिन उससे भी ज़्यादा ज़रूरी बात यह है कि सिर्फ़ लोहा गरम और अर्ध-ठोस ही नहीं होना चाहिए। याद रखने वाली बात यह है कि हथौड़ा ठंडा और सख्त होना चाहिए।'

Machine Translated by Google

कथिरावन मुस्कुराया। ये गुजराती होशियार है.

सोमेश्वर ने आगे कहा, "उनके महत्वपूर्ण संदेश के लिए यह सही समय था।"

'गज़नी में हमारा एक विश्वसनीय संपर्क है, महाराज। कोई बहुत ऊँचा अधिकारी है।
इसके अलावा, हमें हाल ही में उस क्षेत्र में कुछ सकारात्मक प्रगति का पता चला है।' कथिरावन ने और जानकारी मिलने का इंतज़ार किया। जब

सोमेश्वर ने कुछ नहीं कहा,
और कुछ नहीं, तो वे और भी खुलकर मुस्कुराए। प्रधानमंत्री को उन लोगों से बात करने से ज़्यादा अच्छा कुछ नहीं लगता था जिनकी बुद्धि उनकी बुद्धि से टक्कर लेती थी।
वह जानता था कि सोमेश्वर और कुछ बताने के लिए क्यों इंतज़ार कर रहा था। 'हम सम्राट का इंतज़ार करेंगे।' कथिरावन विजयन की ओर मुड़ा और

मुस्कुराया।

नरसिम्हन ने कहा, "यह विजयन हैं, प्रधानमंत्री।" "वह व्यक्ति जिसे मैं जल्द ही
अगर मुझे जाने की इजाज़त मिले तो मैं अपना पद छोड़ दूँगा।' विजयन ने फिर झुककर, झिझकते और अनिश्चित भाव से कहा। नरसिम्हन ने बताया, 'यहाँ आने से पहले उन्होंने पांड्या क्षेत्र में कई वर्षों तक विशिष्ट युद्धकालीन सेवा की है। मुझे लगा कि वे हमारी योजना बनाने में मदद के लिए बहुमूल्य जानकारी दे सकते हैं।'

विजयन चुप रहे और नरसिम्हन के दयालु शब्दों के लिए उनके प्रति आभारी रहे।

"मैं जानता हूँ कि वह कौन है, सेनापति," कथिरावन ने नरसिंह से कहा। "आप भूल रहे हैं कि जब सम्राट और आप श्रीविजय पर विजय प्राप्त करने गए थे, तब मैंने ही उसे पुलिस प्रमुख नियुक्त किया था। वह एक अच्छा आदमी है।"

'मेरे प्रभु।' विजयन ने हाथ जोड़कर नमस्ते करते हुए सिर झुकाया।



राजेन्द्र चोल उनसे मिलने के लिए तैयार थे।

शाही रक्षकों ने पाँचों व्यक्तियों के चारों ओर अपनी चौकसी बढ़ा दी, उन्हें सम्राट तक ले जाने के लिए तैयार। उन्होंने पाँचों को मुख्य मंदिर के महामंडप से अर्धमंडप तक पहुँचाया, जहाँ यह बैठक होनी थी। प्रतिभाशाली वास्तुकारों और इंजीनियरों ने संरचना इस तरह बनाई थी कि समुद्र की लहरों के तटरेखा से टकराने की ध्वनि अर्धमंडप तक पहुँचती थी, लेकिन विशाल महामंडप में यह सुनाई नहीं देती थी। शायद वे चाहते थे कि भक्तगण गर्भगृह में भगवान शिव की पूजा करने से पहले समुद्र की ध्वनि सुनें।

Machine Translated by Google

समुद्र की आवाज़ सुनकर सोमेश्वर की आँखों में आँसू आ गए, क्योंकि उन्हें उस भयानक दिन की याद आ गई। उस भयावह शाम को वह बस समुद्र की पीड़ा भरी आवाज़ सुन पा रहा था, जब महमूद ने सोमनाथ मंदिर को जलाकर राख कर दिया था। उसने अपना सिर हिलाया और वर्तमान पर ध्यान केंद्रित किया।

समुद्र की उन्हीं आवाज़ों ने नरसिम्हन की आँखों में भी आँसू ला दिए।
उसने जो देखा था, उसके लिए नहीं, बल्कि उसने जो किया था उसके लिए। प्रचंड लहरें, खून से सना समुद्री झाग, तैरते हुए फूले हुए बेजान शरीर, कटे हुए अंग, दर्द और दुख की कर्कश चीखें...

और वो एक आवाज़। वो आवाज़ जिसने उसकी रूह पर ज़ख्म कर दिया था। मुझे उम्मीद है कि ये जीत इसके लायक रही होगी।

नरसिंह ने अपने गले में लटके स्वर्ण वलयाकार पेंडेंट को पकड़ लिया, तथा अपनी त्वचा पर अपराधबोध और पीड़ा की ज्वाला को महसूस किया।

मुझे आशा है कि यह जीत सार्थक रही होगी, क्योंकि अब आपकी आत्मा शापित है।

आवाज़ तेज़ होती गई। और तेज़ होती गई।

और फिर, पलक झपकते ही, वह दृश्य और आवाज़ गायब हो गए। नरसिंह ने इधर-उधर देखा। किसी ने ध्यान नहीं दिया था। उसने चुपके से अपने माथे से पसीने की एक बूँद पोंछी और पेंडेंट छोड़ दिया।

अंततः वे रुक गए और अनुरक्षक तितर-बितर हो गए। हॉल के बाएँ और दाएँ किनारों पर, स्तंभों पर सम्राट के कुलीन रक्षक पंक्तिबद्ध थे। वे मूर्तियों की तरह स्थिर खड़े थे, उनकी तलवारें म्यान में बंद तलवारों के मूठों पर थीं, और उनकी ढालें लहराते कंधों पर लटकी हुई थीं। दो स्तंभों को जोड़ने वाली एक दीवार थी, दोनों बाईं और दाईं ओर। बाईं दीवार पर एक उभरी हुई मूर्ति का अद्भुत चित्रण उकेरा गया था: स्वयं भगवान शिव द्वारा राजेंद्र चोल का राज्याभिषेक, जबकि उनकी पत्नी, देवी पार्वती, उनके बाईं ओर खड़ी थीं। महादेव कैलाश पर्वत पर अपने चट्टानी सिंहासन पर विराजमान थे, जबकि युवा चोल उनके सामने घुटनों के बल बैठे थे। भगवान शिव ने एक युवा राजेंद्र के करीने से कंघी किए हुए बालों पर एक साधारण लकड़ी का मुकुट धारण किया था, जिससे उनके स्थान पर गंगईकोंडा को पृथ्वी पर शासन करने का अधिकार प्राप्त हुआ। एक सपाट पथरीली सतह पर उकेरी गई, छेनी से तराशी गई ये मूर्तियाँ दीवार के भीतर जड़ी हुई थीं। इसने कलाकृति को नाजुकता-रोधी बना दिया। यह स्थायी होगा, जिसका अर्थ है कि राजेंद्र को शासन करने का अधिकार स्वयं भगवान शिव के आशीर्वाद से प्राप्त हुआ था। यह मुख्य मंदिर परिसर की बाहरी उत्तरी दीवार पर लगे एक बड़े संस्करण की एक प्रति थी।

राजेंद्र चोल उभरी हुई मूर्ति के नीचे खड़े थे, उनकी पीठ पास आ रहे आदमियों की ओर थी। उनका दोस्त उनके दाहिनी ओर खड़ा था। वे आपस में धीरे-धीरे बातें कर रहे थे।

Machine Translated by Google

वे लोग अपने सम्राट के पास गए और चुपचाप उसके पीछे रुक गए।
कथिरावन निकट आया और सम्राट के कान में धीरे से फुसफुसाया, 'महाराज, सभी लोग यहां हैं।'

राजेंद्र चोल ने मुड़कर देखा। उनके मित्र भोजदेव परमार भी पीछे मुड़े।
मध्य भारत में मालवा के सम्राट।

भोजदेव परमार, जो पूरे भारत में एक विद्वान राजा के रूप में विख्यात थे, राजेंद्र चोल के प्रिय मित्र और सहयोगी थे। उन्होंने पूर्वी राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और उत्तरी महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों सहित मध्य भारत के अधिकांश भाग पर शासन किया। राजेंद्र और उन्होंने उत्तरी दक्कन के चालुक्यों और बंगाल के पालों को हराने के लिए एक गठबंधन बनाया था। भारतीय भूमि की स्थिति ऐसी थी कि चालुक्य, चोलों के निकटतम उत्तरी पड़ोसी थे। और परमार, चालुक्यों के निकटतम उत्तरी पड़ोसी थे। परमारों के पूर्व में पालों का राज्य था।

प्राचीन भारतीय विद्वान चाणक्य ने कहा था कि एक विस्तारित साम्राज्य के लिए, उसका निकटतम पड़ोसी हमेशा एक शत्रु होता है। और उस शत्रु का पड़ोसी एक संभावित सहयोगी होता है। इसलिए, यह तर्कसंगत था कि चोल और परमार सहयोगी होते, और अपने निकटतम पड़ोसी, चालुक्यों पर संयुक्त रूप से आक्रमण करते। भोजदेव की आयु लगभग राजेंद्र के समान ही थी, और दक्षिण भारतीय सम्राट भोजदेव की अलौकिक कविताओं और नाटकों के सच्चे प्रशंसक थे, जिससे उनकी मित्रता और भी मजबूत हुई। भोजदेव राजेंद्र के साथ दक्षिण-पूर्व एशिया की विजय यात्रा पर भी गए थे। इसलिए मालवा के सम्राट ने सबसे पहले नरसिंह की ओर देखा और सिर हिलाया। नरसिंह ने झुककर प्रणाम किया, क्योंकि वे श्रीविजय की समुद्री यात्रा पर पहले भी मिल चुके थे।

'वनक्कम,' राजेंद्र चोल ने लोगों का अभिवादन किया।

'नमस्ते,' भोजदेव परमार ने कहा।

सभी उपस्थित लोगों ने दोनों सम्राटों के प्रति सम्मान व्यक्त किया।

'जैसा कि मैं अपने मित्र भोज से कह रहा था... जब मैंने यह उभरी हुई मूर्ति बनवाई थी,' राजेंद्र ने दीवार की ओर इशारा करते हुए कहा, '... मेरा इरादा था कि यह मेरे और मेरे लोगों के लिए एक स्थायी अनुस्मारक के रूप में काम करे कि मैं हमेशा कैलाश के स्वामी का सेवक रहूँगा, वह पर्वत जिसे भोज के लोग कैलाश कहते हैं। मेरी अब तक की सभी उपलब्धियाँ, मैंने जो ज़मीनें जीती हैं, मैंने जिन नए लोगों को दबाया है, मैंने जो धन इकट्ठा किया है, मैंने जो शहर बसाया है—ये सब केवल मेरे अभिमान और मेरे अहंकार की पूर्ति करते हैं। मुझे अपने दिव्य गुरु की सेवा केवल मंदिरों के निर्माता के रूप में करने का अवसर मिला

Machine Translated by Google

धर्मार्थ संस्थाएँ। अब जाकर मुझे... नहीं, हम सभी को योद्धाओं के रूप में व्यक्तिगत ... रहा
रूप से भगवान शिव की सेवा करने का अवसर मिला है।' राजेंद्र ने भोजदेव की ओर देखा।

भोजदेव ने कहा, "मेरे मित्र राजेंद्र, मैं भी आपके विचारों से सहमत हूँ। मैंने कई इलाकों पर विजय प्राप्त की है, एक नई राजधानी बनाई है, एक संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना की है, बाँध और नहरें बनवाई हैं। आपकी तरह, मैं भी जानता हूँ कि राजाओं के रूप में यह हमारा काम है। यह हमारी प्रजा के प्रति हमारा कर्तव्य है। लेकिन अब;·यह हमारे भगवान, हमारे ईश्वर, महादेव के प्रति हमारे कर्तव्य का प्रश्न है। हमें भगवान शिव के सह-भक्तों के रूप में एक मिशन सौंपा गया है।"

पुरुषों ने सम्राटों की ओर देखा और ध्यानपूर्वक सुना।

"हम सोमनाथर का बदला लेंगे," राजेंद्र चोल ने कहा, उनकी आवाज़ शांत थी लेकिन आँखों में आग साफ़ दिखाई दे रही थी, उन्होंने सम्मान के लिए तमिल ' अर' भी जोड़ा । प्रधानमंत्री कथिरावन की ओर एक संक्षिप्त नज़र डालते हुए, राजेंद्र ने आगे कहा, "मैं यह तर्क नहीं सुनना चाहता कि हमें ग़ज़नी के उस बर्बर महमूद पर हमला क्यों नहीं करना चाहिए।"
मैं आप सभी से यह सुनना चाहता हूं कि हमें यह कैसे करना चाहिए।'

'जी हां, महाराज।' कथिरावन का उत्तर तुरंत था।

'आओ, बैठो।'

कुछ सैनिक जल्दी से आरामदायक गद्दियाँ ले आए और उन्हें ज़मीन पर बिछा दिया। राजेंद्र चोल, भोजदेव परमार और पाँचों सैनिक बैठ गए, सभी ने ध्यान रखा कि उनकी पीठ शिवलिंग की ओर न दिखे।

पवित्र स्थान मंदिर।

'पहला, हम कितने सैनिक जुटा सकते हैं और कितनी जल्दी?' राजेंद्र ने तीखे स्वर में कहा। 'दूसरा, हम ग़ज़नवी की राजधानी तक कैसे पहुँचेंगे, क्योंकि हम चाहे जिस रास्ते से जाएँ, रास्ते में कई भारतीय राज्य पड़ेंगे जो हमारी सेना को आगे नहीं जाने देंगे क्योंकि उन्हें डर होगा कि हम उनकी ज़मीनें जीत लेंगे।' 'आपके पहले प्रश्न के उत्तर में, महाराज, हमारी स्थायी सेना में पचास से साठ हज़ार सैनिक हैं,' कथिरावन ने कहा। 'जिनमें पाँच हज़ार शाही रक्षक भी शामिल हैं। अगर आप दूसरे प्रदेशों और अपने अधीन राज्यों को बुलाएँ, तो हम शायद इस संख्या को

दोगुना कर सकते हैं, लेकिन उन सेनाओं को पहुँचने में कई महीने लगेंगे। और हाँ, मालवा के बारे में मेरी जानकारी के अनुसार, आपके परम मित्र और सहयोगी सम्राट भोजदेव परमार पचास हज़ार सैनिक और ला सकते हैं।'

भोजदेव ने राजेंद्र चोल की ओर मुड़ने से पहले कथिरावन की ओर देखते हुए मुस्कुराते हुए कहा, "मैं समझ सकता हूँ कि आपको अपना प्रधानमंत्री क्यों पसंद है। उनका खुफिया तंत्र अच्छा है। मेरे मालवा सैनिकों की ताकत का उनका आकलन सही है।"

Machine Translated by Google

राजेंद्र चोल भी मुस्कुराए। 'हालाँकि, अगर मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूँ, तो एक "लेकिन" तो आना ही है...' कथिरावन धीरे से हँसे। 'यह एक ज़रूरी

"लेकिन" है, महामहिम...'

हम बड़ी संख्या में सैनिकों को इकट्ठा कर सकते हैं, लेकिन हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि हमारे स्थायी सैनिक अभी-अभी चार साल के क्रूर अभियान से लौटे हैं। मालवा की स्थायी सेना के कई लोग भी इसी तरह के हैं। सैनिक थक चुके हैं, और नए रंगरूटों को नियुक्त करके प्रशिक्षित करना होगा। इसमें समय लगेगा।

मेरा अनुमान है कि कूच के लिए तैयार होने में कम से कम एक साल लगेगा। और फिर, इतनी बड़ी सेना के लिए भोजन और रसद की व्यवस्था, गजनी की ऊँची पहाड़ियों तक, एक चुनौती होगी। हमें उस पर भी काम करना होगा। लेकिन मैं सिर्फ़ भर्ती और रसद की बात कर रहा हूँ, महाराज। वीर नरसिम्हन सैन्य रणनीति और रणकौशल को मुझसे कहीं बेहतर समझते हैं।'

राजेंद्र ने नरसिम्हन की ओर रुख किया।

नरसिम्हन ने कहा, 'मैं प्रधानमंत्री से सहमत हूँ, माई लॉर्ड।'

हमारी पूरी सेना, जिसमें जागीरदार भी शामिल हैं, को समय लगेगा। लेकिन असली समस्या यह नहीं है...

असली समस्या हमारी सारी सेना को ग़ज़नी पहुँचाने की होगी।' 'हाँ,' कथिरावन ने सहमति

जताई। 'सारे सीधे रास्ते बंद हैं।' नरसिम्हन ने आगे कहा, 'अगर हम पश्चिमी रास्ता

अपनाएँगे, तो कर्नाटक, महाराष्ट्र और तेलंगाना के चालुक्य साम्राज्य और फिर गुजरात के सोलंकी साम्राज्य से हमारा सामना होगा। वे हमें हराने के लिए भले ही इतने मज़बूत न हों, लेकिन हमारी सेना को कमज़ोर करने और हमारे कई सैनिकों को मार डालने की उनकी क्षमता ज़रूर है। ग़ज़नी पहुँचने से पहले ही हमारी ताकत खत्म हो जाएगी।'

सम्राट भोजदेव को भी अपनी सेना को पार कराने के लिए सोलंकी राज्य से युद्ध करना पड़ा...'

कथिरावन ने कहा, "दोनों सम्राट पहले ही इन राज्यों के साथ युद्ध लड़ चुके हैं। इसलिए अगर हम चालुक्यों और सोलंकियों से कहें कि हम बस उनके इलाकों से होकर ग़ज़नी जाना चाहते हैं, तो भी वे हमारी बात पर विश्वास नहीं करेंगे।"

वे मान लेंगे कि हम उन पर विजय पाने आए हैं।' विजयन ने बीच में ही कहा,

'और अगर हम सोलंकियों से आगे निकल भी गए, तो भी हमें

थार रेगिस्तान से जूझना पड़ेगा, जहाँ सिंध पहुँचने से पहले ही इतनी बड़ी सेना के लिए रसद की कमी हो जाएगी, मुख्य ग़ज़नवी क्षेत्र की तो बात ही छोड़ दीजिए। बहुत सारी बाधाएँ हैं।' 'सहमत,' राजेंद्र ने कहा। 'पश्चिमी रास्ता अच्छा नहीं है।' विजयन ने एक सार्थक जानकारी देने

पर अपनी छाती थोड़ी फुला ली।

भोजदेव ने पूछा, 'अन्य विकल्प क्या हैं?'

इकबाल ने पूछा, 'नौसैनिक मार्ग के बारे में क्या ख्याल है?'

Machine Translated by Google

'हम इतनी बड़ी सेना को जहाज़ों पर नहीं ले जा सकते... वहाँ रसद और,

इससे भी ज़्यादा महत्वपूर्ण, समन्वय के मुद्दे,' नरसिम्हन ने कहा, जिन्हें नौसैनिक युद्धों का अपार अनुभव था। 'समुद्र में बड़ी संख्या में जहाजों के बीच संचार करना बहुत मुश्किल होता है। आपकी सेना के अलग-अलग हिस्से अलग-अलग समय पर ज़मीन पर उतर सकते हैं, और वह भी ग्वादर में दुश्मन ग़ज़नवी के इलाके में। दुश्मन उन्हें छोटी-छोटी टुकड़ियों में आसानी से मार गिराएगा। याद रखें, ग़ज़नी के साथ लड़ाई मुख्यतः ज़मीनी लड़ाई होगी, दक्षिण-पूर्व एशिया में हमारी लड़ाइयों के विपरीत, जो मूल रूप से समुद्र में लड़ी जाती थीं।' राजेंद्र चोल ने थोड़ी-सी झुंझलाहट के साथ कहा, 'आप सब समस्याएँ गिना रहे हैं। मुझे समाधान ढूँढ़ो!' कथिरावन जानता था कि राजेंद्र चोल क्या कर रहे हैं। वह अनुमान लगा सकता था कि सम्राट की योजना क्या है। लेकिन वह हमेशा विचार-विमर्श में विश्वास रखता था ताकि दूसरे लोग उसकी योजनाओं को मान लें—उन्हें यह विश्वास हो जाए कि अंतिम योजना उनका अपना सुझाव है। पहले स्पष्ट रूप से गलत विकल्पों पर चर्चा हो और सभी उन्हें खारिज कर दें, फिर तार्किक विकल्प

सामने आता है। और राजेंद्र को उम्मीद थी कि तार्किक कार्रवाई का रास्ता एक ही व्यक्ति से निकलेगा।

सम्राट ने सोमेश्वर की ओर देखा।

"महाराज," सोमेश्वर ने पहली बार बोलते हुए कहा। "मैं कोई सैन्य रणनीतिकार नहीं हूँ। लेकिन मैं चार साल से इस हमले के बारे में सोच रहा हूँ और इसकी योजना बना रहा हूँ। अगर मैं एक सुझाव दूँ तो: इस हमले के लिए किसी सैनिक की तलवार की नहीं, बल्कि किसी सर्जन की छुरी की ज़रूरत है।" राजेंद्र सोमेश्वर को देखता रहा, मानो कोई वादा न कर रहा हो, लेकिन

नरसिम्हन स्तब्ध रह गये।

नरसिम्हन ने पूछा, "क्या आप हत्यारे भेजने का सुझाव दे रहे हैं?" "यह युद्ध के सिद्धांतों के विरुद्ध है। हम पुरुषों की तरह लड़ते हैं। हम दुश्मन सैनिकों के खिलाफ खुली लड़ाई लड़ते हैं, जिनके पास हमसे सीधे और निष्पक्ष रूप से लड़ने का पूरा मौका होता है।"
और फिर हम उन्हें हरा देते हैं। इस तरह खून-पसीने और अदम्य साहस से अर्जित विजय में सम्मान है। कायरों की तरह छुपकर, चुपके से आकर सोते हुए अपने दुश्मन का गला काट देने में कोई सम्मान नहीं है।'
नरसिंह ने पुष्टि के लिए राजेंद्र चोल की ओर देखा। लेकिन उनके सम्राट ने कुछ नहीं कहा।

सोमेश्वर ने कहा, 'वीर नरसिंह! क्या तुमने आचार्य को पढ़ा है?'
चाणक्य के लेखन?

भोजदेव परमार, विद्वान शासक जिन्होंने भारत के अनेक राज्यों का अध्ययन किया था।
चाणक्य की रचनाओं सहित प्राचीन ग्रंथों में हल्की मुस्कान थी।

Machine Translated by Google

भारतीय उपमहाद्वीप में चाणक्य को सर्वत्र महानतम राजनीतिक, आर्थिक, शासन, युद्ध और सामाजिक सिद्धांतकारों में से एक माना जाता था। उनके बारे में सभी जानते थे, क्योंकि चाणक्य ने राजेंद्र चोल और भोजदेव परमार के समय से लगभग एक हज़ार चार सौ साल पहले, भारतीय इतिहास के सबसे बड़े और वैश्विक इतिहास के सबसे बड़े साम्राज्यों में से एक, मौर्य साम्राज्य के जन्म का मार्गदर्शन और संचालन किया था।

नरसिम्हन ने उत्तर दिया, 'बेशक, मैं जानता हूं कि आचार्य चाणक्य कौन हैं।'

सोमेश्वर ने पूछा, 'क्या आपने उनकी पुस्तकें पढ़ी हैं, महान नरसिम्हन?'

नरसिम्हन चुप रहे। दुर्भाग्य से, अधिकांश भारतीयों ने चाणक्य के बारे में सुना था, लेकिन बहुत कम लोगों ने वास्तव में उसे पढ़ा था।

सोमेश्वर ने आगे कहा, "आचार्य चाणक्य ने जो कुछ कहा था, उनमें से एक बात यह थी कि खुला युद्ध सबसे सम्मानजनक विकल्प है, लेकिन इसे हमेशा अंतिम विकल्प होना चाहिए। क्योंकि खुला युद्ध बहुत अप्रत्याशित होता है। जीत या हार का कोई पक्का अनुमान नहीं लगाया जा सकता। और अक्सर, खुले युद्ध में, अतिरिक्त नुकसान भी होता है। निर्दोषों को चोट पहुँचती है, है ना?" नरसिम्हन ठिठक गए। मुझे उम्मीद है कि यह जीत सार्थक रही होगी।

राजेंद्र ने अपने मित्र नरसिम्हन की ओर भी देखा, लेकिन उनमें इतनी विनम्रता थी कि वे... कुछ न बोलें। नरसिम्हन ने अपना सिर थोड़ा सा हिलाया, और अपने गले में लटके हुए कुंडलाकार पेंडेंट को न छूने के लिए ज़बरदस्त आत्म-संयम बरता।

सोमेश्वर ने आगे कहा, 'तो खुले युद्ध से पहले हमारे पास क्या विकल्प हैं ?'

'आचार्य चाणक्य के अनुसार, ये हैं साम, दाम, दंड, भेद— कूटनीतिक बातचीत, रिश्वत, दंड और शत्रुओं में फूट डालना। साम का कोई मतलब नहीं है , क्योंकि महमूद एक बर्बर है जो कूटनीति नहीं समझता। मैंने तब सोमनाथजी को बचाने के लिए रिश्वत देने की कोशिश की थी, लेकिन महमूद ने मना कर दिया। उसने मुझे बताया कि उसके धर्मग्रंथ उसे मूर्तियाँ तोड़ने और काफ़िरों का वध करने का निर्देश देते हैं। इसलिए अब केवल दंड और भेद ही बचे हैं। उसकी हत्या करो, लेकिन इस तरह कि ग़ज़नी में गृहयुद्ध छिड़ जाए। पागल कुत्तों को आपस में लड़ने दो, ताकि उन्हें हम पर हमला करने का समय ही न मिले।' राजेंद्र चोल उत्सुकता से आगे झुके।

"और सम्मान के सवाल पर," सोमेश्वर ने कहा—वह राजेंद्र चोल और भोजदेव परमार की ओर देख रहा था, लेकिन यह स्पष्ट था कि उसके शब्द नरसिंह के लिए थे—"एक सैनिक में साहस होता है, इसमें कोई संदेह नहीं। लेकिन युद्ध के मैदान में, वह अपने साथियों से घिरा होता है। वह जानता है कि अगर वह जीत गया, तो उसे पुरस्कार मिलेगा। वह जानता है कि अगर वह मर गया, तो उसकी बहादुरी के गीत गाए जाएँगे। लेकिन एक हत्यारे या जासूस के बारे में सोचो। वह दुश्मन के इलाके में अकेला है। वह जानता है कि अगर वह पकड़ा गया और मारा गया, तो उसका राजा उसे स्वीकार भी नहीं कर पाएगा।"

Machine Translated by Google

उसे। वह जानता है कि अगर वह कामयाब भी हो गया, तो भी उसकी खुलेआम तारीफ़ नहीं की जा सकती और न ही उसे कोई मेडल दिया जा सकता है, क्योंकि इससे हत्या का पूरा मतलब ही खत्म हो जाता है। तो फिर एक हत्यारा या जासूस ऐसा क्यों करता है? एक ही वजह, और सिर्फ़ एक ही वजह। एक ऐसी वजह जो सम्मान से भी बढ़कर है।'

कथिरावन गुजराती व्यापारी पर मोहित हो गया।

सोमेश्वर ने आगे कहा, 'और वह कारण है देशभक्ति। अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम। यही एकमात्र कारण है कि एक राष्ट्र के जासूस और हत्यारे धर्म और अधर्म के बीच की रेखा को लांघकर जो करते हैं, वह करते हैं। वे जानते ... यह सिर्फ़ सम्मान की बात नहीं है। वे जानते हैं कि उनके कर्मों से हैं कि अपने काम के कारण उन्हें अपनी आत्मा को कोसना पड़ सकता है। वे जानते हैं कि उनके काम के लिए उन्हें कभी सार्वजनिक रूप से धन्यवाद नहीं दिया जाएगा। वे जानते हैं कि उन्हें इसके लिए कभी भी स्वीकार नहीं किया जाएगा। फिर भी वे आगे बढ़ते हैं और ऐसा करते हैं।

क्यों? अपने देवताओं, लोगों और मातृभूमि की भलाई के लिए। मेरा मानना है कि जासूस और हत्यारे भी सैनिकों से कम नहीं, बल्कि उनसे भी ज़्यादा, महान योद्धा होते हैं।'

चारों ओर सन्नाटा छा गया।

सोमेश्वर ने आगे कहा, "और उतनी ही महत्वपूर्ण बात यह है कि हत्याओं में, अतिरिक्त क्षति की संभावना —जो खुले युद्ध में बहुत आम है—बेहद कम होती है। एक सर्जन की छुरी अनावश्यक रूप से अतिरिक्त मांस नहीं काटती।" इस आखिरी बात ने नरसिम्हन को बहुत ज़ोर से मारा। बहुत ज़ोर से।

'सोमेश्वर, तुम्हारा क्या विचार है?' राजेंद्र ने पूछा। 'मैं समझ गया कि हत्या का प्रयास। हम इसकी योजना तो बना सकते हैं। लेकिन ग़ज़नवियों के बीच विभाजन और फूट पैदा करना, यह हम कैसे कर पाएँगे? ' ...

सोमेश्वर ने कहा, 'केवल महमूद को मारना पर्याप्त नहीं होगा, महाराज।'

'अधिकांश तुर्क अपने धर्म की एक कट्टरपंथी व्याख्या का पालन करते हैं। ये लोग दुनिया की अब तक की सबसे बड़ी हत्या मशीनें हैं। उन्हें न कोई पछतावा है, न कोई अपराधबोध, न कोई झिझक। अविश्वसनीय बर्बरता। वे सचमुच अपने धर्म से बाहर के सभी लोगों को जानवर समझते हैं जिन्हें यातनाएँ दी जाएँ और मार दिया जाए। हमारे साथ व्यवहार करते समय उनमें ज़रा भी सम्मान की भावना नहीं होती... उन्होंने अल-तक़ियाह नामक एक बहुत ही सूक्ष्म अवधारणा को विकृत और गलत तरीके से व्याख्यायित किया है; वे कहते हैं कि उनका धर्म उन्हें काफ़िरों से झूठ बोलने और उन्हें गुमराह करने की अनुमति देता है जब उनकी अपनी स्थिति कमज़ोर हो। इसलिए, उनके साथ शांति संधि का कोई मतलब नहीं है, क्योंकि यह तभी तक चलेगी जब तक वे कमज़ोर हैं। जैसे ही वे मज़बूत होते हैं, वे उस शांति संधि को तोड़ देंगे, भले ही वह उनके ईश्वर के नाम पर की गई हो। वे पागल कुत्तों के झुंड की तरह हैं। स्थायी शांति संभव नहीं है। आपको उनसे लगातार लड़ते रहना होगा।'

राजेंद्र और भोजदेव दोनों ने इकबाल की ओर देखा, असहजता से किसी मुसलमान की उपस्थिति में बात करना।

Machine Translated by Google

इकबाल ने कहा, 'मेरे मित्र सोमेश्वर भाई सही कह रहे हैं, महाराज।'

'इन तुर्कों ने मेरे धर्म को अविश्वसनीय रूप से विकृत कर दिया है। मैं भारतीय इस्लाम का पालन करता हूँ, जो इन तुर्कों के धर्म से बिल्कुल अलग है।

मेरा इस्लाम मुझे कुछ बिल्कुल अलग सबक सिखाता है। पवित्र कुरान की आयत 109, आयत 6 में कहा गया है, " लकुम दीनुकुम वा लिया दीन"। इसका अर्थ है, " तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म, और मेरे लिए मेरा धर्म।" इसके अलावा, हम भारतीय मुसलमानों के लिए, हमारी ईमानदारी ही सब कुछ है। हम अपने वादे कभी नहीं तोड़ेंगे क्योंकि हमें लगता है कि अल्लाह हमें देख रहा है, और अगर हमने कोई गलत काम किया तो वह हमें कयामत के दिन सज़ा देगा। तुर्क स्पष्ट रूप से इस्लाम के महान धर्म का इस्तेमाल अपनी विजय और बर्बरता के लिए एक हथियार के रूप में करते हैं। उनके वादे, यहाँ तक कि अल्लाह के नाम पर किए गए वादे भी, उनके लिए कुछ मायने नहीं रखते। वे स्वयं इस्लाम के लिए शर्मिंदगी का कारण हैं। वे सचमुच पागल कुत्तों की तरह हैं।"

"इकबाल, मैं तुर्कों के प्रति आपके दर्द और गुस्से को समझता हूँ," राजेंद्र चोल ने कहा। "इस्लाम हमारे चेरा क्षेत्रों में व्यापारियों के माध्यम से आया। और यह हमारी ज़मीन पर एक शांतिपूर्ण और सकारात्मक प्रभाव रहा है। चेरा मुसलमान हमारी परंपराओं का सम्मान करते हैं, और हम उनकी परंपराओं का सम्मान करते हैं। ऐसा ही होना चाहिए।"

ये तुर्क अपनी बर्बरता से इस्लाम जैसे महान धर्म का अपमान कर रहे हैं।' 'तो फिर हम क्या करें, सोमेश्वर?' कथिरावन ने पूछा।

'पागल कुत्तों से निपटने का सबसे अच्छा तरीका उन्हें एक-दूसरे से लड़वाना है।

और उन्हें आपस में लड़ने में व्यस्त रखो।' 'और हम ऐसा कैसे करते हैं?'

'सौभाग्य से, अरब और फ़ारसी भी तुर्कों को

पागल कुत्ते समझते हैं।' 'लेकिन क्या वे भी मुसलमान नहीं हैं?' 'हाँ, अरब मूल मुसलमान हैं। लेकिन वे कहीं ज़्यादा सुसंस्कृत हैं।

वे विज्ञान, संगीत, साहित्य और अन्य सभ्य गतिविधियों

में रुचि रखते हैं।' 'इसका महमूद से क्या लेना-देना है?' 'खिलाफत।' 'खिलाफत?' 'कई भारतीयों ने खिलाफत शब्द के बारे में सुना है। वे सोचते हैं कि इसका मतलब विरोध है। दरअसल, यह खिलाफत का उच्चारण करने के तरीकों में से एक है। और खलीफा, तकनीकी रूप से, पूरे इस्लाम धर्म

का मुखिया होता है। हर इस्लामी राज्य में, पादरी और राजघराना अलग-अलग

होते हैं। और उनके बीच

हमेशा तनाव बना रहता है,

क्योंकि इस्लाम में दोनों ही शक्तिशाली हैं। लेकिन खलीफा अलग होता है, क्योंकि उसके पास शाही और पादरी, दोनों के रूप में शक्तियाँ होती हैं। पूरे इस्लामी जगत में केवल एक ही जीवित खलीफा हो सकता है। जाहिर तौर पर यही कानून है।' 'क्या आप इस पर विश्वास करते हैं?' भोजदेव ने इकबाल से पूछा।

Machine Translated by Google

इकबाल ने तुरंत जवाब दिया, 'दुनिया के इस हिस्से में, हम केवल विश्वास करते हैं
पहले चार सही मार्गदर्शित खलीफा जो पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) के अनुयायी थे। ये खलीफा अबू बक्र, खलीफा उमर, खलीफा उस्मान और खलीफा अली हैं। हम किसी और का अनुयायी नहीं हैं। हमारे अनुसार, वर्तमान में जीवित कोई भी व्यक्ति खलीफा नहीं हो सकता।

राजेंद्र ने सोमेश्वर से पूछा, 'तो इससे हमें क्या मौका मिलता है?' 'इस्लाम के उदय से ही, खलीफा हमेशा एक अरब ही रहा है। वर्तमान
खलीफा एक अब्बासिद खलीफा है, जिसके साथ चोल साम्राज्य भी व्यापार करता है। वह अपने पूर्वजों से कहीं कमज़ोर है,
और फ़ारसी बुईद राजवंश उस पर प्रभावी नियंत्रण रखता है।' 'और?' 'और महमूद खुद को खलीफा घोषित करना चाहता है।' राजेंद्र चोल ने आखिरकार दो और दो जोड़कर अपनी बात सीधी की।

'गज़नी में पादरी और राजघराने आपस में लड़ रहे हैं। और फ़ारसी, अपने अरब सहयोगियों के साथ, तुर्कों के ख़िलाफ़ लड़ रहे हैं। यह सब महमूद की हत्या से शुरू हुआ है।' 'हाँ, यही योजना है। अगर सब कुछ ठीक रहा, तो हम सेल्जुक तुर्कों को भी हरा सकते हैं।'

ग़ज़नवी तुर्कों के ख़िलाफ़ अरबों की तरफ़ से। इस तरह तो गृहयुद्ध जल्द ख़त्म नहीं होगा।' 'महमूद के ख़लीफ़ा बनने की योजना के बारे में आपको कितना यकीन है?' सोमेश्वर ने इक़बाल की ओर
रुख़ किया, जिसने अपने थैले में हाथ डालकर एक पुस्तिका निकाली। सोमेश्वर ने झुककर उसे राजेंद्र चोल को
भेंट किया। और उसने एक पुस्तिका भी देते हुए कहा, 'संदेश कूट भाषा में है, महाराज।

इसे डिकोड करने के लिए इस क्रिप्टोग्राफिक कुंजी शीट की आवश्यकता है।' राजेंद्र चोल ने स्क्रॉल
और क्रिप्टोग्राफिक कुंजी शीट कथिरावन को दे दी।

कथिरावन एक कुशल बहुभाषीय विद्वान थे और विभिन्न लिपियों में निपुण थे।
कोड डिक्रिप्शन के सिद्धांतों में भी पारंगत थे। लेकिन क्रिप्टोग्राफ़िक कुंजी उपलब्ध होने के कारण यह आसान था। शुक्र है, यह एक छोटा संदेश भी था।

कथिरावन ने इस छोटे से संदेश को तुरंत समझ लिया। 'महमूद बनना चाहता है
ख़लीफ़ा। यही मौक़ा है।' 'हम्म,' भोजदेव परमार बुदबुदाए।

'और मैं इस मुहर को पहचानता हूँ,' कथिरावन ने आगे कहा। 'यह शाही मुहर है
ग़ज़नवी मुहर। लेकिन मुझे दूसरी वाली नहीं मालूम।'

सोमेश्वर ने बताया, 'यह गजनी की जामा मस्जिद के ग्रैंड मुफ्ती की मुहर है।'

Machine Translated by Google

सब लोग सन्न रह गए। यह साज़िश पूरी तरह से फैल गई।
ग़ज़नवी सत्ता संरचना के शीर्ष तक। शाही परिवार के भीतर से कोई और ग्रैंड मुफ़्ती, दोनों ही इस साज़िश में शामिल थे।

सोमेश्वर ने इसकी योजना बहुत अच्छी तरह बनाई थी।
"हम्म। यह तो... बहुत दिलचस्प है।" राजेंद्र चोल ने भोजदेव की ओर देखा, जिन्होंने सिर हिलाया। वे अपने सामने बैठे पाँच आदमियों की ओर मुड़े। "हमें इस पर विचार करने के लिए एक हफ़्ते का समय दीजिए," चोल सम्राट ने बैठक समाप्त करते हुए कहा।

सोमेश्वर ने सिर हिलाया और झुककर प्रणाम किया। राजेंद्र चोल और भोजदेव परमार सारी जानकारी दूसरे स्रोतों से जाँचना चाहेंगे। यह बात समझ में आती है।

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 6

एक पत्नी की सलाह

गजनी

ग़ज़नी की रानी कौसरी जहाँ, अपनी दासियों और हिजड़े रक्षकों से घिरी हुई, महमूद के शीतकालीन महल के गलियारों से गुज़र रही थीं। उनकी नाज़ुक, लंबी उंगलियाँ उनके सपाट पेट पर गुंथी हुई थीं, और उनका लंबा, पारदर्शी, हल्के नीले रंग का गाउन फ़ारसी संगमरमर के फर्श पर फैला हुआ था। लगभग अदृश्य गुलाबी सोने की चेन में पिरोए गए बड़े-बड़े बसरा मोती उनकी पतली गर्दन की शोभा बढ़ा रहे थे, और उनके कान सुनहरे भूरे बालों की घनी लहरों से छिपे हुए थे।

रानी तेज़ी से चल रही थी, उसके चेहरे पर चिंता का भाव था। उसने अपने हाथ खोले और एक हाथ से गले में लटके मोतियों को पकड़ लिया, मानो गुस्से में उन्हें खींचकर फर्श पर लुढ़का देना चाहती हो। या शायद उसे उस चीज़ को खोने का डर था जिसके लिए उसने इतना कुछ दिया था। खैर, मोती वहीं रहे जहाँ थे, उसकी बेहद खूबसूरत गर्दन में।

सर्दियों का सूरज पहाड़ों के पीछे छिप चुका था। सुबह बेचैनी भरी और दिन थका देने वाला था। निर्वासन से लौटे इस्माइल को औपचारिक रूप से ग़ज़नी का गवर्नर और जामा मस्जिद का ग्रैंड मुफ़्ती नियुक्त किया गया था। दोपहर के नियत समय तक दरबार पूरी तरह से उपस्थित था, और ग़ज़नवी सल्तनत के सभी प्रतिनिधि मस्जिद परिसर में एकत्रित थे। महमूद ने सभा को बड़े ही गर्व और शान से संबोधित किया था, और इसमें निस्संदेह उस कंधार अफ़ीम का भी योगदान था जो उसने दिन में पहले पी थी।

दोपहर ढलते-ढलते वहाँ का कोहराम उसकी आँखों को डराने लगा था। सुल्तान अचानक अपने महल के लिए निकल गया था, किसी को भी उसके गायब होने का पता नहीं चला। हालाँकि, रानी को यह बात समझ में आ गई। वह बिना हिले-डुले, अपने पति को अपनी प्रेमिका मलिक अयाज़ के साथ भागते हुए, एक छोटी मछली को देखते हुए, एक किंगफिशर की तरह देखती रही। इस बीच, इस्माइल कुलीन वर्ग के लोगों के साथ घुल-मिल रहा था, पुराने रिश्ते और दोस्ती को फिर से जोड़ रहा था।

कौसरी एक घंटा और दरबार में बैठी रही, उसके अंदर शब्दहीन, दबा हुआ क्रोध बह रहा था। वह अभी भी मूर्ति बनी हुई थी।

Machine Translated by Google

बेवकूफ़!

रानी अपने पति के शयनकक्ष के मेहराबदार द्वार पर पहुँची।
अब वह उसकी नहीं रही। दरवाज़ा खुला था, लेकिन पर्दे खिंचे हुए थे।
कौसरी जहाँ ने महमूद और उसकी प्रेमिका की दबी हुई आवाज़ें और हँसी सुनी।

उसने अपने अनुचरों को दरवाज़े से दस गज की दूरी पर रुकने का आदेश दिया। वे वहीं रुके रहे।
पूरी तैयारी में। विनम्र। धमकी-रहित। लेकिन कार्रवाई के लिए तैयार।
उसने दोनों पहरेदारों की सलामी को अनसुना कर दिया। उनमें से एक ने हिम्मत जुटाकर अपना भाला तिरछा करके हाथ
बढ़ाया और कौसरी का रास्ता रोक दिया। रानी वहीं रुक गईं और धीरे से अपना सिर उस आदमी की ओर घुमाया जिसने उन्हें उस कमरे में
जाने से रोका था जो तकनीकी रूप से अभी भी उनका शयनकक्ष था।

कौसरी ने धीरे से कहा, 'एक तरफ हटो, दुष्ट।'
गार्ड का खून ठंडा हो गया और उसके रोंगटे खड़े हो गए।
'अभी! इससे पहले कि तुम्हारा चेहरा मेरी यादों में बस जाए।' बेचारा पहरेदार उसकी
क्रूर प्रतिष्ठा से वाकिफ था और अब खुद को शैतान और गहरे समुद्र के बीच फँसा हुआ पा रहा था—अपने सुल्तान और रानी के
बीच। पलक झपकते ही उसने तय कर लिया कि किस तरफ जाना है और अपनी जगह पर डटा रहा। उसका मन बेचैनी से बाहर
निकलने के रास्ते ढूँढ़ रहा था।

कमरे में आवाज़ें खामोश हो गई थीं। महमूद और अयाज़
इसमें कोई संदेह नहीं कि वह उसकी उपस्थिति से अवगत है।
'हज़ार माफ़ी, महान रानी,' बदकिस्मत गार्ड ने माफ़ी मांगी। 'और
एक हज़ार और। मैं महान सुल्तान के सीधे आदेश पर काम कर रहा हूँ। मुझे निर्देश दिया गया है कि किसी को भी अंदर न आने दूँ। वह
लाहौर के राजा के साथ राज्य के कुछ ज़रूरी मामलों में व्यस्त हैं।'

दूसरे गार्ड ने सहमति में जोर से सिर हिलाया, उसे स्पष्ट रूप से राहत मिली कि उसका
सहकर्मी ने चुनौती स्वीकार कर ली थी। रानी के मन में अपना चेहरा छापने का उसका कोई इरादा नहीं था। रानी अपने मातहतों को
परेशान करने वाली मक्खियों की तरह कुचलने के लिए जानी जाती थीं।

कौसरी जहाँ के होंठ एक भयावह मुस्कान में फैल गए, जिससे उनका सुंदर, मोहक चेहरा विकृत हो गया।

"मुझे यकीन है, ज़रूरी है। और वो भी गुप्त," उसने कहा। "अब मैं अंदर जा रही हूँ। अपनी टाँग सीधी करो, बेवकूफ़। अगर तुम्हें
अपने परिवार की परवाह है, तो तुम ग़ज़नी की रानी को जाने दोगे। अगर नहीं, तो मैं तुम्हारे इस भाले से खुद को रगड़ लूँगी। मेरा खून बहाया
जाएगा... तुम्हें क्या लगता है, तुम्हारा क्या होगा?" कौसरी ने अपने अनुचरों की ओर देखा। "हकीम?" उसने धीरे से पुकारा।

Machine Translated by Google

'तैयार हो जाओ, मेरी लेडी,' एक बड़े कद के हिजड़े ने जवाब दिया, जो स्पष्ट रूप से अफ़्रीकी मूल का था। उसने उसने अपनी तलवार की मूठ पर हाथ रखा और डरे हुए पहरेदार की आँखों में देखा, फिर एक बड़ा कदम आगे बढ़ाया। आठ हट्टे-कट्टे हिजड़े, जिनमें से प्रत्येक की ऊँचाई छह फुट से ज़्यादा थी, हकीम के पीछे आ खड़े हुए। कुछ के हाथ में तलवारें थीं, तो कुछ के हाथ में दमिश्क स्टील से बने पतले खंजर।

सुल्तान के पहरेदार मूर्ति की तरह खड़े थे। न पीछे हट रहे थे, न आगे बढ़ रहे थे।
आतंक ने उनकी मांसपेशियों और दिमाग़ को जकड़ लिया था। हकीम और हिजड़ों ने एक कदम और बढ़ाया। और इंतज़ार करने लगे।

"दया करो, मेरी रानी," साहसी पहरेदार ने घुटनों के बल बैठते हुए, भाला अपनी जगह पर पकड़े हुए, विनती की। उसका साथी उसके पीछे-पीछे चला। "मुझे सुल्तान को आपके आगमन की सूचना देने की अनुमति दीजिए। मैं अपनी जान जोखिम में डाले बिना आपके आदेश की अवहेलना नहीं कर सकता, मैं समझता हूँ। लेकिन मैं सुल्तान की अवज्ञा भी नहीं कर सकता।" "इसकी ज़रूरत नहीं होगी," एक पुरुष की मधुर आवाज़ ने बीच में ही कहा,

मक्खन। वक्ता सुल्तान के शयनकक्ष से किसी छुपती हुई बिल्ली की तरह निकला था।

मलिक अयाज़.

महमूद के दरबार में सबसे प्रभावशाली लोगों में से एक माना जाता है।
अपनी प्रबल प्रतिद्वंद्वी कौसरी जहाँ के बाद दूसरे स्थान पर। कई बार, उनका प्रभाव कौसरी जहाँ से भी ज़्यादा होता था।

लंबा और दुबला-पतला, उसकी गोरी त्वचा सफ़ेद सिलिमेनाइट की तरह चमकती थी। उसके पतले होंठ
दूधिया सफ़ेद, बेदाग़ दांतों की एक पंक्ति दिखाते हुए, अलग-अलग थे। उस युवक ने एक शानदार, गहरे लाल रंग का मखमली लबादा पहना हुआ था। वह एक तुर्की रईस जैसा लग रहा था, लेकिन तुर्की चेहरे-मोहरे के बिना। लहराते बाल जो अलौकिक सुनहरे-भूरे रंग के थे, पतले और तीखे चेहरे, और भूरी आँखें जो भूरे और हरे रंग का एक सम्मोहक संयोजन थीं, कई लोगों को लगता था कि जब सुंदरता से दर्शकों को चकित करने की बात आती है, तो जॉर्जिया का पूर्व गुलाम मलिक अयाज़ किसी और से नहीं, बल्कि खुद खूबसूरत कौसरी जहाँ से मुकाबला करता था।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि महमूद उस पर मोहित हो गया।

अयाज ने अपनी पंखदार टोपी उतार दी और गजनी की रानी को प्रणाम किया।

कौसरी जहान ने अपनी बड़ी-बड़ी आंखें सिकोड़ लीं और अपनी जहरीली निगाहें अपने पति की प्रेमिका पर गड़ा दीं।

उस बांके ने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ उसकी तरफ देखा। लेकिन लाक्षणिक खंजर खींचे जा चुके थे। अयाज़ और कौसरी एक-दूसरे को घूर रहे थे, और एक पल के लिए ऐसा लगा कि दोनों के बीच घमासान लड़ाई छिड़ने वाली है।

Machine Translated by Google

ईर्ष्यालु शेरनियाँ अपनी शक्ति के स्रोत, शेर पर अपने नियंत्रण के लिए झगड़ रही हैं।

लेकिन इस बार अयाज़ पीछे हट गया। उसने कहा, "अंदर आओ, मेरी रानी।"
हल्की-सी हँसी के साथ बोला, 'यहाँ मेरा काम पूरा हो गया है, कम से कम आज रात के लिए तो।'
कौसरी जहाँ ने कोई जवाब नहीं दिया। मलिक अयाज़ के जाते ही वह मुड़ी।
और अपने हिजड़े पहरेदारों को आराम करने का आदेश दिया। फिर वह उत्तरी ध्रुव की बर्फीली हवाओं की तरह,
जैसे भाप से भरी मैदानी गर्मी को बुझाने के लिए आ रही हों, शयन कक्ष में चली गई।

कमरा बहुत बड़ा था, फिर भी गर्म और आरामदायक लग रहा था। बीच में एक बड़ा सा पलंग था, जिसकी उखड़ी हुई चादरें पसीने से भीगी हुई थीं। कमरे के दाहिनी ओर, बिस्तर की ओर मुँह करके, आलीशान फर्श पर गद्दे बिछे हुए थे। दो गद्दियों के बीच जड़ाऊ धूम्रपान के पाइप रखे थे, जो भरकर इस्तेमाल के लिए तैयार थे। कमरे के बाईं ओर लकड़ी और अलबास्टर से बनी एक शानदार गोल मेज एकांत में शान से रखी थी। उस पर शराब का एक चीनी मिट्टी का जार रखा था जिसके चारों ओर इस्तेमाल किए हुए प्याले थे। कमरे के चारों कोनों में पत्थर की चौकी पर धातु के तेल के दीपक रखे थे। दो बुझे हुए थे। कमरे की घुटन भरी सीमा से कुछ राहत पाने के लिए एक संकरी खिड़की खोली गई थी। इससे कोई फायदा नहीं हुआ।

महमूद कमरे के बीचोंबीच खड़ा था, उसके चेहरे पर मुस्कराहट थी। अपने फर वाले नाइटरोब में गर्मजोशी से लिपटा हुआ, उसने अपने लंबे, मिट्टी से भरे नाखूनों से अपने सिर पर टोपी के आकार के गंजे धब्बे को खरोंचा। सुल्तान ने अपनी पत्नी को नीले मखमल के फर्श पर बैठने के लिए आमंत्रित किया, उसके हंसमुख व्यवहार में शर्मिंदगी का ज़रा भी नामोनिशान नहीं था। बल्कि, वह उसे देखकर बहुत खुश लग रहा था।

रानी वहीं खड़ी रही।
"कौसरी!" महमूद ने खुशी से धीरे से कहा, अपनी बाहें फैलाते हुए, उसके दाहिने हाथ में शराब का गिलास था। जैसे ही वह लड़खड़ाकर आगे बढ़ा, थोड़ी शराब ज़मीन पर गिर गई। "मेरी सबसे प्यारी दोस्त। मेरी सबसे भरोसेमंद सलाहकार। मेरी पत्नी।" रानी ठिठककर खड़ी रही। हालाँकि, उसने अपनी विनम्रता नहीं खोई।

'महाराज,' उसने विनम्रतापूर्वक झुककर अभिवादन किया।
महमूद ने उस विकृत चांदी के प्याले से शराब का एक घूंट लिया और चल दिया।
उसकी ओर। उसने एक बार किसी को मारने के लिए उस प्याले को उसके सिर पर पटक दिया था—उसे याद नहीं कि कौन था—और इसलिए यह उसकी पसंदीदा चीज़ों में से एक थी
कप.
"मुझे यकीन है कि आपने मुझे समारोह से अचानक चले जाने के लिए माफ़ कर दिया होगा, महारानी," वह लड़खड़ाते हुए, उससे दो इंच दूर रुकते हुए, धीरे से बोला। "अयाज़..." उसने दरवाज़े की ओर इशारा करते हुए कहा। "मलिक अयाज़..." उसने दोहराया। "उसे और मुझे कुछ ज़रूरी बातें करनी थीं।"

Machine Translated by Google

उसकी साँसें बदबूदार थीं। कौसरी पीछे नहीं हटी। बल्कि, उसने अपने पति की उठी हुई कलाई को हौले से थामकर उसे आश्वस्त किया। महमूद थोड़ा पीछे हट गया। उसकी नज़रें उसके शरीर को सिर से पाँव तक घूर रही थीं, और उसने देखा कि वह साफ़ तौर पर नशे में था और व्यभिचार की बू आ रही थी। उसकी दाढ़ी उलझी हुई थी और गिरी हुई शराब से भीगी हुई थी। और उसके सिर के जो भी बाल बचे थे, वे खड़े हो गए थे और उसे एक जोकर जैसा बना रहे थे।

रानी ने अपनी उंगलियाँ उसकी गीली दाढ़ी में फिराईं और सावधानी से उसकी गांठें खोलीं। अनायास ही मुँह में आया पित्त निगल लिया।

मुझे जो काम करने हैं, वे हैं: 'आपको ⋯

मुझे कोई स्पष्टीकरण देने की ज़रूरत नहीं है, महाराज,' उसने विनम्रता से फुसफुसाते हुए महमूद के लबादे का पट्टा कस दिया और उसे गर्म रखने के लिए उसका कॉलर अंदर खींच लिया। 'आप मेरे स्वामी और मालिक हैं। आपका वचन ही कानून है, और आपके कार्यों पर कोई प्रश्न नहीं है।' महमूद एक प्रसन्न बच्चे की तरह मुस्कुराया। उसने उसके गाल को छुआ और अपना हाथ उसकी ओर

फिराया।

तर्जनी उंगली उसके ऊपरी होंठ पर रखी। "मुझे नहीं पता कि तुम्हारे बिना मैं क्या करता, कौसरी," उसने नशे में धुत्त स्वर में ऊँची आवाज़ में कहा। "तुमने हमेशा पूरी लगन से मेरा ख्याल रखा है।"

'किसी को तो उस आदमी की देखभाल करनी ही होगी जो साम्राज्य की देखभाल करता है,' जवाब दिया रानी ने अपनी आकर्षक नीली-हरी आँखों से उसकी ओर मातृवत दृष्टि डालते हुए कहा, "महाराज, मैंने हमेशा आपसे अपने मन की बात कही है, और आपने मुझे हमेशा यह स्वतंत्रता दी है कि मैं आपको अपनी इच्छानुसार सलाह दे सकूँ।"

महमूद का चेहरा चिड़चिड़ा हो गया। वह अपने काम का पूर्ण स्वामी था।

राज्य और उसकी नियति, सिवाय उस स्त्री के। उसकी पत्नी। उसकी रानी। उसके सामने खड़ी एकमात्र व्यक्ति थी जो उसे दंड से मुक्त होकर प्रभावित कर सकती थी। उसने ऐसी बातें कहीं जो दूसरे कहने में झिझकते।

जादूगरनी. डायन.

वह उस पर मोहित हो गया था, जिस क्षण से उसने उसे देखा था, वह मंत्रमुग्ध हो गया था।

महमूद ने कई मौकों पर देर रात के प्रवचनों के प्रति अपनी अरुचि जाहिर की थी।

लेकिन वह अच्छी तरह जानता था कि वह नहीं रुकेगी।

"कौसरी, हम दोनों के लिए आज का दिन बहुत लंबा रहा," वह कराहते हुए बोला। "भाई के सम्मान में आयोजित समारोहों ने मुझे थका दिया है, और तुम भी थक गई होगी। अगर इसके बावजूद तुम यहाँ हो, तो यह बहुत ज़रूरी होगा। तो बोलो, मेरी जान। मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ?"

रानी ने अपनी निगाहें ज़मीन पर झुका लीं, और ध्यान से अपने चेहरे पर दर्द भरी अनिच्छा का भाव भर लिया। सुल्तान ने कठपुतली की तरह जवाब दिया, और धीरे से अपना हाथ उसकी ठुड्डी पर रखकर अपना चेहरा ऊपर उठाया। उसने उसकी आँखों में स्नेह से देखा।

Machine Translated by Google

और अपनी घनी भौंहें ऊपर उठा लीं। कौसरी जहाँ ने हल्के से सिर हिलाकर उसका हाथ झटक दिया और हार मानकर चलने का नाटक किया।

महमूद ने जल्दी से मूकाभिनय का नाटक खत्म किया और रानी की कलाई पकड़कर उसे ज़ोर से पीछे की ओर खींचा। वह उसकी छाती से टकराई, सिहर उठी, फिर चौंककर महमूद को घूरने लगी।

'मुझे बताओ, तुम्हारे आने का उद्देश्य क्या है,' उसने अपनी पकड़ मजबूत करते हुए गुर्राते हुए कहा। उसकी कलाई पर। रानी की आँखें डर से धुंधली हो गईं। वह अच्छी तरह जानती थी कि महमूद एक हिंसक जानवर है, हालाँकि वह अपनी बातों में उसके साथ नरमी बरतता था। उसने अपने प्यारे पति से इतनी बेरहमी से मार खाई थी कि वह इस बात को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती थी।

'कोई मुझसे मुँह नहीं मोड़ता, यह कभी मत भूलना,' महमूद उस औरत को घूरते हुए चिल्लाया, उसकी आँखों में वासना और क्रोध का एक अजीब सा मिश्रण चमक रहा था। 'तुम यहाँ हो, है ना? अब मुझसे बात करो।' 'यह कोई नई बात नहीं है।' उसने अपने सहज भय से लड़ते हुए, जिसे यहूदी

लोग चुत्ज़पा कहते हैं—अत्यधिक दुस्साहस— शब्दों से, शब्दों को वापस फेंक दिया । उसने उसकी पकड़ ढीली करने के लिए अपना हाथ मरोड़ा। उसकी दुस्साहस से चकित होकर, उसने उसे छोड़ दिया।

'मैं तुझे पीटना शुरू करूँ, उससे पहले बोल!' 'मैंने

तुझे इस बारे में पहले ही बता दिया था। और अब तेरे भाई का आना हमारे लिए बुरा संकेत है, महमूद। हम सबके लिए—मैं, तेरे बच्चे और वारिस, और तेरे लिए भी,' कौसरी ने तीखी आवाज़ में कहा। 'मत भूल कि ग़ज़नी का गवर्नर और मुफ़्ती बनाने से पहले, इस्माइल एक निर्वासित गद्दार था। उसे उस गुज़गान नर्क में सड़ने के लिए छोड़ देना चाहिए था, न कि धूमधाम से राजधानी वापस लाना चाहिए था।' महमूद चिढ़कर अकड़ गया। उसने शराब का प्याला नीचे फेंक दिया। वह नीचे गिरा।

नीले मखमली गद्दे पर। कौसरी ने आंध्र के मखमली कपड़े को छलकती शराब से काला होते देखा, और अपने आस-पास के वातावरण को साफ़ और स्वच्छ रखने के अपने जुनून को पूरी लगन से नियंत्रित किया। सुल्तान ने अपने हाथ के पिछले हिस्से से अपना मुँह पोंछा और रानी को घूरने लगा।

"फैसला मेरा था, कौसरी," उसने अपनी नशे की हालत को काबू में रखते हुए उसे याद दिलाया, ताकि वह अपनी बात खुलकर कह सके। "हमने इस बारे में बात की है। अतीत में चाहे जो भी हुआ हो, वह मेरा भाई है। वह मेरा खून है। और मुझे एक ऐसा मुफ़्ती चाहिए जो बिना किसी सवाल के आज्ञाकारी हो, एक कठपुतली..." इस्माइल मुझे खलीफा घोषित करेगा। अब वह मेरा कृतज्ञ है और मुझे धोखा देने से डरता है।'

कौसरी बिना कुछ कहे एक पत्थर की चौकी की ओर चली गई, जिस पर एक खुला हुआ धातु का दीपक रखा था। महमूद उसके पीछे-पीछे गया।

"हे प्रभु," उसने अपना दुःखी चेहरा उसकी ओर घुमाते हुए कहा और आग पर अपने हाथ सेंकने लगी। "मुझे माफ़ करना कि मैं आपके आशावाद से सहमत नहीं हूँ। आप

Machine Translated by Google

अगर आप चाहें तो मेरी बेचैनी को एक पागल लेकिन वफ़ादार औरत की चिंता समझ सकते हैं। मुझे खुश रखिए—आप जानती हैं कि मैं आपके बिना कुछ भी नहीं हूँ।' महमूद ने अपने हाथों को आग के पास ले जाकर खुद को मग्न कर लिया। वह किनारे की ओर बढ़ा।

कौसरी के हाथ हटा दिए। रानी ने अपने हाथ पीछे खींच लिए और महमूद के लिए गर्माहट छोड़ दी।

"क्या मैंने तुम्हें कभी लाड़-प्यार नहीं किया, मेरी प्यारी?" उसने मुड़कर अपनी पत्नी से शरमाते हुए पूछा। उसने उसके बाल समेटे और उसकी लंबी गर्दन के पीछे और फिर उसकी पीठ के निचले हिस्से तक अपनी उंगली फिराई। "दिन भर थकान रही, पर रात अभी बाकी है। इस बेतुकी बातचीत से निपटो, फिर हम कुछ काम कर सकते हैं। मुझे तुम्हारी बहुत याद आ रही थी!"

महमूद ने कौसरी को घुमाया, उसके चारों ओर हाथ लपेटे और उसकी पीठ से चिपक गया। कौसरी भी पीछे हट गई, क्योंकि वह जानती थी कि उसे कैसा लग रहा है, और जल्दी से यह अंदाज़ा लगा लिया कि उसके पास अब कुछ ही पल बचे हैं, जब तक उसे उसकी हिंसक, तीव्र यौन भूख के आगे पूरी तरह से झुकना नहीं पड़ेगा।

"मुझे पता है, हमने इस बारे में बात की है, मेरे प्यारे," कौसरी ने उसके हाथों को अपने हाथों से ढकते हुए और उंगलियाँ आपस में फँसाते हुए कहा। "लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि खलीफा की यह उपाधि हमारे किसी काम नहीं आएगी। तुम्हें इससे दूर रहना चाहिए, चाहे उस साँप इस्माइल ने तुम्हें कुछ भी कहा हो। उसने तुम्हारे दिमाग में यह मूर्खतापूर्ण कल्पना भर दी है।" उसकी गुस्ताखी से साफ़ तौर पर स्तब्ध, महमूद भौंहें चढ़ाकर पीछे हट गया।

कौसरी ने एक नाज़ुक नस को छू दिया था। सुल्तान का अहंकार आहत हुआ था।

'और आपको क्यों लगता है कि मैं खलीफा बनने के लायक नहीं हूं?' उसने गुस्से से पूछा और चोटिल। 'मैंने एक सच्चे धर्मावलंबी की तरह, भारत के विरुद्ध अपने वार्षिक जिहादों की स्पष्ट घोषणा की है । एक सच्चे धर्मावलंबी की तरह, मैंने काफिरों के शहरों को कई बार लूटा और नष्ट किया है। एक सच्चे धर्मावलंबी की तरह, मैं एक सच्चे ईश्वर की अनेक विजयों की ट्रॉफी के रूप में प्रदर्शित करने के लिए, उनके देश से विधर्मी देवताओं की अनगिनत संपत्ति और अवशेष वापस लाया हूँ। मैंने एक सच्चे ईश्वर को श्रद्धांजलि स्वरूप महान जामा मस्जिद का निर्माण भी करवाया है। यह सब मैंने एक सच्चे धर्मावलंबी के रूप में किया है। बगदाद की खिलाफत में मेरे कारनामों की नियमित रूप से घोषणा की जाती है। और उन्हें मेरे द्वारा भेजे जाने वाले धन से कोई आपत्ति नहीं है। तो फिर, कौसरी, मैं इस दुनिया में अल्लाह का प्रमुख सेवक बनने के योग्य क्यों नहीं हूँ? मैं खलीफा क्यों न बनूँ?' 'बात धर्मावलंबी होने की नहीं है, मेरे प्रभु। आप स्पष्ट रूप से हमारे धर्म के सबसे महान जीवित भक्त हैं। आपकी सेवाएं अद्वितीय हैं, यहां तक कि जो व्यक्ति वर्तमान में स्वयं को खलीफा कहता है, वह भी आपकी बराबरी नहीं कर सकता।'

Machine Translated by Google

महमूद ने क्रोधित होकर कहा, "मैं शांत नहीं हुआ।"

"फिर भी," कौसरी ने बिना रुके अपनी बात जारी रखी, हालाँकि उसका व्यवहार धीरे-धीरे दृढ़ता से एक उत्साही प्रशंसक की विनती में बदल गया था। "क्या आपको एक गैर-अरब के लिए इतनी खतरनाक और बेहद विवादास्पद उपाधि का पीछा करना चाहिए?"

आप अब्बासी खिलाफत के समर्थन से सुल्तान बने, और आपने उनसे वादा किया कि आप दारुल-इस्लाम का विस्तार काफिरों की ज़मीन तक करेंगे । जब आप उस हड़पने वाले, अपने भाई, से लड़े, तो खलीफा और बुईदों ने आपकी मदद के लिए अपनी सेनाएँ भेजीं। आप यह क्यों नहीं समझ पा रहे हैं कि इस्माइल आपको आपके सबसे मज़बूत सहयोगी के ख़िलाफ़ खड़ा कर रहा है?' 'मेरी रानी, मैं आपकी चिंता समझता हूँ। लेकिन जब बुईदों और अब्बासियों ने मेरी मदद की थी, तब मैं कमज़ोर था। अब, मैं उनसे कहीं ज़्यादा ताकतवर हूँ। उपाधियों को वास्तविकता के साथ तालमेल बिठाना चाहिए। अयाज़ को भी यह एक अच्छा विचार

लगता है। यह इस्लाम धर्म में मेरी विरासत को हमेशा के लिए मज़बूत कर देगा।'

कौसरी ने आँखें घुमाईं। "अयाज़ के अपने फ़ायदे हैं, मुझे पता है, मेरे बादशाह। और मैं भी..."
उससे ईर्ष्या नहीं। पर वो तो चाटुकार है। उसे बैठने को कहो, तो कुर्सी ढूँढ़ने भी नहीं आएगा; जहाँ मिलेगा वहीं बैठ जाएगा!' 'तुम बहुत ज़्यादा सोच रही हो, कौसरी। मुझे घबराने की कोई बात नहीं दिखती। इस्माइल के साथ तो

बिल्कुल नहीं। वो भी मेरी तरह बूढ़ा है। उसकी कोई वारिस नहीं है जो उसकी महत्वाकांक्षाओं को हवा दे सके।'

वह मेरे खिलाफ साजिश क्यों करेगा?' कृपया सुनिए...' 'मेरे
राजा...

'अल्लाह ने मेरे लिए यही नियति तय की है। मैं इसे महसूस कर सकती हूँ। मैं इसे जानती हूँ।' 'ठीक है, अगर आप मन

बना चुके हैं, मेरे रब,' उसने स्वीकार किया। 'मैं आपसे हमारे परिवार की सुरक्षा और संरक्षा का आश्वासन चाहती हूँ। मुझे लगता है कि हमारे आँगन में एक साँप है, और उसका नाम इस्माइल है। मुझे साबित करो कि उसके इरादे नेक हैं—एक ऐसी पत्नी के लिए जो तुमसे और तुम्हारे बच्चों से प्यार करती है, जिन्हें वह अपना मानती है।'

"बिल्कुल!" महमूद हँसा और उसकी कमर में बाहें डालकर उसे अपने पास खींच लिया। वह जानता था कि कौसरी के बच्चे नहीं हो सकते, और खुश था कि वह उसकी पहली पत्नी से हुए जुड़वाँ बेटों से प्यार करती थी और उनकी देखभाल करती थी, जिन्हें दुर्भाग्यवश उसे मारना पड़ा था। "तो बताओ, हम इस्माइल के असली इरादों का अंदाज़ा कैसे लगाएँ, हम्म? हम उसकी परीक्षा कैसे ले सकते हैं?"
... हम कैसे

कौसरी शर्माकर मुस्कुराई और उसमें घुल-मिल गई। "आप उसे जामा मस्जिद को उसकी पुरानी शान वापस लौटाने के लिए छह महीने का समय क्यों नहीं देते?" उसने महमूद के झुर्रियों वाले गाल पर उँगली फेरी।

"छह महीने!" महमूद चिल्लाया, और फिर अपनी नाक उसकी गर्दन में गड़ा दी, उसके बालों का ढेर उसे सुनहरे रेशमी धागों के ढेर की तरह ढँक रहा था। उसने उसकी गुलाब की खुशबू में साँस ली और फिर उसे ज़ोर से काट लिया। वह चुपचाप सिहर उठी। "छह महीने"

Machine Translated by Google

नामुमकिन है। यह एक विशाल इमारत है जो भीषण भूकंप में ढह गई थी, आप जानते हैं। हम इसे तीन साल में भी नहीं बना पाए हैं। आप बेचारे इस्माइल से कैसे उम्मीद करते हैं कि वह इसे छह महीने में कर देगा?' 'महाराज,' रानी ने चिढ़ाते हुए महमूद से दूर हटते हुए अपनी सम्मोहित करने वाली नीली-हरी आँखों से महमूद को देखा। 'छह महीने किसी भी व्यक्ति के

लिए सिंहासन और धर्म के प्रति अपनी वफ़ादारी साबित करने के लिए काफ़ी समय होते हैं।

मस्जिद को उसकी पुरानी शान लौटाने के लिए आपकी देखरेख में पहले ही बहुत कुछ किया जा चुका है। इसके अलावा, आप अपनी राजधानी की सबसे बड़ी मस्जिद को भी पूरी तरह से सही बताकर खुद को खलीफा घोषित नहीं कर सकते, है ना?' 'और अगर मेरा भाई अपनी मेहनत के बावजूद इस मकसद में कामयाब न हो पाए, तो क्या होगा?'

"क्या बेहतरीन कोशिशें कीं?" महमूद ने रानी की पारदर्शी पोशाक के पीछे की डोरियाँ खोलते हुए पूछा। रानी ने पलटकर उसे सहज कर दिया।

"अगर वह यह काम समय पर पूरा नहीं करता, तो वह आपके प्रति अपनी प्रतिबद्धता साबित नहीं कर पाएगा, हुज़ूर," कौसरी जहाँ ने महमूद को फिर से अपनी पीठ पर दबाव महसूस करते हुए कहा। "कोई वजह नहीं कि आपका भाई छह महीने के अंदर, सही ध्यान और संसाधनों के साथ, यह काम पूरा न कर पाए।"

जामा मस्जिद के पुनर्निर्माण के आपके प्रयासों में पिछले मुफ़्ती ही बाधा डाल रहे थे। इस्माइल को तो इससे बेहतर होना चाहिए। सुल्तान को अपने चाहने वालों से असंभव की माँग करने का पूरा अधिकार है। और उन्हें उसे पूरा करना ही होगा। क्या मैंने हमेशा वही नहीं किया है जो आपने मुझसे माँगा था, मेरे रब?' 'हम्म।' महमूद को सहमत होना ही पड़ा, हालाँकि उसने कौसरी की पोशाक खींचनी शुरू कर दी।

'और अगर मैं कर सकता हूँ, तो तुम्हारे भाई इस्माइल को भी करना चाहिए। अगर वह असफल हो जाता है, तो तुम निश्चिंत रहो कि इस्माइल में न तो इतनी क्षमता है और न ही इरादा कि वह तुम्हारे काम आ सके, खासकर जब तुम खलीफा बन जाओ। तुम्हें सलाह देना मेरा कर्तव्य है... तुम्हारी पत्नी, महान महमूद इब्न तुम्हें सावधान करती है...

'गज़नी के सेबुक्तेगीन.'



गंगईकोंडा चोलपुरम

Machine Translated by Google

इकबाल का चेहरा पत्थर की तरह मुड़ा हुआ था, क्योंकि वह वास्तव में नहीं जानता था कि क्या उम्मीद की जाए।
नरसिंहन और कथिरावन उसके सामने शांत और निश्चिंत बैठे थे, मानो उन्हें पता हो कि क्या होने वाला है। वे अपने सम्राट को जानते थे।
सोमेश्वर शांत था। गुजराती व्यापारी ने दुनिया का इतना हाल देखा था कि उसे पता था कि अगर उसे दोबारा मिलने के लिए बुलाया गया है, तो इसका मतलब है कि उसकी जानकारी की दोबारा जाँच और पूरी तरह से पुष्टि हो चुकी है। लेकिन उसे ठीक-ठीक पता नहीं था कि राजेंद्र चोल और भोजदेव परमार आगे कैसे बढ़ना चाहेंगे—क्योंकि पुलिस प्रमुख नरसिंहन, जो अब उसके घर पर रहने के बाद से उसका दोस्त बन गया था, इस बारे में चुप था कि इस मुलाकात से क्या उम्मीद की जाए। विजयन अपनी कुर्सी पर पीछे हट गया, सहज रूप से अपनी सीट दूसरों से थोड़ी पीछे रखते हुए; वह लगभग हैरान लग रहा था कि उसे इस प्रतिष्ठित सभा में फिर से बुलाया गया था। और इस बार राजमहल में राजेंद्र चोल के निजी कक्ष में; वह पहले कभी राजमहल के निजी हिस्से में नहीं गया था।

बृहदीश्वर मंदिर में बैठक को एक सप्ताह हो गया था।
राजेंद्र चोल और भोजदेव परमार ने अपनी सारी बातें साबित कर दी थीं। राजेंद्र के पास दुनिया की सबसे बेहतरीन जासूसी प्रणाली का समर्थन था; उनसे एक हफ़्ते तक बातचीत करना ही काफ़ी था। और भोजदेव की ख़ुफ़िया सेवाओं की पहुँच भी ग़ज़नवी के इलाकों में काफ़ी गहरी थी।

शीघ्र ही, रक्षक ने सम्राटों के आगमन की घोषणा कर दी।
'बैठो, बैठो,' राजेंद्र ने अपने सिंहासन पर बैठते हुए कहा।
राजेंद्र के बगल में भोजदेव के लिए समान आकार का दूसरा सिंहासन था
परमार। महान चोल अपने मित्रों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करना जानते थे।
जैसे ही सात लोगों का दल शांत हुआ, सम्राट के अंगरक्षक आगे बढ़े।
कक्ष के अंत में वापस। सुनने की सीमा से बाहर। लेकिन उनकी दृष्टि रेखा के भीतर।

राजेंद्र ने अपने मित्र भोजदेव की ओर देखा, फिर अपने सामने बैठे लोगों की ओर देखा, तथा एक क्षण के लिए अपनी नजर नरसिंह पर टिका दी।
वह अचानक बोलने लगा। 'तो हम ये करेंगे...' सब लोग आगे झुक गए।

'हम गजनी के मध्य में एक हत्यारा दस्ता भेजेंगे। मैं
इस मिशन के लिए चोल शाही रक्षक दल से अपने चालीस सर्वश्रेष्ठ सैनिकों को नियुक्त करूँगा। सम्राट भोजदेव अपनी निजी अंगरक्षक वाहिनी, जो पहले से ही यहाँ मौजूद है, से दस सैनिकों को नियुक्त करेंगे। यह कार्यदल—यह मंडलम— इतना छोटा होगा कि उसे पकड़ा नहीं जा सकेगा और पारंपरिक सेना द्वारा आसानी से उसका पता नहीं लगाया जा सकेगा। लेकिन यह इतना बड़ा होगा कि एक घातक बल बन सके।

Machine Translated by Google

"यह एक शक्तिशाली हथियार है। यह एक शक्तिशाली हथियार है जो दुश्मन के दिल में एक धार छोड़ सकता ...।"

प्रधानमंत्री कथिरावन सहित सभी ने सहमति में सिर हिलाया।
यह योजना साम्राज्य के दीर्घकालिक हितों को नुकसान पहुँचाए बिना उद्देश्य प्राप्त कर लेगी। लेकिन प्रभावी होने के लिए,
समूह को एक नेता की आवश्यकता थी। इस हत्या दस्ते का नेता कौन होगा? सम्राट के पास

उत्तर।

'कल ही मुझे एक अनुरोध प्राप्त हुआ, जिसे पूरा करने में मुझे खुशी हुई।'
राजेंद्र ने कहा। वह नरसिम्हन की ओर मुड़े और बोले, 'पुलिस प्रमुख नरसिम्हन ने दस्ते का नेतृत्व करने के लिए स्वेच्छा से आगे आने
की पेशकश की है, और मुझे उनके अनुरोध को स्वीकार करने में खुशी हो रही है।' सम्राट ने नरसिम्हन की ओर एक गर्व भरी, लगभग पितातुल्य
मुस्कान के साथ मुस्कराते हुए कहा, उनका मौन संदेश स्पष्ट था: मेरा सबसे महान योद्धा लौट आया है।

सोमेश्वर सचमुच हैरान रह गया। उसने नरसिम्हन की ओर देखा।

नरसिंह को समझाने की ज़रूरत महसूस हुई। उसने व्यापारी की ओर देखा। 'तुम सही थे, सोमेश्वर। हत्याओं में कभी-कभार ही कोई
अतिरिक्त क्षति होती है... और एक निर्विवाद राक्षस को मारने से...' नरसिंह ने अंगूठी का पेंडेंट पकड़ा और आगे बोला, 'शायद उसे उसी तरह
यातना देने के बाद जैसे उसने दी थी, इससे आत्मा शुद्ध हो जाएगी।' कई...

सोमेश्वर मुस्कुराया और अपने दोस्त का हाथ पकड़ने के लिए आगे बढ़ा।

राजेंद्र सोमेश्वर और इकबाल की ओर मुड़ा। "कृपया अपनी सारी जानकारी और खुफिया रिपोर्ट नरसिम्हन और मेरे
आदमियों के साथ साझा करें। हम यहीं से आगे बढ़ेंगे। हम गजनी के कसाई को पकड़ेंगे।" सोमेश्वर का चेहरा उतर गया। वह लगभग आहत
सा लग रहा था। "हम साथ चलना चाहते हैं।"

इस मिशन पर, महाराज। कृपया इसे हमसे न छीनें।' भोजदेव परमार ने बीच में ही टोक दिया, क्योंकि उन्हें गुजराती व्यापारी
से ऐसी ही प्रतिक्रिया की उम्मीद थी। 'हमें गलत मत समझिए, सोमेश्वर। लेकिन इकबाल और आप दोनों बूढ़े हैं। और
हालाँकि सम्राट राजेंद्र और मैं आपके साहस का सम्मान करते हैं, आप योद्धा नहीं हैं। यह एक खतरनाक मिशन होगा। कई लोग
शायद जीवित न बच पाएँ। नरसिंह को कई बार कठिन फैसले लेने होंगे, शायद जब उनके पास कोई विकल्प न हो तो लोगों को पीछे
भी छोड़ना पड़े।' सोमेश्वर ने लगभग तुरंत जवाब दिया, उनकी आवाज़ ज़ोर से गूंज रही थी। उनका मन

यह बात बिल्कुल स्पष्ट थी। 'मैं, सोमेश्वर, आप सभी और भगवान शिव की साक्षी में, जनरल नरसिम्हन को अनुमति देता हूँ कि
अगर मैं इस यात्रा के दौरान किसी भी मोड़ पर मिशन की सफलता के लिए ख़तरा बनता हूँ, तो वे मुझे मरने के लिए छोड़ दें। मैं इस
यात्रा में मरना पसंद करूँगा बजाय इसके कि मैं तब तक यहाँ एक अधूरा जीवन जीऊँ जब तक मैं

Machine Translated by Google

मैं सौ साल का हूँ। क्योंकि भगवान शिव की एक दिन की सेवा भी दशकों के आरामदायक जीवन से ज़्यादा मूल्यवान है।'

इकबाल ने भी अपनी सहमति जताते हुए सिर हिलाया। सोमेश्वर ने कहा था,
भावुक उत्तर पर, इकबाल ने तर्क दिया। "महाराज, हम विदेशी धरती पर मार्गदर्शक और दुभाषिए के रूप में उपयोगी सिद्ध होंगे। चूँकि हमने वहाँ व्यापार किया है, इसलिए हम उनकी स्थानीय भाषाओं से अच्छी तरह परिचित हैं, और हम उनके रीति-रिवाजों और आदतों से भी अच्छी तरह परिचित हैं। इसके अलावा, हम वहाँ एक गुप्त विद्रोही समूह के संपर्क में भी रहे हैं। वे हम पर भरोसा करते हैं। हम उनकी बहुत मदद करेंगे।" राजेंद्र चोल और भोजदेव परमार की आँखें थोड़ी नम हो गईं। महान

सम्राट और प्रचंड योद्धा होने के नाते, वे दूसरे योद्धाओं से वीरता की अपेक्षा रखते थे। लेकिन बुज़ुर्ग व्यापारियों में यह अदम्य शारीरिक साहस देखना बिलकुल अलग बात थी। यह बूढ़ा, हट्टा-कट्टा, शाकाहारी, अहिंसक गुजराती व्यापारी, और भगवान महादेव और मातृभूमि के प्रति उसकी भक्ति, और उसका दोस्त, बंगाली मुसलमान, एक बेहद दुबला-पतला, बूढ़ा आदमी, जिसके बाल धीरे-धीरे सफेद हो रहे थे, जो अपने दिल में अच्छी तरह जानता था कि उसके अपने लोग कौन हैं और उनसे बेहद प्यार करता था।

राजेंद्र ने सहमति में सिर हिलाया। 'ठीक है। इकबाल और आप दोनों सोमेश्वर जा सकते हैं।' प्रधानमंत्री नरसिम्हन की ओर मुड़े। 'क्या आपने चुनना

शुरू कर दिया है?'

आपके आदमी, जनरल? मुझे लगता है मैं आपको फिर से "जनरल" कह सकता हूँ?'

"हाँ," नरसिम्हन ने मुस्कुराते हुए कहा। "कुछ ही दिनों में मेरी सूची तैयार हो जाएगी, महाराज। और विजयन को आखिरकार वह पद वापस मिल जाएगा जिसके वे हक़दार हैं। गंगईकोंडा चोलपुरम के पुलिस प्रमुख। और सिर्फ़ पहले की तरह कार्यवाहक प्रमुख नहीं, बल्कि वास्तविक, पूर्ण रूप से नियुक्त प्रमुख।"

विजयन को आखिरकार समझ आ गया कि आज उसे क्यों बुलाया गया था। उसने दीवार पर लगे चित्र पर एक नज़र डाली। भगवान शिव का, राजराजा और राजेंद्र महादेव के चरणों में। अब उसे समझ आ गया था कि उसे क्यों बुलाया गया है। लेकिन उसे तुरंत एहसास हुआ कि उसका बुलावा कुछ और ही था। 'जनरल महोदय,' उसने नरसिम्हन से कहा। 'मुझे यह पद नहीं चाहिए।' ...

'क्या?' नरसिम्हन चौंक गए। कक्ष में मौजूद बाकी सभी लोग भी चौंक गए।
उन सभी ने मान लिया था कि शहर का पुलिस प्रमुख बनना विजयन की महत्वाकांक्षा है।

'मैं आपके साथ चलना चाहता हूँ। ग़ज़नी।' राजेंद्र ने बीच में ही टोकते

हुए कहा। 'आपको ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है, विजयन।' 'आपसे असहमत होने के लिए हज़ार

माफ़ी, महाराज। मुझे पता है कि मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है। लेकिन मुझे जाना ही होगा,' विजयन ने कहा, उसकी आवाज़ थोड़ी काँप रही थी। 'जैसे

Machine Translated by Google

सोमेश्वर ने बिलकुल सही कहा था, "मैं सौ साल की उम्र तक यहाँ अधूरा जीवन जीने की बजाय इस मिशन पर मरना ज़्यादा पसंद करूँगा। पूरे सम्मान के साथ, मेरे स्वामी, चोल इस समय इन भूमियों पर प्रमुख शक्ति हो सकते हैं, लेकिन केवल पांड्य भूमि के पुत्र - मदुरै के - ही देवी शक्ति, देवी मीनाक्षी के दूध से स्तनपान करते हैं... हम उनके पुत्र हैं। उनके पति और हमारे पिता, भगवान शिव का अपमान किया गया है। पुत्रों को माँ के न्यायपूर्ण प्रतिशोध के आह्वान का सम्मान करना चाहिए।"

सम्राट ने बहादुर विजयन को घूरा, उसकी भावनाएं उसके शब्दों को रोक रही थीं।
उसे वह बात समझ आ गई जो उसके पिता ने एक बार उससे कही थी। एक राष्ट्र को अपने अस्तित्व के लिए, और यह सुनिश्चित करने के लिए कि विदेशी बर्बर लोग उसे नोच-नोच कर, कुचल-काट कर मार न डालें, हमेशा एक ही चीज़ की ज़रूरत होती है: ऐसे लोग जो उसे बचाने के लिए जान देने को तैयार हों। भारत में ऐसे लोगों की कभी कमी नहीं रही। वे अपने परिवारों को गरीबी में, अपने शरीर को अपार पीड़ा में, अपनी आत्मा को जख्मी हालत में छोड़ जाते हैं, और यह सब भारत माता के प्रति उनकी भक्ति के कारण होता है। उन्हें प्रभावी होने के लिए बस एक समर्पित और निस्वार्थ नेतृत्व की आवश्यकता थी।

'वीर विजयन, मैं, राजेंद्र चोल, मुझमें निहित शक्तियों के साथ,
मैं आपको तुरंत चोल सेना में ब्रिगेडियर के पद पर पदोन्नत करूंगा।'
विजयन हक्का-बक्का रह गया। वह उठा, सम्राट के पास गया, और नीचे उतर गया।
एक घुटने पर बैठ गया, और अपना सिर झुका लिया।
'उठो, ब्रिगेडियर विजयन।' विजयन ने
फिर झुककर अपनी कुर्सी पर वापस बैठ गए।
'मुझे पता है कि जान जोखिम में होगी,' सम्राट ने आगे कहा। 'मुझे यह भी पता है कि
कि आपमें से किसी को भी मौत का डर नहीं है। लेकिन सभी अपने परिवारों की चिंता करते हैं। मैं आपके साथ आए पचास सैनिकों के परिवारों के लिए पाँच गाँवों का राजस्व आवंटित कर रहा हूँ। चाहे वे जीवित लौटें या मृत, चोल साम्राज्य उनके परिवारों की देखभाल करेगा। हमेशा के लिए। ब्रिगेडियर विजयन, मैं आपके और आपके परिवार के लिए एक पूरे गाँव का राजस्व अलग रख रहा हूँ।

जनरल नरसिम्हन, मैं आपके और आपके परिवार के लिए पाँच गाँवों का राजस्व अलग रख रहा हूँ। जब तक चोल वंश का शासन रहेगा, चोल वंश आपकी और आपके परिवारों की देखभाल करेगा।'

राजेंद्र चोल ने वृद्धों की ओर रुख किया। 'सोमेश्वर और इकबाल, तुम पहले से ही कई गाँवों की कीमत से कहीं अधिक धनी हो। धन-दौलत तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं है। इसलिए, मैं, राजराजा का पुत्र राजेंद्र, तुम दोनों से वादा करता हूँ कि तुम्हारी मूर्तियाँ तुम्हारे ही समान गढ़ी जाएँगी और वृहदेश्वर के आंतरिक मंदिर परिसर में, चोल वंश के सदस्यों की मूर्तियों के बगल में स्थापित की जाएँगी। उस पत्थर की मूर्ति के माध्यम से, तुम दोनों अनंत काल तक भगवान महादेव के दिव्य रूप के दर्शन करते रहो।'

Machine Translated by Google

भोजदेव परमार ने कहा, 'परमार वंश की ओर से मैं वचन देता हूं कि
इस मिशन पर जाने वाले सभी सैनिकों को समान अनुदान। जब तक परमार जीवित रहेंगे, इनमें से किसी को या उनके वंशजों को किसी चीज़ की कमी नहीं होगी।' सोमेश्वर और इकबाल की ओर मुड़कर भोजदेव ने कहा, 'महान व्यापारियों, मैं भोजपुर में एक नया मंदिर बनवा रहा हूँ। इसे भोजेश्वर मंदिर कहा जाएगा। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि जब वह संरचना पूरी हो जाएगी, तो आपकी मूर्तियाँ, आपके हूबहू स्वरूप में, इस मंदिर के आंतरिक परिसर में भी स्थापित की जाएँगी।' भावुक सोमेश्वर और इकबाल राजेंद्र चोल की मूर्ति को छूने के लिए नीचे झुके।

और भोजदेव परमार के पैर। लेकिन सम्राटों ने तुरंत पीछे हट गए।
'आप हमसे बड़े हैं। कृपया ऐसा न करें।'

"और एक बात और, सेनापति," भोजदेव परमार ने नरसिंह से कहा, "गज़नी में मेरी एक गहरी पैठ है। एक दीर्घकालिक एजेंट। प्रेरणाएँ अलग-अलग हैं, लेकिन इस व्यक्ति की प्रतिशोध की इच्छा हमसे कम नहीं है।"

आपको इस एजेंट से मदद मिलेगी।' 'मैं उससे कैसे संपर्क करूँ?' 'नहीं
कर सकते। एजेंट सही समय पर आपसे संपर्क करेगा।

एक संदेश पहले ही भेजा जा चुका है। आपको बस उस व्यक्ति का ऑपरेटिव नाम जानना होगा। कॉकेशियन।' 'कॉकेशियन?' 'हाँ। मैंने एक बार कॉकेशियन की जान बचाई थी। और यकीन मानिए, इस व्यक्ति से मिलने वाली कोई भी मदद अमूल्य होगी।'

नरसिंह ने भोजदेव की ओर सिर हिलाया। "धन्यवाद, महाराज।" राजेंद्र चोल अपने सिंहासन से उठे। बाकी सभी
भी खड़े हो गए।
तमिल सम्राट का अंतिम आदेश सरल था: 'जाओ, मेरे बाघों, उसे पकड़ो। मिशन ग़ज़नी आज से शुरू होता है।'

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 7

योजनाएँ और तीर्थयात्री

चेरा क्षेत्र, केरल, भारत

नरसिंह और विजयन चेर देश में शबरी पहाड़ियों के पवित्र वनों की ढलानों पर नंगे पाँव पैदल यात्रा कर रहे थे। राजेंद्र चोल द्वारा हत्या दस्ते को अंतिम स्वीकृति दिए हुए दो हफ़्ते से भी कम समय हुआ था। पचास सैनिक—नरसिंह के नेतृत्व में, विजयन उपसेनापति की भूमिका में, सोमेश्वर और इकबाल तथा अन्य आपूर्तिकर्ताओं के साथ—तुरंत रवाना हो गए थे। यह मकर संक्रांति की रात थी, जिसे पश्चिमी लोग शीतकालीन संक्रांति कहते हैं। भगवान सूर्य, मकर राशि में प्रवेश कर चुके थे और अपनी उत्तर दिशा की यात्रा—उत्तरायण—शुरू कर चुके थे, जो हिंदू, बौद्ध और जैन धर्म जैसे धार्मिक धर्मों के लिए सबसे शुभ समय है।

देर शाम के शीत ऋतु के आकाश की रोशनी पूंगावनम – पूंगा के जंगल – के घने वृक्षों के आवरण को भेदने के लिए संघर्ष कर रही थी, जैसे- जैसे वे दोनों आगे बढ़ रहे थे। भक्तों के बिखरे हुए समूह संतरे, कटहल और केले के पेड़ों से घिरी घनी झाड़ियों के बीच झुंडों में चल रहे थे। वे एक विशाल, स्व-संगठित समूह के रूप में भगवान रुद्र और देवी मोहिनी के पुत्र भगवान अय्यप्पन के निवास की ओर बढ़ रहे थे। युवा अविवाहित भगवान बहुत समय पहले शबरी पहाड़ियों में बस गए थे।

'मुझे इस पर विश्वास नहीं हो रहा, सर। हम कोल्लम तक सिर्फ़ इसलिए आए थे ताकि वापस अंदर आ सकें!' विजयन गुस्से से भर गया—हालाँकि अपनी झुंझलाहट में भी, वह नरसिंहन की यह हिदायत नहीं भूला कि उसे सार्वजनिक रूप से जनरल न कहा जाए। उसने अपने तीरों के तरकश को कंधे पर बाँधने वाली बेल्ट खींची। 'बूढ़े राजसिंह को कोल्लम में एक जहाज़ तैयार रखना चाहिए था! हम चेरा बंदरगाह की राजधानी में थे! हम तुरंत ग़ज़नी के लिए रवाना हो सकते थे। लेकिन इसके बजाय, हम यहाँ तीर्थयात्रा पर हैं। मुझे माफ़ करना, भगवान अय्यप्पन!' यहाँ के तीर्थयात्रियों के पारंपरिक काले परिधान पहने भक्तों की काली आकृतियाँ, आत्माओं के समूह की तरह जंगल में घूम रही थीं, जयकारे लगा रही थीं।

Machine Translated by Google

भगवान अय्यप्पन को समर्पित जयघोष पूरे उत्साह के साथ किया गया।

स्वामीये शरणम अय्यप्पा! मैं भगवान अयप्पन की शरण लेता हूँ!

"राजा राजसिंह, विजयन। आप चेर शासक और राजेंद्र चोल के विश्वसनीय जागीरदार की बात कर रहे हैं," नरसिंह ने सुधारा। "और यहाँ आने का फ़ैसला भी मेरा ही था। भगवान राजसिंह का तर्क सही था।"

राजसिंह ने नरसिंह को अपनी चोल सेना को शबरी पहाड़ियों की ओर पुनर्निर्देशित करने के लिए राजी कर लिया था। उनके कारण सूक्ष्म, लेकिन महत्वपूर्ण थे।

पश्चिमी तट पर स्थित चेर शासक ने कई अरबों के साथ व्यापार किया था, जिन्होंने सुरक्षा के लिए अपने जहाजों पर तुर्क सैनिकों को नियुक्त किया था। तुर्क शानदार योद्धा थे, लेकिन नाविक बहुत बुरे थे। राजसिंह ने स्वीकार किया था कि उन्होंने जो कुछ भी देखा था, उसके अनुसार सोमेश्वर और इकबाल को मुस्लिम संस्कृति और तुर्क जीवन शैली का बहुत अच्छा ज्ञान था। लेकिन उन्हें इसका उपयोग करने से रोक दिया गया था क्योंकि व्यापारी कुछ नहीं कर सकते थे—उनका रूप-रंग। वे बिल्कुल भारतीय दिखते थे। और तुर्कों में सांवले लोगों के प्रति बहुत पूर्वाग्रह था, भले ही वे मुसलमान ही क्यों न हों। वे अफ़्रीकी मुसलमानों को अब्द कहते थे, जिसका अर्थ है दास या नौकर। और वे भारतीय मुसलमानों को पसमांदा कहकर उनका उपहास करते थे, जिसका अर्थ है पीछे छोड़ दिए जाने वाले। केवल गोरी चमड़ी वाले फ़ारसी और अरब मुसलमानों को ही तुर्क दरबारों में सर्वोच्च पदों पर पहुँचने की अनुमति थी। अन्य मुसलमान जो सांवले थे, उन्हें, जब तक कि वे योग्य योद्धा न हों, आमतौर पर शौचालय साफ़ करने, नालियों की मरम्मत, सड़क बनाने जैसे काम सौंपे जाते थे।

जल्द ही।

इसलिए, सोमेश्वर और इकबाल, दुश्मन की अपनी पूरी समझ और ज़ाहिर तौर पर उनकी स्पष्ट मंशा के बावजूद, उतने उपयोगी साबित नहीं हुए जितनी उम्मीद की जा सकती थी। इसलिए राजसिंह ने एक ऐसे व्यक्ति से मुलाक़ात तय की जो देखने में तो तुर्की था, लेकिन जिसका दिल भारत के प्रति वफ़ादार था। वे सबरी पहाड़ियों में एक मिलन स्थल पर इस गाइड से मिलने वाले थे।

नरसिम्हन और विजयन अपने दल के साथ तीर्थस्थल पर गए थे। फिर वे अकेले ही उस जगह के लिए निकल पड़े, और बाकी लोगों को पहाड़ियों की तलहटी में एक गेस्ट हाउस में छोड़ दिया। ताकतवर और भारी हथियारों से लैस लोगों का एक विशाल दल किसी भी तीर्थस्थल पर अनावश्यक ध्यान आकर्षित करता।

अपनी बात कहने के बाद, नरसिम्हन विजयन की हताशा और आगे बढ़ने की बेचैनी को समझ गए। गोपनीयता की शर्तों और भेद खुलने के जोखिम के बावजूद, उन्होंने अपनी पत्नी हरिनी को इस मिशन के बारे में बता दिया था। सोमनाथ के उन दो आदमियों के साथ उनकी पहले से ही अच्छी बनती थी, और उन्हें लगा कि उन्हें अपने मिशन के बारे में बताना ज़रूरी है। जनरल ने अनुभव किया था

Machine Translated by Google

एक अश्रुपूर्ण विदाई का आशीर्वाद। उनकी पत्नी ने उनसे वादा किया था कि वे सुरक्षित और स्वस्थ वापस आएँगे, भले ही मिशन पूरा होने में उनकी अपेक्षा से ज़्यादा समय लगे।

हालाँकि, विजयन जैसे लोगों के लिए स्थिति अलग थी, जिनके परिवार चोल राजधानी से दूर रहते थे। अलविदा कहना या गुप्त पत्रों का आदान-प्रदान भी संभव नहीं था। वे अपने ऊपर सौंपे गए महान कर्तव्य को जल्दी पूरा करने के लिए उत्सुक थे। क्योंकि इसका मतलब था घर जल्दी लौटना।

विजयन अभी भी चेरा क्षेत्र में उनके चक्कर लगाने से अप्रभावित लग रहे थे।
वह सचमुच सोचता था कि यह एक अनावश्यक ध्यान भटकाने वाली बात है। इसके अलावा, उसे हमेशा चेर राजा की चोल शासक के प्रति वफ़ादारी पर संदेह रहता था। 'मुझे इस अमल व्यक्ति के बारे में ज़्यादा यकीन नहीं है...' अमल वही 'तुर्की दिखने वाला लेकिन भारत-वफ़ादार' व्यक्ति था जिसे
चेर राजा राजसिंह ने नरसिंहन को उठाने पर ज़ोर दिया था। इसके अलावा, चतुर चेर कोल्लम जैसे सैन्यीकृत जहाज़ अड्डे से, जो शांति के समय, जैसे कि वर्तमान समय में, खाली और निष्क्रिय रहता है, नौकायन में शामिल जोखिमों का एहसास था। अगर वे वहाँ से नौकायन करते, तो चोल दस्ते पर दूसरों की नज़र पड़ जाती।

इसके बजाय, उन्होंने नरसिम्हन को सलाह दी थी कि वह अपने सैनिकों को व्यस्त और आमतौर पर भीड़-भाड़ वाले व्यापारिक शहर कोच्चि से एक साधारण व्यापारिक नौका से ले जाएँ। यह व्यापारिक नौका बलूचिस्तान और अरब तट के पास अरब सागर में गश्त करने वाली अरब नौसेना को भी संदेह नहीं होने देती। नरसिम्हन ने कोच्चि के रास्ते में सबरी पहाड़ियों से राजसिंह के प्रस्तावित एजेंट अमल को लेने का फैसला किया था।

"अब आओ, मेरे दोस्त," नरसिंह ने अपने सहायक के साथ ढलान पर लंबे-लंबे डग भरते हुए आग्रह किया। "राजसिंह ने हमें अमल की ओर इशारा करके हम पर एहसान किया है। वह वावर मंदिर के संरक्षकों में से एक हैं, और मुझे यकीन है कि आपको पता होगा कि यह मंदिर भगवान अय्यप्पन मंदिर का सहयोगी मंदिर है।"
अमल ज़ाहिर तौर पर एक मुस्लिम विद्वान और ग़ज़नवी तुर्क भाषा सहित कई भाषाओं का ज्ञाता भी है। और चूँकि वह तिब्बती है, इसलिए उसे तुर्क भी कहा जा सकता है। वह हमारे लिए अमूल्य साबित होगा।'

विजयन ने सिर हिलाया। वह अभी भी आश्वस्त नहीं था। लेकिन एक अच्छे सैनिक की तरह, वह अपने कमांडर से एक सीमा से ज़्यादा बहस नहीं करेगा।
"यह एक साधारण मुलाक़ात होगी," नरसिम्हन ने कहा। "आपको पता भी न चले, हम अंदर-बाहर हो जाएँगे। इसके अलावा, मकर संक्रांति के दौरान यहाँ होने के अपने सौभाग्य का लाभ उठाएँ। यह एक शुभ संकेत है, और मैं ईश्वर से हमारी सफलता की प्रार्थना करना चाहता हूँ।"

इस बार विजयन ने ज़्यादा विश्वास के साथ सिर हिलाया, और दोनों चुपचाप आगे बढ़ गए। वे दूसरे तीर्थयात्रियों के पास ही रहे, किसी भी सैनिक की तरह सतर्क।

Machine Translated by Google

हमेशा रहना चाहिए, फिर भी ऐसा लगता है कि वे बेफिक्र हैं। उन्होंने अपने और नज़दीकी भक्तों के समूहों के बीच इतनी जगह छोड़ी कि किसी भी तरह की गड़बड़ी की स्थिति में वे लोगों के समूहों के बीच से निकल सकें।

'हमारा पीछा किया जा रहा है,' विजयन ने अचानक सहज स्वर में कहा, आगे देखते हुए, उनके चेहरे पर कोई परिवर्तन नहीं था, मानो वे अपने कमांडर के साथ मौसम के बारे में चर्चा कर रहे हों।

नरसिम्हन ने फुसफुसाते हुए कहा, 'मुझे लगता है कि मैं जानता हूँ कि कौन हमारा पीछा कर रहा है।' 'ये लोग उन्होंने हमारे साथ तालमेल बिठाने के लिए इतनी बार अपना रास्ता बदला है कि इसे संयोग नहीं कहा जा सकता।' विजयन ने स्वीकृति में सिर हिलाया। 'मुझे पता

है। वे बाकी जगहों पर थे।'
आज दोपहर भी घर में कुछ गड़बड़ थी, जब हम अपने आदमियों के साथ रहने चले गए।'

नरसिम्हन ने कोई जवाब नहीं दिया। वह सीधे आगे देखते हुए आगे बढ़ गया।

'राजसिंह, तुम क्या सोचते हो?' पाण्ड्यों का चेरों के प्रति संदेह स्पष्ट था।

'नहीं,' नरसिम्हन का तुरंत जवाब आया। 'अगर वह हमें मारना चाहता, तो समुद्र में ही मार देता। उस पर कोई शक नहीं होता। वह अपने इलाके में ऐसा नहीं करेगा। यह कोई और है।'

विजयन को सभी चोल सैनिकों को वहीं छोड़ देने का पछतावा हो रहा था।
घर। बेशक, उन्होंने नरसिंह की भयानक योद्धा-प्रतिष्ठा के बारे में पहले भी सुना था। लेकिन चूँकि वह जनरल से अपेक्षाकृत हाल ही में गंगईकोंडा चोलपुरम में मिले थे, इसलिए उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि उनकी प्रतिष्ठा वास्तविकता से कैसे मेल खाती है। विजयन ने कई महान सैनिकों के बारे में सुना था जो हिंसा से तंग आकर एक सौ अस्सी डिग्री का मोड़ लेकर पूरी तरह से शांतिपूर्ण, अहिंसक शाकाहारी बन गए थे। उन्होंने नरसिंह को एक बार कॉकरोच पर पैर रखने से भी हिचकिचाते देखा था। हालाँकि, सभी भारतीयों की तरह, विजयन अहिंसक पुरुषों के प्रशंसक थे, इस समय, जब कोई खतरा आसन्न दिखाई दे रहा था, विजयन को नरसिंह के योद्धा अवतार को अपने साथ रखना अच्छा लगता। वह जानते थे कि क्रूर तुर्कों से सामना होने पर नरसिंह का पुराना रूप लौट आएगा। लेकिन उन लोगों के खिलाफ जो बिल्कुल उनके साथी भारतीयों जैसे दिखते थे? शायद नहीं। लेकिन उन्होंने ये विचार अपने तक ही सीमित रखे।

"क्या आदेश हैं, महोदय?" विजयन ने पूछा। "क्या हमें उनका सामना करना चाहिए?" "नहीं," चोल सेनापति ने दृढ़ता से उत्तर दिया।

"हम एक गुप्त मिशन पर हैं। हम ध्यान आकर्षित नहीं कर सकते। हम उनकी नकल करेंगे। अगर वे भिड़ेंगे, तो हम भी भिड़ेंगे।" "जैसा आप कहें, महोदय।" दोनों कुछ देर तक चुपचाप चलते रहे, लेकिन उन्हें कोई आश्चर्य नहीं हुआ। अंततः वे शिखर पर पहुँच गए, जहाँ भगवान

अय्यप्पन मंदिर का विशाल

पत्थर का प्रवेश द्वार था।

Machine Translated by Google

यह एक विशाल ग्रेनाइट संरचना थी जिसके दोनों ओर ऊँचे हाथी के आकार के चबूतरे थे जिन पर अग्नि के बड़े-बड़े कटोरे रखे हुए थे। प्रवेशद्वार पर मंदिर के अधिष्ठाता देवता अय्यप्पन की एक सुंदर मूर्ति स्थापित थी , जो अपने वाहन, दहाड़ते हुए बाघ के पास ऊँचे खड़े थे। उनका सिर गर्व और साहस से ऊँचा था। उनके एक हाथ में धनुष और दूसरे हाथ में तीन बाण थे।

मंदिर के चारों ओर घुड़सवार मंदिर रक्षक तैनात थे
परिसर। पैदल गश्त कर रहे पहरेदारों ने श्रद्धालुओं को आदरपूर्वक एक व्यवस्थित पंक्ति में खड़ा किया। चोल भूमि से आए दो लोगों ने देखा कि वे श्रद्धालुओं को द्वार से अंदर जाने देने से पहले उनसे सावधानीपूर्वक पूछताछ कर रहे थे। एक जीवित हाथी प्रवेश द्वार पर खड़ा था और अपने महावत के निर्देशानुसार, अपनी सूंड उठाकर प्रत्येक श्रद्धालु के सिर पर धीरे से टिकाकर, प्रवेश करते ही उन्हें आशीर्वाद दे रहा था।

"हम लगभग पहुँच ही गए हैं," प्राचीन मंदिर के प्रवेश द्वार पर खड़े भक्तों की भीड़ के बीच जगह बनाने के लिए धक्का-मुक्की करते हुए नरसिंह ने फुसफुसाया। "पहले ईश्वरीय कृपा प्राप्त करें। उसके बाद हम वावर मंदिर जाएँगे।"

ऐसा लग रहा था कि पीछा करने वाले पीछे छूट गए हैं। शायद यह ग़लत अलार्म था।
लेकिन नरसिम्हन की सहज बुद्धि उन्हें अभी भी चेतावनी दे रही थी।

विजयन ने कहा, 'लेकिन हम अठारह पवित्र सीढ़ियां नहीं चढ़ सकते।'
केवल उन्हीं लोगों को गर्भगृह तक अठारह सीढ़ियाँ चढ़ने की अनुमति थी जिन्होंने इकतालीस दिनों का कठोर व्रत किया था। और नरसिंहन और विजयन ने तपस्या नहीं की थी। विजयन ने गुजरते हुए एक चमकदार तांबे का स्तंभ देखा।

"बिल्कुल नहीं, चढ़ना मना है," नरसिम्हन ने कहा, जो उसी चमकदार तांबे के खंभे को देख रहा था, जो इतना चमकदार था कि उसमें पीछे के दृश्य का अच्छा प्रतिबिंब दिखाई दे रहा था। "और ऐसा लगता है कि हमारे दोस्तों ने..."

"...कुछ साथी मिल गए," विजयन ने नरसिम्हन की बात पूरी करते हुए कहा, और जल्दी से पीछा करने वालों की संख्या गिनने लगा। "वे सब इकट्ठे हैं। चौदह हैं।"

'हम्म,' नरसिम्हन ने कहा।

विजयन ने आँखें सिकोड़ लीं। 'मुझे नहीं लगता कि वे इस भीड़ में और उन हट्टे-कट्टे मंदिर के पहरेदारों के बीच हम पर हमला करेंगे।' उसने अचानक अपनी पीठ सीधी कर ली।
'अगर उनमें से कोई अमल हो तो? अगर जिसे हम ढूंढ रहे हैं, वो हमें ढूंढ रहा हो तो? और हमारी जाँच कर रहा हो तो?' 'हो सकता

है...' नरसिम्हन ने माना। 'लेकिन उसे हमसे मिलना था।'
वावर मंदिर, यहाँ नहीं। तो चलिए, हम अपनी सतर्कता कम न करें...'

'जी श्रीमान।'

Machine Translated by Google

विजयन को भीड़ में गायब होकर कुछ होने का इंतज़ार करने का विचार पसंद नहीं था। लेकिन उनके पास कोई विकल्प नहीं था।

दोनों व्यक्ति श्रद्धालुओं की सर्पीली कतार में शामिल हो गए और धीरे-धीरे मंदिर के द्वार की ओर बढ़े। कई श्रद्धालु हथियारों से लैस थे, जो इस घने जंगल वाले क्षेत्र में एक आम बात है, जहाँ बाघ, तेंदुआ और अन्य शिकारी जानवर रहते हैं।

क्या हम किसी जाल में फँस गए हैं? नरसिंह ने सिर हिलाया। वह राजसिंह पर भरोसा करता था, एक साधारण कारण से—राजेंद्र चोल चेर राजा पर भरोसा करते थे। और चोल सम्राट मनुष्यों का असाधारण न्याय करने वाला था। इसके अलावा, जैसा कि सभी जानते थे, राजसिंह एक महान शिव भक्त थे, और स्वाभाविक रूप से महमूद गजनवी को निशाना बनाने वाले अभियान का समर्थन करते। सबसे विश्वसनीय बात यह थी कि अमल का कब्ज़ा भारत में सभी धर्मों के आम अनुयायियों के बीच व्याप्त मैत्री, सद्भाव और भाईचारे का प्रतीक था। वह उन मुसलमानों के वंश से था जो पीढ़ियों से भगवान अय्यप्पन की अत्यंत निष्ठा और प्रतिबद्धता के साथ सेवा करते आ रहे थे। वह सबरीमाला के भगवान के प्रसिद्ध मुस्लिम भक्त वावर के वंशज थे। वावर ने तीन सौ साल पहले उस भयानक अरब नौसैनिक आक्रमण से इस मंदिर की रक्षा की थी।

अमल उस वंश से थे जिसने अपनी इस्लामी आस्था पर अडिग रहते हुए भी हिंदू धर्म की रक्षा करने की शपथ ली थी। अमल भले ही दुश्मन की आस्था को मानते हों, लेकिन वे भारत के सपूत थे।

शायद यह किसी और बात के बारे में है 'स्वामीये शरणम् अयप्पा! ...
स्वामीये शरणम् अयप्पा!' भीड़ अब उन्माद में थी, और प्रवेश द्वार पर पहरेदार अभी भी कई गज की दूरी पर थे।

'इस साल थोड़ी धीमी है, है ना?' उनके पीछे से एक शांत आवाज़ आई। चोलपुरम से आए लोग अपने कंधों के ऊपर से देख रहे थे, उनकी मांसपेशियाँ तनी हुई थीं। उनके पीछे एक लंबा, हट्टा-कट्टा भक्त खड़ा था, जिसकी मुस्कान एक सुखद मुस्कान लिए हुए थी जो लगभग एक व्यंगात्मक मुस्कान की सीमा पर थी। वह उस समूह का हिस्सा नहीं था जो उनके पीछे चल रहा था। उसका साफ़-सुथरा चेहरा मौसम की मार से झुलसा हुआ था। लगभग नरसिंहन जितना लंबा, वह आदमी काली धोती और गले में मनकों वाली रुद्राक्ष की माला पहने हुए था। दूसरे तीर्थयात्रियों की तरह।

'आमतौर पर, गेट पर कोई गार्ड नहीं होता,' नवागंतुक ने कहा,
बिना मांगे स्पष्टीकरण। उन्होंने बहुत ही मिलनसार तरीके से बात की, इतनी मिलनसारता से कि बात अटपटी हो गई।
'लोग तो अपनी मर्जी से आते-जाते हैं।' नरसिम्हन ने उसकी आँखों में प्यार
से देखा और मुस्कुराए, फिर मुँह फेर लिया।
चोल योद्धाओं को आसन्न खतरे का आभास हो गया था। उन्होंने अपनी तलवारों की मूठ पर हाथ रख लिए। तैयार।

Machine Translated by Google

शायद यह आदमी भी उनके पीछा करने वालों के साथ काम कर रहा था... तो अब, वहाँ पंद्रह विरोधी हो सकते हैं।

नरसिम्हन ने भौंहें चढ़ाईं और उस आदमी का लहजा समझने की कोशिश की। वह अजीब तरह से जाना-पहचाना लग रहा था। लेकिन उस रहस्यमय आदमी ने आगे जो शब्द कहे, उनसे दोनों आदमी चौंक गए। तीखे शब्द, एक भयावह लेकिन शांत आवाज़ में। ...

"क्या तुम्हें बुरा नहीं लगा? इन पहरेदारों की हिम्मत कैसे हुई कि वे राजेंद्र चोल के पागल कुत्ते नरसिंह को किसी गली के कुत्ते की तरह इंतज़ार करवाएँ? क्या तुम अपने किसी कुख्यात गुस्से में आकर इन आदमियों का क़त्ल नहीं कर दोगे?"

दोनों आदमी हक्के-बक्के रह गए। उनका भेद खुल गया। जंगली गति और चुपके से, वे एक साथ घूम गए। नरसिम्हन ने अपना शक्तिशाली हाथ उस आदमी के कंधे पर रखा। इस दोस्ताना व्यवहार ने अजनबी के चेहरे का रंग उड़ा दिया और उसकी मुस्कुराहट की जगह एक आश्चर्य भरी भौंहें चढ़ गईं। उसने अपनी कमरबंद में छिपा खंजर निकाला, लेकिन विजयन ने तुरंत उसका हाथ पकड़ लिया और उसे फुर्ती से घुमाकर चाकू के सपाट, ठंडे स्टील को घुसपैठिए की पीठ पर दे मारा।

'पेरुमल, मेरे दोस्त!' नरसिम्हन ने मुस्कुराते हुए कहा, एक यादृच्छिक शब्द का उपयोग करते हुए उसने उस आदमी को भीड़ से अलग खींचते हुए कहा, "इतने सालों बाद यहाँ तुमसे मिलकर अच्छा लगा। चलो मिलते हैं!"

यदि उनका पर्दाफाश हो गया था, तो उन्हें यह जानना आवश्यक था कि कैसे, तथा यह भी पता लगाना था कि इसके लिए कौन जिम्मेदार था।

"हाँ, पेरूमल," विजयन ने दाँत पीसते हुए फुसफुसाया और उस आदमी की कलाई पर अपनी पकड़ मज़बूत करके उसे मरोड़ दिया। खंजर गिर गया। विजयन ने उसे अपने पैर से गीली ज़मीन में गाड़ दिया।

वे लोग बढ़ती भीड़ के बीच से गुजरते हुए, बंदी को चकमा देते हुए आगे बढ़े।
साथियों। भीड़ को पीछे छोड़कर, वे जल्द ही घने, अभेद्य जंगल में प्रवेश कर गए। उनके पीछे, वश में किए गए व्यक्ति के साथी भक्तों के समुद्र में तेज़ी से खोजबीन कर रहे थे। लेकिन बंदी और बंदी रात में गायब हो चुके थे।

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 8

पछतावा एक ब्लेड है

पूंगा वन, चेरा क्षेत्र

मंदिर की मंद रोशनी और तीर्थयात्रियों के पैदल मार्ग से दूर, वे लोग घास के एक मैदान में रुके, जिसके चारों ओर घने पेड़ थे, जिनसे चांदनी की कुछ किरणें छनकर अंदर आ रही थीं। विजयन ने उस व्यक्ति का अंगवस्त्रम उतार दिया और उसके हाथों को एक ऊंचे, पतले मूट्टी पझम पेड़ के चारों ओर सुरक्षित रूप से बांध दिया।

पेड़ के मुख्य तने पर बिखरे गुलाबी जामुनों के कड़वे रस ने घुसपैठिए की धोती को भिगो दिया था, जिससे ऐसा भयावह आभास हो रहा था मानो उसके पैरों से खून रिस रहा हो। जिस तरह से उस आदमी ने, हथियार से रहित होने पर भी, युद्ध किया था, उससे नरसिंह और विजयन को यह स्पष्ट हो गया था कि वह एक प्रशिक्षित सैनिक था। लेकिन चोल योद्धा तो बिल्कुल नहीं। और वह जीवित सबसे प्रचंड योद्धाओं में से एक, नरसिंह का कोई मुकाबला नहीं था। खासकर अब जब चोल सेनापति ने अपनी लड़ाकू छवि वापस पा ली थी।

नरसिम्हन ने अपनी शक्तिशाली भुजा घुसपैठिये की छाती पर मारी और
उसे पेड़ के तने से जकड़ दिया। उसके हाथ पीछे पेड़ के चारों ओर बंधे हुए थे, और दुश्मन स्थिर था। चोल सेनापति ने अपना खंजर निकाला और उसे रक्षक के गले पर रख दिया, जबकि विजयन ने अपने तरकश से एक तीर निकाला और उसे अपने धनुष की डोरी पर चढ़ा लिया। वह मुड़ा और पहरा देने लगा, जंगल में अपने दुश्मन साथियों की तलाश में।

"बोलो," नरसिम्हन ने धमकी भरे लहजे में कहा। "तुम कौन हो? और कैसे?"

मेरा नाम जानते हो? तुम और तुम्हारे आदमी हमारा पीछा क्यों कर रहे थे? क्या तुम अमल हो? क्या तुम अमल के लिए काम करते हो?' कैदी ने घमंड से मुस्कुराते हुए कहा। 'आखिर अमल

कौन है?' नरसिम्हन ने उस आदमी पर अपने मूठ से एक ज़ोरदार वार किया।

चाकू। 'तुम्हें मेरा नाम कैसे पता?' उस आदमी ने थोड़ा

खून थूका। उसने नरसिंह को घूरा, उसके रोम-रोम से घृणा और क्रोध बह रहा था। 'तुम्हारा नाम कौन नहीं जानता? तुम्हारी क्रूर रक्तपिपासा और परपीड़न के बारे में कौन नहीं जानता?'

Machine Translated by Google

विजयन ने अपने कैदी की तरफ़ मुड़कर नहीं देखा। उसकी नज़रें आगे की ओर लगी थीं, यह देखने के लिए कि उनके दुश्मन के साथी कहाँ से हमला कर सकते हैं।
लेकिन उसने नरसिम्हन की क्रूरता के बारे में सुना था। हालाँकि, जब से वह जनरल को जानता था, उसने ऐसा कुछ नहीं देखा था।

नरसिम्हन अपने दुश्मन को घूर रहा था, उसकी आँखें स्थिर और निर्दयी थीं, और उसका लहजा धमकी भरा था। "तेरी गालियाँ बेकार हैं। मुझे कुछ उपयोगी जानकारी दे, कमीने, इससे पहले कि मैं तुझे किसी ऐसे परेशान करने वाले चूहे की तरह काट-काट कर चूर-चूर कर दूँ जिसे खत्म कर देना चाहिए।" विजयन का खून ठंडा हो गया। बात सिर्फ़ शब्दों की नहीं थी। लहजे की थी। वह

अपने सेनापति को ऐसा पहले कभी नहीं सुना था। अब उसे समझ आ गया था कि चोल के दुश्मन नरसिंह से इतना क्यों डरते थे। लेकिन एक अच्छे सिपाही की तरह, उसने अपनी नज़रें सही दिशा में गड़ाए रखीं। आगे पेड़ों की ओर, जहाँ उनके कैदी साथी उसे ढूँढ़ रहे होंगे।

अभियोक्ता ने आगे कहा, 'आज तुम मर जाओगे, नरसिंह! वातापी राज करेगा! सत्याश्रय का बदला लिया जाएगा!' नरसिंह स्तब्ध रह गया।

सत्याश्रय... चालुक्य... हमारी भूमि में इतनी गहराई तक?!

चोल और चालुक्य एक दूसरे के साथ युद्धरत थे, और
दो दशकों से अधिक समय तक। युद्धों का पहला दौर 1008 ई. में हुआ था, तत्कालीन युवराज राजेंद्र चोल ने चालुक्य सम्राट ⋯
सत्याश्रय के साथ वर्ष भर विनाशकारी युद्धों की एक श्रृंखला लड़ी थी, अंतिम युद्ध कृष्णा नदी के तट पर तोन्नूर में हुआ था। राजेंद्र चोल ने सत्याश्रय को आमने-सामने की लड़ाई में मार डाला था, और इस क्षेत्र में हुए सबसे हिंसक संघर्षों में से एक चालुक्यों की हार के साथ समाप्त हुआ था। उन्होंने एक दशक से अधिक समय तक अपने घावों को सहलाया और 1019 ई. में चोलों पर फिर से हमला किया। राजेंद्र चोल ने कड़ा संघर्ष किया था, और उनके सेनापति ने दक्षिणी चालुक्य भूमि में एक क्रूर उत्पात मचाया था, एक खूनी, स्तब्ध कर देने वाले अभियान में, दुश्मन को एक बार फिर आत्मसमर्पण करने पर मजबूर कर दिया था। चोलों ने तत्कालीन चालुक्य साम्राज्य के बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया था।

इन युद्धों की श्रृंखला ने भारतीय उपमहाद्वीप के दक्षिणी क्षेत्र पर चोलों का निर्णायक आधिपत्य स्थापित किया। इसने नरसिंह नामक एक वीर युवा चोल योद्धा के उदय का भी सूत्रपात किया, जिसने चालुक्यों के विरुद्ध वीरता और प्रचंडता से युद्ध किया था, पहली बार 1008 ई. में एक मात्र लेफ्टिनेंट के रूप में, जब वह राजेंद्र चोल की नज़र में आया। और फिर 1019 ई. में, जब उसने

Machine Translated by Google

चालुक्य भूमि पर हुए खूनी हमले के दौरान, उन्होंने चोल सेना का सेनापति के रूप में नेतृत्व किया था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वे नरसिंह से नफ़रत करते थे।

नरसिंह के मन में जो विचार आया वह स्पष्ट था। उनकी पिछली हार को एक दशक बीत चुका है। क्या चालुक्य हमारे खिलाफ एक और युद्ध की योजना बना रहे हैं? उन्हें मेरे दस्ते के बारे में किसने बताया? और हमारी लोकेशन किसने बताई?

चालुक्य सैनिक ने नरसिम्हन के कम से कम एक प्रश्न का उत्तर दिया
अपनी मर्ज़ी से। 'यह भगवान अय्यप्पन का आशीर्वाद है कि हमने आपको कोल्लम में देखा। मैं आपका चेहरा कभी नहीं भूल सकता। आपने मेरे सभी साथियों को बेरहमी से मार डाला। आपने मुझे ज़िंदा छोड़ दिया, मुझे याद है...'
... आपने ताना मारा...'

'हाँ...' नरसिंह ने गुर्राते हुए बीच में ही टोक दिया। अपराधबोध और पछतावे की परतों में दबा वह रक्तपिपासु योद्धा धीरे-धीरे फिर से उभर रहा था। उभर रहा था क्योंकि, बहुत दिनों बाद, उसके सामने एक ऐसा आदमी खड़ा था जिसे वह मारने लायक समझ रहा था। 'मुझे याद है मैंने कहा था—कि मैं चूहों को तब तक नहीं मारता जब तक वे बिस्तर गीला कर रहे होते हैं। शायद अब तुम मारने लायक हो।' ... मैंने कहा था—मुझे लगता है
...

चालुक्य सैनिक गुस्से से दाँत पीसता रहा। उसे आखिरकार याद आया कि अब उसे मार डालने का समय आ गया है। ...

ठीक उसी समय, नरसिंह ने चालुक्यों के मूठ पर चाकू से एक ज़ोरदार प्रहार किया। मूठ गले में एक उभार है, जो थायरॉइड कार्टिलेज से बना होता है। यह स्वरयंत्र की दीवारों और अग्र भाग की रक्षा करता है, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण स्वर रज्जु भी शामिल है।

इन सभी को क्रूरतापूर्वक कुचल दिया गया था।
'तुम अपने साथियों को बुलाने की योजना बना रहे थे, है ना, चूहे?' नरसिंह क्रूरता से मुस्कुराया।

सिपाही दर्द से तड़प रहा था और आवाज़ निकालने की बहुत कोशिश कर रहा था। लेकिन
उसका नष्ट हो चुका स्वरयंत्र कुछ भी करने में असमर्थ था।
"उसे मार डालो, जनरल," विजयन ने धीरे से फुसफुसाया। "उसने कहा कि यह भगवान अय्यप्पन का आशीर्वाद था कि उसने हमें कोल्लम में देखा। यह बस एक संयोग था कि उन्होंने हमें पा लिया। उनके पास हमारी टुकड़ी के बारे में कोई खुफिया जानकारी नहीं है। हमारा मिशन सुरक्षित है। हमें उसे जल्दी से मारकर यहाँ से निकल जाना चाहिए।" "शायद..." नरसिम्हन फुसफुसाया, एक बार भी अपनी नज़रें चालुक्यों से हटाए बिना।

'जनरल...' 'यह
कीड़ा-मकोड़ा अब और नहीं बोल सकता,' नरसिंह ने कहा।

Machine Translated by Google

नरसिंह ने अपने बलिष्ठ बाएँ हाथ से चालुक्यों के माथे को पेड़ से सटा दिया, जिससे उन्हें वार करने के लिए पूरी जगह मिल गई। फिर, बहुत धीरे-धीरे, किसी शल्यचिकित्सक की चीर-फाड़ की कला से, उन्होंने अपने चाकू से दुश्मन का गला चीर दिया। गर्दन के दाहिने किनारे से, एक बेदाग गोलाकार घाव, बाईं ओर। गहरा। इतना गहरा कि उन्होंने न सिर्फ़ गले की नसों को, बल्कि कैरोटिड और ग्रीवा धमनियों को भी चीर डाला। बाएँ और दाएँ, दोनों को। खून का फव्वारा फूट पड़ा, जिससे नरसिंह का चेहरा गहरे लाल रंग में नहा गया।

विजयन ने मुड़कर देखा तो वह भयावह दृश्य दिखाई दिया। खून से सना हुआ, बल्कि खून से लथपथ नरसिम्हन। ज़िंदगी में पहली बार उसे गहरा डर लगा। 'जनरल, चलो यहाँ से निकलते हैं...' नरसिम्हन ने अंगवस्त्रम का कपड़ा ढीला किया। वही कपड़ा जिससे चालुक्यों को बाँधा गया था।·बेजान शरीर ज़मीन पर गिर पड़ा। फिर उसने उसी

अंगवस्त्रम से अपना चेहरा और ब्लेड पोंछा। उसकी आवाज़ शांत थी। 'नहीं। हमें बाकी लोगों का पीछा करना होगा। और हमें जवाब चाहिए।'

वे कितना जानते हैं?' 'जनरल...' नरसिम्हन
ने विजयन की ओर

तीखी नज़र से देखा।

'जैसी आपकी आज्ञा, महोदय,' विजयन ने कहा।



वे तीन घंटे से ज़्यादा समय से शिकार कर रहे थे। पंद्रह चालुक्य सैनिकों का समूह चोल दस्ते को खोजकर उनका पीछा कर रहा था, जिसमें वह सैनिक भी शामिल था जिसने मंदिर में कतार में खड़े नरसिंह को रोका था।

अब टीम के केवल दो लोग ही जीवित बचे थे।

नरसिम्हन ने एक-एक करके तेरह लोगों को विधिपूर्वक मार गिराया।
पशुओं की आवाजों और ध्वनियों के माध्यम से झुंड को एक दूसरे से अलग करना।
सही समय पर, चीते की गति और तेंदुए की खामोशी के साथ, आगे बढ़ते हुए। शिकार करते हुए, और अंधेरे में पीछे हटते हुए। विजयन ने अपने कमांडर के आदेशानुसार कुछ बार मदद की थी। लेकिन वह ज़्यादातर परछाईं में पीछे छिपता रहा था, नरसिम्हन को घूरता रहा, कभी विस्मय से, कभी भय से, क्योंकि उसने कभी इतने उत्कृष्ट शिकार कौशल नहीं देखे थे जिन्हें कला का नमूना कहा जा सके।

'जनरल...' विजयन ने धीरे से कहा।

Machine Translated by Google

'हम्म।' 'दो

बचे हुए सैनिक आगे हैं।' 'मैं उन्हें देख सकता हूँ।' 'जनरल, क्या मैं खुलकर बोल
सकता हूँ...' 'हम्म।' 'हमने

पहले वाले को छोड़कर किसी से कोई सवाल नहीं पूछा है। हमने
अभी-अभी

उन सबको मार डाला है। क्या मतलब है? उनमें से तेरह अब मर चुके हैं। और हमें उनके बारे में अभी भी कुछ और नहीं पता।' 'जब हमें पता है कि कोई हमें पीछे से गोली मार सकता है, तो हम सवाल नहीं पूछ सकते। उन सभी के पास धनुष-बाण हैं।'

... मेरा मतलब है ...'

विजयन चुप रहे।

नरसिम्हन ने फुसफुसाते हुए कहा, 'ऐसी स्थिति में हम या तो
पहले वाले से सवाल तब पूछे जब बाकियों को पता ही नहीं था कि हम कहाँ हैं। या फिर हम आखिरी वाले से भी सवाल पूछ सकते हैं, जब बाकियों की मौत हो चुकी हो।'

विजयन ने सिर हिलाया।

'मैं बाईं ओर बहुत दूर जा रहा हूँ। जब मैं कोई पक्षी बोलूँ, तो चालुक्यों को गोली मार देना।'
दाहिनी ओर। उसके गले के रास्ते।'

"जी हाँ, सर," विजयन ने कहा। मंद चाँदनी में उसे समझ आ गया कि बाईं ओर वाला चालुक्य ही निर्देश दे रहा था। इसलिए दाईं ओर वाले को मारना उचित लगा, क्योंकि उसे कम जानकारी होगी।

नरसिम्हन बिना कोई आवाज़ किए चुपचाप निकल गए। विजयन को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि कैसे अपने सेनापति जितना विशालकाय आदमी इतनी चुपके से कैसे चल सकता है। उसने बिना कोई आवाज़ किए, अपने तरकश से धीरे से एक तीर निकाला। तीर को धनुष पर चढ़ाकर लक्ष्य की ओर तानकर, वह इंतज़ार करने लगा।

और फिर वह आवाज़ आई। चिड़िया की आवाज़। लेकिन यह बिलकुल सटीक थी। शायद यह कोई असली चिड़िया थी। विजयन उलझन में था। उसने इंतज़ार किया। क्या होगा अगर उसका सेनापति अभी तक सही जगह पर नहीं पहुँचा हो? उसने और सुनने की कोशिश की। वह मंद चाँदनी में चालुक्यों को एक-दूसरे को देखते हुए देख सकता था। बाईं ओर वाला दाईं ओर के सैनिक से कुछ फुसफुसा रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे वे अभी हिलने वाले हैं। एक और चिड़िया की आवाज़ आई, जो पिछली वाली से ज़्यादा अधीर लग रही थी। विजयन ने तुरंत धनुष की डोरी खींची और तीर छोड़ा, और उसके पंख भी फड़फड़ाए। मिसाइल एक सीधी रेखा में उड़ी, अपनी धुरी पर घूमती हुई, और दाईं ओर के चालुक्य सैनिक के गले में जा लगी। तीर का अग्रभाग बेचारे की गर्दन के दूसरी ओर निकला, और तीर का डंडा अंदर तक धँस गया। सैनिक अपना गला पकड़े हुए गिर पड़ा, अपने ही खून में डूबने लगा।

Machine Translated by Google

बाईं ओर का चालुक्य सैनिक तुरंत ज़मीन पर घुटनों के बल गिर पड़ा। दुश्मन के तीरों से बचाव के लिए उसने दाहिने हाथ में चाकू ऊँचा उठाया हुआ था। एक छोटा सा निशाना लगाओ। और पैरों और हाथों से उसके महत्वपूर्ण अंगों को ढक दो।

बहुत तार्किक.

लेकिन चाकू लेकर करीब आ रहे दुश्मन के खिलाफ यह उतना तर्कसंगत नहीं है।

नरसिम्हन दोनों हाथों में चाकू लिए, तेज़ गति से आगे बढ़ा।

दक्षिण-पूर्व एशिया में, चाकू से लड़ने की एक रणनीति प्रचलित है जिसे 'साँप के दाँत निकालना' कहा जाता है। इसका अर्थ है प्रतिद्वंद्वी के अंग को निशाना बनाकर उसकी संरचना और कार्य को नष्ट करना। प्रतीकात्मक रूप से, हथियार 'नुकीला दाँत' है और उसे चलाने वाला हाथ 'साँप' है। साँप के दाँत को हटाने से रक्षक से मुख्य खतरा तुरंत समाप्त हो जाता है।

नरसिंह ने बेरहमी से वार किया, चालुक्यों की कलाई पर फ्लेक्सर टेंडन को चीर डाला, जो उनके दाहिने अग्रबाहु की मांसपेशियों को उंगलियों से जोड़ता था। एक साधारण सर्जिकल वार ने चालुक्यों की तलवार वाली भुजा की उंगलियों को निष्क्रिय कर दिया और चाकू उनके हाथ से गिर गया। साँप के दाँत निकल गए थे। इससे पहले कि दुश्मन सैनिक समझ पाता कि हमला कहाँ से हुआ था।

उसी सहज गति से, नरसिंह ज़मीन पर लुढ़क गए और चालुक्य सैनिक को कंधे से नीचे गिरा दिया। जैसे ही वह सैनिक दर्द से चीखा, नरसिंह ने अपने बाएँ हाथ से उसके घुटने के निचले हिस्से और पिंडली की हड्डी को जोड़ने वाली पटेला टेंडन को चीर डाला। चालुक्य सैनिक बेतरतीब ढंग से चीखता रहा, नरसिंह ने लापरवाही से दूसरे पैर के पटेला टेंडन को काट डाला। पल भर में, नरसिंह ने वह कर दिखाया जिसे चाकू की लड़ाई में मोबिलिटी किल कहा जाता है।

चालुक्य सैनिक हिल नहीं सकता था, क्योंकि उसकी जांघ से 'कनेक्शन' टूट गया था
पैरों के निचले हिस्से की मांसपेशियाँ कट गई थीं। वह अपना चाकू भी नहीं उठा पा रहा था, क्योंकि उसके दाहिने हाथ से उंगलियों तक की मांसपेशी कट गई थी। वह बस दर्द से तड़प रहा था। और नरसिम्हन पर गालियाँ बक रहा था।

विजयन दौड़ते हुए आए, उनका मुंह खुला का खुला रह गया कि कैसे नरसिम्हन ने आखिरी चालुक्य सैनिक को असहाय अपंग बना दिया था।

'उसे खत्म कर दो,' नरसिम्हन ने शांतिपूर्वक आदेश दिया, उस सैनिक की ओर इशारा करते हुए जिसे विजयन ने कुछ सेकंड पहले ही गोली मारी थी।

विजयन ने अपना चाकू निकाला, नीचे झुका और चालुक्य सैनिक की पसलियों से होते हुए उसके हृदय में गहरे तक वार कर दिया, जिससे वह अपने दुख से मुक्त हो गया।

Machine Translated by Google

जैसे ही वह अपने जनरल की ओर मुड़ा, उसने देखा कि नरसिम्हन अपने चेहरे से पानी पोंछ रहा था। ब्लेड साफ़। 'विजयन, इसे खींचकर पेड़ से बाँध दो।'

'जी श्रीमान।'



"तुम जितना चाहो चिल्ला सकते हो," नरसिंह ने गुर्राते हुए कहा, उसे और फुसफुसाने की ज़रूरत महसूस नहीं हुई। "तुम्हें बचाने कोई नहीं आ रहा। हम मंदिर से बहुत दूर हैं। लेकिन अगर तुम जल्दी बोलोगे, तो हम तुम्हारा दुख दूर कर देंगे।" चालुक्य दर्द से चीखता-चिल्लाता रहा। उसके हाथ बंधे हुए थे।

वह अपने अंगवस्त्रम के साथ पीछे अशोक वृक्ष के चारों ओर खड़ा था। उसके साथी सैनिक का अंगवस्त्रम उसकी बगलों में से निकालकर ऊपर की शाखा से बाँध दिया गया था, ताकि वह गिर न जाए, क्योंकि उसके पैर अब लगभग बेकार हो चुके थे। उसे नरसिंह की आँखों के स्तर पर बाँधा गया था।

चालुक्य गालियाँ देते और चीखते रहे, लेकिन उनकी कोई भी बात समझ में नहीं आई।

नरसिंह आगे बढ़ा और सिपाही के दाहिने कंधे पर चाकू घोंप दिया, चाकू उसके शरीर में गहराई तक धँस गया। चालुक्य फिर से दर्द से कराह उठा, तो नरसिंह गरजा, "बोलो! और तुम्हें दया आएगी। तुम्हें हमारे मिशन के बारे में क्या पता? तुम्हें कैसे पता चला कि मैं यहाँ आ रहा हूँ?"

चालुक्य ने कोई जवाब नहीं दिया। वह बस चोल सेनापति को गालियाँ बकता रहा।

नरसिम्हन विजयन की ओर मुड़े। "चलो थोड़ी देर बैठते हैं। इसे थकने दो। फिर बात करेगा।" "जी सर।"



नरसिम्हन ने आदेश दिया, 'उसे जगाओ।'

चालुक्य सैनिक खून बहने और पैरों में गहरे ज़ख्मों के बावजूद खड़े रहने के लिए मजबूर होने से बेहोश हो गया था। विजयन के कुछ थप्पड़ों और चेहरे पर पानी फेंकने के बाद, सैनिक होश में आया।

Machine Translated by Google

'पीछे हटो, विजयन।'

विजयन ने आदेशानुसार किया। उसने ऊपर देखा तो पाया कि भोर हो रही थी।
दिन के समय इन पहाड़ियों में अधिक यात्री होते थे, जिसका अर्थ यह भी था कि
ताकि उन्हें खोजा जा सके। उन्हें जो भी खोजना था, उन्हें खोजना ही था
जल्दी से बाहर.

नरसिम्हन ने पूछा, 'अब बात करने का मन है?'

चालुक्य हताश दिख रहे थे, मानो उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया हो। 'उनका नाम ...
था ... विक्रम.'

'विक्रम किसका नाम था?'

'हमारे नेता को ... वह आदमी जिसने मंदिर में आपसे बात की थी... पहला आदमी
आपने मार डाला।'

नरसिम्हन चुप रहे।

'तुमने उन्हें मार ... उसके सभी दोस्त ... चालुक्य-चोल युद्ध में।'

डाला। यह युद्ध है। हम सैनिक हैं। हम जानते हैं कि यह कैसे काम करता है। अगर मैंने उन्हें नहीं मारा होता,'
वे मुझे मार डालते। यह अब पुराना इतिहास है। तुम्हें सीखना होगा
आगे बढ़ो।'

'क्या आप उसके प्रतिशोध के अधिकार से इनकार करते हैं?'

नरसिम्हन चुप रहे। क्योंकि गजनी तक उनका अभियान भी लगभग
प्रतिशोध.

'क्या आप?'

नरसिम्हन को इस बारे में बात करने का मन नहीं हुआ। 'तुम्हें कैसे पता चला?
मेरा मिशन?'

'क्या... मिशन...?'

नरसिम्हन ने चालुक्य सैनिक की आँखों में देखा। वह समझ गया कि
वह सच कह रहा था। 'तो फिर तुम हमें यहाँ तक कैसे ढूँढ़ लाए?'
यहाँ?'

'हम यहां थे... एक व्यापार प्रतिनिधिमंडल की सुरक्षा कर रहे थे... हमने आपको देखा...
कोल्लम। कैप्टन विक्रम ने... हमारे मिशन का उद्देश्य बदल दिया और निर्णय लिया
... तुम्हें ढूंढ़ने और मार डालने के लिए।'... ...

नरसिम्हन ने विजयन की ओर देखा। उनके डिप्टी सही थे। यह तो बस एक
संयोग।

चालुक्यों ने विजयन की ओर देखा, 'हमें तुमसे कोई शिकायत नहीं है... हम
नरसिम्हन ने ... नरसिम्हन का सिर.'

कहा, 'ठीक है, आप इसे नहीं समझ रहे हैं।'

'हमने समुद्र में तुम्हारा शिकार करने अरब भाड़े के सैनिक ...
के लिए कुछ लोगों को रखा था, ताकि अगर हम तुम्हें ढूंढ पाएं तो...
लेकिन हमने सोचा कि हम भाग्यशाली हैं... जब आप और
आपकी पार्टी... "वापस अंदर की ओर मुड़ गए। हमने योजना बनाई थी... तुम्हें यहाँ लाने की।"

Machine Translated by Google

विजयन ने गहरी साँस ली। अरब भाड़े के सैनिक। समुद्र में। हमें शिकार करने के लिए पैसे दिए गए... धिक्कार है।

चालुक्य मानो गिर पड़े। उन्होंने कुछ बुदबुदाया। बहुत धीरे से।

नरसिम्हन ज़्यादा साफ़ सुनने के लिए आगे झुके। यह पहली बात थी
उस रात चोल सेनापति ने जो गलती की, वह बहुत महंगी पड़ी।
कंडराओं पर, विशेष रूप से कलाईयों पर, गहरे घावों की समस्या यह है कि
खून जल्दी नहीं जमता। चोट से बस खून रिसता रहता है।
लगभग लगातार। वह खून उस अंगवस्त्रम पर टपक रहा था जिससे पेड़ के पीछे चालुक्यों के हाथ बंधे थे। जैसे-जैसे खून कपड़े में रिसता गया, कपड़ा चिकना और फिसलन भरा होता गया। नतीजतन, रात भर धीरे-धीरे संघर्ष करते हुए, चालुक्य अपने अक्षत बाएँ हाथ को छुड़ाने में कामयाब हो गए। जहाँ उंगलियाँ अभी भी अग्रबाहु की मांसपेशियों से जुड़ी हुई थीं। वे अभी भी पकड़ और थाम सकती थीं।

जैसे ही नरसिंह पास झुका, चालुक्य ने लगभग तुरंत अपनी कमरबंद से एक तीर निकाला, अपना बायाँ हाथ ढीला किया और सीधे नरसिंह के पेट में भोंक दिया। नरसिंह ने देखा, और उसी क्षण, उसने बचाव का कदम उठाया। नीचे खिसककर बाएँ मुड़ गया। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। वह वार से पूरी तरह बच नहीं सका। तीर का सिरा ज़ोर से वार करता हुआ नरसिंह की दाहिनी ट्रेपीज़ियस मांसपेशी, पीठ के ऊपरी हिस्से और दाहिने कंधे में गहराई तक जा लगा। विजयन डर के मारे चीख पड़ा, आगे बढ़ा और चालुक्य का हाथ पकड़ लिया।

'जनरल!' यह एक

छोटा सा घाव लग रहा था। निश्चित रूप से, दुर्जेय नरसिम्हन
उसकी पीठ के ऊपरी हिस्से पर तीर लगने से वह गिर नहीं जाएगा।
चालुक्य अब ज़ोर-ज़ोर से हँस रहे थे। 'कैप्टन विक्रम! मैंने उसे पकड़ लिया! मैंने उसे पकड़ लिया!'
राक्षस को पकड़ लिया! हमने बदला ले लिया!'
क्रोधित विजयन ने अपनी तलवार निकाली और चालुक्यों के दाहिने हाथ पर वार कर दिया।
उसकी छाती के आर-पार। उसके दिल की गहराई में—और उसे तुरंत मार डाला।
'सेनापति!'

पराक्रमी नरसिंह धरती पर गिर पड़े, मानो कोई विशाल अजेय सागौन का पेड़ जड़ से ही काट दिया गया हो। उस प्रतापी योद्धा के लिए दुनिया अंधकार के गर्त में समा गई।

"जनरल!" विजयन

ने नरसिंह को उठाने की कोशिश की। लेकिन वह दुबले-पतले पांड्या के लिए बहुत भारी-भरकम और भारी-भरकम था। उसने अंदाज़ा लगाया कि तीर की नोक में कोई बहुत तेज़ ज़हर लगा होगा।

Machine Translated by Google

'सोओ मत, जनरल! आँखें खोलो!' वह जानता था कि

ज़हर के मामले में सो जाना सबसे बुरा काम है। खासकर उन मामलों में जिनमें गंध नहीं होती। वह जनरल को बेतहाशा हिलाता रहा, और उसके अंदर गहरी घबराहट बढ़ती जा रही थी।

जिंदा रहो, जनरल। कृपया जिंदा रहो।

और फिर उसने यह सुना.

नरम ज़मीन पर कई घोड़ों के खुरों की आवाज़।

दया करो, देवी मीनाक्षी।

लोग उनकी ओर बढ़ रहे थे।

विजयन ने अपनी तलवार निकाली और नए खतरे का सामना करने के लिए मुड़े।

नया हमला। उसने अपनी प्रजा का युद्धघोष फुसफुसाया। 'मदुरै की मीनाक्षी की ओर से...' जैसे-जैसे सूरज उग रहा था, जंगल में रोशनी धीरे-धीरे बढ़

रही थी।

विजयन स्पष्ट रूप से दूरी पर वर्दीधारी घुड़सवारों को पेड़ों के बीच से निकलते हुए देख सकता था।

मंदिर के रक्षक.

उसने एक लम्बी, थकी हुई साँस छोड़ी।

"बचाओ! लो! बचाओ!"

विजयन ने अपनी तलवार की नोक कीचड़ में दबाई और घुटनों के बल बैठ गया। यह संकेत देने के लिए कि वह घुड़सवार सैनिकों के लिए कोई ख़तरा नहीं है। उसने अपनी ओर आते हुए पहरेदारों को हाथ हिलाकर इशारा किया।

'इधर आओ!' विजयन चिल्लाया। 'इधर आओ! इस आदमी को मदद की ज़रूरत है!'

घुड़सवारों का नेतृत्व एक दुबला-पतला, सादी वर्दी पहने घुड़सवार कर रहा था।

एक बेमेल टोपी, जिस पर एक कपड़ा मुखौटे की तरह बंधा हुआ था, उसके चेहरे के ज़्यादातर हिस्से को ढक रही थी। विजयन के पास पहुँचते ही नेता ने अपने घोड़े की लगाम खींच ली।

पांड्या सैनिक घुटनों के बल बैठा रहा, अपने हाथ ऊपर उठाए, तलवार की मूठ से दूर। वह नहीं चाहता था कि किसी को यह भ्रम हो कि उसका कोई बुरा इरादा नहीं था। क्योंकि पहरेदारों ने पहले ही ढेरों लाशें देख ली होंगी।

दुबले-पतले नेता के बगल में घोड़े पर सवार एक और पहरेदार, गुस्से से बोला। 'इतना कत्लेआम! इस पवित्र भूमि पर! यह बेतुका है, नेक अमल! हम इसकी इजाज़त कैसे दे सकते हैं? तुमने तो कहा था कि वे तुम्हारे मेहमान थे?' दुबले-पतले नेता अमल ने हाथों से इशारा करके शांति की अपील की।

अपने साथी से.

Machine Translated by Google

'सुनो, मेरे जनरल नरसिम्हन को मदद की ज़रूरत है,' विजयन ने इशारा करते हुए कहा
अपने सेनापति से कहा, "उसे ज़हरीले तीर से मारा गया है। उसे अभी चिकित्सा की ज़रूरत है। शक्तिशाली चोल सम्राट के नाम पर, मैं माँग करता हूँ कि..."

'तुम कुछ नहीं मांगोगे!' गुस्से से भरे पहरेदार ने चिल्लाकर कहा। 'तुमने और तुम्हारे सेनापति ने यहाँ कानून तोड़ा है। हम मंदिर के पहरेदार हैं। हम सम्राट के प्रति जवाबदेह नहीं हैं। हम अपने देवताओं के प्रति जवाबदेह हैं।' 'तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम उसकी मदद करो!' विजयन जानता था कि उसके पास अपने सेनापति को बचाने के लिए
बहुत कम समय है।

'चुप!' घुड़सवार जिसे उन्होंने अमल कहकर संबोधित किया था, चिल्लाया।
विजयन चुप हो गए। कई कारणों से। पहला, दुबले-पतले नेता अमल के स्पष्ट रूप से आज्ञाकारी लहजे के कारण। और उससे भी ज़्यादा, नेता की स्पष्ट रूप से स्त्रीवत आवाज़ के कारण।

अमल, डिप्टी, और वावर दरगाह के वर्तमान संरक्षक अहमदुल्लाह की सबसे बड़ी संतान। सबसे बड़ी संतान बेटा नहीं, बल्कि बेटी थी।

नेता के चेहरे को ढकने वाला कपड़ा ढीला हो गया था, जिससे एक नाजुक,
छोटी आँखों वाला पीला चेहरा, छोटी, नुकीली नाक और पतले होंठ जो सुबह की धूप में चमक रहे थे। कंधों तक लटकते सीधे रेशमी बालों से सजी। अमल, केरल के मुसलमान अहमदुल्लाह और तिब्बती बौद्ध ताशी की बेटी। उसकी तिब्बती विरासत उसके रूप-रंग पर साफ़ झलकती थी।

अमल ने विनम्रता से कहा, 'महान चीफ गार्ड, इन सबके लिए मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ।'
उसने अपने बगल में खड़े मंदिर के पहरेदार से कहा, "आपको जो दर्द और शर्मिंदगी हुई है, उससे मैं बहुत शर्मिंदा हूँ। कृपया मुझे इस स्थिति को संभालने की अनुमति दें।"
ज़ाहिर है, अमल की विश्वसनीयता बहुत ज़्यादा थी। मुख्य रक्षक ने गहरी नज़र से देखा।
उन्होंने अपने गुस्से पर काबू पाने के लिए सांस रोक ली और अमल को स्थिति संभालने दिया।

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 9

ढोंगी की साजिश

ग़ज़नी, अफ़ग़ानिस्तान

इस्माइल ने अंडाकार आईने में देखा और इधर-उधर घूमा। ताँबे से बने, चमकते हुए, आईने में एक मनमोहक छवि झलक रही थी। उसने अपनी ठुड्डी ऊपर उठाई और खुद को घूरा। गौर से। वह मुस्कुराया नहीं।

एक नौकर लड़के ने अपने कंधों पर एक बड़ा फर वाला सरकोट डाला और अपनी बाहें फैला दीं।

बुरा नहीं, बिल्कुल बुरा नहीं।

उन्होंने मुफ्ती की हवेली के आलीशान शयन कक्ष को देखा और अंततः मुस्कुराये।
उसके नौकर और नौकर झुककर चले गए। उसने फिर आईने में देखा।

बेचारा ग़ज़नी! एक भयावह राक्षस से जूझ रहा है, जिसके मन में भ्रम है...
इतने सालों में ईश्वरत्व, जब उसने इस अच्छे सज्जन को शासक के रूप में अनुभव किया था। कोई चिंता नहीं।
... मैं अब वापस आ गया हूँ ...

इस्माइल यहाँ एक महीने से कुछ ज़्यादा समय से था और अच्छी तरह से बस गया था।
गजनी राजघराने के दूसरे सबसे बुजुर्ग पुरुष का भव्य भवन, सुल्तान के महल के बाद दूसरे स्थान पर था, और गवर्नर-मुफ्ती ने पिछले महीने आराम और अपनी नई स्वतंत्रता का आनंद लेते हुए बिताया था।

इस्माइल अपने जागने के घंटे मुश्किल से ही घर के अंदर बिताते थे। गुज़गान की बंद दीवारों और तंग जगहों से वह ऊब चुके थे। वह सूर्योदय से काफी पहले उठ जाते थे, और खुले में बाहर जाने के लिए लालायित रहते थे। हर सुबह, वह खुद को साफ़-सुथरा करते, नाश्ता करते और फज्र की अज़ान देने के लिए जामा मस्जिद की मीनार पर दौड़ पड़ते, और नमाज़ियों को सुबह की नमाज़ के लिए बुलाते।

इसके बाद वह दिन का बाकी समय लोगों और जगहों से मिलने में बिताते थे। कभी-कभी वह जन्नत-ए-अदन के बाग़ में भी जाते थे, जहाँ अक्सर रईस लोग आया करते थे।
अन्य समय में वह खालिद बाज़ार को चुनता था, जो आम किसानों से खचाखच भरा रहता था - जो दिन भर झुंड बनाकर मोलभाव करते रहते थे। इस्माइल धीरे-धीरे

Machine Translated by Google

आम लोगों से परिचित और प्रिय हो जाने के बाद, वह एक दिन उन पर शासन करने के लिए दृढ़संकल्पित था। यह आसान था।

दूसरी ओर, कुलीन लोगों को खुश करना अधिक कठिन था।
वे उसे गजनी में एक नए अधिकारी के रूप में स्वीकार करने के लिए कम उत्सुक थे।

जामा मस्जिद से होने वाली अज़ान का जवाब केवल कुछ ही लोगों ने दिया।
आदरणीय। ज़्यादातर लोग इस डर से दूर रहे कि जल्दबाज़ी में मरम्मत करके बनाई गई यह अस्थायी इमारत, जो एक अवास्तविक समय-सीमा को पूरा करने के लिए बनाई गई थी, कहीं ढह न जाए। तीन साल पहले आए भयानक भूकंप में मूल मस्जिद दो टुकड़ों में बंट गई थी। दरअसल, पूरा भूभाग ही टूट गया था।

दिव्य हास्य के एक रुग्ण उदाहरण में, अमीरों की शानदार इमारतें
और संगमरमर और अन्य महंगे पत्थरों से बने शक्तिशाली घर, सुल्तान के महल सहित धूल में मिल गए, जबकि मिट्टी और आँसुओं से बने गरीबों के साधारण घर प्रकृति के प्रकोप से बच गए। प्राकृतिक आपदा के बाद, धनी लोगों ने शहर के किसानों से लिए गए कम वेतन वाले श्रम का उपयोग करके अपने आलीशान घरों का पुनर्निर्माण करके ईश्वर की इच्छा पर क्रूरतापूर्वक धावा बोला। भूकंप के कारण पहले से ही गरीब होने के बावजूद, उन्हें उचित मजदूरी नहीं दी गई। क्यों? क्योंकि उन्हें हमेशा महमूद के भारत में नियमित छापों के दौरान पकड़े गए असंख्य हिंदू-बौद्ध दासों से बदला जा सकता था, जो स्पष्ट रूप से मुफ्त और बमुश्किल निर्वाह-स्तर के भोजन के राशन के लिए काम करते थे। इसलिए, विडंबना यह है कि दासों की उपस्थिति, अवैध प्रवासियों के मामले की तरह, कुलीन वर्ग को समृद्ध करती थी

सुल्तान ने संसाधनों पर पहला दावा करते हुए उदाहरण प्रस्तुत किया था
और देश के लोगों को अपनी आवश्यकताओं और विलासिता के लिए मजबूर करता था।

इसके बाद सुल्तान के प्रतिनिधि आए। और फिर उनके मातहत। कमान की शृंखला कदम-दर-कदम नीचे उतरती गई, जब तक कि अपनी आजीविका से वंचित और पुनर्निर्माण के प्रयासों के भंवर में फँसे असहाय मज़दूर उस दिन को याद करने लगे जब वे इस प्रलय से बच निकले थे।

पुनर्निर्माण और मरम्मत के इस जबरन उन्माद के कारण, ग़ज़नी के कुलीन इलाकों ने दो साल के भीतर ही अपना पूर्व गौरव पुनः प्राप्त कर लिया था। विडंबना यह है कि जामा मस्जिद को छोड़कर, इसके अधिकांश बुनियादी ढाँचे का जीर्णोद्धार कर दिया गया था। महमूद ग़ज़नी की स्वघोषित धर्मनिष्ठता के बावजूद, यह शक्तिशाली और धनी लोगों की हवेलियों पर वरीयता पाने में विफल रही।

जाहिर है, मस्जिद के निर्माण में हुई देरी और घटिया पुनर्निर्माण की कीमत धर्मनिष्ठ पूर्व ग्रैंड मुफ्ती को अपनी जान देकर चुकानी पड़ी थी। घमंडी सुल्तान पर चुपके से दोष मढ़ते हुए, भयभीत जनता ने महमूद की अधर्म और व्यभिचार के प्रति अपनी घृणा खुलकर व्यक्त करने से परहेज किया। लेकिन उन्होंने जल्दी ही

Machine Translated by Google

कम से कम बाह्य रूप से तो नए ग्रैंड मुफ्ती इस्माइल की कठोर धार्मिकता से लोग प्रभावित हुए, जो गजनी शहर के गवर्नर भी थे।

इस्माइल के पास जनता थी, उसे बस कुलीन वर्ग का धर्म परिवर्तन करना था।
लेकिन दोनों ही चीज़ें एक साथ पाना आसान नहीं था। वह जानता था कि उसकी पीठ पीछे, कुलीन वर्ग उसे अपमानजनक शब्दों से पुकारेगा, जैसे 'लोकलुभावन'।

"मेहमान आ गए हैं, हुज़ूर," उनके वफ़ादार मुख्य सेवक तालिब ने दरवाज़े से फुसफुसाते हुए इस्माइल की सोच में खलल डाला। "प्रधानमंत्री ख्वाजा हसन के नेतृत्व में सुल्तान की परिषद अधीर हो रही है।"

प्रधानमंत्री जानना चाहते हैं कि क्या उन्हें शीघ्र ही मुलाकात की अनुमति दी जा सकती है ताकि वे वहां से निकलकर अपने अन्य कार्य कर सकें।'

'अपने कर्तव्यों', इस्माइल ने उपहास करते हुए कहा, अभी भी दर्पण में अपने प्रतिबिंब की प्रशंसा कर रहा था।
'कोई भी मोटा, कमज़ोर रैकेटियर सबसे पहले अपने घर जाएगा, एक जग शराब पीएगा और कुछ वेश्याओं के साथ बिस्तर पर लेट जाएगा। उन्हें इंतज़ार करने दो, तालिब। अगर सुल्तान या रानी होतीं, तो वे बिना किसी शिकायत के धैर्यपूर्वक इंतज़ार करतीं, है ना?' 'ज़रूर, मेरे रब! उन्हें इंतज़ार करने दो।' इस्माइल ने अपना पंखदार सिर का पगड़ी उठाया और उसे अपने सलीके से कंघी किए हुए भूरे बालों पर धीरे से उतारा। उसने आईने में अपने दाँत देखे। 'आज, वे मेरा इंतज़ार करना सीखेंगे।
कल, वे मेरा इंतज़ार करेंगे , ' वह बुदबुदाया।

"ऐसा ही होगा, मेरे हुज़ूर," तालिब ने अपने मालिक को सलाम करते हुए और झुककर उनके सामने से हटते हुए सहमति जताई। इस्माइल दीवार के पास लगे एक दीवान के पास गया । वह उस पर बैठ गया और एक नीची कुर्सी पर रखे एक पाइप को उठाया। उसे अपने होठों से लगाकर उसने गहरी साँस ली, और अपनी नसों को शांत करने के लिए अफ़ीम के घने धुएँ को अंदर लिया। गवर्नर-मुफ़्ती के मन में उन विषयों पर विचार चल रहे थे जिन पर वह अपने द्वारा आयोजित इस भव्य सभा में चर्चा करना चाहता था।

बीस मिनट बाद वह सभास्थल की ओर बढ़ा। जैसे ही वह उस क्षेत्र के पास पहुँचा, उसने सुल्तान के छह वरिष्ठ पार्षदों और सातवें, उनके नेता, ख्वाजा हसन की बकबक सुनी। वे हँस रहे थे और बेहद क्रूर शब्दों में उसका मज़ाक उड़ा रहे थे।

जैसे ही इस्माइल ने पारदर्शी गुलाबी पर्दे हटाए, अचानक सन्नाटा छा गया। वह कमरे में दाखिल हुआ और अपने हाथ पीछे की ओर जोड़ लिए। गवर्नर-मुफ़्ती के सामने अर्धचंद्राकार आकृति में वे सात आदमी बैठे थे जिन्हें उसने बुलाया था। कुछ के हाथ में शीर चाय की प्यालियाँ थीं , तो कुछ उनके लिए रखे हुक्के पी रहे थे।

Machine Translated by Google

कोई भी सम्मान में खड़ा नहीं हुआ। कुछ सेकंड बीत गए। और फिर एक आदमी खड़ा हुआ:
ख्वाजा हसन। उन्होंने औपचारिकतावश झुककर प्रणाम किया और फिर आगे बढ़े, उनका घेरा किसी बेढंगे ढंग से बनी मसगती, एक नरम जेली जैसी फ़ारसी मिठाई की तरह हिल रहा था । वे गवर्नर-मुफ़्ती के पास रुके और नाटकीय ढंग से उनका हाथ चूमा, फिर उन्हें गले लगा लिया।

दोनों व्यक्तियों ने गले मिलना छोड़ दिया और एक दूसरे की कोहनी पकड़ ली।
हसन ने पहले बात की।

"आपको घर पर देखकर अच्छा लगा, और अजीब जगहों पर आपसे टकराना नहीं पड़ा, महाराज," उसने स्पष्ट रूप से घमंड से कहा। "हममें से कुछ लोग सोचने लगे थे कि आपकी दयालुता सिर्फ़ किसानों के लिए ही है।"

इस्माइल ने सौहार्दपूर्वक मुस्कुराते हुए दूसरे आदमियों की तरफ देखा। बिना उठे, उन्होंने आलस से अपने हाथ माथे पर रखकर सलाम किया। किसी ने भी शिष्टाचार नहीं दिखाया था। हालाँकि वह अपमानित था, इस्माइल जानता था कि सुल्तान के लोग दशकों से उसके भाई की घोर उपेक्षा का ही अनुकरण कर रहे थे। गवर्नर-मुफ़्ती अपनी सीट पर बैठ गए, जबकि प्रधानमंत्री लड़खड़ाते हुए अपने दीवान पर वापस आकर बैठ गए। उन्होंने अपनी मोटी आँखों से इस्माइल को देखा, अपनी लंबी नाखूनों वाली उंगलियाँ आपस में फँसाईं और उन्हें अपने भरे हुए पेट पर टिका दिया।

"मेरे हुज़ूर," ख्वाजा हसन ने कहा। "हमें घर बुलाने के लिए शुक्रिया।"
ग़ज़नवी सल्तनत के प्रधानमंत्री और इन लोगों के नेता, मुझे इस माननीय सभा का परिचय देने की अनुमति दें।'

हसन ने गवर्नर-मुफ्ती के सामने अपनी सत्ता का प्रदर्शन करने में कोई कसर नहीं छोड़ी
जबकि वे सावधानीपूर्वक दिखावटी विनम्रता अपनाते हैं, जो दासता की सीमा पर है।

"यह फरज़ाद है, मेरे आका, ख़ज़ाने के मालिक," ख्वाजा हसन ने इस्माइल के बाईं ओर बैठे एक छोटे, मोटे, गंजे, अधेड़ उम्र के व्यक्ति की ओर अपनी मोटी उँगली से इशारा करते हुए कहा। ख़ज़ाने के अधिकारी फरज़ाद ने गवर्नर-मुफ़्ती की ओर सहजता से सिर हिलाया और सम्मानपूर्वक प्रधानमंत्री की ओर नज़र घुमाई।
इस्माइल ने एक विश्वासघाती की सहजता से अपना गुस्सा छुपा लिया। ज़रूरत पड़ने पर अपनी भावनाओं और आक्रामकता को छिपाने की कला में वह निपुण था, उसने यह कला अपने बड़े भाई महमूद से बचाव के लिए सीखी थी, जिसने उसे याद आने तक ताना मारा और नीचा दिखाया था।

लेकिन अफीम भी मदद करती है, इस्माइल ने सोचा।

"मालिक," ख्वाजा हसन ने फरज़ाद के बगल में बैठे आदमी की ओर इशारा करते हुए कहा। "यह जलील हैं, सुल्तान के मुख्य राजनयिक। उनके बगल में सर्वोच्च न्यायाधीश कहहर हैं।" हर आदमी ने क्षण भर के लिए गवर्नर-मुफ़्ती की ओर सिर
हिलाया।

'यज़दान शहर के रक्षकों का मुखिया है, और बागीश व्यापार और वाणिज्य का नियंत्रक है। और अंत में... उम्म...'

Machine Translated by Google

हसन लड़खड़ा गया। आँखें सिकोड़ते हुए, उसने अपने बाईं ओर बैठे व्यक्ति को बिना पहचाने देखा। शर्मिंदा युवक प्रधानमंत्री के कान में झुककर फुसफुसाया।

ख्वाजा हसन ने प्रसन्नतापूर्वक घोषणा की, "बदीद, कला मंत्री!" तुर्क यह दिखाने की कोशिश कर रहे थे कि कला को बढ़ावा देकर या कम से कम बढ़ावा देने का दिखावा करके वे फारसियों और अरबों की तरह सभ्य हो सकते हैं।

बदीद ने इस्माइल की तरफ़ देखा और झुककर प्रणाम किया। "माफ़ कीजिए, हुज़ूर," उसने आदरपूर्वक कहा। "मैं इस परिषद में नया हूँ।"

इस्माइल का व्यवहार नरम पड़ गया। वह उस युवक की ओर मुस्कुराया।

ख्वाजा हसन ने उम्मीद भरी निगाहों से गवर्नर-मुफ्ती की ओर देखा।

'आप सबका स्वागत है।' इस्माइल ने प्रधानमंत्री की ओर देखते हुए, प्रसन्नतापूर्वक मुस्कुराते हुए कहा। 'आपकी उपस्थिति से मैं गौरवान्वित हूँ।' 'हे मेरे प्रभु! इसका ज़िक्र मत कीजिए!' ख्वाजा हसन ने गर्व से हाथ हिलाते

हुए कहा। वह अपने पीछे पड़े मुलायम गद्दे पर झुक गए। 'मुझे माफ़ करना कि मेरे सभी पार्षद यहाँ नहीं हैं। एक गायब है...' उन्होंने जल्दी से समूह पर नज़र डाली। 'आह! बिल्कुल! अश्ताक यहाँ नहीं हैं—धार्मिक मामलों के मंत्री।' इस्माइल की आँखें सिकुड़ गईं।

'मुझे यकीन है कि यह एक क्षम्य गलती है,' ख्वाजा हसन ने हल्के से कहा।
जब से आपने आखिरी बार गजनी के कार्यालयों पर कमान संभाली है, तब से वहां बहुत कुछ बदल गया है, मेरे प्रभु।' वह सौम्यता से मुस्कुराया।

राज्यपाल-मुफ़्ती ने उनकी मुस्कान का जवाब नहीं दिया। इससे प्रधानमंत्री
मुलायम तकिये का आराम त्यागें और अपनी पीठ सीधी करें।

"हम थोड़ी देर में अश्ताक पहुँच जाएँगे," इस्माइल ने आश्वासन दिया। उसने ख्वाजा हसन की क्षणिक उलझन भरी नज़रों का आनंद लिया और एक पतले सेवक द्वारा ट्रे पर रखी शराब की प्याली की ओर हाथ बढ़ाया। उसने एक घूँट लिया और उसे मुँह में घुमा-घुमाकर पीने लगा। "तुम सही कह रहे हो," इस्माइल ने आगे कहा। "बहुत कुछ बदल गया है।"

बहुत सारा कचरा साफ़ करना होगा। बहुत सी टूटी हुई चीज़ों को ठीक करना होगा।'

ख्वाजा हसन ने अपनी भौहें उठाईं।

'बताइए, प्रधानमंत्री जी,' इस्माइल ने धीरे से कहा। 'तीन साल पहले ग़ज़नी के बीचों-बीच आए भूकंप में आप सब बच गए थे, है ना?' 'ज़ाहिर है।' हसन मुस्कुराया और इधर-उधर देखने लगा। 'ज़रूर, हम यहाँ ज़िंदा लाशें नहीं हैं!'

सभी लोग खिलौनों की तरह हँस रहे थे, सिवाय एक के।

"सच में," हसन ने आगे कहा। "हाँ, अल्लाह की मेहरबानी से हम बच गए। जो नहीं बच पाए... उन्हें सुल्तान ने जल्दी से बदल दिया।"

Machine Translated by Google

तुम क्यों पूछ रहे हो?'

इस्माइल ने कहा, "मैं कुछ पढ़ रहा हूँ। और मैं बातें भी कर रहा हूँ।"
लोगों से। उन्होंने मुझे बताया कि सबसे बड़ी इमारतें सबसे ज़्यादा प्रभावित हुईं और उन्हें दोबारा बनाने में सबसे ज़्यादा समय लगा। आधिकारिक रिकॉर्ड में इस घटना और उसके बाद हुए पुनर्निर्माण के प्रयासों का विवरण है।' 'माफ़ कीजिए, महाराज,' प्रधानमंत्री ने कहा। 'मुझे पूरा यकीन नहीं है कि यह पूछताछ किस दिशा में जा

रही है। मुझे और मेरे आदमियों को अपने कर्तव्यों का ध्यान रखना है, और साथ ही आपकी संगति का भी आनंद लेना है। हमारे समय की माँग बहुत ज़्यादा है। लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि सबसे बड़ी इमारतों को दोबारा बनाने में सबसे ज़्यादा समय लगा। सुल्तान के महल की पूरी मरम्मत ढाई साल में पूरी हो गई। राजधानी की आधी जनता ने इस पर काम किया।' 'दिलचस्प है,' इस्माइल ने कहा और फिर धीरे से बोला। 'सुल्तान के महल की मरम्मत में ढाई साल लगे, और जामा मस्जिद लगभग मेरे भाई के घर के आकार की है। मुझे आश्चर्य है कि उन्होंने ऐसा क्या आदेश दिया कि मैं इसे छह महीने में इसकी पूर्व भव्यता में बहाल कर दूँ। थोड़ा महत्वाकांक्षी, क्या आपको नहीं लगता?' 'मुझे डर है कि मैं इस पर कोई राय नहीं दे

सकता, महाराज,' ख्वाजा हसन ने मधुरता से उत्तर दिया। 'तुम मुझसे ज़्यादा अपने भाई के करीब हो।' इस्माइल का चेहरा जम गया।

"क्या तुमने ही मेरे भाई के दिमाग में यह बेतुका विचार डाला था?" गवर्नर-मुफ़्ती ने सीधे मुद्दे पर आते हुए पूछा। "मुझे मस्जिद के पुनर्निर्माण के लिए सुल्तान की समय-सीमा आपके दफ़्तर से, आपकी मुहर लगे एक स्क्रॉल पर मिली थी।" ख़्वाजा हसन का चेहरा लाल हो गया। "तुम मुझ पर ऐसी बात का आरोप लगा रहे हो जो मैंने नहीं की," उन्होंने काँपते हुए जवाब दिया, अपनी आवाज़ में कठोरता लाने की

कोशिश करते हुए, लेकिन कर्कश लग रही थी। "तुम अपने भाई, यानी सुल्तान पर, शरारत का आरोप लगा रहे हो। माफ़ करना, हुज़ूर, लेकिन मुझे यह बातचीत यहीं खत्म करनी होगी।" वह दीवान पर आगे बढ़े, अपनी कद-काठी के हिसाब से काफ़ी फुर्ती से।

"ओह, और वैसे," प्रधानमंत्री ने आगे कहा, "महाराज, हम बात करते हुए भी रेत के कण रेतघड़ी से नीचे बह रहे हैं। अगर मैं आपकी जगह होता, तो तुरंत काम पर लग जाता। आप जानते हैं कि पिछले ग्रैंड मुफ़्ती को भाग्य ने कैसे सज़ा दी थी..." ख्वाजा हसन दीवान से उठने लगे, लेकिन लड़खड़ा गए। उनके गले में पड़ी भारी सोने की जंजीरों ने उनके सिर को और नीचे खींच लिया। उन्होंने पूरी शालीनता से खुद को सीधा किया, जबकि बाकी लोगों ने

जल्दी से अपने पाइप और शराब के प्याले एक तरफ रख दिए। वे कठपुतलियों की तरह खड़े हो गए और उनके पीछे चल पड़े।

Machine Translated by Google

इस्माइल बिना विचलित हुए बैठा रहा।

'रुको, महाराज!' वह गुनगुना रहा था, मधुर स्वर में, उसके होठों पर क्षमाप्रार्थी मुस्कान थी। 'क्या आप नाराज़ हुए? ओह, लेकिन मैं तो बस इस मुश्किल काम पर अपनी भड़ास निकाल रहा था। मुझे यकीन है कि मैं दोस्तों के साथ हूँ।'

क्या मैं नहीं हूँ?'

'अलविदा, मेरे मालिक,' ख्वाजा हसन ने रूखेपन से कहा। 'जैसा कि आप अच्छी तरह जानते हैं, अगर आपको मस्जिद के पुनर्निर्माण में कोई मदद चाहिए, तो आपको मेरे डिप्टी अश्ताक से बात करनी होगी। आपके धार्मिक मामलों के विभाग की ज़िम्मेदारियों के लिए सभी प्रशासनिक सहायता प्रदान करने का ज़िम्मा उन्हीं का है। उन्हें ही आपने इस छोटी सी सुबह की पार्टी में नहीं बुलाया था।' ख्वाजा हसन वहाँ से जाने लगे। मुर्ग़ियों की तरह, बाकी मंत्री भी

उसके पीछे लाइन में खड़े हो गए।

इस्माइल ने मुस्कुराते हुए अपना वाइन का प्याला साइड टेबल पर रखा और उठकर बोला, उसके पैर। 'लेकिन मुझे शक है कि अश्ताक मेरे लिए ज़्यादा मददगार साबित होगा, प्रिय प्रधानमंत्री जी। मुझे डर है कि उसे मेरे जुंदीन-उल-दीन ने उठा लिया होगा, जो धार्मिक पुलिस है और जो सीधे ग़ज़नी के ग्रैंड मुफ़्ती की सेवा करती है ...' उसकी आवाज़ धीमी और मधुर थी, लेकिन उसमें ख़तरा साफ़ झलक रहा था।

ख्वाजा हसन वहीं रुक गए। उनके पीछे खड़े लोग भी रुक गए।

'मुझे लगता है,' गवर्नर-मुफ़्ती ने आगे कहा, 'उन्होंने कुछ परेशान करने वाले सबूत खोज निकाले हैं। अश्ताक जजिया के रूप में इकट्ठा किए गए धन का गबन कर रहा था, जो गैर-मुसलमानों द्वारा हमारे इस्लामी राज्य को दिया जाने वाला एक धार्मिक कर है, और इसलिए यह धार्मिक पुलिस के अधिकार क्षेत्र में आता है। आप सहमत होंगे कि हम जैसे सभ्य और धर्मपरायण लोग इसे बर्दाश्त नहीं कर सकते।'

गवर्नर-मुफ़्ती के शब्दों ने कमरे का माहौल नाटकीय रूप से बदल दिया। परिषद के सदस्य अपनी जगह पर जड़वत खड़े थे। स्तब्ध। कुछ के चेहरों पर घबराहट साफ़ झलक रही थी। धार्मिक पुलिस ने कभी उनमें से किसी के पीछे जाने की हिम्मत नहीं की थी; वह सिर्फ़ कमज़ोर लोगों को निशाना बनाती थी। ख्वाजा हसन बाहर से शांत थे, इस्माइल को घूर रहे थे। वह इतने अनुभवी दरबारी थे कि नियंत्रण खोकर अनावश्यक प्रतिक्रिया नहीं दिखा सकते थे। लेकिन उनकी कनपटी पर पसीने की एक बूँद ज़रूर थी।

इस्माइल ने इस पल को देखा और उसका आनंद लिया। मोटे ढेले ने भी अपने हाथ बढ़ा लिए हैं। हथौड़ा मारने का समय आ ऐसा लगता है कि तिल्ली में ... गया है। ...

'मेरे आदमियों ने तुम्हारे भागने से पहले ही सुल्तान को सबूत दे दिए थे। इस्माइल ने कहा, "आज सुबह तुम्हारी चादरें।" "अश्ताक की ज़िंदगी अब मेरे प्यारे भाई के काबिल हाथों में है। मुझे लग रहा है कि वह मुझसे इस गबन के मामले की और जाँच करने को कहेगा। और उन सभी की भी जिन्हें इससे फ़ायदा हुआ है।"

Machine Translated by Google

ख्वाजा हसन इस्माइल को घूरते रहे, उनके चेहरे पर एक अजीब सी उदासी थी। लेकिन उनकी कनपटियों के आसपास पसीने की और बूँदें उभर आईं।

"शायद तुम मेरी मदद कर सको, फ़रज़ाद। हम सब मिलकर इस अजीबोगरीब मामले की तह तक पहुँच सकते हैं, हम्म?" गवर्नर-मुफ़्ती ने ख़ज़ाने के मालिक की तरफ़ शरारत भरी नज़र डाली, जिसने अपनी नज़र ज़मीन पर गड़ा दी। "देखते हैं ये सड़ांध कितनी गहरी है। या यूँ कहूँ कि कितनी ऊपर तक?"

"हुज़ूर..." ख्वाजा हसन धीरे से बोले, उनका मोटा चेहरा लाल था, उनके चेहरे पर गुस्से और घबराहट का अनोखा मिश्रण था। "मुझे इसकी बिल्कुल भी खबर नहीं थी। मेरी नाक के नीचे हो रहा है! वो कमीना, अश्ताक! मैंने उस पर भरोसा किया, उसे दरबार में मौका दिया! हम उन चिकने अरबों पर कभी भरोसा नहीं कर सकते।"

टिड्डी खाने वालों, मैं तुमसे कहता हूँ। उसकी सज़ा बहुत कड़ी होनी चाहिए। उसे बस एक ही सज़ा मिलनी चाहिए। और वो है...'

"मौत," इस्माइल ने अशुभ भाव से कहा। "सुल्तान से किसी भी तरह की चोरी की सज़ा मौत है। जैसे राज्य को संपत्ति कर का हिस्सा दिए बिना भूमिगत बाज़ार में काफिर गुलामों की तस्करी की सज़ा है। अब, मुझे आश्चर्य है कि प्रिय प्रधानमंत्री, आपकी नाक के नीचे यह कैसे हो रहा है? और भी कई चोरी के मामले याद आ रहे हैं, सच में..."

युद्ध लूट का वितरण... सेना के लिए रसद की खरीद ताजिकिस्तान से घोड़ों का अधिग्रहण ...
... सूची बस अंतहीन है।

कभी-कभी सोचता हूँ कि इतने घोटाले हैं कि शायद आपको भी इनके बारे में पता न हो, महान ख्वाजा। या आपको पता है?' आखिरी लाइन राज्यपाल-मुफ़्ती ने बिल्कुल सही कही। धीमी और गंभीर।

उसके हमले का मनचाहा असर हुआ। ख्वाजा हसन इतने समझदार थे कि उन्हें पता चल गया कि कब उनकी हार हो गई है। उन्होंने अपने चेहरे पर आए सदमे को काबू में रखा।

इतने कम समय में उसे इतना कुछ कैसे पता चल गया? कुलीन वर्ग में से कौन?
उसे सूचित कर रहा है?

कमरे में तनाव स्पष्ट था, शांत गवर्नर-मुफ्ती को छोड़कर सभी का दम घुट रहा था।

ख्वाजा हसन को पता था। उन्हें पता था कि उन्हें क्या जानकारी देनी है। अपनी मोटी खाल बचाने के लिए।

"यह मेरा विचार नहीं था, महाराज, मस्जिद की मरम्मत के लिए छह महीने की समय-सीमा," प्रधानमंत्री रो पड़े, झुककर, मानो किसी मेमने को वध के लिए ले जाया जा रहा हो, मिमिया रहे थे। उनका दर्शन स्पष्ट था: जब आप आत्मसमर्पण करें, तो पूरी तरह से आत्मसमर्पण करें—ताकि दुश्मन कुछ दया दिखा सके। "मेरा इससे कोई लेना-देना नहीं था। मैं तो बस संदेशवाहक था, महाराज; मैं तो वह तीर था जो छोड़ा गया था।"

Machine Translated by Google

गवर्नर-मुफ़्ती ख़्वाजा हसन के पास गए और उनके कंधे पर हाथ रखा। "हाँ, आप ही तीर थे," इस्माइल ने कहा। "मेरा भाई ही कमान था।"
वह धनुर्धर कौन था?

प्रधानमंत्री ने अपने आदमियों की ओर विनती भरी, डूबती आँखों से देखा।
उन्होंने अपनी दृष्टि अपने पैरों या दीवार पर स्थानांतरित कर ली।

चूहे!

ख्वाजा हसन इस्माइल की ओर मुड़े।
'यह एक धनुर्धारी महिला थी, महाराज,' प्रधानमंत्री ने फुसफुसाते हुए कहा।

मुझे पता था! इस्माइल ने सोचा, लेकिन वह चुप रहा। वह सुनना चाहता था कि
नाम ज़ोर से बोला गया। यह प्रधानमंत्री के पूर्ण समर्पण का संकेत होगा।

'रानी, कौसरी जहाँ...' ख्वाजा हसन ने एक समान स्वर में कहा,
धीमी आवाज़ में, डर था कि दीवारें सुन लेंगी। 'उसने मुझे चार हफ़्ते पहले सुबह सुल्तान के शीतकालीन महल में बुलाया था। सुल्तान सो रहा था, लेकिन रानी शाही शयनकक्ष के बरामदे में मेरा इंतज़ार कर रही थी।' प्रधानमंत्री रुक गए, उम्मीद करते हुए कि इस खुलासे से उनके सताने वाले को संतुष्टि मिलेगी। उन्होंने पहले ही बहुत कुछ बता दिया था। क्योंकि जब दो हाथी लड़ते हैं, तो आमतौर पर पैरों के नीचे की घास ही

पहले रौंदी जाती है।

"जाओ," गवर्नर-मुफ़्ती ने आग्रह किया। "तुम्हारी ज़िंदगी इसी जानकारी पर टिकी है," उसने ख़तरनाक लहजे में कहा।

दोषी व्यक्ति ने आगे कहा।
'उसने मुझे सुल्तान की यह इच्छा बताई कि वह आपकी आस्था और भक्ति की परीक्षा लेना चाहता है।
परिवार, महाराज। उसने आपसे अनुरोध किया कि आपको सूचित किया जाए कि मस्जिद की मरम्मत पूरी करने के लिए आपके पास छह महीने का समय है। मैंने अपने आदमियों से उसी दिन आदेश का मसौदा तैयार करने को कहा था, लेकिन मैं उसे आप तक पहुँचाने का समय भूल गया। महाराज, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि जैसे ही मुझे अपनी गलती याद आई, मैंने तुरंत पत्र भेज दिया।'
'जो चार दिन पहले की बात है,' इस्माइल ने ठंडे स्वर में याद दिलाया। 'मुझे एक समय-संवेदनशील आदेश लगभग एक महीने बाद मिला, जो मुझे

मिलना चाहिए था। अब मेरे पास काम पूरा करने के लिए छह महीने के बजाय पाँच महीने बचे हैं।' प्रधानमंत्री ने अपना सिर झुका लिया। 'मुझे माफ़ करना महाराज। यह एक लापरवाही थी।

गलती हो गई। मैं...' 'बेशक, व्यस्त

था।' इस्माइल मुस्कुराया और हसन के कंधे पर प्यार से हाथ फेरा। 'मुझे डर है कि तुम्हारे और तुम्हारे आदमियों के लिए काम बहुत ज़्यादा व्यस्त होने वाला है। जैसा कि तुम अच्छी तरह जानते हो, मुझे इस तरह का काम करना है। जुंदी-उल-दीन अच्छे प्रवर्तक हैं। ... सीमित स्रोत ... साथ

Machine Translated by Google

पवित्र कानून के अनुसार, लेकिन वे घटिया पत्थरबाज़ हैं। मुझे अपने चारों ओर बुने गए इस जाल को साफ़ करने के लिए मदद की ज़रूरत होगी।' ये शब्द बोलते हुए, इस्माइल ने कमरे में मौजूद हर आदमी को गौर से

देखा। कुछ मिनट पहले, उन्होंने उसके साथ ज़रा भी सम्मान नहीं किया था। अब वे झुके हुए शरीरों के साथ, भयभीत और विनम्र खड़े थे। पूरी तरह से विनम्र।

"मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत होगी, मेरे दोस्त," इस्माइल ने ख्वाजा हसन पर फिर से नज़रें गड़ाते हुए कहा। "तुम और तुम्हारे अच्छे आदमी मस्जिद की मरम्मत के लिए तुरंत पैसे और मज़दूर ढूँढ़ लेंगे।" "जो भी तुम कहो, हुज़ूर।" ख्वाजा हसन ने इस राहत को स्वीकार करते हुए उत्सुकता से हामी भर दी। "तुम मुझसे क्या करवाना चाहते हो?"

"वास्तुकारों, इंजीनियरों, राजमिस्त्रियों, जलवाहकों... इस काम के लिए ज़रूरी हर व्यक्ति और हर चीज़ को ढूँढ़ो। मस्जिद के चारों ओर मज़दूरों का एक शहर बनाओ और देखो कि हम चौबीसों घंटे ओवरटाइम काम करते रहें। मैं सुल्तान की समय-सीमा पूरी करूँगा। हमारा सामूहिक कल्याण इसी पर निर्भर करता है, है न?"

'ज़रूर, मेरे हुज़ूर,' ख़्वाजा हसन ने उत्सुकता से अपना सिर ऊपर उठाते हुए कहा।
और एक छोटे हाथी की तरह नीचे गिर पड़ा। 'मैं जो कर सकता हूँ, करूँगा, मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ। अभी।' 'अभी,' इस्माइल ने स्कूल मास्टर

की तरह अपनी तर्जनी हिलाते हुए दोहराया। 'और अब से, मैं तुमसे सुल्तान और रानी के साथ मेरे हितों की रक्षा करने
की उम्मीद करता हूँ। मैंने सुना है कि तुम रानी के खासे करीब हो।'

शाही जोड़े के साथ आपकी मुलाक़ातों में जो भी होगा, उसकी मुझे प्रत्यक्ष जानकारी की उम्मीद रहेगी। मैं हर समय, हर मामले में पूरी जानकारी रखना चाहता हूँ । क्या यह बात समझ में आ गई?

जब इस्माइल की हत्या की हद का पता चला तो प्रधानमंत्री को अपने शब्दों पर काबू नहीं रख सके।
उसे चालाकी के नए-नए तरीके समझ में आने लगे। लेकिन उसे पता था कि कब उसकी पिटाई हो चुकी है।

'महाराज...' प्रधानमंत्री फुसफुसाए। 'जैसी आपकी आज्ञा...' भविष्य में पीछे हटने के अवसर हमेशा मिलते रहेंगे। ज़िंदगी लंबी है।
... ख्वाजा हसन ने अपने मन की बात मन में ही रखते हुए इस्माइल के फैले हुए दाहिने हाथ के पिछले हिस्से को चूमने के लिए आगे झुके। परिषद के बाकी सदस्य भी कतार में खड़े हो गए और एक-एक करके इस्माइल के हाथ चूमने लगे।

अपनी मनचाही चीज़ पाकर, इस्माइल अचानक घूमकर निजी कक्षों की ओर जाने वाले पर्दों की ओर चल पड़ा। पराधीन प्रधानमंत्री और उसके सहायक बेजान मूर्तियों की तरह जड़वत खड़े थे।

'तुम्हें बर्खास्त किया जाता है,' वह जोर से बोला और पर्दे के पीछे गायब हो गया।
'मैं तुम्हें तुम्हारे कर्तव्यों से नहीं रोकूंगा।'

गवर्नर-मुफ्ती की आवाज घनी हवा में धीरे-धीरे फैल गई।

Machine Translated by Google



'यह तो बिलकुल सही हुआ, हुज़ूर।' तालिब कान से कान तक मुस्कुरा उठा। वह हवेली में इस्माइल द्वारा बनाए गए गुप्त जासूसी छेद से बातचीत को ध्यान से सुन रहा था। हालाँकि मुलाक़ात का विचार तालिब का था, लेकिन गवर्नर-मुफ़्ती द्वारा योजना का क्रियान्वयन बेदाग़ था। नौकर मुस्कुराया। यह उसके मालिक का क्षेत्र था। दरबारी साज़िश। वह इसके लिए बना था। युद्ध और हिंसा के लिए नहीं, एक ऐसा क्षेत्र जहाँ उसका भाई महमूद कहीं ज़्यादा श्रेष्ठ था, और जहाँ उसके मालिक की हार कोई आश्चर्य की बात नहीं थी।

तालिब खुश था। क्योंकि अगर मालिक अच्छा करता, तो वफ़ादार नौकर भी फलते-फूलते थे।
बहुत।

इस्माइल ने तारीफ़ पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी. 'कौसरी जहाँ चुड़ैल ... वह कश्मीरी

... उसने यह काम पूरा कर

लिया।' लेकिन मेरे मालिक की घबराने की प्रवृत्ति अभी भी बनी हुई है।

तालिब ने आश्वस्त करते हुए कहा, 'आपने समस्या हल कर दी है, महाराज।'

'ख्वाजा हसन भी इन फ़ारसी नौकरशाहों की तरह ही साधन संपन्न हैं। मस्जिद को समय पर पूरा करने के लिए ज़रूरी सभी संसाधन वह जुटा लेंगे।'

"लेकिन कौसरी को कितना पता है?" इस्माइल चीखा। चिंता ने उसकी आवाज़ को और भी तीखा कर दिया। "क्या आपको लगता है कि उसे हमारे भेजे गए ख़तों के बारे में पता है?" "नहीं, उसे नहीं पता, हुज़ूर। हमारे आदमी भरोसेमंद हैं। मुझे लगता है कि वह बस..."

अपने सामान्य स्त्री-सुलभ खेल खेल रही है क्योंकि वह जानती है कि सुल्तान पर उसके नियंत्रण के लिए तुम सबसे बड़ा ख़तरा हो। सुल्तान महमूद के साथ उसका रिश्ता ही उसकी शक्ति का एकमात्र स्रोत है। वह एक घायल भेड़िये की तरह इसका बचाव करेगी।' 'मैं उस पर नज़र रखना चाहता हूँ। मैं उसकी हर हरकत के बारे में सुनना चाहता हूँ।' 'लेकिन प्रधानमंत्री ने कहा था कि वह...' 'ख्वाजा तो मोर है।
वह सिर्फ़ वही

जानता है जो परिवार उसे सुनने देता है।

वे उसका इस्तेमाल सिर्फ़ अपने हुक्म चलाने के लिए करते हैं। ख्वाजा हसन मुझे जो जानकारी देंगे, वह हमेशा सेकंड-हैंड होगी। मुझे और चाहिए। मुझे वो चाहिए जो सिर्फ़ किसी अंदरूनी आदमी को ही पता हो।' मैं इस्तेमाल नहीं करूँगा...'

'मालिक, इसमें ख़तरा है। मैं उस पर नज़र ...

रखना चाहता हूँ! आप उसे बता दीजिए। वह मुझे कभी मना नहीं करेगा!' तालिब ने सिर हिलाया। वह जानता था कि किससे बात करनी है।

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 10

रक्त और अपनापन

अरब सागर में कहीं

विजयन एक छोटे से स्कूनर के अगले डेक पर खड़े थे, जब वह कोच्चि से लगभग तीस मील दक्षिण में, तटीय गाँव अलप्पुझा से पानी में उतर रहा था। उन्होंने अपनी हथेलियाँ लकड़ी की रेलिंग पर लपेट लीं और मखमली काले आकाश में चमकते ध्रुव तारे को निहारते रहे।

गजनी जाने वाले हत्यारे दस्ते के उप कमांडर ने बंद कर दिया
उनकी आंखें नम हो गईं, जबकि उनके दिमाग में दो सप्ताह पहले पवित्र सबरीमाला मंदिर के आसपास के जंगलों में चोल दस्ते पर हुए हमले की यादें उमड़ पड़ीं, जिसमें नरसिम्हन गंभीर रूप से घायल हो गए थे।

सौभाग्य से, ज़हरीला तीर बहादुर सेनापति के किसी भी महत्वपूर्ण अंग में नहीं लगा था। लेकिन घाव गहरा था। जब तक अमल के सैनिक उसे अपने अस्पताल ले गए, तब तक उसकी साँसें उखड़ चुकी थीं और उसकी नाड़ी की गति बेहद धीमी हो गई थी। उसका शरीर ठंडा और चिपचिपा महसूस हो रहा था, और उसकी त्वचा पसीने से भीग गई थी। घाव के आसपास की मांसपेशियाँ, खासकर उसकी पीठ और कंधे पर, अकड़न से फड़क रही थीं। उसकी आँखें बंद थीं, हालाँकि उसकी पलकें बेचैनी से फड़क रही थीं।

नरसिंह जैसे कद के किसी व्यक्ति का सिर्फ़ एक तीर के ऊपरी पीठ में लगने से बेहोश हो जाना और इतने गंभीर लक्षण विकसित हो जाना, यह बिलकुल असामान्य बात थी। ज़ाहिर है, ज़हर बेहद तेज़ था।

लेकिन अमल पुजारियों और रहस्यवादी चिकित्सकों की एक लंबी परंपरा से आया था।
वह आयुर्वेदिक चिकित्सा के रहस्यों को ज़्यादातर लोगों से बेहतर समझती थीं। मंदिर के अस्पताल में, उन्होंने तुरंत ज़हर पहचान लिया था और नरसिंह की जान बचाई थी। हालाँकि, ज़हर का असर इतना गंभीर था कि
चोल सेनापति का दाहिना कंधा और बाँह लगभग लकवाग्रस्त हो गया था। उसकी तलवार वाली भुजा भी। एक योद्धा के लिए, यह मौत से भी बदतर था। वह बहुत कमज़ोर हो गया था और ज़्यादातर बिस्तर पर ही रहता था।

Machine Translated by Google

विजयन ने आँखें खोलीं और उस मनहूस दिन की यादों से बाहर आ गए। वह मुड़े और स्कूनर की लकड़ी की पटरी पर टिक गए, और तटीय गाँव अलप्पुझा की मंद पड़ती रोशनियों को अस्पष्ट दृष्टि से देखने लगे।

उसका मन उस घटना के बाद की स्थिति में चला गया। वे फिर से एक साथ हो गए थे।
अमल की मदद से उन्होंने चोल हत्याकांड दस्ते के बाकी सदस्यों को मार गिराया और छिप गए।
अपने विश्वस्त सैनिकों के साथ, उन्होंने कोल्लम में चालुक्यों से मिले अरब भाड़े के सैनिकों को शीघ्रता से पकड़कर मार डाला था, ताकि समुद्र में उन पर कोई हमला न हो। लेकिन यह निश्चित नहीं था कि चालुक्यों ने, या वास्तव में अरब भाड़े के सैनिकों ने, और किसके साथ मिलकर षडयंत्र रचा था।

चोल दस्ते और उनके मिशन की गोपनीयता बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण था। इसलिए, शबरी पहाड़ियों की तलहटी में स्थित विश्राम गृह, जहाँ चोल पुरुष ठहरे थे, 'गलती से जलकर राख हो गया'। अमल ने वावर तीर्थ कोष से धन जुटाकर विश्राम गृह को खरीदने का प्रबंध किया और फिर उसमें मृत चालुक्यों के शवों के साथ-साथ कब्रिस्तान से लावारिस लाशें भी भर दीं। उसने लावारिस लाशों को चोल कवच पहनाकर इमारत में आग लगा दी। इस प्रकार, एक विस्तृत धुआँधार आवरण तैयार हो गया। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो चोल और चालुक्यों ने प्रतिशोध की भावना से एक-दूसरे का सफाया कर दिया हो।

अमल, सोमेश्वर और विजयन ने चेर और चोल मुख्यालयों को इस छल के बारे में न बताने का फैसला किया था और यह भी कि उनके सैनिक सुरक्षित हैं। संदेश के बीच में ही फंस जाने का खतरा उनके हितैषियों की मानसिक शांति से कहीं ज़्यादा था। केवल एक गुप्त एन्क्रिप्टेड संदेश, एक निजी कूट भाषा में, जो केवल नरसिम्हन और राजेंद्र चोल को ही ज्ञात थी, जिसके बारे में सेनापति ने विजयन को जानकारी दी थी, सम्राट को सीधे एक साधारण नोट के ज़रिए सूचित किया गया: मिशन अभी जारी है। उपयुक्त होने पर आगे अपडेट किया जाएगा। नरसिम्हन की गंभीर चोट की खबर राजेंद्र चोल को नहीं बताई गई थी। नरसिम्हन और विजयन, दोनों को लगा कि यह सम्राट पर एक अनावश्यक बोझ होगा।

इन तमाम सावधानियों के बावजूद, हमेशा संदेह करने वाले विजयन ने कोच्चि के प्रसिद्ध व्यापारिक बंदरगाह से रवाना न होने का फैसला किया और इसके बजाय, अपने मूल प्रस्थान बंदरगाह से तीस मील दक्षिण में स्थित एक मछली पकड़ने वाले गाँव, अलपुझा से रवाना हुए। अलपुझा के बैकवाटर खुले समुद्र तक पहुँच प्रदान करते थे।

अमल के गाँव में एक परिवार था जिसके पास एक छोटी मछली पकड़ने वाली नाव थी। यह काफ़ी होगा।

वे गुप्त रूप से बलूचिस्तान के तट की ओर निकल पड़े थे।

Machine Translated by Google

"वलीद?" अमल

की मधुर आवाज़ बगल से सुनाई दी। विजयन ने मुड़कर उसके दिल के आकार के चेहरे को देखा जो चाँदनी में मंद-मंद चमक रहा था। वलीद ही वह नाम था जो विजयन अब रखता था, ताकि जब वे वहाँ पहुँचें तो वह ग़ज़नी के जीवन में घुल-मिल सके। अमल ने सुझाव दिया था कि वे तुरंत इस नाम का अभ्यास शुरू कर दें, ताकि विजयन अपनी पहचान में पूरी तरह ढल सके।

'हाँ, अमल?' विजयन ने पूछा।

"नमाज़ का वक़्त हो गया है ," अमल ने उसे धीरे से याद दिलाया। "तुम्हें हरकतें स्वाभाविक रूप से आनी चाहिए ताकि ग़ज़नवी के इलाके में किसी को तुम पर शक न हो। और फिर, ज़ाहिर है, हमें तुम्हारे लिए अरबी की पढ़ाई का इंतज़ाम करना होगा।"

उसके बाद तुर्की शिष्टाचार में प्रशिक्षण। चलो। सब इंतज़ार कर रहे हैं।' विजयन चुप रहा। उसे अभी भी इस बात का एहसास नहीं हुआ था कि

अमल एक महिला थीं। प्रशासन, रणनीति और नौवहन में सक्षम महिला। और भी ज़्यादा चौंकाने वाली बात यह कि ज़रूरत पड़ने पर हिंसा करने में भी सक्षम।

अमल ने विजयन को घूरा। उसने अपनी बाहें छाती पर रखीं और आगे बढ़ी।

'सुनो... वलीद,' उसने विजयन का छद्म नाम ज़ोर देकर दोहराया। 'मैं यहाँ किसी सम्राट के आदेश से नहीं हूँ, न ही मैं इसलिए यहाँ हूँ क्योंकि चेर भूमि के राजा मुझे यहाँ चाहते हैं। मैं यहाँ इसलिए हूँ क्योंकि यह मेरी भूमि और मेरे धर्म के प्रति मेरा अपना कर्तव्य है। जब मैं तुम्हें कुछ करने के लिए कहती हूँ, तो मेरे मन में एकमात्र उद्देश्य मिशन होता है।' विजयन को तुरंत पश्चाताप हुआ। 'मुझे माफ़ करना, अमल। तुमने गलत पढ़ा...' 'तुम सबको सुरक्षित ग़ज़नी पहुँचाना मेरी ज़िम्मेदारी है। और उम्मीद है कि आगे के मिशन के लिए तुम्हें बेहतर ढंग से तैयार करूँगी। इसलिए किसी भी युद्ध के अलावा, जिसमें हमें मजबूर किया जाता है, तुम्हें मेरे निर्देशों का

पालन करना होगा। मैं एक महिला हो सकती हूँ, लेकिन तुम्हें इस जहाज़ पर मेरे आदेशों का पालन करना होगा।' 'मुझे माफ़ करना,' विजयन ने कहा। 'मेरा कोई अपमान करने का इरादा नहीं है। बस हम

सबको उम्मीद थी कि अमल एक मर्द होगा।' 'खैर, अमल एक औरत

है,' उसने कहा। 'इससे निपटो।' 'जी मैडम।' अमल मुड़ा और जहाज़ की रेलिंग पकड़े हुए दूर

तक देखने लगा।

अभी भी गुस्से में हूँ.

विजयन ने विषय बदलते हुए, अजीब सी खामोशी को खत्म किया। 'यह आपका क्यों है?
अपनी भूमि और अपने विश्वास के प्रति कर्तव्य?' अमल ने भ्रम

में भौंहें चढ़ाते हुए विजयन की ओर देखा।

Machine Translated by Google

विजयन ने आगे स्पष्ट किया, 'आपने कहा था कि आप इस पर आने के लिए सहमत हुए थे
अपनी भूमि और अपने विश्वास के लिए मिशन ... मेरी समझ में नहीं आया।'
'तुम समझ नहीं पाए क्योंकि ... क्योंकि मेरा धर्म इस्लाम है?
जाहिर है, क्या यह उस बर्बर तुर्क महमूद जैसा ही विश्वास है?'
'हाँ।'

अमल ने गहरी साँस ली, 'पता है? ... अपवित्रीकरण की खबर
सोमनाथ मंदिर कई वर्षों पहले मकर संक्रांति के दिन हमारे पास पहुंचा था।
पहले—आपने उसी दिन अपने आदमियों के साथ सबरी पहाड़ियों का दौरा किया था, केवल
कई सप्ताह पहले ... जब से मैं बच्चा था, मैं अय्यप्पन को भगवान से भी ज्यादा मानता हूं।
किसी भी चीज़ या किसी भी व्यक्ति के ... मैंने उसे अपने से भी अधिक प्यार किया है
माता-पिता। वावर तीर्थस्थल के अनुयायियों के साथ भी यही होता है। हम
मुसलमान, हाँ। लेकिन हम भगवान अय्यप्पन के मुसलमान भक्त हैं।
इसमें कोई विरोधाभास नहीं है।'

विजयन ने सिर हिलाया। वह समझ गया। वह देवी का भक्त था।
मीनाक्षी। उनकी बहन बौद्ध थीं। उनकी माँ जैन थीं। उनके पिता
निराकार निर्गुण निराकार का अनुयायी था। यह हमेशा से ऐसा ही रहा है
भारतीयों के साथ रहा हूँ। ईश्वर के सभी रूपों के प्रति सम्मान।

अमल की आवाज़ लड़खड़ा गई, 'और भगवान अय्यप्पन के पिता का अपमान किया गया था।'
... इतने क्रूर तरीके से...'

जैसा कि भगवान अय्यप्पन के सभी भक्त जानते थे, महान अविवाहित भगवान थे
भगवान शिव और देवी मोहिनी के पुत्र।

'मैं मंदिर में श्रद्धालुओं को पानी बांट रही थी,' उसने आगे कहा। 'यह
मकर संक्रांति थी । सबरीमाला में तीर्थयात्रा का चरम।
और क्या आपको पता है कि उस दिन कितने भक्त आये थे?'

विजयन ने सिर हिलाकर कहा, 'नहीं ।'

'पंद्रह तीर्थयात्री!' अमल ने अपनी रेशमी, सीधी जांघों को धीरे से अपनी ओर खींचते हुए कहा।
उसके बाल कानों के पीछे थे। 'पंद्रह—बस! और ये पंद्रह आदमी वहाँ थे
क्योंकि वे संभवतः दक्षिण भारत के एकमात्र लोग थे जिन्होंने अभी तक
सोमनाथ मंदिर में जो कुछ हुआ था उसके बारे में सुना —मेरे मंदिर में
भगवान अय्यप्पन के पिता, भगवान शिव। मेरी दादी ने एक बार मुझे बताया था
हिंदू परिवार में किसी की मृत्यु के बाद कुछ समय तक मंदिर नहीं जाते।
और वहाँ वलीद नाम के एक परिवार में एक व्यक्ति की मृत्यु ... उस दिन लोगों ने शोक मनाया,
हो गई। वे हमारे परमेश्वर की महिमा के वध और अपवित्रीकरण पर शोक मना रहे थे,
इस महान धरती के बेटे और बेटियों के रूप में हमारा सम्मान, गौरव और एकता
भारत माता की जय।

विजयन ने कहा, "मदुरै में भी यही स्थिति थी। मंदिर की घंटियाँ
शोक में मीनाक्षी मंदिर में कई दिनों तक घंटी नहीं बजाई गई।'

Machine Translated by Google

अमल ने कहा, "जब हमने यह खबर सुनी, तब मैं अपने माता-पिता के साथ था। सड़कें कई दिनों तक वीरान रहीं। एक ही घर में रहने वाले लोग उस दिन एक-दूसरे से बात नहीं कर पाए। हमारे पहले के युद्धों में, विजेताओं ने केवल उन पूजा स्थलों का प्रशासन अपने हाथ में लिया था जिन्हें उन्होंने जीता था। लेकिन यह, बर्बरता की यह वापसी, जिसे हमने पिछली बार कुछ सदियों पहले हूणों के हमले के समय देखा था..."

इसने हमारी आत्मा को तोड़ दिया...' 'लेकिन

मुझे आश्चर्य हुआ कि लोग कितनी जल्दी आगे बढ़ गए...' विजयन ने कहा
धीरे से कहा। 'सामान्य जीवन में वापस लौट रहा हूँ। बस कुछ ही महीनों में।'

अमल ने गहरी साँस ली। 'हाँ... हम भारतीयों में एक ताकत है जो हमारी कमज़ोरी भी है। हम अपनी पुरानी नफ़रत और दुःख को भूल जाते हैं। जैसे गौतम बुद्ध ने हमें सलाह दी थी। हम आगे बढ़ते हैं...'

'चरैवेति, चरैवेति।' विजयन ने ऐतरेय उपनिषद से एक प्रसिद्ध मंत्र उद्धृत किया, जिसका अर्थ है चलते रहो, चलते रहो।

मूलतः, अतीत से आगे बढ़ना आवश्यक है, ताकि आप पुनर्निर्माण कर सकें।

अमल ने कहा, "यह रवैया कई बार काम करता है..." "मैं इससे इनकार नहीं करूँगा।"
हम अतीत की दुश्मनी और दुःख में नहीं डूबते। हम खुद को संभालते हैं और आगे बढ़ते हैं। लेकिन दूसरे देशों के कई लोग हम भारतीयों से अलग होते हैं। वे आगे बढ़ने से इनकार करते हैं। यही कारण है कि दुनिया भर में कई समुदाय अपने पूर्वजों पर अत्याचार करने वालों के वंशजों को दोषी ठहराते हैं। अपराध घटित होने के कई सदियों बाद, अब मुआवज़ा और बदला चाहते हैं। दूसरी ओर, हम भारतीय आमतौर पर आगे बढ़ते हैं और अपने जीवन का पुनर्निर्माण करते हैं। यही कारण है कि हम हमेशा वापसी करते हैं। यही कारण है कि हम हमेशा सफल होते हैं। हम अतीत के कैदी नहीं बनते।

'सच।'

'लेकिन...' अमल ने कहा। और जैसा कि किसी बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा था, एक लंबे एकालाप में सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण 'लेकिन' के बाद आने वाली बात होती है। 'लेकिन, हममें से कई भारतीय भले ही भूल जाएँ, लेकिन कुछ को याद रखना होगा। हमें याद रखना होगा, और हमें बदला लेना होगा। ताकि हमारे दुश्मनों को सबक मिले: वे हमारे खिलाफ अपराध करके ऐसा दिखावा न कर सकें जैसे कुछ हुआ ही न हो। हमारे कई दुश्मन हमारे साथ व्यापार करना चाहते हैं और हमारी अर्थव्यवस्था से पैसा कमाना चाहते हैं, और हमें कहते हैं कि अभी के लिए पुराने अपराधों को छोड़ दो। तब हमारे दुश्मन दोनों तरफ से जीतते हैं; वे जब चाहें हम पर हमला कर सकते हैं, और फिर हमसे पैसा भी कमा सकते हैं। उन्हें भारतीय पसंद नहीं, लेकिन उन्हें भारतीय पैसा पसंद है। ऐसा नहीं होने दिया जा सकता। इसलिए हममें से कुछ भारतीयों को याद रखना होगा। अगर हमें करना ही है, तो हमें अपना समय बिताना होगा। लेकिन हमें याद रखना होगा।

और हमें जवाबी हमला करना ही होगा। शायद तुरंत नहीं, शायद कुछ समय बाद।
शायद पाँच सौ साल बाद भी। लेकिन हमें पलटवार करना ही होगा। ताकि

Machine Translated by Google

हमारे दुश्मनों को साफ़ संदेश है: अगर तुम हमसे पंगा लेना चाहते हो, तो अपनी गणना में हमारे निश्चित प्रतिशोध को भी शामिल कर लो—क्योंकि हम पलटवार करेंगे। ज़ोरदार।' अमल ने विजयन की आँखों में सीधे देखा। 'लेकिन भूलने से इनकार करने और प्रतिशोध की इस ज़िद के लिए एकाग्रता और अनुशासन की ज़रूरत होती है।'

विजयन हँसने लगे। 'और यही तो हममें से बहुत से हिंदुओं में नहीं है। हमारे पास और भी कई खूबियाँ हैं, रचनात्मकता, जुनून, माफ़ करने और आगे बढ़ने की क्षमता। लेकिन हाँ, हम एकाग्रता और अनुशासन का पालन नहीं करते। कम से कम, हममें से ज़्यादातर तो...' अमल मुस्कुराए। 'मैं सहमत हूँ...' ...

इसीलिए आपको हम भारतीय मुसलमानों की जरूरत है।
क्योंकि हम बहुत केंद्रित और अनुशासित हैं। हममें कुछ ऐसी खूबियाँ नहीं हैं जो आप हिंदुओं में हैं। लेकिन हमारे पास कुछ और खूबियाँ हैं... और इनमें निश्चित रूप से फोकस और अनुशासन शामिल हैं।' विजयन मुस्कुराए।

अमल ने आगे कहा, "और यह भगवान शिव के भारतीय मुस्लिम भक्तों की ज़िम्मेदारी है... हमें एकाग्र और अनुशासित रहना होगा। हमें भूलना नहीं चाहिए। हमें इन विदेशियों को उनके अपराधों का दर्द महसूस कराना होगा। ताकि वे फिर कभी ऐसा करने की हिम्मत न करें। इसीलिए मैं लड़ता हूँ। भगवान अय्यप्पन और उनके पिता महादेव के लिए।"

विजयन ने सिर हिलाया। उसकी मुट्ठियाँ कसी हुई थीं। 'मदुरै की मीनाक्षी की कसम, मैं भी इसीलिए लड़ता हूँ।' 'मैं कृतज्ञ हूँ कि अल्लाह ने मुझे अपनी मातृभूमि के लिए योगदान देने का यह अवसर दिया है।
मैं अपना कर्तव्य निभाऊँगा।' 'मुझे पता है तुम निभाओगी,' विजयन मुस्कुराया।

अमल ने भी मुस्कुराकर जवाब दिया और खेल-खेल में विजयन के कंधे पर हल्के से मुक्का मारा।
'अब तुम्हें वलीद के तौर-तरीके सीखने होंगे ताकि जब हम गजनी में हों तो तुम भी वहां घुल-मिल सको।'

'क्या मैं खुलकर बात कर सकता हूं?' विजयन ने पूछा।
'बिल्कुल,' अमल ने कहा।
विजयन ने स्वीकार किया, "मुझे भाषाओं का कोई खास शौक नहीं है। मैं चाहे कितनी भी कोशिश कर लूं, कुछ दिनों या कुछ हफ़्तों में कोई विदेशी भाषा नहीं सीख सकता।"
"तुम कोशिश भी मत करना," पीछे से एक कमज़ोर सी आवाज़ आई। यह इक़बाल था, सोमेश्वर का हमेशा चुप रहने वाला दोस्त। वह बिना किसी की नज़र पड़े वहाँ पहुँच गया था और अब तमिल बोलने की कोशिश कर रहा था, जो उसने चोलों से सीखी थी।

'श्रीमान।' विजयन ने वृद्ध व्यक्ति को प्रणाम किया और अपने हाथ जोड़कर कहा, 'श्रीमान।'
आदरपूर्वक नमस्ते.
'मैं आपकी भाषा सीख रहा हूँ। कम से कम कुछ हद तक। बहुत कम समय में,' उसने आगे कहा।
इकबाल अपनी उंगलियों से इशारा करते हुए बता रहे हैं कि उनके पास कितना पैसा है।

Machine Translated by Google

'तुम भी भाषा सीख सकते हो। लेकिन कोशिश मत करो।'

'मैं स्वयं प्रयास करूंगा, सर,' विजयन ने नरम पड़ते हुए आश्वासन दिया।

"अच्छा, वलीद," इकबाल ने विजयन का छद्म नाम लेते हुए कहा। "आदत डालो
अपनी नई पहचान प्रदान करें ताकि आप गजनी में हमारे मिशन को पूरा कर सकें।'

'सही ... मैं वादा करता हूं,' विजयन ने कहा, हालांकि वह सोच नहीं पा रहे थे कि कैसे
अपने जनरल के बिना अपना मिशन पूरा करना। 'जनरल नरसिम्हन कैसे हैं?'

इक़बाल मुस्कुराया और सिर हिलाया। "वह एक ख़ास आदमी है, तुम्हारा वह जनरल।" "अभी भी अभ्यास कर रहा

है?" विजयन ने पूछा।

समुद्र में पहुंचने के बाद नरसिम्हन की कमजोरी कम हो गई और वह कुछ स्वस्थ हो गए।
ताकत, जिसने उसे चलने की अनुमति दी। लेकिन उसका दाहिना कंधा और हाथ लकवाग्रस्त रहे। अमल
और उनके प्रतिभाशाली चिकित्सक केवल तीर के कुछ हिस्सों को निकालने में सक्षम थे। घाव में धंसे कुछ छर्रे
निकालना असंभव था। तीर का सिरा, किसी तरह, नरसिम्हन की पीठ के भीतर चकनाचूर हो गया था जब उन्हें
चालुक्यों ने छुरा घोंपा था। यह विभिन्न धातुओं का एक विचित्र मिश्र धातु था। शायद अत्याधुनिक, प्रायोगिक
तकनीक से बना। यह एक तरह से एक धात्विक मिश्र धातु थी जिसे वैज्ञानिक आपदा होना चाहिए था - एक धातु जो
प्रभाव से टुकड़े हो जाती है, सामग्री के अधिकांश पारंपरिक उपयोगों के लिए बहुत कम उपयोगी है। लेकिन
यह एक तीर के सिरे में बहुत महत्वपूर्ण था क्योंकि यह एक शल्य चिकित्सक के लिए आपत्तिजनक प्रक्षेप्य
को निकालना बहुत मुश्किल बना देता था।

लेकिन चालुक्यों से संघर्ष के बाद चोल सेनापति की योद्धा भावना फिर से जागृत हो गई थी। और एक योद्धा
के लिए, केवल लकवाग्रस्त होना, बस एक बाधा है जिसे पार करना है, न कि सेवानिवृत्ति का कारण। नरसिंह अपने
चोल सैनिकों के साथ नियमित रूप से, हर दिन, डेक के नीचे अभ्यास कर रहे थे। अपने बाएँ हाथ से तलवार
चलाना सीख रहे थे। दरअसल, वह फिर से शुरुआत कर रहे थे, लेकिन उन्होंने पहले ही अच्छी प्रगति कर ली थी।

विजयन के सवाल का जवाब देते हुए इकबाल ने कहा, 'हां, वह अभी भी अभ्यास कर रहे हैं।' 'मैं
मैंने जनरल नरसिम्हन जैसा सक्षम सैनिक कभी नहीं देखा।'

अमल ने कहा, 'यहां से नरसिम्हन का नाम नसरुल्लाह होगा, सर।'

'तुम्हें याद दिला दूँ, सोमेश्वर सलमान है, और तुम... बेशक, तुम इकबाल ही रहोगे। जैसा कि मैं यहाँ वलीद को
समझा रही थी ,' उसने विजयन की ओर इशारा करते हुए कहा, 'हमें अपनी नई पहचान में पूरी तरह ढल जाना
चाहिए । हम कट्टरपंथियों के देश जा रहे हैं, सर। ग्वादर पहुँचने पर हमारा प्रदर्शन बेदाग़ होना चाहिए। छोटी-छोटी
गलतियाँ भी भारी पड़ सकती हैं। जैसे अगर कोई तुम्हारा नकली नाम पुकारे, और तुम जवाब भी न दो क्योंकि
तुम्हें उस नाम की आदत नहीं है।'

Machine Translated by Google

इकबाल ने मुस्कुराते हुए कहा, 'नसरुल्लाह, सलमान और हां, मैं इकबाल ही रहूंगा।'
युवती की ओर गर्मजोशी से देखा।

'जानते हो, मेरा मतलब असभ्य होना नहीं है,' विजयन ने कहा, 'लेकिन जब तुम मुझे किसी ऐसे नाम से पुकारते हो जो मेरा नहीं है, तो मुझे अजीब लगता है। मेरी पहचान और मेरा धर्म मेरे लिए पवित्र हैं। जब भी मुझे "वलीद" कहा जाता है और मेरे धर्म से अलग रीति-रिवाजों का पालन करने के लिए मजबूर किया जाता है, तो मैं सिहर उठता हूँ।' अमल पास आया और सीधे

उसकी आँखों में देखा।

'वलीद... या विजयन, अगर आपको अच्छा लगे,' उसने कहा, 'मैं आपको किसी नए धर्म में धर्मांतरित करने की कोशिश नहीं कर रही हूँ। आप जो भी रीति-रिवाज अपनाएँगे, वे केवल वही होंगे जो आपके अपने धर्म के विपरीत न हों। इससे ज़्यादा कुछ नहीं। और आपको किसी नई भाषा में महारत हासिल करने की ज़रूरत नहीं है। आपको बस कुछ ज़रूरी शब्द और मुहावरे सीखने होंगे, और कुछ रीति-रिवाजों का अभ्यास करना होगा। थोड़े समय के लिए तुर्कों के रीति-रिवाज अपनाएँ।

··· बहुत कम समय। यह मिशन हमें बदलने के बारे में नहीं है। इसके विपरीत, यह उन विश्वासों के लिए लड़ने के बारे में है जिन्हें आपने—और हमने—जीवन भर बनाए रखा है। इस पर मेरा विश्वास कीजिए। मैं आपसे विनती करता हूँ।'

इक़बाल ने तमिल में खुशी से कहा, "नया नाम और भाषा सीखना कोई बड़ी बात नहीं है। बस मंज़िल तक पहुँचने के लिए एक पुल है। पुल पार हो जाने के बाद, पुरानी पहचान पर वापस लौट जाओ।" "और दाढ़ी बढ़ाने के लिए शुक्रिया। इसे

लिह्या कहते हैं," अमल ने कहा।
उसकी आवाज़ में चंचल हँसी थी। 'यह तुम पर अच्छा लग रहा है।' यह कहकर वह मुड़ी

और चली गई।

विजयन को अपने चेहरे पर खून की लहर दौड़ती हुई महसूस हुई। उसने अपने खुरदुरे बालों को छुआ। अपनी ठुड्डी के आस-पास जवान दाढ़ी को देखा और हल्के से मुस्कुराया।

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 11

अजनबियों के बीच

ग़ज़नी, अफ़ग़ानिस्तान

दासी लड़खड़ाते हुए अमीर के शयनकक्ष से बाहर आई, वह मुश्किल से चल पा रही थी।
उसके बिखरे बाल उसके सूजे हुए होंठों और चोटिल जबड़े को छिपाने के लिए संघर्ष कर रहे थे।
उसकी पतली त्वचा के नीचे जमा हुआ खून एक खूनी नक्शे की तरह दिखाई दे रहा था जो उसकी बाईं काली आँख को पार करता हुआ उसके बालों में गायब हो गया। उसने एक मुश्किल से सुनाई देने वाली, लेकिन दर्द भरी, हताश सिसकी भरी आवाज़ निकाली।

अपनी पीड़ा की इस ताज़ा घटना ने उसे अपनी जान के लिए ख़तरा पैदा कर दिया था। वह डरी हुई थी।

तालिब को गलियारे में अपनी ओर आते देखकर, उसने अपना दुपट्टा अपनी छाती और चेहरे पर खींच लिया। शर्म और अकथनीय अपराधबोध से उसने आँखें बंद कर लीं।

तालिब पास आया। उसने फ़ौरन उस दासी को पहचान लिया। यज़ादेह।
तेरह या ज़्यादा से ज़्यादा चौदह साल की लड़की। यज़ीदी कबीले से। उसके पिता भी गवर्नर मुफ़्ती इस्माइल के गुलाम थे।

तालिब ने नीचे देखा। मानो जो हो रहा था उसे न मानने से अपराध गायब हो जाएगा। एक छोटी बच्ची। एक बच्ची। ऐसी पीड़ा जो किसी भी बच्चे को नहीं झेलनी चाहिए। तालिब सिहर उठा। लेकिन उसने बरसों में सीख लिया था कि मुँह बंद रखना चाहिए और अपने मालिक के अपराधों को नज़रअंदाज़ करने का नाटक करना चाहिए।

वह नीचे देखता रहा। "जाओ, प्लीज़... रेशमा..." छोटी बच्ची, यज़ादेह ने कोई जवाब नहीं दिया। वह दीवार को घूरती रही।
भयभीत.

"मुख्य सेवक के कमरे में जाओ," तालिब ने कहा, अभी भी ज़मीन को घूरते हुए, उसकी नज़रें लड़की से हटी हुई थीं। "रेशमा, तुम्हारे... तुम्हारे ज़ख्म..." लड़की ने ज़बरदस्ती सिर हिलाया, गवर्नर के घर के ··· रेशमा आपको कपड़े पहनने में मदद करेगी मुखिया से नज़रें मिलाने से बचते हुए। उसने

काँपती हुई उँगली से अपने ऊपरी होंठ से खून की बूँद पोंछी। फिर भागकर दालान में गायब हो गई।

Machine Translated by Google

"तालिब?" शयनकक्ष के अंदर से इस्माइल की आवाज़ आई। "क्या यह तुम हो?" तालिब ने गहरी साँस ली और फिर से सिहर उठा।
लेकिन

उसे आत्मरक्षा का ज़बरदस्त एहसास था। यही एकमात्र तरीक़ा था जिससे वह इतने लंबे समय तक ज़िंदा रहा था। उसने चेहरे पर एक मुस्कान लायी और अपने मालिक के शयनकक्ष में दाखिल हुआ।

अंदर की हवा अफीम की अत्यधिक मीठी सुगंध से भरी हुई थी।
खांसते हुए तालिब ने हवा साफ करने के व्यर्थ प्रयास में अपनी नाक के सामने हाथ हिलाया।

इस्माइल कमरे के बाएँ कोने में आलीशान फर्श पर गद्दियों पर अधनंगे बैठे, साँप के आकार के अफीम के पाइप से कश ले रहे थे। "आइए, पुराने दोस्त। बैठिए।" तालिब ने झुककर प्रणाम किया और अपने मालिक के पास गए। उन्होंने घुटनों के बल बैठकर, गवर्नर-मुफ़्ती के हाथ को

औपचारिकता से चूमा और अपने बगल में एक साधारण गद्दी पर बैठ गए।

मालिक।

'आज शाम आप थके हुए लग रहे हैं,' इस्माइल ने खुशी से कहा। 'सब ठीक तो है?' 'हुज़ूर, आप मुझे खुली किताब की तरह पढ़ सकते हैं,'
तालिब ने जवाब दिया। 'बहुत कुछ
यहाँ गुज़गान से ज़्यादा नौकरों का इंतज़ाम है। और शाही दरबार...'
इस्माइल ने सिर हिलाया। 'हाँ, अदालत।' 'हाँ, मेरे प्रभु। बहुत सारे ... यह वास्तव में थका देने वाला है।'
गतिशील हिस्से हैं जिन्हें संभालना मुश्किल है। और यह सब होना ही चाहिए।'
बहुत सावधानी से किया गया।'
'मैं जो कहता हूँ वही करो, और हम जल्द ही पूरा नियंत्रण पा लेंगे। फिर
हम कोर्ट का काम भी उतनी ही आसानी से चला लेंगे, जितनी आसानी से हम अपना घर चलाते हैं।' इस्माइल हंसा।

तालिब ने विनम्रता से हंसकर कहा।
'हमें जश्न मनाना चाहिए। मुझे अच्छी खबर मिली है,' इस्माइल ने एक पत्र दिखाते हुए कहा।

तालिब ने नीचे लगी गोलाकार काली मुहर को देखा। मुहर टूटी हुई थी।

इस्माइल ने आगे कहा, 'खिलाफत - असली - और, उससे भी महत्वपूर्ण बात,
उनके फ़ारसी बुईद सहयोगियों ने सुल्तान से निपटने के लिए समुद्र के रास्ते आदमी भेजे हैं, अगर तुम समझ रहे हो कि मैं क्या कहना चाहता हूँ।' इस्माइल ने आँख मारी। 'मेरे साथ सिगरेट पी लो।'
आनंद लें!'
राज्यपाल-मुफ्ती ने अपनी बाईं ओर रखे हुक्के की ओर इशारा किया और अपने
नौकर को धूम्रपान करने के लिए कहा।

"शुक्रिया, मेरे रब," तालिब ने कहा। "वाकई, यह अच्छी खबर है... चीज़ें बिल्कुल वैसी ही हो रही हैं जैसी आपने सोची थीं। किसने सोचा था कि ये

Machine Translated by Google

दिखावटी और नरम फ़ारसी शेर जैसे तुर्कों के ख़िलाफ़ काम आते...' इस्माइल धीरे से हँसा। 'कभी-कभी, पानी का इस्तेमाल पत्थर को घिसने के लिए

भी किया जा सकता है।' 'बेशक। आप ही वह बुद्धिमान शासक हैं जिसके योग्य ग़ज़नी है, मेरे रब।' 'बिल्कुल सही,' इस्माइल ने सहमति जताई।

'मेरे प्रभु,' तालिब ने सावधानी से कहा, 'मैं जानता हूं कि आप हमेशा सावधान रहते हैं।
दिखावे को बनाए रखना होगा ताकि हम अदालत पर नियंत्रण रख सकें।
लेकिन हमें अपनी आदतें घर के अंदर ही रखनी चाहिए, जहाँ उन्हें संभाला जा सके।' तालिब अपनी भलाई के लिए जितना हो सके, इस्माइल की औरतों को पीटने की आदत के बारे में सावधानी से बात कर रहा था। 'अगर हम किसी बाहरी व्यक्ति को घर में ले आए, तो मेरे लिए लीक को रोकना मुश्किल हो सकता है।' इस्माइल का मूड अच्छा था, क्योंकि उसने अभी-अभी यज़ादेह का भरपूर आनंद लिया था। इसलिए वह सुनने को तैयार था।

'ठीक है, ठीक है! उस खूबसूरत अफ़्रीकी दासी को बाज़ार से मत लाना! अब खुश हो?'

तालिब ने सिर झुकाकर कहा, 'मेरा एकमात्र उद्देश्य आपकी सफलता है, मेरे स्वामी। आपकी
सफलता ही मेरे जीवन का एकमात्र लक्ष्य है...'

'मुझे पता है, मुझे पता है...' इस्माइल बहुत ही खुले मूड में था। 'काश यह यज़ादेह लड़की जवाबी हमला करे ताकि मैं उसे और काबू में कर सकूँ। वह थोड़ी सुस्त है।' 'मैं यज़ादेह को समझाने की कोशिश करूँगा, हुज़ूर,' तालिब ने कहा। 'या शायद हम मिल सकें।'

... मेरे भावुक और गहरे प्यार का कोई प्रतिदान नहीं मिला।'

कोई और? कोई बड़ा?'

'नहीं। उस यज़ादेह लड़की से बात करो। या शायद...' तुम्हें पता है मुझे आबनूस त्वचा
बहुत पसंद है। कोई और भी है क्या?' 'बस कुछ महीने की बात है।

... आपको जल्द ही सिंहासन मिलेगा
ग़ज़नी तुम्हारे कब्ज़े में। फिर तुम्हें तुम्हारा हक़ लेने से कोई नहीं रोक पाएगा। अभी तो बस हमें सावधान रहना है।' 'ठीक है... ठीक है...'

लेकिन हमें इतनी जल्दी जश्न नहीं मनाना चाहिए,' इस्माइल ने गंभीर होते हुए कहा। 'वह पागल औरत—कौसरी जहाँ—मस्जिद के पुनर्निर्माण को पूरा करना मेरे लिए बहुत मुश्किल बना रही है। उसने पहले मुझे शहर से लोगों की भर्ती करने से रोकने की कोशिश की, इसलिए मुझे हसन के गुलामों को हड़पना पड़ा। फिर उसने निर्माण सामग्री खरीदने के लिए कुछ धन रोक दिया। समय सीमा जल्लाद की तलवार के वार की तरह नज़दीक आ रही है।'

...

इस बार तालिब ने गंभीरता से सिर हिलाया।
इस्माइल ने पूछा, "क्या तुम मेरे बेटे से मिले हो? सिर्फ़ वही इस पैसे की समस्या का समाधान कर सकता है।"

Machine Translated by Google

सभी को पता नहीं था कि इस्माइल का एक बेटा था। सच कहें तो, इस्माइल से भी उसके अस्तित्व को अपेक्षाकृत हाल तक गुप्त रखा गया था। सौभाग्य से, उसका बेटा इस्माइल की मदद करने के लिए बहुत अच्छी स्थिति में था।

'मैंने मुलाक़ात का समय माँगा है, महाराज। मैं आज बाद में उनसे बात करूँगा।' 'एक पल की भी देरी हमारे लिए ख़तरा है।' 'मैं समझता हूँ, महाराज।' 'और जल्दी से ग्वादर के लिए निकलने की योजना बनाओ।

मुझे स्वागत के लिए एक भरोसेमंद आदमी

चाहिए।'

अब्बासिद खलीफा के राजदूत।'

ग्वादर बलूचिस्तान का मुख्य बंदरगाह था। यह मुख्यतः भूमि-केंद्रित ग़ज़नवी साम्राज्य के लिए नौसैनिक व्यापार केंद्र के रूप में कार्य करता था।

'जी महाराज।'

इस्माइल देर दोपहर ग़ज़नी की विशाल मस्जिद के बरामदे में खड़ा था, यज़ादेह और तालिब उससे कुछ कदम पीछे खड़े थे। तालिब की बार-बार यज़ादेह को सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित न करने की सलाह के बावजूद, इस्माइल ने ज़िद की थी कि उसे मस्जिद निर्माण स्थल पर साथ लाया जाए। तालिब को एहसास हो गया था कि उसके मालिक, इस्माइल, उस यज़ीदी दासी के प्रति आसक्त होते जा रहे थे।

इस्माइल ने जुंदीन-उल-दीन को छह सौ गुलाम मजदूरों को एक अनुशासित कतार में खड़ा करते हुए देखा। खूंखार धार्मिक पुलिसवाले बड़ी सफाई से चल रहे थे, चाबुक मार रहे थे और मजे से डंडे चला रहे थे।

दूर कहीं बच्चों और बुज़ुर्गों से भरे पिंजरों का एक समूह था। इस्माइल के आदेश पर, बच्चों और बुज़ुर्गों को कम मेहनत वाले कामों में लगाया जाता था, जैसे सफ़ाई, पत्थरों पर पानी डालना और मुख्य मज़दूरों को खाना खिलाना। जुंदीन-उल-दीन के एक छोटे से समूह की निगरानी में, कैदी अपने पिंजरों से चिपके हुए अपने प्रियजनों को आशा और जीने की इच्छा से भरी आँखों से देखते रहते थे।

पिछले सप्ताह के दौरान, काफिर गुलामों की जान चली गई थी

एक अप्रत्याशित मोड़। शहर के बाहरी इलाके में एक सुरक्षित घर में ख्वाजा हसन द्वारा कैद किए गए, हज़ारों पुरुष, महिलाएं और बच्चे तब से जानवरों की तरह कैद में रह रहे थे जब से उन्हें गजनी के काले बाजार में लाया गया था।

Machine Translated by Google

ग़ज़नी सल्तनत और उसके आस-पास के इलाकों में फैले ये ग़ुलाम विभिन्न धर्मों के थे। ये वे धर्म थे जिन्होंने उन शत्रुतापूर्ण ताकतों का सामना करते हुए, जो अब उन क्षेत्रों पर नियंत्रण कर रही थीं, अपनी प्रथाओं को उल्लेखनीय दृढ़ता के साथ कायम रखा था। इनमें यज़ीदी, यहूदी, पारसी, ईसाई, हिंदू और बौद्ध लोग शामिल थे।

··· लेकिन दासों में सबसे बड़ा दल, विशुद्ध रूप से

गवर्नर-मुफ्ती की चेतावनी मिलने के बाद, ख्वाजा हसन ने बेचे गए गुलामों को वापस पाने के लिए काफी प्रयास किया था, तथा उनके दुखी मालिकों को उनके द्वारा दी गई कीमत से दोगुनी और कभी-कभी तिगुनी कीमत की पेशकश की थी।
इसके बाद उन्होंने जामा मस्जिद की मरम्मत के तत्काल कार्य के लिए सभी उपलब्ध जनशक्ति को लगा दिया।

गवर्नर-मुफ़्ती ने इन नए ग़ुलामों में से किसी को भी अपना निजी कर्मचारी बनाने से इनकार कर दिया था। वह सिर्फ़ उन लोगों को अपने घर में रखना चाहते थे जिन्होंने गुज़गान में वर्षों तक उनकी सेवा की थी। गवर्नर-मुफ़्ती की क़ैद के दौरान सामूहिक रूप से झेले गए कष्टों ने लोगों का एक वफ़ादार समूह तैयार कर लिया था जो सुल्तान के ख़िलाफ़ घर में रची जा रही साज़िशों का भंडाफोड़ नहीं करेंगे। बेशक, किसी भी ग़ुलाम को न रखने का कारण यह बताया गया था कि गवर्नर-मुफ़्ती अपने लिए कोई अतिरिक्त मदद नहीं चाहते थे और चाहते थे कि सारी जनशक्ति मस्जिद के पुनर्निर्माण में लगे—एक ऐसा कदम जिसने इस्माइल की सार्वजनिक छवि को और भी चमकाया।

"यह काम लगभग नामुमकिन है, महोदय। हम इस सीमित समय सीमा के भीतर पुरानी, आंशिक रूप से मरम्मत की गई मस्जिद के खंडहरों को हटाकर नई इमारत का निर्माण नहीं कर सकते," बुत्रुस ने समझाया, जो एक ईसाई गुलाम था और जिसे गवर्नर-मुफ्ती ने इस विशाल पुनर्निर्माण कार्य का प्रभारी नियुक्त किया था। गुलाम बनने से पहले, यह गुलाम एक वास्तुकार और इंजीनियर था। बुत्रुस ने कहा, "हमें इमारत की दरारों को जोड़ना होगा—छत और फर्श पर बड़ी दरारों को।"

इस्माइल ने ध्यान से सुना.

"इसके लिए, हमें खांचों में मौजूद ढीले टुकड़ों को तोड़कर उन्हें पिघले हुए लोहे से भरना होगा। इससे संरचना मज़बूत होगी। फिर हम बची हुई खामियों को गारे से भर देंगे ताकि रंग और बनावट में एकरूपता बनी रहे। और यह तो बस शुरुआत है..." मस्जिद परिसर के आसपास अचानक हलचल मच गई।

इससे गवर्नर-मुफ़्ती का ध्यान उस जानकार ईसाई द्वारा दी जा रही ब्रीफ़िंग से हट गया। उसने मूसा के सामने समुद्र की तरह अलग होती भीड़ को देखा। सुल्तान और उसकी रानी आ चुके थे।

Machine Translated by Google

इस्माइल उनका इंतज़ार कर रहा था। उसने ईसाई को एक तरफ़ इशारा किया और महमूद के निजी रक्षकों और कौसरी के हिजड़े सैनिकों को देखा, जो शाही जोड़े को कसकर घेरे हुए थे और मस्जिद की सीढ़ियों के नीचे ही अलग हुए। महमूद आगे बढ़ गया, जबकि उसकी पत्नी चौड़ी सीढ़ियों और छोटी सीढ़ियों पर शान से चढ़ रही थी। शाही जोड़े के पीछे मलिक अयाज़ खड़ा था, जो जॉर्जियाई पूर्व गुलाम, लाहौर का राजा और सबसे महत्वपूर्ण, सुल्तान का प्रेमी था।

इस्माइल ने झुककर शाही जोड़े का स्वागत किया। बुतरस तुरंत पीछे हट गया और यज़ादेह और तालिब के पास आ गया। दोनों गुलाम घुटनों के बल गिर पड़े, उनके सिर नीचे झुके हुए थे, जबकि तालिब खड़ा रहा।

बरामदे में पहुँचकर पहरेदारों और खोजों ने समूह को घेर लिया। इस्माइल हाथ फैलाए महमूद के पास गया।

महमूद मुस्कुराया और अपने भाई को गले लगा लिया, भाई ने गले लगाना छोड़ दिया और पहले उसके गालों को और फिर उसके दाहिने हाथ को चूमा। मुफ़्ती-गवर्नर ने रानी की ओर देखा और बिना पीठ झुकाए थोड़ा सा झुक गया।

कौसरी जहाँ ने यज़ादेह और बुतरस को ध्यान से देखा, उसके चेहरे पर गंभीर और बिना मुस्कुराहट के भाव थे। उसकी नज़र यज़ादेह पर टिकी रही और फिर वापस इस्माइल पर आ गई। उसने तालिब पर ध्यान ही नहीं दिया।

इस्माइल ने भी उसकी तरफ देखा। रानी का शानदार, लहराता हुआ गाउन, जिस पर महीन सोने और चाँदी के धागों की कढ़ाई थी, उसकी पतली कमर पर चाँदी के रेशमी बेल्ट से बंधा हुआ था। उसकी छाती पर एक बड़ा काला पत्थर चमक रहा था, जो उसकी लंबी, बेदाग गर्दन पर एक पतले धागे से बंधा हुआ था। उसकी तीखी नीली-हरी आँखें उसे स्पष्ट लेकिन शासकीय शत्रुता से घूर रही थीं।

'उन बच्चों और बूढ़ों को पिंजरे में बंद करके क्यों रखा जाता है?' रानी ने पूछा।
उन्होंने अकड़कर पूछा, 'वे गंदे सूअरों की तरह खून और मल में लोटते हैं।'
मैंने इस्लाम के बारे में जो कुछ सीखा है, यह उसके विरुद्ध है।'
'दास हमारी संपत्ति हैं, महान रानी।' इस्माइल ने विनम्रतापूर्वक मुस्कुराया।
उसने महमूद को अपनी पत्नी की ओर देखते और आँखें घुमाते हुए नहीं देखा। 'हम जो चाहें करें।'
··· मज़बूत लोग हर पल काम करते हैं। कमज़ोर लोगों को तब तक पिंजरों में रखा जाता है जब तक उन्हें सफ़ाई और किसी भी ज़रूरी सहायक काम के लिए बाहर नहीं लाया जाता। और जो पिंजरों में हैं... उनकी हालत बेहतर है... उन्हें कम काम करना पड़ता है। हमारी तुर्क दया, जैसा कि पूरी दुनिया जानती है, असीम है। इन गुलाम कीड़ों को समय पर खाना मिलता है और भारी चिनाई करते समय उन्हें कोड़े नहीं मारे जाते। और... खून और मल में लोटना? इस अतिशयोक्ति से आप मेरे साथ घोर अन्याय कर रही हैं, हे रानी। मेरे आदमी हर सुबह सूर्योदय से पहले, पानी की बाल्टी से गुलामों और उनके पिंजरों को धोते हैं।'

Machine Translated by Google

'अरे, बिल्कुल! इन कुपोषितों पर बर्फीले पानी की बाल्टी फेंकी गई
हर बर्फीली गज़नी सुबह, बुज़ुर्गों और बच्चों के लिए।' रानी खिलखिलाकर हँस पड़ी। 'मैं मानती हूँ कि कभी-कभी ठंड से मर
जाना भी एक दयालुता हो सकती है।'

'बस करो, तुम दोनों!' सुल्तान ने अपनी हथेलियाँ आगे बढ़ाते हुए कहा।
बाहर की ओर मुँह करके, मानो उन्हें अलग-अलग पकड़े हुए हों। 'मैं गवर्नर-मुफ़्ती के अनुरोध पर गुलामों के प्रति करुणा का संदेश
देने आया हूँ। मुझे उन्हें यह काम समय पर पूरा करने के लिए प्रेरित करना होगा ताकि और भी ज़रूरी काम पूरे किए जा सकें।' उसने
इस्माइल की ओर ध्यान से देखा और तेज़ धूप में अपनी ऊर्जा खोते हुए ज़मीन पर थूक दिया। 'ये गुलाम रोज़ मक्खियों की तरह
गिरते हैं, और काम एक थकाऊ गति से चलता रहता है।' चुभती हुई ठंडी रातें और तपते दिन, ये सब बारी-बारी से अपना असर दिखा
रहे थे। महमूद को गुलामों के आराम की परवाह नहीं थी। लेकिन मरे हुए गुलाम मस्जिदें नहीं बना सकते। कम से कम कौसरी ने तो यही
बताया था। शायद प्रेरणा वहाँ काम करेगी जहाँ डर और कोड़े ने काम नहीं

किया।

महमूद ने पूछा, 'इस्माइल, पिछले सप्ताह कितने लोग मारे गए?'
'बीस?' 'बाईस,'

इस्माइल ने उदास होकर कहा। 'और हाँ, मेरे रब, सचमुच
अगर आप घोषणा कर दें और हाल ही में हुई हमारी बातचीत को पवित्र बना दें, तो बहुत मदद मिलेगी। आपके शब्द गुलामों
की जीने की इच्छा और काम करने के उनके जुनून को बचाए रखेंगे।' खुश होकर महमूद मुस्कुराया और अपने भाई के गाल पर थपथपाया।

"हम इस दुनिया को अपने कब्ज़े में लेंगे और मिलकर इस पर राज करेंगे, मेरे भाई," उसने कहा। "मुझे अपनी स्थिति को औपचारिक
रूप देने में मदद करो और हम सबको—सबको— गज़नी और एकमात्र सच्चे धर्म के अधीन कर देंगे।" इस्माइल ने रानी की ओर देखा और
विनम्रता से अपना सिर झुका लिया। जैसे ही उसने नज़रें फेरीं, उसकी

नज़र फिर घुटनों के बल बैठी दासी यज़ादेह पर पड़ी। कौसरी की आँखें सिकुड़ गईं, मानो उसे एहसास हो रहा हो।

महमूद पहली सीढ़ी के किनारे पर आया, अपना गला साफ किया और
सभा से बात करना शुरू किया।

"अल्लाह की कृपा से, जो अत्यंत कृपालु और अत्यंत दयालु है," सुल्तान ने ज़ोर से कहा, "मैं तुम्हें एक अनोखा अवसर प्रदान करता हूँ।
ईशनिंदा और पाप में जीते हुए, तुम भाग्यशाली हो—बहुत भाग्यशाली—कि तुम्हें जन्नत जाने का यह अवसर मिला है।" गुलाम और उनके
संचालक सुल्तान को निरंतर ध्यान से देख रहे थे। वे जानते थे कि जन्नत वह स्वर्ग है जिसका वादा मुसलमानों को मृत्यु के बाद किया

गया है। लेकिन चूँकि वे काफिर थे, इसलिए उनके पास स्वर्ग जाने का कोई मौका नहीं था और उन्हें नरक की आग के लिए
तैयार रहना था। कम से कम उनके इस्लामी निगरानों ने तो यही बताया था।

Machine Translated by Google

"हालाँकि मैं तुम्हें मारने के लिए बाध्य हूँ, फिर भी मेरा महान विश्वास मुझे ज़रूरत पड़ने पर दयालु और पुरस्कृत होना भी सिखाता है," सुल्तान ने सुबह के साफ़-नीले आकाश की ओर हाथ उठाते हुए कहा। "खुश हो जाओ, क्योंकि मैं एक उपहार लेकर आया हूँ..."

एक तोहफ़ा जिस पर तुम्हारे उपकारकर्ता—मेरे भाई, गवर्नर-मुफ़्ती—ने ज़ोर दिया था!' महमूद ने नाटकीय अंदाज़ में अपने भाई की ओर इशारा किया।

इस्माइल ने झुककर प्रणाम किया।

सुल्तान ने एक पुस्तिका खोली और उसे ऊपर उठाया।

'मैं, महमूद, गजनी का सुल्तान, चुने हुए रक्षक के रूप में अपने अधिकार का प्रयोग करता हूं मैं मनुष्यों की इस दुनिया में एकमात्र सच्चे धर्म का प्रचारक हूँ और आज आपके सामने यह वादा करता हूँ।' महमूद की आवाज़ जब ज़ोर से सुनाई देने लगी तो दासों ने ध्यान से सुनना शुरू कर दिया।

'आज के दिन, मैं यह आदेश देता हूँ कि तुम अपनी गुलामी की बेड़ियों से आज़ाद हो जाओ और तुम्हारे पवित्र कार्य के समय पर पूरा होने पर तुम्हें सल्तनत के धर्म में शामिल कर लिया जाएगा। इसके लिए तुम्हें आज से चार महीने बाद पर्याप्त मुआवज़ा भी दिया जाएगा।' महमूद सुल्तान ने पुस्तक को लुढ़काया और ऊपर उठाया। भीड़ में मानो सन्नाटा छा गया।

महमूद ने मुस्कुराते हुए कहा, "काफ़िरों, मेहनत करो , क्योंकि तुम्हारे पास मुक्ति का एक दुर्लभ अवसर है। मैं यह सरकारी फ़रमान अपने भाई के हवाले करता हूँ।"

कुछ लोग व्यर्थ आशा में जयकार कर रहे थे। अधिकांश लोग व्याकुल और उदास होकर स्थिर खड़े थे। सबको पता था कि यह काम लगभग नामुमकिन है। वे अभिशप्त थे। मौत कोई सज़ा नहीं, आज़ादी थी। उन्हें असल में मौत से नहीं, बल्कि ज़िंदा रहते हुए लगातार होने वाली यातनाओं से डर था।

'क्या बकवास है...' सुल्तान ने गुर्राते हुए कहा, उसकी उदारता के प्रति दासों में उत्साह की कमी के कारण उसकी झुंझलाहट बढ़ रही थी।

'सुल्तान अमर रहे!' दर्शकों में से एक तेज़ आवाज़ गूंजी। डर प्रोत्साहनों से कहीं बेहतर काम करता है। 'महमूद ग़ज़नी अमर रहे!' 'अमर रहे! अमर रहे! अमर रहे!' गुलामों ने उत्साह से तालियाँ बजाते हुए नारे लगाए, मानो उनकी ज़िंदगी इसी पर निर्भर हो।

महमूद ने पुस्तक अपने भाई को सौंप दी और एक सरसरी निगाह डाली। कौसरी ने हँसते हुए कहा।

'खुश?' सुल्तान ने पूछा। 'अगर इससे इन बदमाशों को प्रेरणा नहीं मिलती, तो...' अपनी समय सीमा पूरी करो, कुछ भी नहीं कर पाएगा। मैं चाहता हूँ कि तुम इस काम में कामयाब हो जाओ, मेरे भाई।' 'मैं तुम्हारा सदा आभारी रहूँगा,

मेरे रब,' इस्माइल ने कहा।

'तुम्हें ऐसा ही करना चाहिए। असफलता कोई विकल्प नहीं है।'

Machine Translated by Google

गवर्नर-मुफ्ती ने झुककर प्रणाम किया, उनकी अभिव्यक्ति विनम्रतापूर्ण और दासतापूर्ण थी।
जैसे ही उसने अपना सिर उठाया, उसने महमूद के लक्ष्य के लिए जो शास्त्रीय औचित्य ढूँढ़ने शुरू किए थे, उन्हें समझाना शुरू कर दिया। कौसरी भी ध्यान से सुन रही थी।

शाही दंपत्ति की नज़रों से बचकर, मलिक अयाज़ टहलते हुए तालिब के पास पहुँच गया था। दोनों आगे चल रहे ग़ज़नी शाही परिवार और पीछे चल रहे गुलामों की आवाज़ से दूर थे।

अयाज़ ने नीचे देखा, मानो वह फर्श का अध्ययन कर रहा हो, और जल्दी से बुदबुदाया,
उसका स्वर स्पष्ट, दृढ़ और गहरा था, उसके सामान्य ठाठ-बाट से बिल्कुल अलग। 'हो गया।' 'शुक्रिया, हुज़ूर,' तालिब फुसफुसाया। 'मैं गवर्नर-

मुफ़्ती को सूचित करूँगा।' 'दस हज़ार स्वर्ण दीनार।' तालिब को आश्चर्य हुआ, लेकिन केवल एक पल के लिए। उसने सोचा था कि, रिश्ते को

देखते हुए, मलिक अयाज़ कुछ और पैसों का

इंतज़ाम कर पाएगा। बल्कि, बहुत ज़्यादा। लेकिन शायद, तालिब ने खुद से सोचा, इसे धीरे-धीरे करना होगा ताकि शक न
हो। हाथ में काम बहुत मुश्किल और खतरनाक था। और तालिब जानता था कि यह कितना नाज़ुक था। वह यह भी जानता था कि इस मामले में उसे इस्माइल की ओर से फ़ैसले लेने का अधिकार था।

तालिब ने कहा, 'अभी के लिए यही ठीक है, महाराज।'
मलिक अयाज़ ने तालिब की तरफ़ देखा। उसका हमेशा का घमंडी-सा चेहरा लौट आया था। उसने भावुकता से फटी हुई आवाज़ में फुसफुसाया, "मेरे अब्बा से कहो कि मैं उनसे प्यार करता हूँ।" यह कहकर अयाज़ चला गया।

तालिब के चेहरे पर कोई भाव नहीं थे। उसने दूर से इस्माइल की ओर देखा और फिर अपनी आँखें ज़मीन पर फेर लीं। वफ़ादार नौकर मलिक अयाज़ को पसंद करने लगा था, जो लाहौर का राजा था, सुल्तान का प्रेमी था, लेकिन साथ ही, एक जॉर्जियाई दासी का बेटा और एक ऐसा पिता जो ...

...

एक पिता जो केवल यह देखता है कि उसका खोया हुआ बेटा कितना उपयोगी है, यह नहीं कि बेटा उससे कितना प्यार करता है।

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 12

पलायन की कीमत

नरसिम्हन शक्तिशाली चोल जहाज़ चंद्रहास के अगले डेक पर खड़े थे। उनके आदमियों ने बिना रुके, बिना रुके, फिर से लोड करके समुद्री ट्रेबुशे दागे।

कोई दया नहीं.

श्रीविजय नौसैनिक बेड़ा, शक्तिशाली साम्राज्य के जहाज जो दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों मलेशिया और इंडोनेशिया की अधिकांश भूमि और बंदरगाहों पर नियंत्रण रखते थे, जर्जर अवस्था में थे।

चोल सेनापति ने अपनी तलवार उठाते हुए आदेश दिया, "गोली चलाओ!" शाही नाविकों ने युद्ध मशीनों के गोफनों में तेल में डूबे भालेनुमा बोल्ट लगा दिए।

'प्रज्वलित

करो!' ट्रेबुशेट्स पर लोड किए गए प्रोजेक्टाइल को आग लगा दी गई।

'छोड़ो!' नरसिंह ने अपनी तलवार को चाप में लहराते हुए दहाड़ लगाई। लंबी भुजाएँ पाँच ट्रेबुशे ने रात की हवा में अपने गोले फेंके। अन्य चोल जहाजों ने भी प्रमुख जहाज का अनुसरण किया और जलती हुई मिसाइलें फेंकीं, उनकी धुआँ उगलती पूँछें स्याह आसमान में धूसर-काले साँपों की तरह ऐंठ रही थीं।

दुश्मन जहाज़ अराजक हाथापाई में पीछे हट गए।

"जनरल!" नरसिंह

दाहिनी ओर मुड़ा। वह शाही दूत था।

युद्ध के कोहरे में, और वह भी चांदनी रात में चल रहे नौसैनिक युद्ध के दौरान, सूचना पहुँचाना बेहद मुश्किल था। अक्सर, जिन नौसेनाओं ने संचार को अच्छी तरह से प्रबंधित नहीं किया, वे एक अटूट बेड़े के हिस्से के बजाय स्वतंत्र जहाजों के रूप में लड़ने लगीं। चोल, जो लंबे समय तक कुशल सैनिक-नाविक थे, ने जहाजों के बीच संचार की एक परिष्कृत प्रणाली स्थापित की थी, जो उनके मुख्य मस्तूल पर फहराए गए कोड झंडों और कौवे के घोंसलों से बजने वाले बिगुल रिले की व्यवस्था के माध्यम से सुगम होती थी। अपने स्वभाव से, कोड झंडों या

Machine Translated by Google

बिगुल रिले सरल होने चाहिए थे, जैसे 'बंदरगाह की ओर से हमला' या 'दाहिने की ओर से'। जटिल संदेशों के लिए संदेशवाहकों को तेज़ कटर नावों में नाव चलाकर आना पड़ता था। नौसैनिक युद्ध के दौरान ऐसा करने में होने वाला खर्च और जोखिम इस बात का संकेत था कि इस प्रणाली का इस्तेमाल बहुत कम होता था। इसका यह भी मतलब था कि जब कोई संदेशवाहक, खासकर शाही संदेशवाहक, भेजा जाता था, तो उस संदेश को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता था।

नरसिम्हन ने आदेश दिया, 'आओ।'

संदेशवाहक आगे बढ़ा, सलामी दी, अपने कंधे पर बंधे बैग में हाथ डाला और एक सीलबंद पुस्तक निकाली।

"यह सम्राट की ओर से है, महान सेनापति।" नरसिंह ने

दूत को घूरकर देखा, उसे स्पष्ट बात कहने पर चिढ़ हो रही थी। युद्ध के बीच में शाही दूत और किसका संदेश लाएगा? नरसिंह ने नौसैनिक काफिले के पिछले हिस्से की ओर देखा, जहाँ उसने सम्राट की सुरक्षा के लिए राजेंद्र चोल के जहाज को रुकने को कहा था।

वह अपने लेफ्टिनेंट की ओर मुड़ा। 'एक और गोलाबारी!' जैसे ही उसके

योद्धा असहायों पर मिसाइलों का एक और सेट दागने के लिए तैयार हुए, श्रीविजयंस के अनुसार, नरसिम्हन ने मुहर को फाड़ दिया और पुस्तक को पढ़ा।

"नरसिंह, मेरे शेर, तुमने बहुत अच्छा किया। श्रीविजय नौसेना अपनी संख्याबल में ज़्यादा होने के बावजूद अस्त-व्यस्त है। अग्निदेव की ज्वालाएँ उनके पालों को खा रही हैं। युद्ध समाप्त हो गया है, मेरे मित्र। आक्रमण बंद करो।"

नरसिम्हन ने गुस्से में अपनी सांस रोककर पढ़ना बंद कर दिया, लेकिन सावधानी बरती। अपने स्वामी और मालिक से अपनी असहमति दूसरों को दिखाने के लिए। उनका मानना था कि चीन के सोंग राजघराने की राजकुमारी लेडी फी लिन, जिन्होंने उनके सम्राट को यह अभियान शुरू करने के लिए प्रेरित किया था, अपने स्वार्थ के लिए राजेंद्र चोल को प्रभावित कर रही थीं। श्रीविजय का बेड़ा साम्राज्य के दूसरे सबसे बड़े बंदरगाह शहर, पनाई की खाड़ी की ओर भाग रहा था, जब चोलों ने उन पर हमला किया। पनाई बंदरगाह दक्षिण पूर्व एशियाई व्यापार संघों के सबसे बड़े अड्डे के रूप में काम करता था, जिन पर श्रीविजय द्वारा कब्ज़ा करने से पहले सभी भारतीय व्यापारी संघों का नियंत्रण था। सोंग ने पुराने व्यापार नेटवर्क को बहाल करने के लिए चोलों के साथ गठबंधन किया था, लेकिन नरसिम्हन का मानना था कि चीन का खेल उतना पारदर्शी नहीं था जितना वे दावा करते थे।

जनरल ने अपने सम्राट का पत्र पढ़ना जारी रखा।

'हमें उन सबको मारने की ज़रूरत नहीं है। हम युद्ध जीत चुके हैं। हमें जीतना है शांति भी। हमें बातचीत करनी होगी। इसके लिए, मुझे दूसरी तरफ किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जिससे बातचीत हो सके। श्रीविजय सम्राट राम विजयवर्मन उन जहाजों में से एक पर हैं जिन पर आप हमला कर रहे हैं। बहादुर लोग बहुत देर तक लड़ते रहते हैं

Machine Translated by Google

इसे जारी रखना ही तर्कसंगत है। विजयवर्मन साहसी हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। उन्हें खुद ही सफेद झंडा दिखाने का सही समय समझ नहीं आएगा। याद रखें कि मैं इन द्वीपों पर अपने शासन को उन लोगों के साथ समझौते के बिना वैध नहीं ठहरा सकता जिन्हें स्थानीय लोग प्रामाणिक शासक मानते हैं। हमारा लक्ष्य इस क्षेत्र में स्थायी शांति और स्थिरता लाना है, न कि अराजकता और अशांति।

तुमने बहुत अच्छा किया, सैनिक, अब मुझे राजा के रूप में अपना कार्य करने की अनुमति दो।
मुझे विजयवर्मन लाकर दो। आदर्शतः, जब तुम उसे मेरे पास लाओगे तो वह जीवित होना चाहिए।' 'सेनापति, मैं सम्राट को क्या संदेश दूँ?' दूत ने

पूछा।

'श्रीविजय सम्राट के पास सफेद झंडा फहराने का विकल्प है। हम हिंदू हैं। वह हिंदू हैं। मुझे यकीन है कि उन्हें पता है कि अगर वह आत्मसमर्पण की पेशकश करते हैं तो हम युद्ध के नियमों का पालन करेंगे।' शाही दूत चुप रहा। वह सेनापति के युद्ध के प्रति आक्रामक रुख से वाकिफ था।

वह इस युद्ध को समाप्त करना चाहता था। जैसा कि वह अक्सर कहा करता था, नौसैनिक युद्ध तभी समाप्त होता है जब दुश्मन का आखिरी जहाज डूब जाता है। लेकिन दूत यह भी जानता था कि नरसिंह राजेंद्र चोल के सीधे आदेश की अवहेलना शायद ही कभी करते थे।

'सम्राट से कहो कि उनके आदेश का पालन किया जाएगा।' 'जी हां, जनरल।'

दूत ने सलामी दी और अपनी कटर नाव की ओर वापस दौड़ा।
नरसिम्हन ने कर्णधार की ओर देखा।

'बेड़े को आग रोकने का आदेश दो,' उसने आदेश दिया। 'श्रीविजयन् के प्रमुख जहाज़ की ओर बढ़ो। पकड़ने वाले हुक और हाथापाई के हथियार तैयार रखो।' 'प्रमुख जहाज़ खुले समुद्र की ओर जा रहा है, महाराज,' कर्णधार ने

उत्तर दिया।

'यह भाग रहा है।'

'हम इसे ज़िंदा पकड़ लेंगे,' नरसिंह गुर्राया, उसकी आँखें सिकुड़ गईं और वह दुश्मन के जहाज़ पर पूरी तरह केंद्रित हो गया। हवा ने उसके शेर जैसे अयाल को हवा में उड़ा दिया। 'पूरी पाल। तेज़ गति।' 'पूरी पाल,' पतवार चलाने वाले ने दोहराया। 'पूरी पाल! तेज़ गति!' वह सेक्शन प्रमुखों को

आदेश देने के लिए दौड़ा।

'पूरी पाल! जनरल ने दुश्मन के जहाज़ के पीछे भागने का आदेश दिया है।'
श्रीविजय सम्राट भाग रहे हैं!'

सपनों की डोर तब टूट गई जब जहाज अचानक लड़खड़ा गया।
तेज़ लहरें उस पर टूट रही थीं। नरसिम्हन फिर से समुद्र में था। हालाँकि, इस बार वह पहले से कमज़ोर था। दाहिना हाथ और कंधा लकवाग्रस्त। अभी भी कमज़ोर और अपनी पूरी ताकत पर नहीं। बीमारों के वार्ड में अकेला लेटा हुआ, नींद लाने के लिए दवाइयाँ दी जा रही थीं। और इस बात से बेखबर कि ऊपरी डेक पर क्या हो रहा था, जहाँ चालक दल इकट्ठा था, एक संभावित आपदा का सामना कर रहा था।

Machine Translated by Google

स्वप्न में, जो कि अतीत की याद दिलाता है, नरसिंह थे।
शिकारी। वर्तमान क्षण में, वह शिकार के बीच था।

चोला स्कूनर पानी में जितनी तेज़ी से हो सकता था, उतनी तेज़ी से आगे बढ़ा, क्योंकि घना समुद्री कोहरा उसे घेरे हुए था, जिससे दृश्यता बस कुछ ही फीट रह गई थी। लेकिन यह उन्हें पीछा कर रहे खतरे से बचाने के लिए पर्याप्त नहीं था। विदेशी जहाज ने रात के अधिकांश समय तक उनका पीछा किया था।

अब भोर होने वाली थी।

कोहरे ने, जो मूलतः संघनित जलवाष्प था और जो एक सघन द्रव की तरह व्यवहार कर रहा था, अप्रत्याशित रूप से बह रहा था और घट रहा था, चालक दल को किसी बाधा से टकराने के डर से जहाज की गति धीमी करने पर मजबूर कर दिया था। लेकिन इसने जहाज को दुश्मन से छिपाकर उनकी रक्षा भी की थी।

'ढाउ ने फिर से फायर किया है!' विजयन ने धीरे से लेकिन तत्काल कहा जैसे कि एक बोल्ट
आग घने, अपारदर्शी सफ़ेद कोहरे को चीरती हुई निकल रही थी। 'नीचे! अभी!'

डेक पर मौजूद चोल सैनिक तुरंत झुक गए। जलता हुआ धातु का बोल्ट
एक विमान नीचे की ओर उड़ा और लकड़ी की रेलिंग से टकराया। इससे रेलिंग के टुकड़े-टुकड़े हो गए और फिर वह समुद्र में जा गिरा।

बाल-बाल बच गया।

"हम ऐसा नहीं कर सकते," सोमेश्वर फुसफुसाया। नमकीन समुद्री पानी की एक विशाल फुहार ने उसे हड्डियों तक भिगो दिया। "उनके पास कोई है जो आवाज़ के आधार पर निशाना साध सकता है। इस दृश्यता में इतनी सटीकता से निशाना लगाने का उनके पास और कोई तरीका नहीं है!" विजयन कुछ नहीं बोला। लेकिन वह जानता था कि सोमेश्वर सही

था। यही है।
वह अपनी आवाज़ धीमी क्यों रख रहा था। लेकिन वह यह भी जानता था कि एक सीमा के बाद यह युक्ति बेकार है। समुद्र में जहाज़ आवाज़ें तो करता ही है। स्वाभाविक रूप से। एक प्रशिक्षित बोल्ट-मास्टर भी इसे पहचान सकता है, खासकर अगर वह आवाज़ के आधार पर निशाना साध रहा हो।

सोमेश्वर ने आगे कहा, 'उनमें से एक बोल्ट हमारे पतवार को इस तरह तोड़ देगा जैसे कोई
अब कभी भी अंडे का छिलका।'

अलप्पुझा में अमल ने निर्णय लिया था कि चोल दस्ता एक नाव में यात्रा करेगा।
व्यापारी जहाज़। एक नौसैनिक सैन्य जहाज़, जिसमें हथियार रखने की जगहें और ट्रेबुशे हों, ज़ाहिर तौर पर पश्चिमी सागर के मार्गों पर प्रभुत्व रखने वाली अरब नौसेनाओं का ध्यान आकर्षित करेगा। और उसने मान लिया था कि उन्होंने उन अरब भाड़े के सैनिकों का निपटारा कर लिया है जिन्हें नरसिम्हन को मारने का ठेका दिया गया था। ऐसा प्रतीत होता था कि उन्होंने ऐसा नहीं किया था। केरल में मारे गए अरबों के अलावा शायद एक बैकअप टीम भी थी। और चोल दस्ता अब उनके निशाने पर था।

Machine Translated by Google

'मुझे लगा था कि समुद्र में इस जोखिम भरे कोहरे से भरे क्षेत्र में जाने से हम उन्हें खो देंगे, लेकिन उन्होंने हमारी धोखाधड़ी का पर्दाफाश कर दिया,' अमल ने धीमी आवाज में कहा, क्योंकि उनके दुश्मन तेज आवाज का अपने फायदे के लिए इस्तेमाल कर सकते थे।

'वे हमारी नज़रों से बचकर ··· और अब, इन बोल्टों और लगभग शून्य के बीच आए, हम सचमुच शैतान और गहरे समुद्र के बीच फँस गए हैं। हमें कुछ करना ही होगा।' हवा ने अचानक अपनी गति बढ़ा दी। लहरों ने

अपनी बाँहें फैला दीं और वासना की वीभत्स पीड़ा में डूबे हुए प्रेमियों की तरह टूट पड़ीं। छोटा चोला स्कूनर किसी त्यागे हुए प्रार्थना पुष्प की तरह इधर-उधर उछल रहा था।

विजयन ने दाँत पीस लिए। अब हमें तूफ़ान की बिल्कुल भी ज़रूरत नहीं है। देवी मीनाक्षी, दया करो।

विजयन ने पूछा, 'हम क्या कर सकते हैं?' 'घूमकर अपने धनुषों से लड़ो।' और तीर?! उनके पास भारी-भरकम समुद्री हथियार हैं।'

अमल चुप हो गया। ज़ाहिर है, नहीं। यह आत्महत्या होगी।

विजयन ने अपने आदमियों को आदेश दिया, 'सफेद झंडा फहराओ और मानक धुन में बिगुल बजाकर आत्मसमर्पण का संकेत दो।' फिर वह व्यापारी का छद्म नाम लेते हुए सोमेश्वर की ओर मुड़ा। 'सलमान, जब अरब जहाज़ पर आएँगे तो तुम उनसे बातचीत शुरू करोगे। तुम उनकी भाषा सबसे अच्छी तरह जानते हो।' 'हाँ, वलीद,' सोमेश्वर ने जवाब दिया।

"अच्छा," विजयन ने कहा। "मैं तुम्हारी सुरक्षा के लिए पास ही रहूँगा, साथ ही कुछ और आदमियों के साथ। आप कोई भी तरीका अपनाएँ, लेकिन आपका काम उन्हें यह यकीन दिलाना है कि इस जहाज़ पर नरसिम्हन नाम का कोई चोल सेनापति नहीं है। हम तो बस ग़ज़नी की ज़मीन पर जा रहे व्यापारी हैं।'

वाह!

एक और बोल्ट ऊपर से उड़कर आया और एक पाल में छेद कर गया।

बारिश तेज़ हो गई और सभी पुरुष भीग गए। नाव पर सवार एकमात्र महिला भी भीग गई।

अमल के भाई अंसार ने आत्मविश्वास से कहा, "ब्रिगेडियर, मेरे पास एक और आइडिया है।" अमल के तीनों छोटे भाई इस मिशन पर उसके साथ गए थे। अंसार सबसे छोटा था।

विजयन को पता था कि अंसार ने चेरा नौसैनिक अभियानों में हिस्सा लिया था। समुद्री युद्ध की रणनीति का अनुभव।

विजयन ने कहा, 'हमेशा विचारों के लिए खुला हूं।'

"मेरा सुझाव है कि हम स्टारबोर्ड पर लटकी लाइफबोट को नीचे उतार दें," अंसार ने कहा। "यह एक छोटी नाव है। मैं इसमें सवार हो जाऊँगा। इस कोहरे और भोर की कमज़ोर रोशनी में मैं बिना किसी को पता लगे दुश्मन का चक्कर लगा सकता हूँ। उनके जहाज़ को तैयारी करते समय धीमा कर देना चाहिए।"

Machine Translated by Google

हमारे जहाज़ पर चढ़ने के लिए, जिससे मेरा काम आसान हो जाएगा। मैं दुश्मन के ढो के पतवारों, पिछले बैलस्टों और स्टेबलाइज़र्स को निष्क्रिय कर सकता हूँ।'

सोमेश्वर ने पूछा, 'क्या इससे नाव को इतना नुकसान पहुंचेगा कि वे उसका पीछा करना बंद कर सकें?'

अंसार ने समझाया, "बड़े पालों वाला नुकीला जहाज़ बिना पतवार के अपनी दिशा और संतुलन बनाए नहीं रख सकता। ख़ासकर अगर तेज़ हवाएँ और बारिश तेज़ हो जाए। तो जहाज़ पलटने की पूरी संभावना है।"

विजयन ने कहा, 'लेकिन जब जहाज समुद्र में चल रहा हो तो ऐसा करना आसान नहीं है।'

'कुछ लोग कहेंगे कि यह नामुमकिन है।' 'यह मुश्किल है, पर

नामुमकिन नहीं। कम से कम मेरे लिए तो नहीं।' विजयन मुस्कुराए। 'तो फिर यह तय हो गया। यह बहुत,

बहुत जल्दी होना चाहिए, और

हमारे बीच पूर्ण सामंजस्य के साथ। हम नाव को खोल देंगे। तुम और दो अन्य लोग उसे लेकर कोहरे में गायब हो जाओगे। समुद्र उग्र हो रहा है। जब तक हम चारा डालकर नाव को खींचेंगे, तब तक अपना संतुलन बनाए रखना। उसके बाद, दुश्मन के जहाज के पिछले हिस्से तक चक्कर लगाकर जाओ और उनके जहाज को तहस-नहस कर दो।' 'मैं हारूँगा नहीं, ब्रिगेडियर!' अंसार ने कहा।

विजयन अपने साथ आए दो सैनिकों की ओर मुड़ा। 'अंसार के साथ चलो। उसे अपने धनुष-बाणों से ढक दो। उसे ज़िंदा रहना होगा, क्योंकि सिर्फ़ वही अरबों को पता चले बिना उनके जहाज़ को नुकसान पहुँचा सकता है।' 'जी हाँ, साहब!' परमार सेना के एक कप्तान, दसर्णा और एक चोल सैनिक ने एक साथ सिर झुकाकर कहा।

अमल ने कहा, 'मैं भी अपने भाई के साथ जाऊंगा।'

विजयन एक साथ चिंतित और निश्चिंत दिख रहे थे। चिंतित इसलिए क्योंकि उन्हें पता था कि नाव से यात्रा जोखिम भरी थी। अगर समुद्र और भी उफान पर आ गया, जैसा कि इन इलाकों में हुआ था, तो सबसे मज़बूत तैराक भी खुद को पानी में डूबता हुआ पाएँगे। लेकिन साथ ही, उन्हें राहत भी थी। उन्हें पता था कि तुर्क सैनिक काफ़िर महिलाओं को बलात्कार और हमले का आसान शिकार मानते थे। और यहाँ तक कि भारत के मुसलमानों को भी तुर्क काफ़िर मानते थे । अगर अरबों के जहाज़ में तुर्क सैनिक होते, जो कि काफ़ी संभव था क्योंकि तुर्क इस्लामी समूहों में सबसे अच्छे योद्धा थे, तो बेहतर होता कि अमल जहाज़ पर ही न फँस जाता।

विजयन कुछ नहीं बोले, लेकिन उनके चेहरे ने सब कुछ कह दिया।

अमल हल्के से मुस्कुराई। ऊपर वाले ने औरतों को पुरुषों से कहीं ज़्यादा बेहतर अंतर्ज्ञान दिया है। उन्हें बोलने की ज़रूरत नहीं होती। वे बस चेहरे पर ही भाव पढ़ लेती हैं।

Machine Translated by Google

उसने विजयन को गौर से देखा, उसने नज़रें फेर लीं। अंसार को यह बात समझ में नहीं आई। वह मुस्कुराया और गला साफ़ किया।

'हमें चलना चाहिए, बहन,' युवक ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा।

'अपना काम बिना...' विजयन ने कहा, 'बिना किसी को बताए... पूरा करो। मैं तुम्हें ज़िंदा वापस चाहता हूँ। जब हम ग़ज़नी पहुँचें तो सभी तैयार रहें।'

अमल ने कहा, "मुझे खोना आसान नहीं है, वलीद। हम चारों वापस आएँगे।" चालक दल ने आवाज़ और सहज ज्ञान से नाव को कोहरे में उतारा।

पानी कितना नीचे था। और फिर उन्होंने अपने बहादुर साथियों को नाव पर चढ़ने में मदद की।
विजयन अपने सैनिकों की ओर मुड़े।

"मस्तूल पर सफ़ेद झंडा फहराओ," उसने कहा। "आत्मसमर्पण का संकेत देने के लिए बिगुल बजाओ। जनरल के केबिन में एक गार्ड भेजो। अगर लड़ाई हो और हम हारने के कगार पर हों, तो उसे नसरुल्लाह के सीने में खंजर घोंपने का आदेश दो।" विजयन ने नरसिम्हन के लिए छद्म नाम इस्तेमाल किया। "उसे भी सम्मानपूर्वक मरना होगा। मैं चाहता हूँ कि अमल के बाकी दो भाइयों को भी नीचे भेज दिया जाए। सिर्फ़ सैनिक ही डेक पर रहेंगे।"

विजयन के स्पष्ट आदेशों का कुशलतापूर्वक पालन किया गया। अमल के भाई आमिर और अल्ताफ़ एक गार्ड के साथ निचले डेक पर पहुँचे।

इस बीच, नीचे समुद्र में, अमल और उसके तीन साथी घने कोहरे और तेज़ हवाओं के बीच चुपचाप आगे बढ़ रहे थे। उनकी छोटी नाव स्थिर थी और उनके चप्पू उन्हें स्कूनर के स्टारबोर्ड की तरफ़ से दूर ले जा रहे थे।

'रुको।' आदेश

गूंजा। पाल नीचे कर दिए गए। चोला स्कूनर को हवा के सामने लाया गया। उसकी गति धीमी हो गई।

जहाज पर मौजूद चालक दल तैयार था।

बिगुल बजते ही ढो ने फायरिंग बंद कर दी थी। शायद
कोहरे के बावजूद, उन्होंने सफ़ेद झंडा देखा था। लेकिन बिगुल का संदेश साफ़ था।

हमने आत्मसमर्पण किया।

Machine Translated by Google

विजयन ने देखा कि नाव धीरे-धीरे उनके पास आ रही है और उनसे टकराने से बचने के लिए बंदरगाह की तरफ़ कुछ दूरी पर रुक गई। विजयन को लगा कि उसकी नाव बाईं ओर झुक गई है।
उसने आँखें सिकोड़कर हल्के से छँटे हुए कोहरे में से ढो को देखा। अरब जहाज़ के डेक की पटरियों पर लोग तलवारें, ब्लेड और छुरे लिए खड़े थे। अब और पास आकर विजयन जहाज़ के मस्तूल पर झंडा देख सकता था। उसने उसे तुरंत पहचान लिया। यह कोई साधारण अरब जहाज़ नहीं था—यह एक अब्बासी जहाज़ था! ख़लीफ़ा के प्रशासन द्वारा चार्टर्ड।

ये अरब भाड़े के सैनिक नहीं हैं जिन्हें जनरल को मारने का ठेका दिया गया है। बात कुछ और है। बात क्या हो सकती है? देवी मीनाक्षी, दया करो।

अरबों के कामुक मंत्रोच्चार ने तत्वों के शोर को और बढ़ा दिया।
'अल्लाह हू अकबर!' 'वे क्या

कह रहे हैं?' विजयन ने पूछा।

सोमेश्वर ने कहा, "यह एक अरबी मंत्र है। वे घोषणा कर रहे हैं कि ईश्वर महान है।"

'सभी देवता महान हैं, लेकिन उनका उत्सव मनाना थोड़ा जल्दबाजी होगी, मैं कहूंगा
"कहो।" विजयन मुस्कुराया। उसके अंदर का योद्धा जाग उठा था।
सोमेश्वर मुस्कुराया।

अरबों ने अपने जहाज़ के रस्सों पर दो हुक लगा दिए। दोनों रस्सियाँ पकड़ में आ गईं। सोमेश्वर आगे बढ़ा, इक़बाल उसके बगल में।

'वलीद, तुम पीछे आदमियों के बीच अपनी जगह ले लो,' सोमेश्वर ने कहा। 'याद रखो, तुम एक किराए के आदमी हो। न ज़्यादा, न कम। जब तक कहा न जाए, कुछ मत बोलना। ज़्यादा अभिनय मत करो। ज़रूरत पड़ने पर अपनी भाषा में एक साधारण "हाँ" या "ना" कहना ही काफी होगा।' 'समझ गया।' विजयन ने सिर हिलाया।

'और अमल ने हमें जो नाम दिए थे, उन्हें याद रखना,' सोमेश्वर ने कहा। 'मैं सिर्फ़
"मैं तुम्हें संबोधित करने के लिए "वलीद" शब्द का प्रयोग करता हूँ। सावधान रहो। यह अग्नि परीक्षा है। हम आग से लड़कर नहीं जीतते। हम आग को दूर रखकर जीतते हैं।"
विजयन ने सिर हिलाया और कूटनीति का काम बुजुर्ग व्यापारियों पर छोड़ कर पीछे हट गए।

छह अरब आदमी तेज़ी से कुश्ती की पंक्तियों के पार सरक गए, और नेता सबसे आखिर में पहुँचा। वह एक हट्टा-कट्टा आदमी था, जिसकी घनी दाढ़ी और घनी भौहें थीं जो लगभग उसकी आँखों पर आ रही थीं। हवा में नमी के कारण वे चमक रही थीं। उसकी मूंछें नहीं थीं।

दोनों जहाजों के पाल नीचे कर दिए गए थे। हवा तेज़ थी। विजयन
उन्होंने अपने जहाज पर अपने चालक दल की संख्यात्मक बढ़त पर ध्यान दिया।

Machine Translated by Google

उनके पास भारी हथियार हैं। लेकिन उनके ज़्यादातर सैनिक वहीं रह गए हैं
अपने ही जहाज पर। उन्हें बढ़त है, लेकिन दूरी पर। नज़दीकी लड़ाई में, हमें बढ़त है, क्योंकि अपने ही जहाज पर हमारे ज़्यादा
सैनिक हैं।

उसने पास तैर रहे दुश्मन के जहाज़ पर एक नज़र डाली।
रेल की पटरियों पर लोगों की भीड़ लगी हुई थी, जो सतर्क और उत्सुकता से निरीक्षण कर रहे थे।
अच्छा है। उनका ध्यान हम पर है। इससे अंसार और अमल को मदद मिलेगी।



सौ गज की दूरी पर, अंसार ने नाव मोड़ने का इशारा किया। वे इतनी दूरी तय कर चुके थे कि बिना किसी की नज़र पड़े, अरब नाव के पिछले
हिस्से की ओर वापस आ सकें।

अंसार ने नाविकों से फुसफुसाते हुए कहा, 'अरब जहाज के पीछे की ओर चलो।'
'जल्दी से।' समुद्र
की लहरें तेज़ हो गईं और पानी अचानक उफनने लगा।
हवाएं अचानक तूफानी हो गईं।
छोटी नाव के लिए चुनौती और भी कठिन हो गई।
दसरना ने हँसते हुए कहा, "ज़ोर से नाव चलाने की चिंता मत करो। हम जो भी आवाज़ निकालेंगे, वह इस छोटे तूफ़ान में दब जाएगी।"
सैनिक मौत के ख़तरे का सामना करते हुए हँसना बहादुरी की निशानी मानते थे।

अमल ने अपनी हिम्मत जुटाई, जबकि छोटी नाव आगे बढ़ रही थी।



अरब सरदार चोल-परमार जहाज़ के पुल पर सोमेश्वर तक चला गया, मानो वही नेता हो। उसके कदम भारी थे, और नीचे गीला
फ़र्श चरमरा रहा था।

'तुम्हें सलामती मिले!' बड़े आदमी ने अरबी में अभिवादन किया। वह मेरे सामने आया।
दो अपेक्षाकृत छोटे कद के बुज़ुर्ग व्यापारी। इक़बाल ने ध्यान से देखा, अरब ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया, जिसने एक भारी रेशमी
कोट पहना हुआ था जिससे समुद्र की गंध आ रही थी। उसके गले में एक गोलाकार सुनहरा पदक लटका हुआ था।

Machine Translated by Google

अब्बासिद ख़िलाफ़त की गोल, काली मुहर से सजी हुई। उसकी साधारण टोपी उसके मैले-कुचैले पहनावे और गहनों के साथ बिल्कुल मेल नहीं खा रही थी।

"और आपको भी, महोदय," सोमेश्वर ने जवाब दिया और बड़े सम्मान से झुककर प्रणाम किया। इकबाल ने भी ऐसा ही किया। सोमेश्वर ने अपना परिचय देते हुए कहा, "मैं सलमान शाह हूँ और यह मेरा दोस्त इकबाल है। हम भारत के गुजरात क्षेत्र के व्यापारी हैं। आपके आगमन का सौभाग्य हमें किस बात से मिला?"

"तो फिर तुम दीन में से हो ?" अरब ने छोटे कद के भारतीय व्यक्ति की शुद्ध अरबी भाषा देखकर आश्चर्यचकित होकर पूछा। दीन उनके धर्म के लिए अरबी शब्द था ।

"हाँ, साहब," इकबाल ने उत्सुकता से जवाब दिया। "हालाँकि आपको हमारी अरबी माफ़ करनी होगी, लेकिन वह हमारी मातृभाषा नहीं है। हमारे सभी क्रू मेंबर मोमिन हैं।"
ज़्यादातर नौकर और मज़दूर हैं, जो हाल ही में अपने बुतपरस्त धर्मों से धर्मांतरित हुए हैं।' धर्मांतरण का ज़िक्र सुनकर

खुश हुए अरब नेता ने अपनी घनी दाढ़ी घुमाई और मुस्कुराया। उसने अपने जहाज़ के मस्तूल पर लहराते अरबी अक्षरों वाले काले झंडे की ओर इशारा किया।

'तुम उस झंडे को पहचानते हो न?' उसने सवालिया लहजे में पूछा। 'तुम हमसे दूर क्यों भाग रहे थे?'
'माफ़ करना महाराज, पर हम डर गए थे,'

सोमेश्वर ने मुस्कुराते हुए समझाया।
शर्मिंदगी से। 'अंधेरी रात और घने कोहरे के कारण हम आपका झंडा नहीं पहचान पाए। हमें लगा कि आप समुद्री डाकू हैं और अपनी जान को खतरा होने के कारण हमने भागने की कोशिश की। लेकिन जैसे ही हमें आपका झंडा अच्छी तरह दिखा, हमने आत्मसमर्पण का बिगुल बजा दिया और पाल नीचे करने का आदेश दिया। यह जानकर हमें राहत मिली कि आप खलीफा, हमारे स्वामी और मालिक के प्रशासन से हैं!' विजयन ने हवा में हल्का तनाव महसूस किया। पाँच अन्य अरबों ने देखा

उनमें से प्रत्येक ने संदेह से देखा, जबकि उनका नेता दो बूढ़े लोगों से बात कर रहा था।



लगभग सौ गज की दूरी पर, नाव ख़िलाफ़त के जहाज़ के पिछले हिस्से तक पहुँच चुकी थी। पिछला डेक सुनसान लग रहा था, हालाँकि घने कोहरे के कारण कुछ भी निश्चित नहीं हो पा रहा था।

"कोहरा हमारी तरफ है, अंसार," दसरना ने धीरे से कहा। "अगर पिछली तरफ़ ख़िलाफ़त के सिपाही भी हों, तो वे हमें नहीं देख पाएँगे।" छोटा

Machine Translated by Google

"अरे, दया करो। हम तीनों नाव को संभालेंगे। उस पतवार की डोरी काटने में तुम्हें कितना समय लगेगा?"

अंसार ने अपने पैर के पास रखे थैले में झाँककर और सावधानी से एक औज़ार निकालते हुए, कड़कड़ाहट से हँसा। उसने एक बड़ी, नुकीली आरी निकाली, जो लकड़ी काटने के लिए एकदम सही थी। 'मुझे यकीन नहीं है, भाई। अगर यह रस्सी होती, तो डोरी काटना आसान और तेज़ होता। लेकिन, जैसा कि आप देख सकते हैं, यह रस्सी नहीं, बल्कि एक मज़बूत लोहे की ज़ंजीर है जो पतवार तक जा रही है।'

अमल ने चिंतित होकर कहा, "इसे काटना असंभव है। हमें वापस लौट जाना चाहिए।" बड़ी बहन की सुरक्षात्मक प्रवृत्ति सामने आ गई।

'नहीं,' उसके भाई ने दृढ़ता से कहा। 'हम कुछ नया करेंगे। हमारे दोस्तों और भाइयों की जान, हमारे देश की इज़्ज़त हम पर निर्भर है, आपा,' अंसार ने अपनी बड़ी बहन·से कहा । 'मैं पतवार का तना ही चीर दूँगा। लोहे की तुलना में लकड़ी से काम करना आसान होता है। इसके अलावा, जिस तरह से मैं अभी यह करने का इरादा रखता हूँ, उससे पतवार का कील से संपर्क भी टूट जाएगा, जिससे इस अब्बासी जहाज़ की मौत जल्दी हो जाएगी। चूँकि पतवार का ज़्यादातर हिस्सा पानी में डूबा हुआ है, इसलिए मुझे गोता लगाना पड़ेगा। कोई बात नहीं। मैं यह कर सकता हूँ।' दसरना को नौसैनिक रणनीति का इतना ज्ञान था कि वह विशाल जहाज़ को समझ सके।

अंसार जो जोखिम उठा रहा था, उसे समझ नहीं आया। उसने युवक के कंधे पकड़े और फुसफुसाया, "अल्लाह और शिवा के साथ जाओ, मेरे भाई।" उसकी आवाज़ प्रशंसा से काँप उठी।

अमल दर्द से तड़प रही थी। उसे अपने भाई का विचार पसंद नहीं आया। पर वह चुप रही।

अंसार बोला। 'मुझे तुमसे कहना होगा कि तुम हमारे जहाज़ के अंधेरी तरफ़ वापस जाओ और चुपके से जहाज़ पर चढ़ जाओ, क्योंकि इस मिशन में हमारे पहले के अनुमान से कहीं ज़्यादा समय लगेगा।' उसने अमल की तरफ़ इशारा करते हुए कहा। 'मैं काम पूरा करूँगा और तुम्हारे पास लौटने का कोई रास्ता ढूँढूँगा, आपा। लेकिन अगर मुझे तुम्हारी सुरक्षा की चिंता है तो मैं अपने काम पर ध्यान नहीं दे पाऊँगा। मेरी बात सुनो। तुम हमारे जहाज़ पर ज़्यादा सुरक्षित रहोगी। यहाँ, तुम सब बहुत देर तक खुले में पड़े रहोगे।' अंसार ने हाथ बढ़ाकर अमल के गाल पर प्यार से हाथ फेरा। अमल ने उसका हाथ हटा दिया।

'अंसार,' अमल फुसफुसाया। 'हम सब इसमें साथ हैं। हम साथ आए और काम पूरा होने के बाद हम साथ-साथ वापस जाएंगे ।'

"आपा, ये बहुत जोखिम भरा है," भाई ने ज़िद से कहा। वह खड़ा हुआ और उसने अपने कपड़े उतार दिए और सिर्फ़ एक सूती लंगोटी में लिपट गया। 'हम खुशकिस्मत हैं कि हम यहाँ किसी की नज़र में नहीं आए, लेकिन हमें अपनी किस्मत ज़्यादा नहीं बढ़ानी चाहिए। यह एक छोटा और तेज़ मिशन होना था। ज़ाहिर है कि यह ऐसा नहीं होगा। मैं

Machine Translated by Google

मैं खुद को पानी के नीचे छिपा लूँगा। लेकिन अगर नाव यहाँ ज़्यादा देर तक रही, तो यह एक ख़ास निशाना बन जाएगी।' अंसार का

तर्क सही था। लेकिन उसकी बहन के दिल को इसे मानने में वक़्त लगा।

दशर्ना ने धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की।

बहादुर पुरुष अन्य बहादुर पुरुषों से धैर्य का सम्मान पाने के हकदार हैं।

सिपाही अमल को तर्क समझ आ गया। लेकिन बहन अमल को सिर्फ़ अपना भाई ही दिखाई दे रहा था। आखिरकार उसने गहरी साँस ली, खड़ी हुई और अंसार को गले लगा लिया, उसका दिल सीने में पत्थर के हथौड़े की तरह धड़क रहा था। उसने आँखें बंद कर लीं और फुसफुसाकर उसका नाम लिया।

'मैं बहुत अच्छा तैराक हूँ, आपा,' उसने अपनी बहन के कान में धीरे से कहा। 'मैं तुम्हें स्टारबोर्ड की तरफ़ देखूँगा, इससे पहले कि तुम अपनी प्यारी पलकें झपकाओ! मुझे ऊपर खींचने के लिए वहाँ रहना!' 'मैं इंतज़ार कर रहा हूँ,' अंसार ने एक भौंह उठाई, उसके चेहरे पर एक टेढ़ी

मुस्कान तैर रही थी, 'क्या मैंने कभी ··· मुझे निराश मत करो.'

किया है, आपा?' अमल ने उसके बालों पर हाथ फेरा। 'मैं तुमसे प्यार करता हूँ, बच्चा।' 'मैं भी तुमसे प्यार करता हूँ।' युवक ने गले

लगना तोड़ा, नाव के किनारे गया और अपने पैर के अंगूठे से

पानी का जायज़ा लिया।

फिर वह दाहिने हाथ में आरी की फाइल कसकर पकड़े हुए पानी में सरक गया।

'हम वापस लौट रहे हैं,' दसर्ण ने पतवार अपने हाथ में लेते हुए घोषणा की।

वह नाव के पिछले हिस्से से नाव चला रहे थे, जबकि अमल और अन्य चोल योद्धा आगे से नाव चला रहे थे, और घने कोहरे के बीच से अपने जहाज तक वापस जा रहे थे।

अमल की बाईं आँख से एक आँसू की बूँद निकली और उसके चेहरे की ठंडी नमी में मिल गई। उसने पीछे मुड़कर देखा।

अंसार का कोई पता नहीं।

चोल-परमार जहाज के डेक पर वापस आकर अरब नेता ने दो बूढ़े लोगों से बात की।

'मुझे अपना परिचय देने दीजिए। मैं सय्यद अल नभानी हूँ, एक कमांडर

उन्होंने कहा, "बगदाद के खलीफा की सेना... भारत के सलमान शाह, मुझे बताओ कि तुम और तुम्हारे आदमी इस पानी में क्या कर रहे हो।"

Machine Translated by Google

सोमेश्वर ने बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर दिया, 'हम तीर्थयात्रा पर हैं, महाराज।'
'हमारी मंज़िल मक्का है।' 'तो फिर तुम ग़लत दिशा

में जा रहे हो,' सय्यद ने शक से भरी आवाज़ में कहा। 'मक्का पश्चिम दिशा में है,' उसने अंगूठे से इशारा करते हुए कहा। 'जब हमारा सामना हुआ तो तुम उत्तर दिशा में जा रहे थे। हो सकता है इस मौसम में तुम रास्ता भटक गए हो। या फिर तुम जानबूझकर मुझे गुमराह कर रहे हो।' इक़बाल का दिल डर से काँप उठा, लेकिन सोमेश्वर ने अपना धैर्य बनाए रखा।

"हे महान प्रभु, मुझे अपने शब्दों की अपूर्णता की भरपाई करने की अनुमति दीजिए," उन्होंने अपने शब्दों को विस्तार से सजाया। "मक्का ही हमारा अंतिम गंतव्य है।"
हम तीर्थयात्री हैं , मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ। हमें उम्मीद है कि हम ग्वादर पहुँचेंगे और बोझा ढोने वाले जानवरों की पीठ पर अपनी यात्रा जारी रखेंगे। रास्ते में हम कई दरगाहों पर रुकेंगे। इंशाअल्लाह, हम शुरुआत करेंगे गजनी में सुल्तान यमीन-उद-दौला अबुल-कासिम महमूद इब्न सेबुकतेगिन द्वारा निर्मित भव्य जामा मस्जिद से। फिर हम फारस जाएँगे और वहाँ से अरब जाएँगे। हम अपने धर्म के पदचिन्हों पर, ठीक उसके जन्मस्थान की ओर, वापस जा रहे हैं।' विजयन को कुछ शब्द समझ में आए: सुल्तान, महमूद, गजनी। मुझे उम्मीद है कि उन्होंने अरबों को यह नहीं बताया होगा कि हम कहाँ जा रहे हैं। हम तो बस यही
चाहते हैं कि वे हमारे साथ यात्रा करने की पेशकश करें। ...

'तो आप ग्वादर में उतरेंगे,' सय्यद ने अपनी घनी भौंहें उठाते हुए कहा।
प्रसन्नता से मुस्कुराते हुए। 'और फिर ग़ज़नी की यात्रा करो। हम भी वहीं जा रहे हैं। शायद हमारे जहाज़ साथ-साथ चल सकें। मुझे यकीन है कि आपको हमारी सुरक्षा की ज़रूरत है। हाँ, आप हमारी मदद के लिए हमें भुगतान ज़रूर कर सकते हैं। हालाँकि भारत के मुसलमानों को जजिया नहीं देना पड़ता क्योंकि वे काफ़िर नहीं हैं, फिर भी उन्हें ख़िलाफ़त में योगदान देना चाहिए और अरबों की सुरक्षा के सम्मान के लिए भुगतान करना चाहिए।'

सोमेश्वर और इक़बाल बेचैनी से पैर हिला रहे थे। चुप। वे इससे कैसे बचेंगे? वे पैसे देने को तैयार थे, लेकिन वे नहीं चाहते थे कि अरब उनके साथ हों।

'बेशक,' अब्बासिद नेता ने विजयन और अन्य लोगों की ओर देखते हुए कहा।
सोमेश्वर की ओर ध्यान वापस लाने से पहले, उसने गौर से कहा, "अगर आप मुझसे पूछें, तो ग़ज़नी और फ़ारस समय की बर्बादी हैं। आपको सीधे मक्का जाना चाहिए।"
तुम्हें वहाँ असली मुसलमान मिलेंगे। बाकी लोग धोखेबाज़ हैं, जिनके साथ उनके हक़ की सज़ा होगी। बेशक, बिना किसी रुकावट के सीधे मक्का जाने के लिए तुम्हें मुझसे इजाज़त लेनी होगी।' सय्यद ने एक क्रूर मुस्कान बिखेरी और ज़ाहिर सी शर्त अनकही छोड़ दी—'बिना रसीद के भुगतान के लिए।'

Machine Translated by Google

इस बात से राहत महसूस करते हुए कि अरब स्वयं उन्हें उनकी मुश्किल से बाहर निकलने का रास्ता दिखा रहा है, इकबाल ने सोमेश्वर की ओर रुख किया।

"देखो, सलमान भाई!" उसने खुशी का दिखावा करते हुए कहा। "मैंने तुमसे कहा था कि हमें सीधे मक्का जाना चाहिए। और अब यह सलाह खलीफा की सेना की तरफ से है! यह अल्लाह का पैगाम है। हमारे पास इतना सामान है कि हम रास्ता बदलकर सीधे पवित्र नगरी पहुँच सकते हैं।" सोमेश्वर ने अपनी ठुड्डी खुजाई और इक़बाल की इस तात्कालिक रचना पर अनिच्छा से विचार

करने का नाटक किया।



दसर्ण, अमल और चोल सैनिक को लेकर नाव स्कूनर के बाईं ओर लौट आई। यह अंधा पक्ष था। विजयन ने अपने आदमियों को नीचे के पानी पर नज़र रखने का स्पष्ट निर्देश दिया था। उन्होंने तीनों को बिना आवाज़ किए, दाईं ओर के नाटक से दूर, जहाज पर चढ़ने में मदद की।

'अंसार कहाँ है?' एक कर्मी ने पूछा।

"वह थोड़ी देर में लौट आएगा," दसर्णा ने रूखेपन से जवाब दिया। उसने अमल की ओर सहानुभूति भरी नज़र से देखा। "महारानी, ब्रिगेडियर ने हमें नीचे के केबिनों में जाने का निर्देश दिया था। लगता है हमारी टोली दूसरी तरफ़ अरबों से उलझी हुई है।" अमल ने यंत्रवत सिर हिलाया और खुद को वहाँ ले जाने दिया।

केबिनों की सुरक्षा को देखते हुए उसकी नज़रें समुद्र पर टिकी थीं।

अंसार ...



डेक पर वापस आकर, सोमेश्वर ने खलीफा के आदमियों के चंगुल से बचने की कोशिश में अपना नाटक जारी रखा। इसके अलावा, अगर तोड़फोड़ करने वाले अपने काम में कामयाब हो गए, तो क्षतिग्रस्त अरब जहाज उनका कहीं पीछा नहीं करेगा।

'अगर मैं आपकी जगह होता तो मैं आपके आदमी की बात सुनता,' सैय्यद ने कहा। 'मुझे लगता है कि मुझे किसी काम से ग़ज़नी जाना है, लेकिन मैं जल्द से जल्द वहाँ से निकल जाऊँगा। यह एक बंजर भूमि है जिस पर एक दिखावटी तानाशाह का शासन है। मैं तुमसे कहता हूँ, इस दुनिया में कोई भी शासक महान खलीफा से बढ़कर नहीं है। उसके पास ईश्वर प्रदत्त अधिकार है।

Machine Translated by Google

सभी सांसारिक लोकों में। भारतवासियों, उनके प्रतिनिधि के रूप में मुझ पर विश्वास करो। तुम्हें सीधे मक्का जाना चाहिए।'

'महाराज, आपकी नेकनीयती सलाह पर ध्यान न देना मूर्खता होगी।' सोमेश्वर घबराकर हँसा। 'शायद हमें आखिरकार रास्ता बदल लेना चाहिए ।' और फिर उसने बातचीत शुरू की। 'मुझे आपके महान...' में योगदान देकर बहुत खुशी होगी।' उसके मुँह से ये शब्द निकले ही थे कि सैय्यद सोमेश्वर पर झपटा और उसके कंधों को पकड़ लिया। उसने बूढ़े के कान की लोब पकड़ ली। सोमेश्वर ने हफ़्तों पहले घर से निकलते समय अपने कान के

स्टड उतार दिए थे, लेकिन उम्र और जीवन भर के श्रृंगार के कारण बढ़े हुए छेदों को वह छिपा नहीं सका।

"तुम्हारे कान छिदे हुए हैं!" अरब गुर्राया। "तुम दीन के अनुयायी नहीं हो! तुम काफ़िर हो, गंदे बूढ़े झूठे!"

'महाराज, मैं हाल ही में धर्मांतरित हुआ हूँ,' सोमेश्वर ने विनती की। 'मेरे छिदे हुए लोब एक मेरे पिछले जीवन का अवशेष।' 'तुम झूठ

बोल रहे हो!' सय्यद गरजा।

'नहीं महाराज! मैं झूठ क्यों बोलूँगा? आपको मेरी बात पर यकीन करना होगा। भारतीयों को नहीं... मुसलमान के रूप में पैदा हुए। ज़ाहिर है। हमें धर्म परिवर्तन करना ही होगा। आप हमें सज़ा नहीं दे सकते क्योंकि हमने अपने जीवन में बाद में धर्म परिवर्तन किया।' अरब अनिश्चित लग रहा था। वह समझ नहीं पा

रहा था कि भारतीय सच कह रहा है या जहाज़ पर कोई छल-कपट चल रहा है। लेकिन ऐसा ज़रूर लग रहा था कि छल-कपट अरब जहाज़ के डेक पर शुरू हो गया था, जिसने छोटे चोल-परमार स्कूनर पर सवार सभी लोगों का ध्यान भटका दिया था। ख़िलाफ़त के जहाज़ पर सवार लोग घबराहट और भ्रम में इधर-उधर भाग रहे थे। जल्द ही, वे नज़रों से ओझल हो गए। वे अपने जहाज़ के पिछले हिस्से की ओर भागे थे और एक अलग तरह के विश्वासघात के बारे में चिल्ला रहे थे।

धनुष से लैस होकर, उन्होंने उग्र जल पर बाणों की वर्षा की अपने जहाज़ के पिछले हिस्से से उतर गए। चोल स्कूनर पर सवार अरब लोग असमंजस में अपने जहाज़ को घूर रहे थे। सोमेश्वर पर सैय्यद की पकड़ ढीली पड़ गई।

'हमला!' विजयन ने गरजते हुए कहा, रास्ता देखकर उसने अपनी तलवार निकाल ली।

'इन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दो। हाथापाई की रस्सियाँ काट दो!'

चोल-परमार सैनिकों ने तुरन्त अपनी तलवारें खींच लीं और कार्रवाई में जुट गये।

सैयद स्तब्ध होकर पलटा। इकबाल और सोमेश्वर पृष्ठभूमि में लुप्त हो चुके थे, जबकि चोलों के उग्र ब्रिगेडियर ने अपने जहाज और कमान का नियंत्रण वापस ले लिया था। पांड्य अरब नेता पर टूट पड़े और

Machine Translated by Google

उसकी गर्दन से जंजीर खींच ली। सय्यद का संतुलन बिगड़ गया और वह लड़खड़ाकर गिर पड़ा।

विजयन गरजा, "अपने ही जैसे किसी आदमी पर क्यों नहीं गुर्राता, बड़े साहब?" उसने सैयद की गर्दन पकड़ी और अपनी तलवार अरब के पेट में घोंप दी।

खिलाफत के जहाज का कमांडर दर्द से चीख उठा। लेकिन जीवित रहने की असाधारण इच्छाशक्ति दिखाते हुए, उसने विजयन का गला पकड़ लिया और उसे आश्चर्यजनक ताकत से दूर धकेल दिया। वह भारतीय एक हाथ में अरब की टूटी हुई ज़ंजीर और दूसरे हाथ में खून से सनी तलवार लिए, फर्श पर गिर पड़ा। सैय्यद दहाड़ा, मुड़ा और लड़खड़ाते हुए हाथापाई की पंक्तियों की ओर बढ़ा। वे अभी तक हाथापाई में अलग नहीं हुए थे।

सोमेश्वर और इकबाल को एक चोल योद्धा ने निचले डेक पर पहुँचा दिया था, जबकि बाकी लोग दुश्मन के जहाज़ से नीचे उतर रहे अरब सैनिकों से जूझ रहे थे, जबकि कुछ भारतीयों ने दोनों जहाजों के बीच की रस्साकशी की रस्साकशी को उग्रता से काट दिया था। तीर ख़िलाफ़त के जहाज़ के डेक पर तूफ़ानी बारिश की बूंदों की तरह गिर रहे थे।

नरक टूट पड़ा था.

सैय्यद की ताकत खून की भारी कमी के कारण कम हो रही थी।
उसने अपना ध्यान अपने जहाज पर वापस लौटने पर केन्द्रित कर दिया।

'कमांडर!' एक अरब चिल्लाया।

वह रेलिंग तक पहुंचा और उसकी ओर फेंकी गई रस्सी को पकड़ लिया।

'काफिरों!' सय्यद ने इतनी जोर से दहाड़ते हुए कहा कि उसके आदमियों को कमरे में सुनाई दे गया।
दूसरे जहाज़ पर, भारी खून-खराबे के बावजूद, गुस्से से चिल्ला रहा था। 'बिच्छू लादो! जहाज़ को तबाह कर दो!' अब्बासी ...
कमांडर के दुर्भाग्य से, विजयन की योजना कुछ और

ही थी।
चोलों के ब्रिगेडियर ने अपनी तलवार एक तरफ़ फेंकी और धनुष उठाया। उसने तीर चढ़ाया और मिसाइल छोड़ दी।

थ्वैक.

इससे अरब कमांडर की गर्दन की एटलस हड्डी टूट गई। उसका सिर आगे की ओर झुक गया और वह अपने ही खून में डूबने लगा। सय्यद की आँखें बंद हो गईं और उसका शरीर समुद्र में गिर गया।

इस बीच, चोल सैनिकों ने सभी युद्ध-रेखाओं को काटने में सफलता प्राप्त कर ली थी।
उनका स्कूनर मुफ़्त था!

बिजली की एक चमक ने तूफानी बादलों को भूतिया चमक से जगमगा दिया।

विजयन ने अपने आदमियों की ओर देखा। 'पाल फहराओ!' दो चोल सैनिकों ने

बचे हुए पाल फहरा दिए, जबकि अन्य अपने जहाज़ पर बचे हुए अरबों से जी-जान से लड़ रहे थे।

Machine Translated by Google

अमल डेक की ओर दौड़ा।

'अंसार!'

विजयन ने उसे अपनी बाहों में जकड़ लिया।

'मुझे जाने दो! मुझे जाने दो!' वह उसके शक्तिशाली आलिंगन में असहाय होकर छटपटाई।
'अंसार!' 'चुप

रहो, अमल!' विजयन ने उसे शांत किया, उसे देखते ही उसका दिल राहत से उछल पड़ा।

वह व्याकुल थी। वह शांत नहीं हो रही थी।

'अमल!' विजयन चिल्लाई, वह उन्माद में तड़प रही थी, उसकी आँखें दुश्मन के जहाज पर जमी हुई थीं।

हवा के एक तेज़ झोंके ने पालों को पूरी क्षमता से खोल दिया। चोल स्कूनर अरब ढो के चंगुल से बचकर तेज़ी से दूर जाने लगा।

लेकिन अमल विजयन की बाहों में छूटने के लिए संघर्ष करती रही।

'अमल!' विजयन उसे शांत करने की कोशिश करते हुए चिल्लाया। 'क्या बात है?'
हम सुरक्षित हैं...'

अमल ने जवाब में विलाप किया। उसने पीछे हटते हुए दुश्मन के जहाज़ की ओर इशारा किया।
दूर से। खिलाफत की नाव ने भी अपने पाल खोल दिए थे। पीछा करने के लिए तैयार। चोल स्कूनर को गति देने वाली वही तेज़ हवाएँ अरब जहाज़ के पालों में भी भर गईं। और अचानक, खिलाफत का जहाज़ गरजते समुद्र के बीच किसी चिथड़े की तरह हिलने लगा।

जहाज़ का नियंत्रण खो गया था। सिर्फ़ पतवार ही नहीं, बल्कि पतवार भी टूट गई थी। एक अनियंत्रित लहर स्टारबोर्ड की तरफ़ से टकराई, और जहाज़ ज़ोर से झुक गया। एक और क्रूर, शक्तिशाली लहर आई, ठीक उसी समय जब हवा पालों में गहराई तक घुस गई। सीधे शब्दों में कहें तो, पतवार नियंत्रण के बिना जहाज़ के लिए यह एक आदर्श तूफ़ान था। विशाल ढो पलट गया, एक तरफ़ पलट गया। बिजली चमकी और आकाश में गड़गड़ाहट हुई।

तेज़ बारिश के कारण आपदा छिप गई।

अमल रोते हुए ढेर में गिर पड़ा।

उसने कर दिखाया... मेरे नन्हे फरिश्ते ने कर दिखाया। विजयन ...

ने जैसे ही चारों ओर देखा, उसे अहसास हुआ। उसने दशार्ण को देखा और
दूसरा सिपाही जो उसने भेजा था। दसर्णा आँखों में आँसू लिए, उस झुकी हुई अरबी नाव को घूर रहा था। फिर वह सावधान की मुद्रा में खड़ा हुआ और अरबी नाव के पीछे समुद्र की ओर, सिर झुकाकर, औपचारिक परमार सैनिक सलामी दी।

विजयन को आखिरकार समझ आ गया कि क्या हुआ था। उसने दुखी होकर फुसफुसाया, 'अंसार...'

Machine Translated by Google

वह घुटनों के बल बैठ गया और अमल के कंधों को धीरे से पकड़ लिया।
खूब तैरो, छोटे भाई। हमेशा के लिए खूब तैरो...

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 13

तकिये के नीचे साँप

ग़ज़नी, अफ़ग़ानिस्तान

तारों से रहित अंधेरी रात नींद से भरी बकबक से भरी हुई थी। गुलाम जाग रहे थे, मज़दूर शिविर गतिविधियों से गुलज़ार था। बीच में गज़नी की जामा मस्जिद दिखाई दे रही थी, और आस-पास के तंबुओं से निकलती मशालों की लपटें प्रार्थना गृह पर एक अद्भुत चमक बिखेर रही थीं।

धरती कांप उठी, मानो गर्मी की तलाश में हो, और ऐसा न होने पर उसने हवा को चीर दिया
एक ज़ोरदार गड़गड़ाहट। एक और। और फिर एक और। यज़ादेह अपने फटे हुए कंबल से लिपटी रही, आराम
की तलाश में। चीखते-चिल्लाते पुरुष, औरतें और बच्चे डर के मारे इधर-उधर भागने लगे और झटके बढ़ते गए।

धमाका!

प्रार्थना भवन के नीचे पृथ्वी दो भागों में विभाजित हो गई।

लोग चौड़ी होती दरार से दूर, चारों तरफ़ भागे। यज़ादेह उठा और वहीं स्थिर खड़ा रहा। रसातल से एक धुंधली नीली रोशनी निकली।
सम्मोहित होकर वह उसकी ओर बढ़ी।

यज़ादेह खाई के किनारे पर खड़ा होकर अंधेरे में झाँक रहा था।
उसने अपनी साँस रोक ली। बादाम के आकार की तीन विशाल नीली झिल्लियाँ उसे देख रही थीं... आँखें। दो आँखें क्षैतिज रूप से एक-दूसरे के बगल में रखी हुई थीं।
तीसरा उनसे ऊपर था, लेकिन सीधा। वे सुंदर और आकर्षक थे।
यज़ादेह बह गया...

'उठो, बच्ची!' यज़ादेह ऐसे
चीखी जैसे उसे थप्पड़ मारा गया हो।

'उठो!' वह

खुरदरी चटाई पर लुढ़क गई और आँखें खोलीं। वह चौंककर उठ बैठी, अपने पतले कंबल से रिसती ठंडी हवा को थामते हुए। आदतन उसका दिल बैठ गया। भोर हो चुकी थी। रात बीत चुकी थी; यही एक मौका था जब उसके लोग अपनी परिस्थितियों की क्रूरता से मुक्त थे—सिर्फ़

Machine Translated by Google

कुछ हद तक, क्योंकि जुन्दीन-उल-दीन भी भूखे भेड़ियों के झुंड की तरह पूरी रात गुलाम शिविरों में गश्त लगाते थे।

गजनी की महान मस्जिद पर काम करने वाले दासों का घर, बकरी
बाड़ों के ऊपर खुरदुरे कपड़े की छतरियाँ लगाई जाती थीं, जैसा कि 'दयालु' ग्रैंड मुफ़्ती ने आदेश दिया था। खुरदुरे बिस्तर
और छेदों वाले कंबल हवा और ओले से सुरक्षा का दिखावा करते थे।

कुछ हफ़्ते पहले, उसे और उसके पिता को इस्माइल ने यहाँ स्थानांतरित कर दिया था। सार्वजनिक रूप से, इसे राज्यपाल-मुफ़्ती द्वारा मस्जिद-पुनर्निर्माण परियोजना में अपने निजी दासों का योगदान देने के रूप में प्रस्तुत किया गया था; यह एक ऐसा बलिदान था जिसने इस्माइल की सार्वजनिक छवि को और निखारा। लेकिन यज़ादेह को अभी भी हर कुछ दिनों में, जब भी इस्माइल आदेश देता, मुफ़्ती के आदमी उठा ले जाते थे। शाम को जब मस्जिद का काम खत्म हो जाता, तो उसे उसके लोगों के पास वापस भेज दिया जाता। यज़ादेह को अपनी परिस्थितियों पर दुःख होता था, लेकिन वह समझती थी कि वे अधिकारहीन दास थे। जिस दिन से उनके गाँव पर हमला हुआ था, उसी दिन से वे ग़ज़नवी के लुटेरे दास व्यापारियों की निजी संपत्ति बन गए थे।

उसने पलकें झपकाईं। धरती गुलामों के उन्मत्त कदमों से धड़क रही थी।
पुरुष और महिलाएँ साफ़ तौर पर घबरा गए। चीखें हवा में गूंज उठीं।
'क्या हो रहा है, पिताजी?' यज़ादेह विलाप करते हुए बोला।
बूढ़े आदमी ने कहा, 'कुछ लोगों ने जुंदी-उल-दीन पर हमला किया है!' 'वे
ताले तोड़ दिए और एक-दूसरे की ज़ंजीरें तोड़ दीं। जल्दी करो, लड़की, बुरा सपना खत्म हो गया है! ऊपर, ऊपर! हम यहाँ से
निकल रहे हैं!' स्तब्ध, यज़ादेह अपने पैरों पर खड़ी हो गई। पिता और बेटी एक-दूसरे से लिपटे हुए
बाड़े के एक खुले हिस्से की ओर दौड़े, जिसके दोनों ओर गुलामों का वह विद्रोही दल था जिसने जुंदीन-उल-दीन को चौंका दिया था।

"चल, चल, जल्दी!" एक आदमी ने आदेश दिया। ऐसा लग रहा था जैसे वह गुलामों के साहसिक भागने का नेतृत्व कर रहा हो। वह लंबा आदमी, जिसके घुंघराले बाल कई हफ़्तों की धूल से घने बालों में बदल गए थे, बाड़ की दरार से आज़ाद कैदियों की लहरों के साथ तेज़ी से आगे बढ़ रहा था। यज़ादेह ने उसे कृतज्ञता भरी नज़रों से देखा, जब वह और उसके पिता उस छेद से होकर... आज़ादी की ओर झुके।

'जल्दी करो!' विद्रोही नेता ने पीछे से पुकारा। 'और सब लोग एक साथ रहो!'



Machine Translated by Google

बहुत परेशान इस्माइल गजनी महल के कोने वाले कमरे में घुस गया।
महमूद ने एक ज़रूरी निजी मीटिंग बुलाई थी। इस्माइल ने जगह देखी।
ख्वाजा हसन अपने मंत्रिमण्डल और खूँखार सेनापति अबू क़ासिम से घिरे हुए थे। सुल्तान की खाली कुर्सी के बाईं ओर उनकी प्रतिद्वंदी, रानी कौसरी जहाँ बैठी थीं। सुल्तान कमरे में बेचैनी से ऐसे टहल रहे थे जैसे कोई उन्मत्त जंगली हाथी अपने रास्ते में पड़ने वाले किसी भी व्यक्ति पर झपटने के लिए तत्पर हो।

'इस्माइल!' महमूद की उन्मत्त आँखों ने जैसे ही अपने भाई को देखा, वह दहाड़ा।

अपने भाई की आवाज़ सुनकर इस्माइल का खून जमा गया। उसने खुद को उस पर फेंक दिया।
महमूद के पैर.

"भाई!" इस्माइल महमूद के पैर पकड़ते हुए चिल्लाया। "मेरे आदमी दिन के हर घंटे पहरा दे रहे थे," वह फूट-फूट कर रोया। "बाहरी मदद के बिना यह सब संभव नहीं था। कतई नहीं!"

'और फिर भी, आपके तीस आदमी मर चुके हैं और तीन अन्य गंभीर रूप से घायल हैं,' महमूद ने अपने भाई को एक गंदे कुत्ते की तरह धक्का देकर गिराते हुए कहा।
'दास - मात्र निहत्थे दास - आपके रक्षकों पर विजय पाने और इस तरह भागने में कैसे सफल हो गए?'

इस्माइल खड़ा हो गया, कुछ कह नहीं पाया। भाई के गुस्से ने उसे जड़ कर दिया था। उसने कौसरी जहाँ को चुपके से घूरा, जो आत्मसंतुष्ट और उदासीन बैठी थी।

लाहौर के राजा मलिक अयाज, जिन्होंने लाहौर में बहुत कम समय बिताया,
थोड़ा दूर, उसके चेहरे पर एक ऊबा हुआ भाव था।
महमूद ने पूछा, "क्या तुम मुझे गुज़गान के उस चूहेदान से आज़ाद कराकर यहाँ लाने का बदला इसी तरह चुका रहे हो?" "क्या यह विश्वासघात तुम्हारे मन में यहाँ आते ही था, या तुमने मेरे आस-पास के चाटुकारों के साथ मिलकर इसकी योजना बनाई थी?" सुल्तान ने ख्वाजा हसन की तरफ़ देखा, जो पसीने से तर मट्ठे में जमे हुए दूध की तरह सिकुड़ गए।

"क्या तुम्हारा इसमें कोई हाथ है, मोटे मसखरे?" महमूद ने ख्वाजा हसन पर अपना गुस्सा उतारते हुए गरजकर कहा। "क्या तुमने मुझे मेरे भाई के खिलाफ खड़ा करने और अपने दयनीय काफिर गुलामों पर फिर से कब्ज़ा करने के लिए इस भागने की योजना बनाई थी?"

'मेरे रब, नहीं!' वज़ीर-ए-आज़म हांफते हुए बोला। 'अल्लाह मुझे मौत के घाट उतार दे अगर...' 'जब इस्माइल ने मुझे तुम्हारे बारे में बताया था, तभी

मुझे पता था कि मुझे तुम्हें फाँसी दे देनी चाहिए थी।'
भूमिगत व्यापार और कर चोरी, तुम बेकार कीचड़!' दहाड़ा

Machine Translated by Google

महमूद.

'मेरे रब!' ख्वाजा हांफते हुए ज़मीन पर गिर पड़े। 'मैं आपको यकीन दिलाता हूं, मैंने...'
इससे कोई लेना-देना नहीं! बिल्कुल नहीं। मैं मस्जिद की मरम्मत जल्द से जल्द पूरी करने के लिए दृढ़ था,
ताकि आप दुनिया में अपना सही स्थान पा सकें। यह हम सभी के लिए सामूहिक गौरव की बात है!'

"ख़्वाजा हसन सच कहते हैं, मेरे हुज़ूर।" कौसरी जहाँ की आवाज़ रेशमी और नाज़ुक थी। वह उठी, अपने शौहर के पास गई और उसके सीने पर हाथ रख दिया। महमूद का चंचल क्रोध शांत होकर बस गुस्से में बदल गया।

कौसरी ने महमूद को अपनी सलाह जारी रखी। 'महान सुल्तान, मैं विनम्रतापूर्वक कहना चाहती हूँ कि आपके भाई और आपने, जिनके हृदय इतने दयालु हैं, दासों की वफ़ादारी का गंभीर रूप से ग़लत आकलन किया। आख़िरकार, वे क़ैदी हैं। उन्होंने वही किया जो अपेक्षित था। वे अपने क़ैदियों से भागे हैं।' 'क्या आप दासों का पक्ष ले रही हैं, महान रानी?' मलिक अयाज़ ने पूछा।

"इससे दूर रहो, अयाज़," महमूद ने मलिक अयाज़ को घूरते हुए कहा। वह कौसरी और अयाज़ के बीच की दुश्मनी जानता था, जो ईर्ष्यालु प्रेमिकाओं की तरह उससे झगड़ रहे थे। वह फिर से झगड़ा देखने के मूड में नहीं था।

"मेरे मालिक," इस्माइल बोला, उसकी आवाज़ अभी भी डर से काँप रही थी। "अभी कुछ कहना जल्दबाज़ी होगी, लेकिन मैंने काफ़िरों के गायब होने की शुरुआती जाँच की है। हमें कीचड़ भरी बर्फ़ में पैरों के निशान मिले हैं जिनसे लगता है कि मेरे जुंदीन-उल-दीन पर घात लगाकर हमला किया गया था। पहले उन पर गुलामों के शिविर के बाहर से हमला किया गया और फिर गुलाम भाग निकले।"

'क्या यह सच है?' महमूद ने भौंहें चढ़ाईं। 'तुम्हें इतना यकीन कैसे हो गया?' 'मेरे पास पचास से ज़्यादा हथियारबंद आदमी थे जो मज़दूरों की रखवाली कर रहे थे,' इस्माइल ने कहा।
'अब तीस मर चुके हैं और तीन घायल हैं, जबकि बाकी लापता हैं...' 'तुम्हारा क्या मतलब है?' महमूद ने अधीरता से अपने छोटे भाई को

टोका। 'पहेलियाँ मत बोलो। तुम्हारे जुंदी-उल-दीन बेकार योद्धा हैं। वे सिर्फ़ औरतों और बच्चों को धमका सकते हैं, असली आदमियों से नहीं लड़ सकते। मुझे यह सब पहले से ही पता है। मुझे बताओ कि तुम्हें क्यों लगता है कि किसी बाहरी व्यक्ति ने गुलामों को भागने में मदद की। कीचड़ में पड़े पैरों के निशान निर्णायक सबूत नहीं हैं।' 'मेरे मालिक, मेरे भाई,' इस्माइल जल्दी से बोला, उसे डर था कि सुल्तान में अब ज़्यादा धैर्य नहीं बचा है। 'गुलाम अकेले हमारे आदमियों पर काबू नहीं पा सकते थे। मेरे आदमियों के पास हथियार थे। गुलामों के पास नहीं। फिर भी इन गुलामों ने मेरे आदमियों का कत्लेआम किया और लगभग बिना किसी नुकसान के भाग निकले। कैसे?'

इस्माइल ने जल्दी से दरवाजे पर जमे एक नौकर को इशारा किया। बूढ़ा आदमी दोनों हाथों में तलवारें आड़ी-तिरछी पकड़े अंदर दौड़ा। वह नीचे गिर गया।

Machine Translated by Google

वह घुटनों के बल बैठ गया और महमूद के निरीक्षण के लिए तलवार ऊपर उठा दी।

सुल्तान ने हथियार की मूठ पकड़ ली। नौकर ऐसे सहम गया मानो उसका सिर कलम होने वाला हो। महमूद ने आँखें मूँदकर जंग लगे ब्लेड को देखा। वह चौंककर इस्माइल की तरफ़ देखने लगा।

"यह क्या है?" उसने पूछा। "ऐसा कैसे हो सकता है? यह तो शहर के पहरेदारों का एक आम हथियार है। जुंदीउद्दीन इसका इस्तेमाल नहीं करते!" "बिल्कुल, मेरे रब!" इस्माइल चिल्लाया। उसने नौकर को दूर जाने का इशारा किया।

"मुझे पूरा यकीन है कि गुलामों की मदद शहर के सरकारी तंत्र ने की होगी!" राज्यपाल-मुफ़्ती ने कमरे में मौजूद सभी लोगों पर नज़र डालते हुए घोषणा की, लेकिन सुल्तान की ओर लौटने से पहले उनकी नज़र कौसरी जहाँ पर काफ़ी देर तक टिकी रही। "महाराज, मैं दावा करता हूँ कि मेरे आदमियों पर शहर के पहरेदारों के किसी दुष्ट गुट ने हमला किया होगा! शायद, उन्हें किसी ने उकसाया होगा..." जैसे ही खून सूख गया, रानी का चेहरा हल्का सा गोरा हो गया।

उसके चेहरे पर एक अजीब सी बेचैनी थी। इस्माइल उसकी बेचैनी से बच नहीं पाया।

'हाँ, हुज़ूर,' गवर्नर-मुफ़्ती ने रानी पर नज़रें गड़ाए हुए कहा, 'हमारे बीच एक गद्दार है। इस समय इस कमरे में सचमुच नहीं, बल्कि कोई आपकी योजनाओं को नाकाम करने की कोशिश कर रहा है। जामा मस्जिद के पुनर्निर्माण में देरी करने के लिए। क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो आपके खलीफा बनने के खिलाफ हो, हुज़ूर? कौन बेशर्मी से इस हद तक जाएगा, सिर्फ़ आपको उस पवित्र गद्दी पर बैठने से रोकने के लिए जिसके लिए आप पैदा हुए थे?' 'यह बेतुका है!' रानी ने ठंडे स्वर में कहा। उसने अपने गले में लटके काले पेंडेंट को हल्के से छुआ। 'यह एक नाकाबिल आदमी है जो अपनी नाकामी को एक बेतुके षड्यंत्र के सिद्धांत से छिपाने की कोशिश कर रहा है। क्या इस राज्य में कोई है जो आपके खिलाफ खड़ा होने की हिम्मत कर सके, हुज़ूर?' उसने महमूद की ओर मुड़कर पूछा।

सुल्तान ने अपनी पत्नी की ओर गौर से देखा।

कौसरी जहाँ ने आगे कहा, "यह एक साहसिक पलायन था, और कोई भी जीवित गवाह हमें यह नहीं बता पाया कि वास्तव में क्या हुआ था।" "और जैसा कि गवर्नर-मुफ़्ती ने खुद कहा था, पचास जुंदी-उल-दीन सैनिक थे। केवल तैंतीस का ही पता चला है—और वे सभी या तो मर चुके हैं या गंभीर रूप से घायल हैं और बोल नहीं सकते। बाकी सत्रह जुंदी-उल-दीन कहाँ हैं? उनका गायब होना तो ठीक ही है, है न?" महमूद ने होंठ भींच लिए। लेकिन कुछ नहीं बोला।

अपने पति में झिझक देखकर रानी ने दबाव डाला।

"और हाँ, शहर के पहरेदारों के हथियारों पर हाथ डालना नामुमकिन नहीं है," उसने और भी आत्मविश्वास से कहा। "कई सिपाही और पहरेदार अक्सर वेश्यालयों में जाते हैं।

Machine Translated by Google

और शहर में अवैध शराब के अड्डे भी हैं। कोई जुंदी-उल-दीन भी संयोग से इस हथियार को पा सकता था और चुरा सकता था।
जिसने भी यह तलवार गवर्नर-मुफ़्ती के पास लाई थी, वह निस्संदेह अपने मालिक को गुमराह करना और अपने साथी की अयोग्यता को छिपाना चाहता था।' 'जब यह तलवार मेरे पास लाई गई थी, तब यह खून से लथपथ थी,' इस्माइल ने क्रोधित और असहाय होकर विरोध किया।

"आदमी का खून या बकरे का? और कौन यकीन कर सकता है कि तलवार कहाँ थी..." "बस!" महमूद अपनी पत्नी को बीच में ही टोकते हुए गरजा।

"इस्माइल, तुम इस मामले की जाँच करोगी और अपने दावों को साबित करोगी। अगर कोई षडयंत्रकारियों के खिलाफ सबूत हों, तो मेरे पास लौट आओ।" "जी हाँ, मेरे रब," इस्माइल ने कहा।

सुल्तान ने अपनी पत्नी की ओर मुड़ते हुए कहा, 'और यही बात तुम्हारे लिए भी लागू होती है, कौसरी।'
'मुझे पता है कि मेरे भाई ने कुछ गंभीर आरोप लगाए हैं, लेकिन यह नामुमकिन नहीं है कि कुछ नगर रक्षकों ने गुंडागर्दी की हो। आप और ख्वाजा हसन नगर रक्षकों को संभालते हैं। उन पर कार्रवाई कीजिए। मैं जानना चाहती हूँ कि क्या जुंदीन-उल-दीन पर हमला करने के लिए कोई हथियार मुहैया कराए गए थे। मैं यह भी चाहती हूँ कि आप इस्माइल की मदद करें ताकि मस्जिद का काम फिर से शुरू हो सके। ईद-उल-फितर से पहले मुझे खलीफा घोषित किया जाना चाहिए। हमारे पास समय कम होता जा रहा है।' रानी ने सिर हिलाया और प्रधानमंत्री की तरफ एक नज़र डाली।

ख्वाजा हसन ने झुककर प्रणाम किया।

महमूद ने पर्दे के पास परछाईं में खड़े उस जंगली आदमी को देखा। उसके चेहरे पर अब्दी की छोटी सी गुँथी हुई चोटी जैसा एक निशान था । यह किसी पुरानी गली में हुई हाथापाई का निशान था।

उन्हें तुर्क कसाप-ए-हिंद के नाम से जाना जाता था, अर्थात भारत का तुर्की कसाई।

“अबू क़ासिम,” महमूद ने कहा। “आगे बढ़ो।” अबू क़ासिम अपने मालिक के पास
गया और घुटनों के बल बैठ गया।
एक आत्म-संतुष्टिदायक कार्य की आशा करते हुए, उसने अपनी रीढ़ में रोमांच महसूस किया।

सुल्तान ने आदेश दिया, 'गुलामों को ढूंढो। दो सौ घुड़सवार सैनिक ले जाओ।'
मेरी विशिष्ट सेना से। उन काफ़िर जानवरों का शिकार करो । मुझे मस्जिद के सामने सिरों का एक पिरामिड चाहिए। मेरे अभिषेक समारोह के लिए सजावट।' 'आपकी इच्छा, मेरे प्रभु!' क़ासिम तुर्क ने ज़ोर से कहा, उसका हाथ उसकी छाती पर मज़बूती से टिका हुआ था।

"सबको मार डालो!" महमूद गुस्से से दहाड़ा। "पुरुष, स्त्री, शिशु। महमूद गजनवी से कोई नहीं बच सकता! यह संदेश सोमनाथ में तुम्हारे पवित्र कार्य की तरह पूरी दुनिया में गूंजे!"

Machine Translated by Google

"और... जनरल!" इस्माइल ने अबू क़ासिम से कहा। "मुझे एक गुलाम लड़की ज़िंदा चाहिए। अगर हो सके तो बिना किसी नुकसान के..." उसका नाम यज़ादेह है। उसे खोना आसान नहीं होगा। वह शायद चौदह साल की होगी। लंबे भूरे लहराते बाल और हरी आँखें। वह गंदे जानवरों में सबसे खूबसूरत होगी।' उसके शब्दों ने सबको चौंका दिया। अपने भाई के चेहरे पर उलझन भरी नज़र देखकर, इस्माइल ने माफ़ी मांगी, 'माफ़ करना, मेरे रब, आपको इस बात से परेशान करने के लिए। मुझे यकीन है कि लड़की को उसकी मर्ज़ी के खिलाफ ले जाया गया है। मैं आपकी दया की भीख माँगता हूँ, मेरे रब, मुझे उसे ज़िंदा वापस चाहिए। वह मेरी निजी सेविका है।' मलिक अयाज़ ने बीच में ही कहा, 'जहाँ तक मुझे पता है, महान सुल्तान, गवर्नर-मुफ़्ती

इस्माइल ने मस्जिद के पुनर्निर्माण परियोजना में मदद के लिए अपने घरेलू कर्मचारियों में से कई गुलामों को निर्माण समूह में स्थानांतरित कर दिया है।' कौसरी जहान की ओर देखते हुए, लाहौर के राजा ने आगे कहा, 'मेरे राजा, मस्जिद के पुनर्निर्माण में मदद करने के लिए बहुत से लोग व्यक्तिगत बलिदान देने को तैयार नहीं हैं।' महमूद ने अपनी आँखें घुमाईं, यह संदेह करते हुए कि इस्माइल और मलिक अयाज शायद

कौसरी जहाँ के लिए अपनी आपसी नफ़रत में वे दोनों एक-दूसरे के साथी बन गए हैं। 'मैंने पहले ही कहा था, अयाज़, इससे दूर रहना।' इस्माइल की ओर मुड़कर महमूद ने कहा, 'अपनी कुर्बानियों का दिखावा मत करो। बेहतर होगा कि तुम बस काम निपटा लो।' आख़िरकार, सुल्तान ने अबू क़ासिम की ओर देखा। 'ऐसा ही होगा, क़ासिम! बाकियों को मार डालो, लेकिन इस लड़की को ज़िंदा और बिना छुए ले आओ। लगता है मेरे भाई को अपने घर में काम करने के लिए इसकी ज़रूरत है।'

महमूद की आवाज में स्पष्ट व्यंग्य देखकर इस्माइल चुप रहा।
अंतिम वक्तव्य बोला।

अबू कासिम उठे, उनके चेहरे पर एक दुष्ट मुस्कान थी।

'मैं आपको निराश नहीं करूँगा, मेरे प्रभु,' उस भयानक आदमी ने वादा किया। उसने
उसने अपने मालिक को प्रणाम किया और कमरे से बाहर चला गया, उसके कदमों में स्फूर्ति उसके कद का बखान कर रही थी। उसका व्यवहार किसी बच्चे जैसा था जो खेलने के लिए बाहर भाग रहा हो।

महमूद ने अपने भाई की ओर कठोरता से देखा। "वे गुलाम तो मर चुके हैं, इस्माइल, अब तुम्हारे खिलौने नहीं रहे। लेकिन मस्जिद का काम जारी रहना चाहिए। मुझे फिर निराश मत करना।" सुल्तान बिना किसी जवाब का इंतज़ार किए दरवाज़े की ओर चल पड़ा। रानी भी उसके पीछे-पीछे चली।

मलिक अयाज़ भी।

'हाँ, मेरे रब।' इस्माइल ने पीछे हटते हुए लोगों को प्रणाम किया। जैसे ही वे
जब प्रधानमंत्री चले गए, तो वह ख्वाजा हसन की ओर मुड़ा। प्रधानमंत्री ऐसे लग रहे थे जैसे बेहोश होकर गिर पड़ेंगे। इस्माइल उनकी ओर बढ़ा और प्रधानमंत्री के चेहरे से एक इंच की दूरी पर रुक गया।

Machine Translated by Google

"हसन..." वह फुसफुसाया। उसने अपने कंधे पर नज़र डाली कि क्या वे अकेले हैं। फिर उसने अपनी नज़रें जेली के काँपते हुए ढेर पर गड़ा दीं। "मैंने कहा था कि गुलामों को अंदर से मदद मिलती है। क्या तुम समझ गए?"

'मैंने किया, मेरे प्रभु,' हसन ने कहा, उसका सिर हिल रहा था जैसे कि वह एक पर रखा गया हो वसंत। 'कोई चाहता था कि पुनर्निर्माण विफल हो जाए और सुल्तान गुस्से में हमें मौत के घाट उतार दे। मैं अपना दिमाग खोने के कगार पर था। ' प्रधानमंत्री नाटकीय अंदाज़ में अपनी तर्जनी और अंगूठे को एक साथ लाते हुए चीखे।

"जैसा कि मैं था," इस्माइल ने कहा। "और हम दोनों जानते हैं कि वह "कोई" कौन है। सुल्तान ने आदेश दिया है कि मैं इस मामले की जाँच करूँ और सबूत पेश करूँ। मैं ठीक यही करने का इरादा रखता हूँ। इस बीच, कौसरी जहाँ अब हमारे काम के लिए मज़दूरी उपलब्ध कराने के लिए बाध्य है। मैं उसे गुलामों की सुरक्षा का प्रभारी बना दूँगा।"

अब आगे जो भी दुर्घटना होगी, उसका सारा भार उन्हीं पर होगा।' 'अच्छा विचार है,
महाराज।' 'मुझे और धन की
आवश्यकता है। उसका प्रबंध कीजिए।' 'मैं करूँगा, महाराज।
मैं करूँगा,' प्रधानमंत्री ने झुककर आश्वासन दिया।

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 14

दुश्मन के पिछवाड़े में

अरब सागर में कहीं

'मुझे इस पर विश्वास करने के लिए इसे देखना होगा!' विजयन ने कहा और सीढ़ियों से ऊपर चढ़ते हुए मुख्य डेक पर पहुंचे, अमल भी उनके पीछे-पीछे आया।

और वह मुख्य डेक के धनुष पर था। उसका लकवाग्रस्त दाहिना हाथ उसके धड़ से कसकर बंधा हुआ था, और कंधे पर एक स्लिंग भी था जो प्लास्टर का काम भी कर रहा था। उसकी अशक्त तलवार वाली भुजा अब बेकार हो चुकी थी। न केवल वह अब हथियार नहीं चला सकती थी, बल्कि शरीर के हिलने पर भी वह बिना किसी नियंत्रण के, बेढंगे ढंग से इधर-उधर हिलती-डुलती रहती थी, जिससे चोट लगने की संभावना बढ़ जाती थी। दरअसल, अगर यह भुजा घायल भी होती, तो उसे इसका एहसास भी नहीं होता। अपने मुख्य हथियार—अपनी तलवार वाली भुजा—के बिना एक योद्धा, अपने मुख्य शक्ति-केंद्र, यानी अपनी पिछली टाँगों के बिना घोड़े जैसा था।

लेकिन ये कोई साधारण योद्धा नहीं था। ये नरसिंह थे। उनके सेनापति।

उन्होंने अपनी सीमित दाहिनी भुजा के आगे एक ढाल बाँध रखी थी और दाहिने कंधे पर एक बड़ा धातु का शोल्डर गार्ड लगा रखा था। ढाल और शोल्डर गार्ड दो काम करते थे। ये उनके लकवाग्रस्त हाथ को चोट लगने से बचाते थे और साथ ही उसे इस्तेमाल करने की भी अनुमति देते थे, जो किसी भी तलवारबाज़ के लिए ढाल वाले हाथ की तरह काम आता था। एक स्थिर ढाल वाला हाथ, लेकिन फिर भी एक ढाल वाला हाथ, जिसका इस्तेमाल नरसिंह अब वारों को रोकने के लिए कुशलता से कर रहे थे।

इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि अस्पताल में अपने पूरे प्रवास के दौरान उन्होंने कठोर प्रशिक्षण लिया था, जिससे यह सुनिश्चित हो गया था कि तलवार चलाने में उनका बायां हाथ उनके दाहिने हाथ जितना ही अच्छा है।

अब, धनुषाकार डेक पर, वह परमार सेना के सेनापति, दशार्ण से लड़ रहा था। और बड़ी ही बेबाकी से, वे लकड़ी की प्रशिक्षण तलवारें नहीं, बल्कि असली हथियार इस्तेमाल कर रहे थे। मानव द्वारा ज्ञात सर्वोत्तम इस्पात से बनी धारदार तलवारें —दक्षिण भारत का वूट्ज़ इस्पात। ऐसा इस्पात जो एक महीन रेशमी कपड़े को दो टुकड़ों में काट सकता था और उतनी ही आसानी से इंसान की हड्डी को भी चीर सकता था।

Machine Translated by Google

नरसिम्हन और दसर्णा दस मिनट से अधिक समय से आक्रमण कर रहे थे।

चोल सेनापति एक ऐसे प्रतिद्वंद्वी से लड़ रहा था जो अपनी दोनों भुजाओं का इस्तेमाल कर सकता था। दशार्ण ने अपनी बाईं भुजा में ढाल और दाईं भुजा में तलवार पकड़ी हुई थी। वर्षों के अभ्यास के कारण, उसकी सभी गतिविधियाँ उसकी मांसपेशियों की स्मृति के रूप में सुरक्षित रूप से संग्रहीत हो गई थीं। प्रशिक्षण के माध्यम से उसका कौशल सहज रूप से निखारा गया था।

लेकिन नरसिम्हन ने नुकसान को लाभ में बदल दिया।

आंकड़ों के अनुसार, दस में से केवल एक आदमी ही बाएँ हाथ का होता है। यह मानते हुए कि योद्धा जिस समाज से वे आते हैं, उसके अनुपात के अनुसार, दस में से नौ योद्धाओं को अपने दाहिने हाथ से युद्ध करने का प्रशिक्षण मिला होगा। दसर्ण उनमें से एक थे। बाएँ हाथ से लड़ने वाले दस प्रतिशत तलवारबाजों को अपरंपरागत कोणों से आक्रमण करने का लाभ था। लेकिन वे अपनी मांसपेशियों की स्मृति में कभी नहीं जान पाए कि दाएँ हाथ से लड़ने वाले तलवारबाज कैसे लड़ते हैं।

दुश्मन की गतिविधियों को पहले से जान लेना ही जीतना है।

नरसिम्हन को यह बात पता थी, क्योंकि वह दाएं हाथ से काम करते थे।

लेकिन अब वह अपने बाएं हाथ से लड़ रहा था।

दशार्ण ने सोचा कि वह कुछ अलग करने की कोशिश करेगा, क्योंकि नरसिंह के साथ पारंपरिक तलवारबाज़ी बेनतीजा रही थी। सेनापति अपने नए प्रशिक्षित बाएँ हाथ से तलवारबाज़ी में आश्चर्यजनक रूप से निपुण था।

दसर्णा ने बाएँ हाथ को आगे की ओर धकेलते हुए, अपनी ढाल को ज़ोर से धकेलते हुए, बग़ल में मुड़ लिया। उसने अपने रक्षात्मक कवच को हथियार की तरह इस्तेमाल किया, ठीक वैसे ही जैसे कोई मुक्केबाज़ अपने बाएँ हाथ से आगे की ओर वार करता है, नरसिंह के कमज़ोर और लकवाग्रस्त दाहिने हाथ पर वार करने की कोशिश में, ताकि जनरल अपने पिछले पैर पर खड़ा हो जाए और उस बाएँ हाथ के वार के लिए जगह बन जाए जिसकी वह योजना बना रहा था। यह एक जानलेवा वार होता।

नरसिम्हन की विकलांगता के लिए कोई रियायत नहीं दी जानी थी। जनरल ने यही आदेश दिया था।

नरसिंहन पीछे हट गया क्योंकि उसने महसूस किया कि दसर्ण की ढाल उसकी ढाल से ज़ोर से टकरा रही है। वह स्पष्ट रूप से असहजता से सिहर उठा। दसर्ण एक पल के लिए झिझका, लेकिन फिर दाईं ओर से घूम गया।

वह जनरल के आदेशों का पालन कर रहा था। कोई दया नहीं—एक सच्चे दुश्मन के लिए यह भी नहीं दिखाया जाएगा.

लेकिन दसर्ण को यह नहीं पता था कि उसके लिए जाल बिछाया जा रहा है।

नरसिंह अचानक पीछे हट गए, जिससे उनका दाहिना कंधा दशार्ण के शरीर से अलग हो गया। आश्चर्यचकित दशार्ण लड़खड़ाते हुए आगे बढ़े।

Machine Translated by Google

और उसकी तलवार को बगल की ओर घुमाने की क्रिया दिशा खो बैठी। नरसिम्हन ने आसानी से रास्ता बदल लिया और अपने बाएँ हाथ को ऊपर की ओर एक क्रूर कोण में ऊपर उठाया। बिल्कुल अपरंपरागत। एक ऐसा कोण जो एक दाएँ हाथ के खिलाड़ी के लिए बिल्कुल अप्रत्याशित था, और बचाव करना लगभग असंभव था, क्योंकि उस तरफ कोई ढाल नहीं थी।

और नरसिंह ने ठीक समय पर रुककर वार किया। उसकी तलवार की नोक दसर्ण के चमड़े के कवच को कमर के निचले हिस्से में छू रही थी। अगर वह न रुकता, तो नरसिंह की तलवार दसर्ण के पेट में घुस जाती और उसके उदर गुहा के ज़्यादातर अंगों को चीर देती। यह एक जानलेवा घाव होता।

'क्या...' अमल विस्मय से देख रहा था।

विजयन भी उस व्यक्ति की अद्भुत तलवारबाज़ी देखकर दंग रह गए, जिसकी तलवार चलाने वाली प्राकृतिक भुजा लकवाग्रस्त थी। 'देवी मीनाक्षी के नाम पर, जनरल ने ऐसा कैसे किया?'

देख रहे सैनिकों ने स्वतः ही तालियाँ बजा दीं। यह उनके वरिष्ठ की चापलूसी नहीं थी, बल्कि एक कुशल योद्धा के दुर्लभ कौशल के लिए सच्ची प्रशंसा थी।

नरसिंह ने अपनी तलवार गिरा दी और अपनी छाती पर जोर से वार किया।
बाएँ हाथ की मुट्ठी बंद करके, हिमनदों के पिघले पानी की ताज़ा बौछारों को ग्रहण करती सूखी नदी की तरह उल्लासित शक्ति बिखेरते हुए। उन्होंने ज़ोर से गर्जना की, 'सेनानि स्कंद!' स्कंद भगवान शिव और देवी पार्वती के पुत्र कार्तिक का दूसरा नाम था । और सेनानि का अर्थ था सेनापति। स्कंद देवताओं की सेना के सेनापति थे। भारत की पावन भूमि पर विराजमान अब तक के सबसे महान योद्धा। लगभग सभी भारतीय सैनिकों के लिए, साहस और वीरता के क्षण में उस महान योद्धा को याद करना अत्यंत स्वाभाविक था।

एक वीर सैनिक सबसे अधिक प्रेरणा चाहता है।

आस-पास के सभी सैनिकों ने अपनी तलवारें निकालीं, उन्हें हवा में उठाया और
जोर से चिल्लाया, 'सेनानी स्कंद!'

विजयन और अमल ने अपनी तलवारें निकालीं और हवा में उछलने लगे। दशर्ना ने भी ऐसा ही किया।
'सेनानी स्कंद!'

विजयन ने अपनी तलवार म्यान में रखी, नरसिंह के पास दौड़े, जनरल की तलवार उठाई और दोनों हाथों से उसे ऊपर उठाकर सम्मानपूर्वक अपने सेनापति को वापस कर दिया। नरसिंह मुस्कुराए, अपनी तलवार वापस ली और सहजता से उसे म्यान में डाल दिया।

विजयन भावुक हो गए। वह आगे बढ़े और गले लगा लिया।
नरसिम्हन ने विजयन को गर्मजोशी से गले लगा लिया।

'आपका स्वागत है, सर,' विजयन ने पीछे हटते हुए कान से कान तक मुस्कुराते हुए कहा।

नरसिम्हन ने कहा, 'वापस आकर अच्छा लगा, मेरे दोस्त।'

Machine Translated by Google



द्वंद्वयुद्ध का रोमांच समाप्त हो चुका था और नरसिंह थक चुके थे।
विजयन उन्हें डेक के नीचे उनके कक्ष में वापस ले गए। और जनरल तुरंत अपने बिस्तर पर सो गए।

अमल के भाई आमिर ने कहा, "जनरल को बाकी दिन आराम करने की ज़रूरत है। उन्हें जो जड़ी-बूटी दी गई थी, उससे उनका दर्द कम हो गया है और वे ज़्यादा सतर्क हो गए हैं। लेकिन इससे ज़्यादा आराम उनके दिल के लिए अच्छा नहीं होगा। उन्हें ठीक होने के लिए आराम करना होगा। वे एक सीमा से ज़्यादा खुद को नहीं धकेल सकते, जब तक ज़हर का असर बना रहे।"

विजयन ने पूछा, 'क्या अब तक उसके शरीर से ज़हर निकल नहीं जाना चाहिए था?' उसने चिंता से कक्ष के दूर छोर पर सो रहे नरसिम्हन की ओर देखा।
'मुझे समझ नहीं आ रहा कि चालुक्यों का बाण अब भी उस पर क्यों असर कर रहा है।'
'जैसा कि आप जानते हैं, हमने तीर के सिरे के कई टूटे हुए टुकड़े निकाले हैं
सबरीमाला। लेकिन यह पूरी तरह से निकाला हुआ नहीं था,' आमिर ने कहा। 'अंदर कई छोटे-छोटे टुकड़े रह गए थे। वे छर्रे शायद हमेशा दर्द देते होंगे। और हो सकता है कि उन धातु के टुकड़ों पर धीमी गति से निकलने वाले ज़हर का रासायनिक उपचार किया गया हो, जो जनरल को दी जा रही हमारी दवाओं का असर कम करता रहता है।' 'क्या आप बाकी टुकड़े नहीं निकाल सकते?' विजयन ने पूछा।

'हम उन्हें तब नहीं ढूंढ पाए थे। वे छोटे हैं। बहुत छोटे। और मैं अब यह जोखिम नहीं उठाना चाहता, जब मांस अंततः सिकुड़ रहा है। इसके अलावा, प्रतिरोधक दवाओं की ताकत और जनरल की अपनी लचीलापन ने यह सुनिश्चित किया है कि वह इस शक्तिशाली जहर से काफी मजबूती से लड़े हैं और जीवित हैं। यह एक अच्छा संतुलन है जिसे हमें बनाने की जरूरत है - प्रतिरोधक दवाएं उन्हें जहर के खिलाफ ताकत देती हैं, लेकिन दवाओं की बहुत मजबूत खुराक दिल का दौरा पड़ सकती है। अंततः, हम केवल यह आशा कर सकते हैं कि उन धातु के टुकड़ों में जहर खत्म हो जाएगा। या हम गंगईकोंडा चोलपुरम वापस आने पर बेहतर उपकरणों के साथ एक सर्जरी कर सकते हैं, और उन बचे हुए टुकड़ों को निकाल सकते हैं। यही एकमात्र दीर्घकालिक समाधान है।
फ़िलहाल, हमें रोज़ाना जहर से लड़ते रहना होगा, क्योंकि यह अभी भी उनके शरीर में है।' 'ठीक है,' विजयन ने कहा। उनका जनरल वापस आ गया था, लेकिन अभी पूरी तरह से नहीं।

...

Machine Translated by Google



विजयन जनरल के सामने घुटनों के बल बैठ गए और उनकी आंखों में देखने लगे।

'आपकी ओर देखिए, सर,' विजयन ने प्रसन्नता से भरी आवाज में कहा।

शाम हो चुकी थी। नरसिम्हन अपने बिस्तर पर लेटे हुए थे। अभी भी बेचैनी महसूस कर रहे थे।
दिन में पहले हुए द्वंद्वयुद्ध के बाद वे थके हुए थे। केवल विजयन ही पास में था। बाकी लोग कक्ष के दूर वाले छोर पर, दरवाज़े के पास रुके थे।

'कैसे...' नरसिम्हन ने कर्कश स्वर में कहा। उसने गला साफ़ किया और आगे कहा, 'अब्बासी हमले में, मैंने सुना है कि हमारे बारह आदमी मारे गए?' 'हाँ, जनरल,' विजयन ने गंभीरता से कहा।

'बारह।' 'नसरुल्लाह कोई जनरल नहीं है,' नरसिम्हन ने सुधारा।

'बिल्कुल, सर। मेरा मतलब नसरुल्लाह अन्ना से है,' विजयन ने कहा।

'क्या सभी अंतिम संस्कार ठीक से किए गए?' 'हाँ। हमने उन्हें सभी रीति-

रिवाजों के साथ समुद्र में दफनाया। हमने बहादुर अंसार को भी खो दिया, अमल और आमिर का भाई। उसी ने अब्बासी जहाज़ को नष्ट किया था।' आमिर की आँखें भर आईं। वे लोग नज़रें फेर लेते। वे अपने साथी को उसके आँसू देखकर शर्मिंदा

नहीं करना चाहते थे।

नरसिम्हन ने कहा, 'इन्ना लिल्लाहि वा इन्ना इलैहि राजिउन।'

नरसिम्हन ने पवित्र कुरान से एक अरबी वाक्यांश उद्धृत किया था। इसका अर्थ था
कि सभी मुसलमान अल्लाह के हैं और उसी की ओर लौटेंगे। यह प्रार्थना बहादुर अंसार और उनके द्वारा अपनाए गए धर्म के प्रति सम्मान में की गई।

बाकी सबने दोहराया, 'इन्ना लिल्लाहि वा इन्ना इलैहि राजिउन।' सोमेश्वर और इक़बाल ने आमिर

के कंधे छुए।

अपने दोस्त को उसके नुकसान के लिए धन्यवाद दिया।

सन्नाटा छा गया।

"मेरा शरीर जलती हुई मशाल की तरह जल रहा है।" नरसिम्हन ने चुप्पी तोड़ी और आमिर की बेचैनी कम करने के लिए विषय बदल दिया। "मेरी पीठ दर्द से फटी हुई है। मुझे हर समय मतली आती रहती है। शायद मैं इसके साथ जीना सीख जाऊँ, जैसे कोई अपनी पत्नी के साथ जीना सीखता है।" सब एक साथ हँस पड़े।

पुरुष सरल प्राणी हैं।

जब कोई महिला किसी ऐसे दर्द और दुःख से जूझती है जिसका कोई इलाज नहीं हो सकता और जो उसकी सहनशक्ति से परे हो, तो वह अपनी सहेलियों से इस बारे में बात करना पसंद करती है। अपना दर्द बाँटने से उसका बोझ हल्का होता है। दूसरी ओर,

Machine Translated by Google

दूसरी ओर, पुरुष अपने दुःख और दर्द के बारे में सोचना पसंद नहीं करते । इसके बजाय, वे अक्सर विषय बदलना पसंद करते हैं, अक्सर हास्य को ढाल बनाकर। यही कारण है कि फाँसी हास्य नामक हास्य शैली पुरुषों में ज़्यादा लोकप्रिय है, महिलाओं में नहीं। अपनी दुर्दशा पर, व्यंग्य और हास्य के साथ हँसना, तब भी जब किसी को फाँसी पर लटकाकर मौत के घाट उतार दिया जा रहा हो, सबसे मर्दाना गुणों में से एक है।

पुरुष सरल प्राणी हैं।

'अब जब हम अपनी मातृभूमि में वापस कदम रखेंगे तो सबसे पहले मैं हरिनी अन्नी से यही कहूंगा, नसरुल्लाह अन्ना,' विजयन ने बड़ी भाभी और बड़े भाई के लिए तमिल शब्दों का प्रयोग करते हुए जोर से हंसते हुए चेतावनी दी।

नरसिम्हन भी अच्छे स्वभाव से हंसने लगे, अन्य लोग भी हंसने लगे।

विजयन ने कहा, 'सर, अब आपको कमान वापस ले लेनी चाहिए।'

"अभी नहीं, वलीद," नरसिम्हन ने उठने की कोशिश करते हुए कहा। "अभी नहीं..." विजयन ने नरसिम्हन को खड़ा करने की कोशिश की।

"तुमने सुना युवा आमिर," नरसिम्हन ने अपनी हथेली ऊपर उठाते हुए अपने ब्रिगेडियर को उसकी मदद करने से रोकते हुए कहा। "मैं किसी जड़ी-बूटी का सेवन कर रहा हूँ जो मुझे कुछ देर के लिए होश में रखती है। यह अच्छी बात है। लेकिन यह लड़का दर्द से राहत के बारे में बढ़ा-चढ़ाकर बता रहा है, यकीन मानिए। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरी नसों में पिघला हुआ लोहा बह रहा है, मेरी पीठ के किसी केंद्र बिंदु से निकल रहा है। चोट से। मुझे यकीन है कि दर्द जल्द ही काबू में आ जाएगा। लेकिन शायद मुझे और समय चाहिए।"

शायद, अभी के लिए, मैं आपका सलाहकार बना रहूँ। लेकिन कमान आपके पास है।' 'जैसा आप कहें, महोदय,' विजयन ने कहा। 'अभी के लिए, मैं कमान अपने

पास रखूँगा, सिर्फ़ अभी के लिए...' नरसिम्हन मुस्कुराए। ... लेकिन

'सलमानार,' विजयन ने सोमेश्वर की ओर मुड़कर कहा। 'क्या आप एक

क्या आप नसरुल्लाह अन्ना के लिए भी कफ्तान देंगे, जैसा आपने हममें से बाकी लोगों को दिया था?'

'बिल्कुल,' सोमेश्वर ने कहा। 'दरअसल, नसरुल्लाहजी का कफ़न तैयार है।' 'वाह! हमें उनकी लहिया भी काटनी होगी — मेरी तरह।' मुड़कर

नरसिम्हन, विजयन ने आगे कहा, 'इसका मतलब दाढ़ी है। ज़ाहिर है, एक रूढ़िवादी मुसलमान के लिए यह अनिवार्य है।' ' लिह्याह,' नरसिम्हन ने धीरे से दोहराया। 'खैर, आपकी दाढ़ी तो काफ़ी

अच्छी तरह से रखी हुई है। अच्छी लग रही है। हमारे धार्मिक पूर्वजों की दाढ़ी और मूंछें करीने से सजी हुई थीं। हममें से बहुत से लोग अब क्लीन शेव हो गए हैं। शायद हमें चेहरे पर बाल फिर से फैशन में लाने चाहिए।' 'शायद हमें ऐसा करना चाहिए।' विजयन अपनी गोटी पर हाथ फेरते हुए मुस्कुराए।

Machine Translated by Google



नरसिंह ने अपने बाएँ हाथ से अपनी आँखों को ढक लिया। आज सूरज तेज़ निकला था, आसमान में बादलों का कोई आवरण नहीं था। लेकिन हवाएँ भी तेज़, ठंडी और नम थीं, जिससे दिन के अकेले तारे की तपती हुई ताक़त कम हो गई थी।

'वलीद और अमल,' उन्होंने कहा, 'मुझे नहीं पता कि क्या आप जानते हैं कि सिर
भारत के तीन सबसे दक्षिणी राजवंशों - चोल, पांड्य और चेर - को मूवेन्द्र, अर्थात् तीन राजा के रूप में जाना जाता है।'

नरसिम्हन, विजयन और अमल जहाज़ के मुख्य डेक पर रेलिंग के सहारे खड़े थे। दिन ढल रहा था, दोपहर होने वाली थी। और बलूचिस्तान का तट ज़्यादा दूर नहीं था।

"जी हाँ, सर," विजयन ने कहा। "हाँ, मैं हूँ।"

नरसिम्हन ने आगे कहा, "इस नाव पर तीनों राजवंशों के प्रतिनिधि मौजूद हैं। मैं चोल वंश से हूँ, वलीद पांड्यों की राजधानी मदुरै से हैं, और अमल सबरीमाला के चेर पर्वतीय क्षेत्र से हैं। ये राजवंश भगवान शिव के तीन नेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं। और हम अपने भगवान के अपमान का बदला लेने जा रहे हैं।"

'हाँ, हम करेंगे,' विजयन ने कहा। 'हर हर महादेव।' यह उन सभी लोगों का नारा था जो भगवान शिव के प्रति समर्पित थे, यानी हम सभी महादेव हैं।
हम सभी भगवान हैं।

नरसिम्हन और अमल ने दोहराया , 'हर हर महादेव।'

तीनों मुस्कुराए और दूर तक देखने लगे। अब ज़मीन साफ़ दिखाई दे रही थी।

विशाल गजनवी साम्राज्य की शुरुआत इन्हीं तटों से हुई थी।

अमल ने कहा, 'हमें बताया गया है कि महमूद की राजधानी गजनी कंधार की पहाड़ियों में है।'

नरसिम्हन और विजयन ने सिर हिलाया।

अमल ने आगे कहा, 'लेकिन हाँ, तुर्क इन ज़मीनों पर हाल ही में, कुछ दशक पहले ही आए थे। उनकी मूल मातृभूमि बहुत दूर उत्तर में, मध्य एशिया के स्टेपी इलाकों में है। और हम सभी जानते हैं कि उनकी सरल तुर्क भाषा, जो खानाबदोश बर्बर लोगों की भाषा है, के उच्चारण और वाक्यविन्यास सीमित हैं। हो सकता है कि समय के साथ उनकी भाषा में सुधार हो। फ़िलहाल, हमारी भाषा में "ग" का उच्चारण उनकी भाषा में "क" होता है। इसलिए जिस देश में हम जा रहे हैं उसका मूल नाम कंधार नहीं, बल्कि गांधार था।'

Machine Translated by Google

विजयन ने दोबारा सोचा, 'यह माँ गांधारी की भूमि है? महाभारत की?' 'हाँ,' अमल ने उत्तर दिया।

नरसिम्हन ने मुस्कुराते हुए कहा, 'इसके अलावा, शकुनि।'

अमल ने कंधे उचका दिए। 'हाँ, हाँ। लगभग हर परिवार में कोई न कोई होता है।'
शर्म आती है कि ...'

नरसिम्हन और विजयन धीरे से हंस पड़े।

'हम भारतीयों ने बहुत कुछ खोया है। जो माँ गांधारी की धरती थी, वो अब

विजयन ने कहा, 'उस बर्बर महमूद द्वारा शासित।'

'हम्म...' नरसिम्हन ने उदास होकर कहा।

अमल ने कहा, 'नसरुल्लाह अन्ना, आपने पहले जो बात कही थी , वह यह कि तीन महान राजवंश भगवान महादेव की तीन

आँखों की तरह काम करते हैं...'

'हाँ?'

'भगवान शिव के प्रतीकों में,' अमल ने कहा, 'सिर्फ उनके तीन ही नहीं हैं

'न केवल आंखें बल्कि अर्धचंद्र भी।'

'हाँ। इसीलिए उन्हें चंद्रशेखर भी कहा जाता है। वह जो
'वह अपने सिर पर चंद्रमा को धारण करता है।'

अमल ने पूछा, 'क्या आप जानते हैं कि अर्धचंद्र हम मुसलमानों के लिए भी एक पवित्र प्रतीक है?'

'सच में? मुझे यह नहीं पता था।' 'हाँ, यह सच है।'

नरसिम्हन मुस्कुराए।

अमल ने आगे कहा, 'हम भी उनके हैं। और वे भी हमारे हैं। भगवान शिव हमारे नहीं हैं।'

वह सिर्फ हिंदुओं के लिए दिव्य हैं। वह हम सभी भारतीयों के लिए भी दिव्य हैं।'

"यही भारतीय धार्मिकता है," नरसिम्हन ने कहा। "एक-दूसरे की आस्थाओं के प्रति आपसी सम्मान पर आधारित। कुछ ऐसा जो महमूद

ग़ज़नी जैसे क्रूर लोगों को भी नहीं मिलता।" विजयन ने अमल की ओर देखा और धीरे से मुस्कुराया। नरसिम्हन ने उसकी कोमलता को

पहचाना।

अमल ने आगे कहा, 'हम एक साथ मिलकर अधिक मजबूत हैं।'

नरसिम्हन ने कहा, 'एक साथ मिलकर मजबूत बनें।'

विजयन ने दोहराया, 'एक साथ मिलकर मजबूत बनें।'

बंदरगाह शहर ग्वादर चमकदार धुंध में सामने दिखाई दे रहा था।

भारतीय आ रहे थे। एकजुट।

तुर्क अपवित्र महमूद द्वारा शासित भूमि पर।

भारतीय आ रहे थे। और वे अपना बदला लेंगे।

Machine Translated by Google



"हमारे साथ वापस आओ, आपा," जीवित वावर भाई-बहनों में सबसे छोटे अल्ताफ ने अपनी बड़ी बहन से आग्रह किया। आमिर चुपचाप अपनी बहन को देखता रहा, उसके चेहरे के भाव अल्ताफ के भाव से मिलते-जुलते थे।

अमल ने लड़कों की तरफ़ देखा और मुस्कुराई। फिर वह समुद्र की ओर मुड़ी।
चोल जहाज के ऊपरी डेक पर चहल-पहल कर रहे लोगों पर नज़र रखते हुए, चीखती हुई सीगलें ऊपर उड़ रही थीं।

उनका जहाज़ ग्वादर बंदरगाह पर पहुंचने वाला था।

दोपहर की धूप में हवा की ठंडक की जगह हल्की ठंडक ने ले ली।
अब्बासी नाविकों के साथ मुठभेड़ में बचे हुए 38 चोल और परमार सैनिक, अपने कमांडरों के साथ, जहाज से उतरने और जहाज की रेलिंग से बोर्डवॉक तक फैली रस्सी की सीढ़ियों से नीचे उतरने की तैयारी कर रहे थे।

अल्ताफ़ ने कहा, "आपने अपनी भूमिका निभा दी है और इस मिशन पर हमारे देशवासियों के लिए ज़मीन तैयार कर दी है।"
"आपका काम पूरा हो गया है। आपा , हमारे साथ आइए। अब्बा को आपकी ज़रूरत है..."
अंसार...'

अल्ताफ की आवाज लड़खड़ा गई क्योंकि उसकी भावनाएं उस पर हावी हो गईं।

"मैं तुम्हारे साथ वापस नहीं जा सकती, छोटे भाई।" अमल ने प्यार से अपने छोटे भाई का गाल छुआ। "मैं यहाँ सिर्फ़ चोलों और परमारों को प्रशिक्षित और मार्गदर्शन करने नहीं आई हूँ। मैं अपने देश के प्रतिशोध में भाग लूँगी। समय तय करेगा कि मैं इसमें कोई महत्वपूर्ण भूमिका निभाऊँगी या नहीं, लेकिन मैं तभी जाऊँगी जब उस महान अत्याचारी को उसकी सज़ा मिल जाएगी।"

थोड़ी दूर खड़ा विजयन उस महिला को देख रहा था। वह परस्पर विरोधी भावनाओं से जूझ रहा था। वह जानता था कि अगर वह इस मिशन का हिस्सा नहीं बनी, तो वह लंबी उम्र जीएगी। दूसरी ओर, अगर वह इसका हिस्सा बनी रही, तो वे भले ही कम उम्र में मर जाएँ, लेकिन साथ-साथ मरेंगे। हालाँकि, शांत मन से सोचते हुए, उसे सही बात समझ आ गई।

'तुम्हें वापस जाना होगा, अमल,' पंड्या ने उसके पास आते हुए कहा। 'हमारे पास
पहले ही दो ख़तरनाक मुठभेड़ें हो चुकी हैं। हमारे बारह आदमी मारे गए हैं और हमारा नेता घायल हो गया है। और अब हम दुश्मन के घर के पिछवाड़े में हैं। अल्ताफ़ सही कह रहा है।
अपने भाइयों के साथ वापस जाओ। तुम्हारा मकसद पूरा हो गया है।' अमल ने मुड़कर विजयन का सामना
किया।

'मैं तुम्हारे साथ आ रही हूँ, वलीद,' उसने दृढ़ता से कहा। 'मुझे ज़रा भी शक नहीं कि तुम
जब जरूरत होगी तो मेरी रक्षा करेंगे।'

Machine Translated by Google

विजयन मुस्कुराया। 'दरअसल, मैं अपनी रक्षा के लिए आप पर भरोसा कर रहा था, मेरी लेडी।' अमल भी मुस्कुराया। और विजयन का चेहरा

खिल उठा। अमल के भाइयों ने इस पल को अनदेखा नहीं किया।

"उसका ख्याल रखना, मेरे दोस्त," आमिर ने कहा। "वह अपने भाइयों के लिए दुनिया है। वह हम सबकी आँखों का तारा है।" "मुझे पता है..." आमिर धीरे से हँसा और विजयन को गले लगा लिया।

विजयन ने कहा, "सुरक्षित वापस लौटो और कोच्चि बंदरगाह की ओर बढ़ो।" "पास ही रहो।"
समुद्र तट तक और हमारे देश की पहुंच के भीतर।' आमिर ने सहमति में सिर हिलाया।

नरसिम्हन समूह के पास गए और आमिर को एक सीलबंद स्क्रॉल दिया।

"आमिर, इसे ले जाओ और गंगईकोंडान तक पहुँचा दो। उन्हें खबर देनी होगी कि हम दुश्मन के दरवाज़े पर सुरक्षित पहुँच गए हैं। और यह भी यकीन दिलाना होगा कि हम यहाँ कामयाबी के लिए आए हैं।"

आमिर ने सीलबंद स्क्रॉल उठाकर अपने स्लिंग बैग में रख लिया। उन्होंने सीने पर हाथ रखकर नरसिम्हन को सलाम किया।

"और आमिर, अपनी नाव ठीक चार हफ़्ते बाद ग्वादर वापस ले आना," विजयन ने कहा। "चार हफ़्ते और यहीं रुकना। अगर हम तब तक वापस नहीं लौटे, तो समझो हम हार गए और वापस चले जाओ।"



नरसिंहन, विजयन और अमल, सम्राट के शेरदिलों में से आखिरी थे जो रस्सी की सीढ़ियों से उतरकर बंदरगाह घाट पर अपने साथियों के साथ जा मिले। नरसिंहन ने बार-बार किसी का सहारा लेने से इनकार कर दिया था, और नीचे उतरते समय अपने शक्तिशाली बाएँ हाथ से खुद को संभाल रहे थे। उन्होंने सुबह ताकत पाने के लिए कुछ औषधीय जड़ी-बूटियाँ ली थीं। उन्होंने जहाज के डेक पर खड़े आदमियों को अलविदा कहा और फिर चारों ओर की हलचल को देखा।

यह बंदरगाह भारतीय उपमहाद्वीप के अन्य हिस्सों के बंदरगाहों जितना बड़ा नहीं था। लेकिन यह काफी बड़ा था। इसमें दो घाट थे, जहाँ दोनों तरफ जहाजों के लिए बर्थिंग की व्यवस्था थी, और पश्चिम में एक चट्टानी ढलान पर एक घाट था, जहाँ बर्थिंग, ज़ाहिर है, केवल एक तरफ ही थी। कुल मिलाकर, दोनों घाटों और एक घाट पर लगभग पंद्रह जहाज आ सकते थे। चट्टानी घाट

Machine Translated by Google

यह ढलान एक ब्रेकवाटर का भी काम करती थी, जिससे बंदरगाह पर लहरों का प्रभाव कम होता था, और जहाजों को खुले समुद्र में जाने के लिए एक साफ़ रास्ता मिलता था। बंदरगाह से थोड़ा पूर्व में एक ऊँचा प्रकाशस्तंभ था, जो रात में जहाजों को ग्वादर बंदरगाह तक ले जाता था। बंदरगाह की पूरी लंबाई में गोदाम फैले हुए थे।

और साथ ही अंदर की ओर जाने वाली कुछ सड़कें भी।

नरसिम्हन ने इससे कहीं बड़े बंदरगाह देखे थे। लेकिन यह बंदरगाह आकार में ठीक-ठाक था।
जनरल ने अपने सैनिकों की तरफ़ देखा। उसने कुछ नहीं कहा। उसे कहने की ज़रूरत भी नहीं थी। उसकी आँखों में संदेश साफ़ था। अब हम दुश्मन के घर के पिछवाड़े में हैं। हमेशा सतर्क रहो।

व्यापारियों और नाविकों द्वारा माल लादने और उतारने की आवाजें
उनके बर्तन हवा में भर गए।

सोमेश्वर ने अपनी आंतरिक जैकेट से मज़बूती से बंधी थैली से कुछ निकाला। उसमें अब्बासी कप्तान का दिया हुआ पदक था। विजयन ने उसे सुरक्षित रखने के लिए दिया था। वह एक अनमोल धरोहर थी—मुश्किल हालात में बहुत काम आ सकती थी।

नरसिम्हन ने आँखों से बाईं ओर इशारा किया। सोमेश्वर ने उसके इशारे का पालन किया और कुछ लोगों को तेज़ी से अपनी ओर आते देखा। बंदरगाह के अधिकारी।

तीन आदमी पार्टी में आए। विजयन ने देखा कि उनके कपड़े और बनाव-श्रृंगार उनके जैसे ही थे और उन्हें गहरी संतुष्टि हुई। अमल ने अच्छा काम किया था। वे स्थानीय लोगों में पूरी तरह घुल-मिल गए थे।

सोमेश्वर के पास पहुँचते ही एक बुज़ुर्ग बंदरगाह अधिकारी ने कहा, "तुम्हें शांति मिले।" उसके लहजे से साफ़ ज़ाहिर था कि वह फ़ारसी था। उसके पीछे एक दुबला-पतला युवक खड़ा था, जिसके एक हाथ में चर्मपत्र का टुकड़ा और दूसरे में कलम थी, जो रिकॉर्ड रखने वाला था। तीसरा, जो उम्र में भी बड़ा था, अलग खड़ा होकर चोल-परमार दल को देख रहा था।

सोमेश्वर ने प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया, "आप पर भी शांति हो, महोदय।" उसके पीछे,
बोर्डवॉक पर, भारतीयों ने खाने-पीने की चीज़ें, हथियार, कपड़े और दूसरी ज़रूरी चीज़ें रखने वाले अपने बक्से जमा कर रखे थे। बंदरगाह अधिकारी उत्सुकता से उन व्यस्त लोगों को देख रहा था।

"ग्वादर में तुम्हारा क्या काम है?" उसने पूछा। "उन बक्सों में क्या है?" सोमेश्वर ने लापरवाही से पीछे मुड़कर देखा और उसकी ओर मुड़ा। "कुछ ख़ास नहीं, सच में," उसने कहा। "खाना-पीना और कपड़े। हम ग़ज़नी की महान मस्जिद की तीर्थयात्रा पर हैं। हम भारत के विधर्मी देशों से हाल ही में धर्मांतरित हुए हैं।" सोमेश्वर ने यह इसलिए कहा था ताकि वह अपने कान में छेद के बारे में बता सके।

Machine Translated by Google

बंदरगाह अधिकारी ने मुँह बनाया। लेकिन उसकी आँखों में लालच साफ़ झलक रहा था। उसने समय के साथ यह जान लिया था कि भारतीय, औसतन, बहुत अमीर होते हैं, और जो लोग हाल ही में इस्लाम में परिवर्तित हुए हैं, वे आमतौर पर अपनी वफ़ादारी साबित करने के लिए बहुत उत्सुक रहते हैं। इसलिए उनसे बहुत पैसा कमाया जा सकता है। 'तुम्हारा नाम क्या है, भारतीय?' 'मैं सलमान हूँ,' सोमेश्वर ने अपना हाथ अपनी छाती पर रखते हुए जवाब दिया।

"इक़बाल और नसरुल्लाह, मेरे सहायक।" उन्होंने इक़बाल और नरसिम्हन की ओर इशारा किया। "और ये वलीद है, मेरा भतीजा, और अमल उसकी पत्नी है," उन्होंने विजयन और सबरीमाला के वावर वंशज की ओर इशारा करते हुए अपनी बात समाप्त की।

अमल का दिल इस अचानक हुए परिचय से धड़क उठा। उसने चुपके से विजयन की तरफ देखा और मुस्कुरा दी।

सोमेश्वर ने आगे कहा, 'जहां तक हमारे उद्देश्य की बात है, हम महान को देखना चाहते हैं "यह मस्जिद सुल्तान महमूद इब्न सेबुकतेगिन ने अपनी विजय स्मारक के रूप में बनवाई है। हम नमाज़ अदा करेंगे और फिर सड़क मार्ग से मक्का के लिए रवाना होंगे। क्या आप हमें ऊँट और घोड़े खरीदने में मदद कर सकते हैं... और क्या हमारे सामान के लिए कुछ गाड़ियाँ भी मिल जाएँगी?" बंदरगाह अधिकारी गर्मजोशी से मुस्कुराया, मानो कोई मछुआरा हो जिसे बिना काँटा

डाले, रस्सी डालकर और रील खींचे, मुफ़्त में मछलियाँ मिल गई हों।

वह मुड़ा और अपने पीछे बैठे जिज्ञासु वृद्ध व्यक्ति से कुछ देर तक बातचीत की, जिसने सिर हिलाकर झुंझलाहट में आह भरी। सोमेश्वर ने ध्यान से सुना, अपनी सौहार्दपूर्ण मुस्कान बरकरार रखी। उसने कई दशकों तक दुनिया भर के बंदरगाहों में व्यापार किया था। उसे अच्छी तरह पता था कि यह खेल कैसे खेला जाता है।

बंदरगाह अधिकारी ने आखिरकार सोमेश्वर की ओर देखा।
भारत। क्या हम एक पल के लिए अलग हट सकते हैं? कागजी कार्रवाई पर चर्चा करने के लिए।'

"ज़रूर, महाराज," सोमेश्वर ने झुककर विनम्रता से कहा। उसे अच्छी तरह पता था कि किस 'कागज़ी कार्रवाई' पर चर्चा करनी है।



थोड़ी देर बाद सोमेश्वर वापस लौट आया। नरसिम्हन ने बंदरगाह के अधिकारियों को प्रसन्नचित्त होकर जाते देखा।

'सब कुछ संभाल लिया, सर?' नरसिम्हन ने सोमेश्वर के एक कर्मचारी के रूप में अपने चरित्र पर कायम रहते हुए पूछा।

Machine Translated by Google

"हाँ, नसरुल्लाह," सोमेश्वर ने भी अपनी भूमिका निभाते हुए कहा। फिर सोमेश्वर ने इकबाल की ओर मुड़कर एक खुशनुमा मुस्कान के साथ फुसफुसाया, "सरल नियमों पर कभी सवाल मत उठाना। हमेशा सरल नियमों का पालन करो!" इकबाल धीरे से हँसा। "हमेशा सरल नियमों का पालन करो।" नरसिम्हन ने भौंहें चढ़ाईं। "सरल नियम क्या हैं?" "यह सलमान भाई और मेरे बीच का एक निजी मज़ाक है," इकबाल ने कहा।

नरसिम्हन ने कहा, "इसे कम निजी बनाओ।" "सरल नियम क्या हैं?" सोमेश्वर ने स्पष्ट किया, "तो यह ऐसा है, नसरुल्लाह। भ्रष्ट लोगों को रिश्वत देते हुए..."
नौकरशाहों, हम इन सरल नियमों का पालन करते हैं। और ये हमेशा काम करते हैं। सबसे पहले, अधिकारी को अच्छी तरह समझ लें। इतनी कम राशि न दें कि वे नाराज़ हो जाएँ।
और इतना भी नहीं कि उन्हें शक हो जाए कि आपका असली खेल क्या है। और उन्हें आपके खिलाफ "जीत" का सुख लेने दीजिए क्योंकि वे पहले ही ऑफर पर आपसे मोलभाव कर लेते हैं। सबसे ज़रूरी बात, उनसे बात करते समय हमेशा चापलूसी से पेश आइए। बहुत चापलूसी से। उनका अहंकार उन्हें बहुत प्रिय है।' नरसिम्हन, जो खुद एक सरकारी कर्मचारी थे, हालाँकि ईमानदार थे,

उन्हें बुरा लगा। उन्होंने स्पष्टीकरण मांगने पर खेद व्यक्त किया। लेकिन सोमेश्वर की रणनीति कारगर साबित हुई थी, इसलिए उन्होंने आगे कोई टिप्पणी नहीं की।

नरसिम्हन ने पूछा, 'अब हम कहां जाएं, सर?'

'शहर के दूसरे छोर पर। एक ख़ास व्यापारी से मिलने।' सोमेश्वर ने अपनी बनियान से बंधी थैली से एक कागज़ निकाला।

यह एक फटी हुई हुंडी थी, जिसकी कीमत सिर्फ़ एक रुपया थी। सोमेश्वर के हाथ में रखे उस छोटे से वचन पत्र को देखकर नरसिंहन की भौंहें तन गईं । यह वैसे भी क्षतिग्रस्त हो चुकी थी क्योंकि सभी हुंडियों पर अंकित विशिष्ट पहचान संख्या भी फटी हुई थी। यह हुंडी अब मान्य नहीं थी। यह बेकार हो चुकी थी।

सोमेश्वर ने स्पष्ट किया, 'उसके पास दूसरा आधा हिस्सा है।' तो फिर इतना बेकार भी नहीं।

नरसिम्हन मुस्कुराए। " यह गुजराती व्यापारी बहुत चालाक है। अगर वह..."
यदि वह छोटा होता, तो उसे हमारी चोल सेना में जगह मिल जाती।

'चलो चलें।'

'जैसा आप कहें, श्रीमान,' नरसिंह ने कहा।

सोमेश्वर चोल-परमार सैनिकों की ओर मुड़े, अब भी व्यापारी की तरह अपने कर्मचारियों को निर्देश देते हुए। उन्होंने सिर हिलाया और सैनिक उठाने लगे।
टोकरे.

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 15

एकमात्र आशा

हिन्दू कुश पर्वतमाला में कहीं, अफ़ग़ानिस्तान

"हमारे लोग पिछड़ रहे हैं, पुला। हम इस पलायन से आने वाली कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार नहीं हैं। पहले भूख-प्यास, और अब यह मौसम।"

भागे हुए गुलामों के दल का नेता, पुला, बिना रुके पीछे मुड़कर देख रहा था। गुलामों से भगोड़ों में तब्दील हो चुके लोगों का एक विशाल दल चुपचाप उसके पीछे-पीछे चल रहा था। उनके सिर झुके हुए थे। बीच-बीच में कर्कश खाँसी और वीरान कराहें गिरती बर्फ की ठंडी नीरसता को तोड़ रही थीं।

पुला ने कहा, 'इस मौसम में देर से हुई बर्फबारी अप्रत्याशित है।'

सूरज सफेद बर्फ से ढके पहाड़ों और लोहे के पीछे डूब चुका था-

उदास आसमान पर धूसर बादल छाए हुए थे। पिछले कई दिनों से, ग़ज़नवी सल्तनत के मध्य क्षेत्रों में एक भयानक बर्फ़ीला तूफ़ान चल रहा था।

"हमें शायद बीमारियों से भी जूझना पड़ेगा," डिप्टी ने आगे कहा। उसने अपनी हथेलियों में गर्माहट के लिए फूंक मारी। "बर्फबारी से बुखार और शीतदंश हो गया है।" "अब तक हमने कितने लोगों को खोया है, ध्रुव?" पुला ने अपने अस्थायी डिप्टी से पूछा।

"चार लड़ाके, हमारे जैसे पूर्व सैनिक," ध्रुव ने अपने कम्बल को कंधों पर कसते हुए कहा। "पिछवाड़े के पहरेदारों ने अभी तक किसी के हताहत होने की सूचना नहीं दी है, हालाँकि मुझे लगता है कि यह बस समय की बात है। थकावट, भूख और चोट से मौतें होंगी। हमारे भोजन की तलाश में निकले दल हर दिन कम भोजन लेकर लौट रहे हैं। ये ठंडी, शुष्क ज़मीनें बिल्कुल भी पोषण देने वाली नहीं हैं, पुला, खासकर हम जैसे कमज़ोर भीड़ के लिए।"

पुला ने कहा, "समय एक ऐसी विलासिता है जो हमारे पास नहीं है। अगर कोई मर जाता है, तो हम न तो अंतिम संस्कार का बोझ खुद पर डाल सकते हैं और न ही मृतक को उठाकर ले जा सकते हैं।"

Machine Translated by Google

हमारे कंधों पर। लेकिन लाशें हमारे पीछा करने वालों के लिए रोटी के टुकड़ों के निशान की तरह होंगी...'

ध्रुव अपने नेता के साथ चलते हुए तनावपूर्ण शांति से उनकी बातें सुन रहा था।

पुला ने अपनी तलवार की मूठ पकड़ ली। "मुझे यकीन है कि सुल्तान ने हमारे पीछे एक शिकारी दल भेजा है। मुझे आश्चर्य है..." पुला के शब्द रुक गए। वह अपने डिप्टी को परेशान नहीं करना चाहता था।

उस रात किसी ने पुला और उसके आदमियों तक हथियार पहुंचा दिए थे।
शुरू में तो उसने अंदाज़ा लगाया था कि ग़ज़नी में कोई उनकी मदद करना चाहता है। और किसी को भी किसी उपहार में मिले घोड़े के मुँह में झाँकना नहीं चाहिए। पुला ने तुरंत ही हथियारों का इस्तेमाल अपने अनुयायियों और दूसरे गुलामों को भगाने की साज़िश रचने में कर दिया था। लेकिन अब उसे शक होने लगा था कि यह सब एक बड़ा जाल था। ग़ज़नी में हमारी मदद किसने की? और क्यों?

'श्रीमान, पूरे सम्मान के साथ...' ध्रुव ने पुला की विचार श्रृंखला को तोड़ते हुए कहा।
'क्या हमें ...'

"इसका सवाल ही नहीं उठता," पुला ने बीच में ही टोकते हुए कहा। "हम भारतीय ऐसा नहीं करते।"
हम उन बर्बर तुर्कों से बेहतर हैं। अगर हम धर्म का पालन नहीं करेंगे, तो मृत्यु के बाद हम अपने देवताओं और अपने पूर्वजों का सामना कैसे करेंगे ?' ध्रुव चुप हो गया। वह जो सुझाव देना चाहता था, वह स्पष्ट था। भागने वाले दल को

अलग हो जाना चाहिए। पुला की कमान में लगभग पचास लड़ाकू सैनिक थे। और कई धर्मों और राष्ट्रों के कुछ सौ गुलाम —हिंदू, बौद्ध, जैन, ईसाई, पारसी, यज़ीदी। और कुछ भारतीय मुसलमान भी, क्योंकि उन्होंने अन्य धर्मों के अपने साथी भारतीयों को छोड़ने से इनकार कर दिया था। ये गुलाम न तो अपनी रक्षा कर सकते थे और न ही अपना भरण-पोषण कर सकते थे। वे बस पेट भरने वाले मुँह और शरीर थे जिनकी रक्षा करनी थी, ताकि अगर ग़ज़नवी सैनिक उन्हें पकड़ लें तो वे बच न सकें। तर्कसंगत बात यह होगी कि वे अलग हो जाएँ, और पचास भारतीय सैनिक ग़ज़नवी क्षेत्र से तेज़ी से निकल जाएँ, ताकि बाद में और मज़बूत होकर लड़ने के लिए वापस आ सकें।

और प्रत्येक गुलाम अपनी रक्षा स्वयं कर सकता था।

पूर्व दासों को त्यागना शायद समझदारी भरा कदम था।
लेकिन ऐसा करना धार्मिक कार्य नहीं था। इसलिए, ऐसा नहीं किया जा सकता था—खासकर धर्म के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति द्वारा तो बिल्कुल नहीं।

ध्रुव एक अच्छा सैनिक था। उसने अपने सेनापति से और कोई सवाल नहीं किया।

'पुला!' एक युवक चिल्लाया और आगे चल रहे दो आदमियों के पास दौड़ा। 'पुला!
रुको!' पुला

और ध्रुव रुक गए और पीछे मुड़ गए, जिससे उनके अंदर एक प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई
दुखी लोगों का चलता-फिरता समूह, जो तुरंत रुक गया। कुछ

Machine Translated by Google

कुछ लोग ज़मीन पर गिर पड़े, जबकि कुछ लोग अपनी पंक्ति तोड़कर भटक गए। कारवां के अंत में, बचाई गई दासी यज़ादेह ने अपने पिता आरिफ़ को पुरुषों के एक समूह के पास बैठने में मदद की।

"क्या हुआ, ज़ैन?" पुला ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। "क्या कोई बीमार पड़ गया है?" "काश, यह इतना आसान होता," ज़ैन हुसैन ने हाँफते हुए जवाब दिया।

"करीब दस आदमी-औरतों का एक समूह हमसे अलग हो गया है। उन्होंने हमें छोड़ दिया है।" "हमें छोड़ दिया?!" ध्रुव ने अविश्वास से दोहराया। " हमें, अपने रक्षकों को, छोड़ दिया? इस पागल, हिंसा से भरे देश में?"

'मुझे डर है कि हमने उनमें से कुछ पर स्वतंत्रता थोप दी है , ध्रुव,' ज़ैन ने कहा।
हमने उन्हें उनके आरामदायक दायरे से बाहर निकाल दिया। वे ऐसा नहीं चाहते थे। उनमें से एक ईसाई इंजीनियर, बुट्रस, और उसका परिवार और दोस्त भी थे। बुट्रस हमेशा अपने बच्चों के पास खाने के लिए पर्याप्त भोजन न होने की शिकायत करता रहता था।

और वे सब लगातार शिकायत कर रहे थे कि हमने उनके बेहतर जीवन के अवसर को बर्बाद कर दिया है। सुल्तान ने मस्जिद का काम पूरा होने पर उन्हें नागरिकता देने का वादा किया था।' 'और ज़ाहिर है, इस प्रक्रिया में उन्हें अपने विश्वासों और विरासतों—अपने ईसा मसीह—को त्यागना होगा,' पुला ने तिरस्कारपूर्वक कहा।

'अपनी आत्मा का बलिदान उस आज़ादी और सम्मान के बदले में, जिसके बारे में उन्हें पता है कि शायद उन्हें नसीब नहीं होगा।' 'उन्होंने अपनी आज़ादी और सम्मान बहुत पहले ही खो दिया है, पुला।' ज़ैन ने कंधे उचका दिए। 'कई लोगों के लिए, एक धिम्मी—एक दूसरे दर्जे का नागरिक— होना इन तुर्क दरिंदों द्वारा बलात्कार, यातना और हत्या से बेहतर है।'

पुला ने सिर हिलाया। आप उन लोगों को कैसे बचाएँगे जो बचना ही नहीं चाहते?

लेकिन समस्या सिर्फ उन गुलामों को बचाने की नहीं थी।

'वे तुम्हारी जानकारी के बिना कैसे भाग गए?' पुला ने ज़ैन से पूछा।
'तुम्हें सब पर नज़र रखने और किसी को भी भटकने से रोकने का काम सौंपा गया था।' 'दया करो, पुला। हम सिर्फ़ पचास सैनिक हैं, थके हुए और भूखे, और हम नौ

सौ आतंकित और काँपते हुए पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की रखवाली कर रहे हैं। यह एक असंभव काम है। बुत्रुस और उसके गुरिल्ला चले गए हैं। बर्फ़ ने ज़रूर उन्हें गायब होने में मदद की होगी। चलो इसे स्वीकार कर लेते हैं।' 'काश भगोड़ों को थोड़ी शर्म आती और वे ग़ज़नी की ओर वापस न लौट जाते,' ध्रुव ने चिंतित होकर कहा। 'बर्फ़ एक अभिशाप रही है, लेकिन

Machine Translated by Google

इसने हमारे रास्ते भी छिपा दिए हैं। ये भगोड़े हमारे फ़ायदे को ख़त्म कर सकते हैं और शिकारियों को सीधे हमारे पास भेज सकते हैं।'

पुला ने आदेश दिया, "हमें गति बढ़ानी होगी। अब आराम करने का समय नहीं है।"
क्या हमारे पास पर्याप्त राशन है, ज़ैन? क्या यह कुछ समय तक चलेगा?'

'हाँ, उन्हें ऐसा करना चाहिए,' ज़ैन ने कहा। 'जॉन अच्छा काम कर रहा है, भोजन ढूँढ़ रहा है।'
जो भी थोड़ी-बहुत मदद हमारे पास उपलब्ध है, उसी से काम चला लो।' जॉन, पुला की कमान में एक और भारतीय सैनिक था। 'लेकिन हमारे पास पीने का पानी खत्म हो रहा है।' 'अच्छा, बर्फ़ पड़ रही है,' ध्रुव ने याद दिलाया।

'ज़रूरत पड़े तो सबको जीभ बाहर निकालकर चलना चाहिए, ताकि बर्फ़ के टुकड़े पकड़ सकें। पुला सही कह रहा है। हमें चलते रहना चाहिए।'

ज़ैन हुसैन ने सिर हिलाया और मुड़ गया।

'उठो!' वह चिल्लाया और लाइन में टेढ़ा-मेढ़ा चलने लगा, जिससे गुलाम चौंक गए।
जो डेरा डालने के लिए तैयार थे। 'उठो सब! दुश्मन हमारे पीछे पड़ा है। हमें चलते रहना है। आराम नहीं! चलते रहो!'

पंक्ति के अंत में, यज़ादेह तुरंत आगे बढ़ने के लिए तैयार होकर उठा।
उठो, पिताजी। चलो...'

"मेलेक ताऊस, रहम करो..." आरिफ़ कराहते हुए अपने यज़ीदी ख़ुदा को पुकारा, जैसे ही वह खड़ा होने की कोशिश कर रहा था। "हम अभी बैठे ही थे..." यज़ादेह ने पीछे मुड़कर देखा। और सिहर उठा।



'हकीम, मुझे उससे पाँच मिनट मिलना है। शायद उससे भी कम।'
कृपया, कृपया, मेरे भाई, 'ख्वाजा हसन ने विनती की।

कौसरी जहाँ के अंगरक्षक दल का मुखिया भावशून्य भाव से प्रधानमंत्री की ओर देख रहा था। वह रानी के निजी कक्ष के द्वार पर एक विशाल सागौन के पेड़ की तरह खड़ा था। स्थिर। अविचल।

ख्वाजा हसन ने नम आंखों से दयनीय ढंग से विनती की।

"रानी को अब परेशान नहीं किया जा सकता," खोजे ने दृढ़ता से कहा। "वह आराम कर रही हैं।" ख्वाजा हसन ने

हिलने से इनकार कर दिया। "हकीम, प्लीज़! क्या तुम पागल हो, हसन?" हकीम ... कृपया ...'

ने पूछा, आखिरकार उसका धैर्य जवाब दे गया। शक्तिशाली रानी की बात सुनने वाले पराक्रमी योद्धा-हिजड़े को फारसी प्रधानमंत्री के साथ विनम्र होने की कोई ज़रूरत महसूस नहीं हुई। "आप हमेशा इस अधर्मी समय पर क्यों आते हैं? सूर्योदय तीन घंटे दूर है!"

Machine Translated by Google

ख्वाजा हसन ने कहा, 'यह एकमात्र ऐसा समय है जब मैं पूरी गोपनीयता बरतता हूं।'
"तुम समझ रहे हो। वह भी समझती है। सल्तनत के सच्चे वफ़ादार होने के नाते, मैं उसकी मदद कर सकता हूँ!" हकीम ने
बनावटी उदासीनता से उसकी ओर देखा। वह हिजड़ा पिछले एक हफ़्ते से ख़्वाजा हसन की देर रात की दुस्साहसिक गुज़ारिशों—आधी रात के तीन घंटे बाद और सूर्योदय से तीन घंटे पहले—को ठुकरा रहा था कि वह रानी से बात करे। अजीब बात यह थी कि उसने दिन में मुलाक़ात करने की कोई कोशिश नहीं की।

या तो कोई साजिश चल रही है—या फिर कोई सचमुच भयानक रहस्य है
जिसे ख्वाजा हसन साझा करना चाहते हैं।
'मैं अब उसे परेशान नहीं कर सकता,' हिजड़े ने दृढ़ता से कहा। 'वह आराम कर रही है।'
या तो संदेश मेरे पास छोड़ दो या ऐसे समय पर वापस आओ जब तुम्हें मुझसे बात करने की जरूरत न हो।'

"संदेश तुम्हारे पास छोड़ दूँ?" ख्वाजा हसन ने मुँह बनाया। "बिल्कुल नहीं! मेरा काम पूरी तरह गोपनीय है, और यह सिर्फ़ रानी के साथ ही हो सकता है। क्या तुम्हें यकीन है कि वह आराम कर रही होंगी? मैं पर्दों के पीछे से उनकी आवाज़ सुन सकता हूँ। ऐसा लग रहा है जैसे वह... अपने कमरे में किसी से बात कर रही हों," उन्होंने ऊँची आवाज़ में कहा, उम्मीद करते हुए कि उनकी आवाज़ पर्दों के पार कमरे तक पहुँच जाएगी।

मानो प्रतिक्रियास्वरूप कमरे के अंदर से आती धीमी आवाज अचानक शांत हो गई हो।
अजीब सी खामोशी छा गई। तनाव से भरा हुआ।
'हमारे बड़बड़ाने से शायद महिला परेशान हो गई होगी और वह बड़बड़ाने लगी होगी।
सो रही है,' हकीम फुसफुसाया। 'या शायद वह नमाज़ पढ़ रही होगी। तुम्हारा क्या काम!'
आप मेरे पास संदेश छोड़ सकते हैं या यूँ ही चले जाइए। चुनाव आपका है।'
'ठीक है!' प्रधानमंत्री ने हार मान ली। 'ठीक है! मैं जाऊँगा। लेकिन मैं वापस आऊँगा, मैं
मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ। किसी रात तुम मुझे अंदर आने दोगे। मुझे यकीन है कि तुमने रानी को भी नहीं बताया होगा कि मैं उनसे मिलने आ रहा हूँ। वह स्थिति की गंभीरता समझ जातीं और मुझसे मिलतीं।'
ख्वाजा हसन मुड़े और तेज़ी से डगमगाते हुए ड्योढ़ी से बाहर निकल गए।

वह अपनी सामान्य धीमी वालरस जैसी चाल के बजाय, पेंगुइन जैसी गति से चल सकता था। हकीम ने आँखें घुमाईं और आह भरते हुए सिर हिलाया।
'वह चला गया है,' उसने पर्दे वाले दरवाजे से फुसफुसाते हुए कहा।
पर्दे हट गए। रानी बाहर निकली। उसके लहराते गेहुँए बाल उसके चेहरे को घेरे हुए थे और उसकी पीठ पर लहराते हुए उसके कूल्हों को छू रहे थे। गुलाबी रंग की एक गर्म नाइट ड्रेस पहने और धड़ पर एक ऊनी शॉल ओढ़े, उसने अपनी रीढ़ की हड्डी में एक सिहरन महसूस की। उसका चेहरा राख जैसा था, सिवाय उस लाल चोट के जो उसके बाएँ माथे के ऊपर शुरू हुई और उसके बालों में गायब हो गई।

Machine Translated by Google

'उसे संदेश क्यों नहीं मिलता?' उसने चिंतित होकर फुसफुसाया। 'उसे संदेश क्यों नहीं मिलता?'
क्या वह इसी समय यहाँ आता रहता है? खासकर हर रात इसी समय !
क्या ऐसा हो सकता है...'

'वह मूर्ख है, हे रानी,' हिजड़े ने आश्वस्त किया। 'उसे कुछ नहीं पता।'
शायद उसके इरादे भी सच्चे हों, बावजूद इसके कि उसकी वफ़ादारी की अफवाह... तुम जानते हो कौन?' 'मुझे पता है,' कौसरी जहाँ ने अपनी शॉल कसकर लपेटते हुए

जवाब दिया। 'इसीलिए मैंने रात-रात भर उससे मिलने से इनकार कर दिया है। मैं उस रखवाले को जानती हूँ जिसके पिंजरे से यह पक्षी बार-बार भागता है।' 'लेकिन अगर वह हमारी मदद करने की कोशिश कर रहा हो, तो क्या होगा, मेरी औरत...' हकीम ने सुझाव दिया।

"क्या होगा अगर यह पक्षी सचमुच अपनी कैद से नाराज़ है और अपनी आज़ादी ख़रीदने की कोशिश कर रहा है?" "यह पक्षी चाहे जो भी

गाना गाए, मैं उस पर भरोसा नहीं करूँगी, हकीम," रानी ने दृढ़ता से कहा। "ख्वाजा हसन एक जीवित बचे हुए व्यक्ति हैं। वह तुम्हारे और मेरे आने से पहले से ही यहाँ थे, और हमारे जाने के बाद भी यहीं रहेंगे। वह जीवित रहने के लिए किसी को भी धोखा दे सकते हैं। किसी को भी।"



ख्वाजा हसन दो गुलामों की मदद से अपने घोड़े पर सवार हुए। एक तीसरा आदमी भी घोड़े पर सवार होकर, किनारे पर इंतज़ार कर रहा था और बेसब्री से देख रहा था कि उन दोनों गुलामों को उस बेढंगे प्रधानमंत्री को घोड़े पर चढ़ाने में कितना समय और कितनी मेहनत लग रही होगी।

ख्वाजा हसन अंततः अपने बोझ से लदे घोड़े पर बैठ गए, फिर महल की दूसरी मंजिल पर स्थित रानी की खिड़की से आती पीली रोशनी की धुंधली चमक को देखा, और अंधेरे में कांपने लगे।

कौसरी जहाँ जाग रही थी।

फ़ारसी प्रधानमंत्री के दाँत स्पेनिश कैस्टेनेट की तरह बज रहे थे।
उसने अपने फर वाले मफलर को कानों पर कसकर लपेटा और अपनी एड़ियाँ घोड़े के पेट में गड़ा दीं। तीन आदमी उसके साथ सवार थे, एक आगे और एक पीछे।

तीसरा व्यक्ति उसके ठीक बगल में सवार था - गवर्नर-मुफ्ती, इस्माइल।

इस्माइल ने पूछा, 'तुमने क्या देखा और क्या सुना?'

"मैं फिर नाकाम हो गया, हुज़ूर," ख्वाजा हसन ने फुसफुसाते हुए कहा, घोड़े पर चढ़ने की कोशिशों से अभी भी हाँफ रहे थे। "वह बदहवास हिजड़ा हिलने को तैयार नहीं है।" उन्होंने अपनी पीठ सीधी की। मोटे लोगों की पीठ में दर्द होना आम बात है।

Machine Translated by Google

समस्याएँ थीं, और घोड़े पर सवार होने से कोई मदद नहीं मिलती। 'और वह भयानक आधा-आदमी हकीम मेरी मदद क्यों करेगा? इस समय रानी से मुलाक़ात करना बेवकूफ़ी है, बल्कि ख़तरनाक भी। अगर सुल्तान को पता चला कि हम आधी रात को उसकी बीवी को परेशान कर रहे हैं, तो वह हमारी खाल उधेड़ देगा।' 'हसन,' इस्माइल ने कहा, 'पिछले हफ़्ते में हमने बहुत कुछ सीखा है।

रात के इस वक़्त कौसरी जहाँ के शयनकक्ष में कुछ गड़बड़ चल रही है। क्या तुमने उसकी आवाज़ फिर सुनी?' 'उतनी ही साफ़, जितनी पिछली रातों में सुनी थी,' ख़्वाजा हसन ने कहा। 'क्या?

" क्या आपको लगता है कि वह क्या कर रही है, महाराज? हिजड़े का कहना है कि वह नींद में बुदबुदा रही है। या हो सकता है कि वह प्रार्थना कर रही हो... इस समय प्रार्थना कर रही हो?! वह असल में क्या कर रही है? किसी जासूस से मिल रही है? किसी षड्यंत्रकारी से? किसी प्रेमी से?"

इस्माइल ने कहा, "यह नमाज़ का समय नहीं है। वह जो भी कर रही है, वह संदिग्ध है। यह उस चुड़ैल को नीचे लाने का सबसे अच्छा मौका है।"
हसन, तुमने रानी की देर रात की गतिविधियों की ओर मेरा ध्यान आकर्षित करके अच्छा किया। सचमुच बहुत अच्छा किया।' 'आपकी गहन और तीक्ष्ण बुद्धि ने मुझे उसकी गतिविधियों

की कपटपूर्णता से अवगत करा दिया है, मेरे प्रभु,' हसन ने दिखावटी विनम्रता के साथ कहा, उसका चेहरा और आवाज दासतापूर्ण सम्मान का लगभग पूर्ण चित्रण थे।

लेकिन यह पर्याप्त रूप से परिपूर्ण नहीं है।

इस्माइल उसकी लगातार चापलूसी से चिढ़ रहा था, जो इतनी साफ़ थी कि कोई नासमझ भी उसे नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता था। "मेरी गहरी और तीक्ष्ण बुद्धि के बारे में ये बकवास छोड़ो," इस्माइल चिल्लाया।

'पहले ही भूल गया हूँ महाराज।' 'बस मुझे यह

जानकारी दे दीजिए कि हर रात इस समय उसके कक्ष में क्या होता है।' 'काश आप मुझे बता सकें कि यह कैसे करना है, महान गवर्नर। मेरे पास

मैंने अपनी सारी तरकीबें आज़मा लीं। मैं असमंजस में हूँ।'

इस्माइल के पास कोई जवाब नहीं था। उसने आगे देखा और अपनी लगाम कस ली—और भी ज़्यादा चिढ़कर।

ख्वाजा हसन ने मौके का फायदा उठाया। जब एक बुद्धिमान जानवर को घेर लिया जाता है
किसी अधिक शक्तिशाली शिकारी द्वारा हमला किए जाने पर, सबसे अच्छी रणनीति यह है कि शिकारी का ध्यान किसी अन्य लक्ष्य की ओर मोड़ दिया जाए।

'शायद कोई गुप्त प्रवेश द्वार हो...' ख्वाजा हसन फुसफुसाए। मानो वह खुद को कुछ सुझा रहे हों।

और प्रधानमंत्री अपनी आँखों के कोने से देख सकते थे कि ध्यान भटकाने की कोशिश कामयाब रही। गवर्नर-मुफ़्ती इस्माइल साफ़ तौर पर अपनी कही बात पर विचार कर रहे थे। अब ध्यान किसी और पर जाएगा।

Machine Translated by Google

ख्वाजा हसन मुस्कुराए, बस थोड़ा सा। शुक्र है खुदा का।

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 16

न्याय की कीमत

हिन्दू कुश पर्वतमाला में कहीं, अफ़ग़ानिस्तान

इंजीनियर बुट्रस ने अपनी पत्नी को देखा जो उसके पीछे-पीछे अपने बच्चों से घिरी हुई थी। बुरी तरह थके हुए, वे बर्फ की मोटी परत से ढकी ज़मीन पर घसीटते हुए आगे बढ़ रहे थे। बर्फ के पिघलने और जमने के तेज़ चक्रों से बर्फ के टुकड़े बन गए थे। हवा बहुत ठंडी थी।

'चलो! चलो!' बुट्रस ने अपने दोस्तों और परिवार से आग्रह किया। 'बर्फबारी रुक गया है। ईश्वर महान है! चलो!' दस लोगों की वह रंग-बिरंगी भीड़ —जो भागे हुए गुलामों के दल से भागे हुए थे—गज़नी वापस जा रही थी। बुतरस ने उन्हें यकीन दिला दिया था कि वापसी का यह प्रयास, चाहे कितना भी खतरनाक क्यों न हो, उनके प्रयासों के लायक होगा। आख़िरकार, महमूद ने मस्जिद के पुनर्निर्माण के बाद उन्हें आज़ादी का वादा किया था। बेहतर यही था कि वापस जाकर गवर्नर-मुफ़्ती के सामने आत्मसमर्पण कर दिया जाए।

बुतरस को गवर्नर-मुफ़्ती के साथ बनी अच्छी छवि ने प्रेरित किया था। मस्जिद का काम स्वर्ग से मन्ना की तरह आया था, और वह कुछ आज़ादी-पसंद बेकाबू लोगों की बेतहाशा लालसाओं के कारण अपनी स्थिरता और अपने बच्चों के अच्छे भविष्य की संभावनाओं को बर्बाद नहीं करना चाहता था। उसे इस्माइल की सुरक्षा और संरक्षण से भागकर पागलों की भीड़ द्वारा उकसाए जाने का बहुत अफ़सोस था।

राज्यपाल-मुफ्ती चाहते हैं कि मैं यह सुनिश्चित करूं कि मस्जिद की वास्तुकला डिज़ाइन बिलकुल सही और सटीक हैं। वह मेरी रक्षा करेगा।

"मुझे लगता है कि आगे एक गाँव दिखाई दे रहा है। हमें जल्द ही कुछ खाना और आराम मिल जाएगा," बुट्रस ने कहा।

समूह ने गति बढ़ा दी। अचानक, उन्होंने एक धूसर पिंड को उभरते देखा। क्षितिज से.

घुड़सवार.

Machine Translated by Google

कठिन सवारी.

वे सीधे छोटे समूह की ओर बढ़ रहे थे।

बटरस की पत्नी दौड़कर उसके पास आई और उसका हाथ पकड़ लिया, और जोर से चिल्लाई, 'ओह!
हे प्रभु! हमें बचाओ। यीशु, हमें बचाओ।'

बटरस ने अपना हाथ झटक लिया और अपनी आँखों पर परछाई डाल ली ताकि उसकी चमक कम हो सके।
सूरज. उसने आगे देखा.

घोड़े तेज़ी से आगे बढ़ रहे थे। सवारों ने जो रंग पहने थे,
अब दिखाई दे रहे थे।

'बटरस!' आर्किटेक्ट की पत्नी घुटनों के बल गिरते हुए चीखी। दहशत फैल गई।
उसका दिल धड़क रहा था, जैसे ही उसने उन डरावने रंगों को घूरा और अपने जुड़वाँ बच्चों को अपनी ओर खींचा।
सात साल के बच्चे उसकी गोद में दुबके हुए थे। उसने सिर झुका लिया और ज़ोर-ज़ोर से प्रार्थना करने लगी। एक
त्वरित, पीड़ारहित मृत्यु के लिए प्रार्थना कर रही थी।

बटरस की पार्टी के अधिक से अधिक लोग अब रंग देख सकते थे
योद्धा पहने हुए थे।

लोगों में चीख-पुकार मच गई, 'भागो!' लेकिन कोई हिला तक नहीं।

हालांकि, अजीब बात यह थी कि बटरस मुस्कुरा रहा था।

वह भी रंगों को पहचान सकता था। ग़ज़नी के साधारण सैनिक
सेना के सभी सैनिक हरे रंग के अंगरखे पहनते थे, लेकिन ये घुड़सवार योद्धा अलग थे। शांतिकाल में, वे आमतौर पर सफेद अंगरखे पहनते थे। लेकिन जब वे युद्ध में जाते थे, तो वे पूरी तरह काले कपड़े पहनते थे, और उनकी आस्तीन पर सफेद धागे से दहाड़ते हुए शेर की तस्वीर कशीदाकारी होती थी।

ये सुल्तान महमूद के निजी रक्षक थे, चुने हुए कुलीन योद्धा
वे भागे हुए गुलामों का पीछा कर रहे थे।

बुतरस ने धीरे से फुसफुसाया, 'अबू कासिम।' तुर्क कसाप-ए-
हिंद। भारत का तुर्की कसाई।

बटरस की पत्नी अब ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रही थी, 'कसाई ने हमें ढूँढ़ लिया है,'
बुत्रस! हम मर गए! मेरे बच्चे मर गए!' भगोड़ों का फटा-पुराना झुंड मानो
लकवाग्रस्त हो गया।

'भागो!' लोग एक-दूसरे से बचने के लिए चिल्ला रहे थे। लेकिन कोई भी भाग नहीं रहा था।
असल में चल नहीं रहे थे। वे कहाँ भागते? ये थके हुए, भूखे गुलाम घोड़ों से आगे नहीं भाग सकते थे। और अगर भाग भी जाते, तो छिपने की कोई जगह नहीं थी।

'बटरस!' उसकी पत्नी चीखी। 'बटरस! हम मर गए!' 'चुप रहो, जेसिका।' बेफिक्र बटरस ने

अपनी पत्नी को शांत करने की कोशिश की। 'क्या तुम्हें दिखाई नहीं दे रहा? हम बच गए! हम सुल्तान के आदमियों को बता देंगे कि हम कभी नहीं...'

Machine Translated by Google

भागना चाहते थे। हमें मजबूर होना पड़ा। उन्हें हमारी बात माननी ही पड़ेगी ! हम ग़ज़नी की ओर बढ़ रहे हैं, है ना?' ज़रूर, गवर्नर-मुफ़्ती इस्माइल ने उन्हें मेरे और मेरे परिवार की सुरक्षा सुनिश्चित करने के

निर्देश दिए होंगे। अच्छा हुआ कि मैं दूसरे भागे हुए ग़ुलामों के साथ नहीं हूँ—मैं इस्माइल के प्रति अपनी वफ़ादारी साबित कर सकता हूँ।

उसकी पत्नी को यकीन नहीं हुआ। अभी भी बेचैनी थी। 'हम सुल्तान के आदमियों को अपनी जान बख्शने के लिए मना तो सकते हैं, लेकिन वे हमसे बाकियों के बारे में पूछताछ करेंगे।'
तुम क्या करोगे? क्या तुम उन्हें धोखा दोगे? ऐसे बहुत से लोग हैं जो अपने सताने वालों के हाथों में दोबारा पड़ने से बेहतर मरना पसंद करेंगे।'

बटरस ने सिर हिलाया। 'उन मूर्खों को तो कोई उम्मीद ही नहीं है। पुला तो मूर्खता की हद तक बहादुर है...'

लेकिन मैं उनके

बारे में कभी नहीं बताऊँगा। ईसा मसीह मुझे देख रहे हैं। मैं उनके बारे में कभी नहीं बताऊँगा।' वास्तुकार ने ग़ज़नवी घुड़सवारों की ओर

बेतहाशा हाथ हिलाए।
उसके आस-पास के कुछ लोग दयनीय आशा से हाथ हिलाते हुए उसके साथ शामिल हो गए। बाकी लोग हारकर ज़मीन पर गिर पड़े। बुत्रुस की पत्नी अपनी जुड़वां बेटी और बेटे को गोद में लिए प्रभु की प्रार्थना बुदबुदा रही थी।

दो सौ गजनवी घुड़सवारों ने गति धीमी कर दी और दो भागों में बंट गए
जैसे ही वे फटेहाल झुंड के पास पहुँचे, उन्होंने दो स्तम्भों में इकठ्ठा होकर भागे हुए लोगों के चारों ओर घेरा बना लिया और सुल्तान की जय-जयकार करते हुए धीमी गड़गड़ाहट शुरू कर दी। वे विपरीत दिशाओं में चंचलता से आगे बढ़ते रहे, मानो दो बड़े साँप मांस के टुकड़े के चारों ओर चक्कर लगा रहे हों। बुत्रुस और उसके लोग पूरी तरह से समर्पण भाव से देख रहे थे।

तीन घुड़सवार चापों से अलग होकर समूह की ओर दौड़े। बुत्रस आत्मविश्वास से भरी मुस्कान के साथ अपनी जगह पर डटा रहा। उसने तुर्की घुड़सवारों के क्रूर नेता को संबोधित किया।

'प्रणाम, महाराज!' वह घुटनों के बल गिरकर उस घुड़सवार राक्षस के आगे दंडवत होकर चिल्लाया। भागने वाले अन्य लोगों ने भी, जिनमें उसकी पत्नी और दो बच्चे भी शामिल थे, पूरी तरह आत्मसमर्पण कर दिया।

'उठो, सूअरों!' अबू कासिम दहाड़ा।

वास्तुकार और उसके साथी तुरंत अपने पैरों पर खड़े हो गए, उनके
हाथ जोड़कर प्रार्थना की।

'तुम ही वो गुलाम हो जो भाग गए।' कासिम मुस्कुराया। 'लेकिन इतने कम क्यों? मैं तो...'
बताया गया था कि लगभग एक हज़ार लोग थे।' 'हम उन बाग़ियों से

बच निकले, महाराज,' बटरस ने उस दरिंदे के पास पहुँचते हुए धीरे से कहा। 'और भी बहुत से हैं। उन्होंने हमें अपने साथ
रहने के लिए मजबूर किया। लेकिन हम किसी तरह बच निकले और वापस अपने घर जा रहे थे।

Machine Translated by Google

ग़ज़नी। मज़दूर शिविर में जुंदीन-उल-दीन के नरसंहार में हमारी कोई भूमिका नहीं थी, महाराज,' उसने ज़ोर से कहा। 'हमें हमारी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ पकड़ा गया था।' 'धिक्कार है कायर,' क़ासिम ने अपने आस-पास के आदमियों को हँसी भरी नज़रों से देखते हुए कहा। 'उसे लगता है कि इस बेतुकी कहानी से वो मौत से बच जाएगा। ये ज़रूर कोई भटका हुआ आदमी होगा जो पीछे छूट गया और बर्फ़ीले तूफ़ान में खो गया।' तुर्की योद्धा खुशी से हँस पड़े।

बटरस का दिल घबराहट से धड़कने लगा। उसका फैसला शायद एक बहुत बड़ी भूल। 'कृपया, महाराज,' उसने विनती की। 'मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि हमारे इरादे नेक हैं। मैं बुतरस हूँ। जब हम ग़ज़नी वापस पहुँचेंगे, तो आप गवर्नर-मुफ़्ती से पूछ सकते हैं। वह मुझे अच्छी तरह जानते हैं। मैं जामा मस्जिद की मरम्मत का मुख्य वास्तुकार और इंजीनियर हूँ। सुल्तान के प्रति मेरी वफ़ादारी पूरी है! और मैंने पहले ही इस्लाम धर्म अपना लिया है। अब मैं एकमात्र सच्चे धर्म का अनुयायी हूँ।' तुर्कों को कैसे पता चलेगा कि मैं निजी तौर पर ईसा मसीह की पूजा करता हूँ? मुझे यकीन है कि ईसा मसीह समझ जाएँगे। मैं यह अपने परिवार के लिए कर रहा हूँ।

"चुप हो जा कुत्ते!" अबू क़ासिम अपने घोड़े से कूदते हुए दहाड़ा। उसके कई सैनिक उसके पीछे-पीछे घोड़े से उतर गए।

अबू क़ासिम यूँ ही टहलता हुआ बुतरस की तरफ़ बढ़ा। उसने अपने साथी तुर्कों की तरफ़ देखा, हँसी-ठिठोली का आदान-प्रदान। जब वह ईसाई के पास पहुँचा, तो अबू क़ासिम ने अचानक हाथ बढ़ाकर उसका गला पकड़ लिया। आर्किटेक्ट की पत्नी कराह उठी और चुप हो गई। उसने अपने बच्चों के चेहरे अपने शरीर से चिपका लिए, लगभग उनका दम घुटने लगा। वे चीख़ने लगे। उसने ज़ोर से दबाया।

“यज़ादेह कौन है?” अबू क़ासिम गुर्राया। “क्या वो यहाँ है?” उसने देखा। काँपती हुई और जंगली आँखों वाली एक काँपती हुई लाश। 'मुझे कोई सुंदर लड़की नहीं दिख रही।' उसने बटरस की पत्नी की तरफ़ देखा और ज़मीन पर थूक दिया।

'नहीं...' बुत्रस हांफ उठा। उसका चेहरा नीला पड़ गया था। अबू क़ासिम हमारे साथ रिहा हो गया... हुज़ूर!' 'तो फिर मुझे तुम्हारी कोई ज़रूरत उसकी पकड़। 'यज़ादेह नहीं है ... नहीं, कमीने,' ग़ज़नवी सेनापति ने व्यंग्य किया।

भारत के तुर्क कसाई ने बेरहमी से बटरस की बांह मरोड़ दी, जबकि आर्किटेक्ट बेतहाशा दर्द से चीखा। लगभग अलौकिक शक्ति से, अबू क़ासिम ने बुतरस की बांह को इतनी ज़ोर से मरोड़ा और झटका दिया कि बेचारे क्रिश्चियन की बांह अपने जोड़ से अलग होकर गिर पड़ी।

बटरस ज़मीन पर गिर पड़ा। उसका दाहिना हाथ किसी ढीले पेंडुलम की तरह लटक रहा था, एक अस्वाभाविक कोण पर। वह दर्द से बेतरतीब चीख़ रहा था, लगभग बेहोशी की कगार पर। वह एक सीधा-सादा, बुद्धिजीवी व्यक्ति था।
योद्धा नहीं। दर्द सहने के लिए नहीं बना। उसकी पत्नी जेसिका, अपने पति से थोड़ी दूरी पर घुटनों के बल बैठी थी और किसी भूत की तरह चीख रही थी।

Machine Translated by Google

अबू क़ासिम ने जेसिका की तरफ़ देखा। और फिर अपने सिपाहियों की तरफ़ मुड़ा। 'लाओ!
वह औरत यहाँ है.'

अपनी पत्नी और बच्चों के लिए खतरे ने बटरस को अचानक जीवन में वापस ला दिया।
ज़्यादातर पुरुष जो कुछ भी करते हैं, वो सिर्फ़ अपनी पत्नी और बच्चों के लिए करते हैं।
वे अपना सब कुछ त्याग देंगे, सिर्फ़ अपनी पत्नियों और बच्चों के लिए। उनका स्वास्थ्य, उनका
अपने शरीर, अपने मन, अपनी आत्मा और यहाँ तक कि अपने नैतिक मूल्यों का भी त्याग कर देंगे।
सब। केवल अपनी पत्नियों और बच्चों के लिए।

'मैं तुम्हें बताता हूं कि पत्नी और बच्चे... जाओ... महाराज,' बटरस ने विनती की। 'और मैं
... वे कहां हैं... यज़ादेह कहां है...' ... राज्यपाल की महिला ...

ग़ज़नवी सेनापति मुस्कुराया, 'आखिरकार।' उसने अपनी ओर देखा।
लेफ्टिनेंट। 'मैंने तुम्हें इन काफ़िरों के बारे में क्या बताया था? कोई ताकत नहीं। कुछ
ज़ोरदार प्रहारों से वे पूरी तरह हार मान लेते हैं। वे गुलाम बनने के लिए ही पैदा हुए हैं। हम
' मोमिन ही दुनिया में असली मर्द हैं।' पीछे मुड़कर डरे हुए चेहरे पर
बुतरस, अबू क़ासिम ने आगे कहा, "अच्छा बताओ। वे किस तरफ़ गए? कैसे?"
वे कितनी दूर हैं? उनमें से कितने प्रशिक्षित सैनिक हैं? बताओ मुझे
सब कुछ।'

'पश्चिम की ओर...' वास्तुकार ने अपनी अक्षुण्ण बायीं भुजा से इशारा करते हुए कहा।
'वे फारस की ओर जा रहे हैं... हो सकता है कि उनके समूह टूट गए हों... केवल लगभग दस पूर्व सैनिक ... छोटे में
हैं... महाराज।'

आर्किटेक्ट की पत्नी ने एक हल्की साँस छोड़ी। उसकी छाती शांति से फूल गई।
गर्व। उसका पति एक अच्छा इंसान था। वह हमेशा से यह जानती थी। वह एक मर्द था
सम्मान का। उसने जो कुछ भी किया, सिर्फ़ बच्चों के लिए किया। सिर्फ़ बच्चों के लिए
बच्चों। लेकिन इस महत्वपूर्ण समय पर, उन्होंने सच्चाई का खुलासा नहीं किया था: कि
भागे हुए लोग दक्षिण की ओर, भारत की ओर जा रहे थे।

वह वफ़ादार था। वह एक अच्छा आदमी था।

जेसिका ने धीरे से आह भरी। वे सम्मान के साथ मरेंगे। उन्हें नहीं मारा जाएगा।
जब उनके उद्धारकर्ता लौट आए तो वे शर्मिंदा हुए। यीशु मसीह उन्हें स्वीकार करेंगे
प्यार से।

अबू क़ासिम बुतरस को घूरता रहा। थोड़ी देर चुप रहा। जब
वह बोला, उसकी आवाज़ डरावनी सी शांत थी। 'क्या तुम्हें यकीन है कि तुम ऐसा ही करोगे?'

'यह सच है कसाई ने ... सर ई ...'

अपनी तलवार म्यान से बाहर निकाली।

'दया आती है,' उसने नाटकीय अंदाज़ में थूका। 'दया आती है कि तुम अपनी...
आखिरी पल। मुझे उम्मीद है कि तुम्हारा ईसा तुम्हें माफ़ कर देगा। क्योंकि मेरा अल्लाह कभी माफ़ नहीं करेगा।'

बटरस ने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपरिहार्य की प्रतीक्षा करने लगा।

'क्या तुम जानना नहीं चाहते कि मुझे कैसे पता कि तुमने झूठ बोला था?' अबू कासिम ने पूछा।

Machine Translated by Google

बटरस चुप रहा। उसकी साँसें तेज़ हो गईं। दर्द उस पर हावी हो गया।
इन्द्रियाँ.

'बटर, बग्गर, बटरस या जो भी आपका नाम है, आप एक हो सकते हैं
आर्किटेक्ट, लेकिन तुम ज़्यादा होशियार नहीं हो। तुमने और तुम्हारे दल ने बर्फ़ में जो निशान छोड़े हैं, वे दक्षिण से आए हैं। ज़ाहिर है, जिन लोगों के साथ तुमने अपनी यात्रा शुरू की थी, वे पश्चिम नहीं जा सकते थे। तुम और तुम्हारे दल के भटके हुए, भगोड़े, भागे हुए, जो भी हो—तुमने असल में मेरी मदद की है। इस शापित लगातार बर्फबारी ने तुम्हारे निशानों को ढक दिया था। अब मैं तुम्हें नए निशानों के लिए धन्यवाद देता हूँ। ये मुझे मेरे शिकार तक ले जाएँगे।'

बुत्रस भय से कांप रहा था।

"तुमने मुझसे झूठ बोलने की हिम्मत की? तुर्क कसाब-ए-हिंद से झूठ बोलने की?" अबू क़ासिम
ने अपनी तलवार क्रूरता से घुमाई। वार इतना ज़बरदस्त था कि
बटरस को कंधे से लेकर कमर तक दो टुकड़ों में काट दिया। लगभग।
भयावह चीखें हवा में गूंज रही थीं, क़ासिम ने अपना चाकू निकाला और फिर वार किया। और फिर। और फिर। जैसे कोई गंभीर कसाई मांस काट रहा हो। बुतरस की पत्नी और दूसरे असहाय लोगों की चीखें, खुश तुर्कों की विजयी गर्जना में अपनी भयावह प्रतिध्वनि पा रही थीं।

कुछ कैदी बेतहाशा दौड़े और प्रसन्नचित्त घुड़सवारों के घेरे में जा गिरे। कुछ अन्य जड़वत खड़े अपने भयानक अंत की प्रतीक्षा कर रहे थे।

लेकिन अबू क़ासिम नहीं रुका। उसने खून के प्यासे उन्माद में वास्तुकार के शरीर को नोच-नोच कर नोच डाला। दूसरे ग़ज़नवी सैनिक घोड़े से उतरे और डरे हुए पुरुषों और महिलाओं की ओर बढ़े। अपनी तलवारें खींच लीं। रास्ते में आने वाले सभी को मार डाला। बाकी सैनिक बर्फ़ की धुंध और गरजते हुए खुरों के बीच गोल-गोल सरपट दौड़ने लगे। ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए, जैसा कि वे अक्सर कत्लेआम के दौरान जश्न मनाते हुए करते थे।

बटरस की पत्नी जेसिका ने अपने बच्चों को ज़मीन पर दबा दिया और उन्हें अपने शरीर से किसी खुरदुरी ढाल की तरह ढक लिया। यहाँ तक कि जब उसे बेरहमी से चाकू मारा गया और काटा गया, तब भी वह हिली नहीं। उसने अपनी आखिरी साँस तक अपने नन्हे बच्चों की रक्षा की।

जल्द ही सब कुछ खत्म हो गया। चीर-फाड़ बंद हो गई क्योंकि मानव मांस और हड्डियों का वह मुड़ा हुआ ढेर, जो कभी बुतरस था, लाल बर्फ से घिरे एक विशाल लाल गड्ढे में पड़ा था। अबू क़ासिम ने उस क्षत-विक्षत लाश को एक तरफ़ धकेल दिया। उसने चारों ओर देखा। सभी वयस्क गुलाम मर चुके थे। उनमें से ज़्यादातर को इतने बार काटा गया था कि उनकी पहचान करना मुश्किल था।

उस भयानक मांस, हड्डियों, नसों और खून के गड्ढे में, डरे हुए नन्हे जुड़वाँ बच्चे लेटे थे। सिर्फ़ सात साल के। सिर्फ़ सात साल के।

Machine Translated by Google

लड़का और लड़की अबू क़ासिम को गोल-गोल, स्तब्ध आँखों से घूर रहे थे।
आँसू। कोई रोना-धोना नहीं। उन्होंने जो देखा था वह कल्पना की सीमाओं से परे था। प्रतिक्रिया की किसी भी संभावित
गुंजाइश से परे। छोटे बच्चे जड़वत बैठे थे। मानो लकवाग्रस्त हो गए हों।

तुर्की जनरल ने उनके कोमल, मासूम चेहरों पर आतंक का आनंद लिया।
उसे इसमें बहुत मज़ा आया। वह झुका और उनकी गर्दन पकड़कर उन्हें खून से लथपथ बिल्ली के बच्चों की तरह ऊपर उठा लिया।

"देखो!" वह खुशी से बोला, उसके चेहरे पर एक चौड़ी मुस्कान फैल गई। "उन्होंने हमें खिलौने छोड़ दिए हैं! आओ और अपना हक़ लो, मेरे भाइयो। याद रखो, अगर तुम किसी काफ़िर के साथ ऐसा करते हो तो कोई गुनाह नहीं है। काफ़िरों के साथ हमारी जंग में सब जायज़ है । सब जायज़ है!"



ग़ज़नी, अफ़ग़ानिस्तान

इस्माइल ने कहा, 'गवर्नर अयाज, कृपया अपना कुछ समय दीजिए।'

ख्वाजा हसन और अन्य कनिष्ठ मंत्रियों सहित शासी परिषद, मस्जिद के पुनर्निर्माण की प्रगति की समीक्षा के लिए राज्यपाल-मुफ़्ती के आवास पर एकत्रित हुई थी। बैठक अभी-अभी समाप्त हुई थी, और सभी प्रगति से संतुष्ट लग रहे थे। और दासों की व्यवस्था की जानी थी, कुछ तो कौसरी जहाँ के माध्यम से भी। इसलिए पुला के नेतृत्व में कुछ दासों के भाग जाने के बावजूद, मस्जिद का निर्माण कार्य तेज़ी से चल रहा था। समस्या केवल वास्तुशिल्प और संरचनात्मक डिज़ाइन की थी। इस्माइल जानता था कि उसे बुतरस की ज़रूरत है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि मस्जिद के डिज़ाइन सही और उचित हों। अरब और फ़ारस जैसे इस्लामी दुनिया के अधिक शिक्षित हिस्सों से वास्तुकार और इंजीनियर अब तुर्किक ग़ज़नी नहीं आ रहे थे। इस्लामी दुनिया के इन दो हिस्सों, एक ओर अरब और फ़ारसी, और दूसरी ओर तुर्क, के बीच तनाव सभी के लिए स्पष्ट होता जा रहा था। इसके अलावा, तुर्कों के बीच अच्छे वास्तुकार और इंजीनियर मिलना मुश्किल था, क्योंकि वे ज़्यादातर केवल हत्या की कला में ही माहिर थे। शिक्षा जैसे क्षेत्र, यहाँ तक कि वास्तुकला और इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्र भी, उन लोगों के लिए छोड़ दिए गए जिन्हें तुर्क कमज़ोर और कमज़ोर समझते थे। अब, बुतरस के चले जाने के बाद, इस्माइल ने तय कर लिया था कि अगर मस्जिद कुछ साल और खड़ी रही, तो वह उससे कहीं ज़्यादा होगी।

Machine Translated by Google

काफ़ी था। तब तक वह महमूद से छुटकारा पा चुका होता। बुतरस हो या न हो, मस्जिद का निर्माण तेज़ी से चल रहा था।

इस्माइल का मानना है कि उनका ध्यान दीर्घकालिक की बजाय तात्कालिकता पर केंद्रित था।

'रुको? क्यों?' मलिक अयाज़ ने पूछा।

इस्माइल ने विनम्रता और सौम्यता से कहा, 'मैं बस कुछ अन्य जरूरी मामलों पर बात करना चाहता था, लाहौर के महान राजा।'

अयाज़ ने आँखें घुमाईं और ज़ोर से आह भरी। उसने कंधे उचकाए और गिर पड़ा।
अपनी सीट पर वापस आकर 'ठीक है।'

बाहर निकलते हुए बाकी मंत्रियों में से किसी ने भी इस बारे में ज़्यादा नहीं सोचा। लेकिन ख्वाजा हसन ने अयाज़ की तरफ़ देखा और मन ही मन मुस्कुरा दिए।

बांका सोचता है कि इस्माइल उससे बस कुछ और पैसे माँगने की ही विनती करेगा। लेकिन लाहौर के राजा को नहीं पता कि उससे कहीं ज़्यादा मुश्किल माँग की जाएगी।

... कौसरी जहाँ ...

ख्वाजा हसन ने अपने मन की बात अपने तक ही सीमित रखी। उन्होंने समस्या को खुद से हटाकर मलिक अयाज़ पर डाल दिया था। ईश्वर दयालु है। दरअसल, ईश्वर फ़ारसी ही होगा, क्योंकि उसने हमें इतनी बुद्धि दी है।

ख्वाजा हसन समेत सबके जाने के बाद अयाज़ कुछ पल इंतज़ार करता रहा। ख़ासकर वह साँप, ख्वाजा हसन। जब उसे यकीन हो गया कि वह इस्माइल के साथ अकेला है, तभी अयाज़ के चेहरे के भाव बदले। वह चंचल, उदासीन, भोला भाव गायब हो गया था। उसका चेहरा अचानक गर्म और कोमल हो गया, और उस पर एक चौड़ी मुस्कान तैर गई। जैसे ही वह उठा और इस्माइल के पास गया, उसकी आवाज़ और गहरी हो गई। 'पिताजी।' इस्माइल मुस्कुराया और अपनी बाहें फैला दीं, जैसे ही अयाज़ ने उसे गले लगाया। उनके रिश्ते को ज़ाहिर वजहों से सभी से छुपा कर रखा गया था। मलिक अयाज़ के रूप में सार्वजनिक रूप से स्वीकृत

उत्तराधिकारी होने के कारण, इस्माइल ने अपने बेटों के सिंहासनारोहण की रक्षा के लिए महमूद से लाहौर के राजा की हत्या करवा दी। तुर्क शाही परिवार स्टेपी भूमि की हिंसक कुत्ते-खाओ-कुत्ते की प्रतिस्पर्धा की परंपरा का पालन करते थे।

इस्माइल ने अपने नौकर तालिब के सामने स्वीकार किया था कि वास्तव में उसके पास कोई हथियार नहीं था। उस जॉर्जियाई दासी की याद, जिसके ज़रिए मलिक अयाज़ ने दावा किया था कि वह पैदा हुआ था। यह तब था जब बचपन से ही उत्साही बेटा अयाज़ अपने खोए हुए पिता को अपनी माँ की पेंटिंग्स दिखा रहा था। लेकिन इस्माइल को पेंटिंग में दिख रही महिला की याद सचमुच नहीं आई थी। ऐसी बहुत सी पेंटिंग्स थीं। इतने लंबे समय से। जैसा कि इस्माइल ने बाद में तालिब से पूछा था, उससे यह उम्मीद कैसे की जा सकती थी कि वह उन सभी महिलाओं को याद रखे जिन्हें उसने ज़बरदस्ती ले जाया था? उससे याद रखने की उम्मीद करना अनुचित और बेतुका था।

Machine Translated by Google

हालाँकि, मलिक अयाज़ अब एक शक्तिशाली और उपयोगी व्यक्ति था। इसलिए इस्माइल ने तार्किक रूप से काम किया था और बेशक, अपने खोए हुए बेटे और माँ को याद करने का नाटक किया था, जिनकी उसे बहुत याद आती थी। उसने यह भी शिकायत की थी कि महमूद के हाथों कैद होने के कारण उसे उनसे अलग होने के लिए मजबूर किया गया था।

कहते हैं कि प्यार जंग की ओर ले जा सकता है। लेकिन, आने वाला युद्ध भी प्यार की ओर ले जा सकता है। या कम से कम उसकी घोषणा तो कर ही सकता है।

'मेरे बेटे,' इस्माइल ने मलिक अयाज को कसकर गले लगाते हुए कहा।

मलिक अयाज़ ने कहा, "मुझे पता है कि पैसे आने में थोड़ी देर हो गई है, पिताजी।" "लेकिन सुल्तान इन दिनों कुछ ज़्यादा ही शक्की हो गया है। मुझे बस कुछ दिन दे दो। मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि मस्जिद के निर्माण में कोई बाधा न आए। मैं जानता हूँ कि यह तुम्हारे लिए कितना ज़रूरी है।' 'बेटे, मैं तुमसे इससे कम की उम्मीद नहीं करूँगा,' इस्माइल ने कहा। 'हम दोनों मिलकर ग़ज़नी पर राज करेंगे।' 'हम दोनों मिलकर करेंगे, अल्लाह महान है।' 'लेकिन

आज मेरी माँग पैसों की नहीं है...' 'नहीं? आपको कोई और बात परेशान कर रही है, अब्बू?' 'हाँ, कौसरी जहाँ...' मलिक अयाज़ ने चिढ़कर साँस ली। 'उस चुड़ैल ने सुल्तान पर शैतानी

कब्ज़ा कर रखा है। मैं उसे छुड़ा ही नहीं सकता। मैं अपनी बुद्धि के

आख़िर में हूँ। वह मेरी सारी योजनाओं में रोड़ा अटकाती है। मैं लाहौर में कुछ सुधार चाहता था

ताकि...'

...

"वो एक चुड़ैल है, मेरे बेटे, इसमें कोई शक नहीं," इस्माइल ने बीच में ही टोक दिया। उसे मलिक अयाज़ की लाहौर के लिए बनाई गई योजनाओं में कोई ख़ास दिलचस्पी नहीं थी। "लेकिन मुझे लगता है कि मुझे कुछ ऐसा मिल गया है जिससे उसे इस घटना से बाहर निकालने में मदद मिल सकती है।" "सच में?" मलिक अयाज़ ने उत्सुकता से पूछा। वह अपनी बात सुनने के लिए और पास झुका।

पिता जी से क्या अपेक्षा की जाती है, यह जानने के लिए।

तालिब इस्माइल द्वारा लगाए गए गुप्त जासूसी छेद से पूरी बैठक देख और सुन रहा था। उसका मालिक चाहता था कि वह सभी बैठकों पर नज़र रखे और उन्हें सुझाव व सलाह दे। उसे मलिक अयाज़ के लिए बुरा लग रहा था, और ऐसा पहली बार नहीं था। उसे लाहौर के बादशाह से सचमुच प्यार हो गया था।

एक ऐसा व्यक्ति जिसने कभी खुद को अनाथ समझा था, अपने खोए हुए पिता के प्यार और स्नेह की बेसब्री से तलाश कर रहा था। उसे इस बात का अंदाज़ा नहीं था कि उसके पिता को उसकी जन्म देने वाली माँ की भी याद नहीं है, जिसका उसने इस्तेमाल किया और फिर उसे त्याग दिया। उसे इस बात का भी अंदाज़ा नहीं था कि उसका पिता उसे सिर्फ़ इसलिए इस्तेमाल कर रहा था क्योंकि उसे उससे फ़ायदा हो रहा था। और यह भी नहीं पता था कि अगर वह उसके लिए उपयोगी नहीं रहा, तो उसके पिता शायद उसे उतनी ही जल्दी त्याग देंगे।

Machine Translated by Google

तथ्य यह है कि मलिक अयाज एक गुलाम की स्थिति से उठकर एक बन गया था
साम्राज्य के सबसे शक्तिशाली लोगों ने भी तालिब को अपने साथ पहचान का एहसास दिलाया।

लेकिन तालिब तो बस एक नौकर था। उसका काम अपने मालिक इस्माइल की सेवा करना था।
इस्माइल की तरक्की में ही उसका अस्तित्व छिपा था। उसने अपनी भावनाओं को आड़े नहीं आने दिया। उसने सिर हिलाया
और फिर से बातचीत पर ध्यान केंद्रित किया।

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 17

दर्रे पर छाया

राजेंद्र चोल, पनाई के शाही महल के जगमगाते निजी प्रांगण में हरे और लाल रंग के राजसिंहासन पर विराजमान थे। श्रीविजय साम्राज्य की राजधानी पालेमबांग थी, जो दक्षिण-पूर्व में स्थित थी। हालाँकि, पनाई साम्राज्य का दूसरा सबसे बड़ा बंदरगाह शहर था और इसलिए वहाँ भी एक शाही महल बनाया गया था, जो श्रीविजय राजवंश के आगमन पर अतिथिगृह के रूप में कार्य करता था।

राजेंद्र चोल के बगल में, उनके बाईं ओर, उनके महान सहयोगी और घनिष्ठ मित्र, मालवा के शासक सम्राट भोजदेव परमार, अपने भ्रमणशील शाही सिंहासन पर बैठे थे।

राजेंद्र चोल के सामने, अपमानित श्रीविजय के गौरवशाली राजा, सम्राट राम विजयवर्मन विराजमान थे। अपने पारंपरिक सिंहासन पर विराजमान थे। प्रोटोकॉल सलाहकारों ने सुझाव दिया था कि पराजित राजा होने के नाते, विजयवर्मन सिंहासन के बजाय एक छोटी सी कुर्सी पर बैठें। लेकिन राजेंद्र चोल धार्मिक थे।

वह पराजित होने पर उद्दंडता में विश्वास रखते थे, लेकिन विजय होने पर विनम्र और उदार। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया था कि विजयवर्मन भी उनके ही सिंहासन पर बैठें।
और जब तक प्रोटोकॉल अधिकारियों ने व्यवस्थाओं में परिवर्तन नहीं कर दिया, तब तक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की।

शासकों के साथ, उनके बाएँ और दाएँ, दोनों सेनाओं के सेनापति और एडमिरल खड़े थे। श्रीविजय की टुकड़ी, चोल और उसके सहयोगियों की टुकड़ी से लगभग दो-तिहाई छोटी थी। इस निर्णायक हार में श्रीविजय ने अपने कई बहादुर सैन्य नेताओं को खो दिया था।

सैन्य कर्मियों और उपकरणों के मामले में इतनी भारी क्षति हुई कि श्रीविजयवंशी, कम से कम एक या दो पीढ़ियों तक,
चोलों के विरुद्ध पुनः उठ नहीं सकेंगे।

चोल सेनापति नरसिंह, राजेंद्र चोल के दाहिनी ओर, सम्मानपूर्वक बैठे थे, जैसा कि उन्हें होना चाहिए था। कुर्सी, जो तीनों राजघरानों के सिंहासनों से काफ़ी छोटी थी, ज़ाहिर है, लेकिन फिर भी एक भव्य कुर्सी थी।

Machine Translated by Google

भोजदेव परमार के बाईं ओर, और राजेंद्र चोल से दो स्थान बाईं ओर, एक छोटी-सी महिला अपनी गोद में हाथ रखे हुए बैठी थी। उसके स्याह काले बाल पीछे की ओर अच्छी तरह कंघी करके गर्दन के निचले हिस्से पर एक सुंदर जूड़े में बंधे थे। बालों की एक पंक्ति उसके माथे पर बड़े करीने से लटक रही थी और उसकी धनुषाकार भौंहों के ऊपर एक झालर में कटी हुई थी। उसकी छोटी आँखों के ऊपर बिना रेखाओं वाली पलकें थीं। एक पतली नाक उसके पतले ऊपरी होंठ के ऊपर थी, जिसके नीचे, आश्चर्यजनक रूप से विपरीत, एक रसीला, भरा हुआ निचला होंठ था। हृदय के आकार के संगमरमरी चेहरे पर इन विशेषताओं का अद्भुत संगम एक साथ दिखाई दे रहा था। राजेंद्र चोल की रहस्यमयी चीनी सहयोगी, राजकुमारी फेई लिन, कमरे में उपस्थित पुरुषों को सूक्ष्म विजय-भाव से देख रही थीं।

राजेंद्र चोल के शिविर में भारतीयों को फेई लिन के बारे में संदेह था।
वे जानते थे कि उसने राजेंद्र चोल को श्रीविजय पर आक्रमण करने के लिए उकसाया था। शायद श्रीविजय द्वारा भारतीय व्यापारिक संघों की संपत्तियाँ जब्त करके उन्हें चीनियों को सौंपने की उलझन का कोई कूटनीतिक समाधान निकाला जा सकता था। वे जानते थे कि फेई लिन उस शाही परिवार की शाखा से संबंधित थी जिसने हाल ही में चीनी गृहयुद्ध में हार का सामना किया था। शायद वह चाहती थी कि उसके अपने साम्राज्य के भीतर के शत्रु राजेंद्र चोल के हाथों कमज़ोर पड़ जाएँ। चीनियों की संस्कृति भारतीयों जितनी ही परिष्कृत थी, लेकिन उन्हें समझना बेहद मुश्किल था। कोई भी निश्चित नहीं था कि उनका असली शिकार क्या था। सौभाग्य से, नरसिंह की बहादुरी और निर्दयता के कारण, युद्ध चोल साम्राज्य के लिए अच्छा रहा, इसलिए इस अभियान में कोई स्थायी क्षति नहीं हुई।

राजेंद्र चोल ने अपने प्रतिद्वंद्वी की ओर देखा, भारतीय सम्राट के चेहरे पर एक दयालु मुस्कान थी।

इंडोनेशिया के श्रीविजय सम्राट, राम विजयवर्मन, राजेंद्र चोल की ही उम्र के थे, लगभग साठ साल के होने वाले थे। वे भारतीय सम्राट जितने ही हट्टे-कट्टे और हट्टे-कट्टे थे। हालाँकि, इस समय वे झुके हुए, थोड़ा सिर झुकाए बैठे थे। 'महाराज, मैंने संधि पर अपनी मुहर लगा दी है।'

राजेंद्र चोल अपनी लगभग पूर्ण विजय के बावजूद उदार रहे थे। चोल सम्राट ने इस बात पर ज़ोर दिया था कि विजयवर्मन श्रीविजय के सम्राट की उपाधि तब तक बनाए रखें जब तक वह राजेंद्र चोल के प्रभुत्व को स्वीकार करते रहें और हर साल चोल दरबार को एक लाख स्वर्ण मुद्राओं का नाममात्र कर भेजते रहें। उन्होंने श्रीविजयवासियों से छीने गए कई क्षेत्र वापस कर दिए थे, सिवाय कुछ बंदरगाहों के जो मलक्का जलडमरूमध्य के साथ व्यापार को नियंत्रित करते थे। चोल प्रशासन उन बंदरगाहों का प्रबंधन करता था और श्रीविजयवासियों को उनके लिए उचित लगान देता था। गोदाम, व्यापार प्रणालियाँ और

Machine Translated by Google

इन बंदरगाहों में श्रीविजय ने भारतीय व्यापार संघों से जो घाट छीन लिए थे, वे भारतीय व्यापारियों को वापस कर दिए गए थे। श्रीविजय की नौकरशाही द्वारा भारतीयों और उनके सहयोगी व्यापारिक संघों पर लगाए गए दुर्बल करने वाले लाइसेंस और नियंत्रण प्रतिबंध हटा दिए गए थे। लेकिन राजेंद्र चोल ने यह वादा किया था कि भारतीय व्यापारिक संघ श्रीविजय के दरबारों को उचित कर और सीमा शुल्क अदा करेंगे, बशर्ते कि इनमें से कुछ भी चीन के सोंग सम्राट को न भेजा जाए।

चोलों की विजय की समग्रता को देखते हुए, यह एक आश्चर्यजनक रूप से उदार शांति प्रस्ताव था। राजेंद्र चोल का मानना था कि एक बड़ी, भयावह छड़ी का उपयोग करते हुए, विनम्रता और कोमलता से बोलने से विरोधियों से सबसे अच्छा जवाब मिलता है। और उनकी यह बात बार-बार सही साबित हुई।

इसलिए, राजेंद्र चोल को इस बात पर आश्चर्य हुआ कि विजयवर्मन कितना उदास दिख रहा था।
वह युद्ध के मैदान में हार गया था, लेकिन वास्तव में, रणनीतिक दृष्टि से उसने ज़्यादा कुछ नहीं खोया था। असल में, जो पैसा चीन जा रहा था, वह अब भारत जाएगा। श्रीविजयवंशी अब और गरीब नहीं होंगे।

'मैं इसके लिए आपको धन्यवाद देता हूं, महान सम्राट,' राजेंद्र चोल ने सिर हिलाते हुए कहा
सिर हिलाकर मुस्कुराया, 'और मुझे अपना बड़ा भाई समझो, मालिक नहीं।'

विजयवर्मन ने सिर झुकाकर हाथ जोड़कर नमस्ते किया। क्योंकि वह भी जानते थे कि राजेंद्र चोल ने विजय में असाधारण उदारता दिखाई थी। फिर भी वह मुस्कुराए नहीं। 'आप महान व्यक्ति हैं, चक्रवर्ती सम्राट राजेंद्र चोल। गौतम बुद्ध की साक्षी में, मैं, विजयवर्मन, शाक्यमुनि का अनुयायी और श्रीविजय का सम्राट, सार्वजनिक रूप से शपथ लेता हूँ कि न तो मैं और न ही मेरे वंशज कभी किसी चोल सम्राट के विरुद्ध विद्रोह का झंडा उठाएँगे।'
श्रीविजय सम्राट और उनका परिवार बौद्ध धर्म का अनुयायी था, जो हिंदू और जैन धर्म के साथ धार्मिक धर्मों का समूह था। श्रीविजय में उनकी अधिकांश प्रजा हिंदू थी, लेकिन अधिकांश अभिजात वर्ग, विशेषकर व्यापारिक अभिजात वर्ग, बौद्ध थे।

'महादेव मेरे साक्षी हैं,' राजेंद्र चोल ने कहा, 'मैं, राजेंद्र, भगवान शिव का सेवक और अद्वितीय राजराजा का पुत्र, सार्वजनिक रूप से शपथ लेता हूं कि मैं आपकी पुत्री ओनांग किउ को अपनी प्रमुख पत्नियों में से एक के रूप में सम्मान दूंगा और उसकी देखभाल करूंगा।'

विजयवर्मन ने आश्चर्य से राजेंद्र चोल की ओर देखा। यह उनमें से एक था
संधि की शर्तों के अनुसार, दोनों राजपरिवारों के बीच वैवाहिक संबंध स्थापित किए जाने थे, ताकि भविष्य में युद्ध टाला जा सके। इसके लिए, विजयवर्मन की पुत्री, ओनांग किउ, का विवाह राजेंद्र चोल से किया जाना था।

Machine Translated by Google

लेकिन यह तय नहीं हुआ था कि राजेंद्र ओनांग को अपनी प्रमुख पत्नियों में से एक के रूप में सम्मान देंगे।

विजयवर्मन ने कृतज्ञता से सिर हिलाया। और फिर भी, वह मुस्कुराया नहीं। उसकी आँखें
उनमें ज़बरदस्त दुःख और उदासी थी। यह सिर्फ़ सैन्य क्षति की बात नहीं थी। कुछ और भी था।

राजेंद्र विजयवर्मन के चेहरे को ध्यान से देख रहा था और यह अनुमान लगाने की कोशिश कर रहा था कि श्रीविजय सम्राट के मन में क्या चल रहा है। शांति संधि की दीर्घकालिक स्थिरता के लिए, उसे विजयवर्मन से नई व्यवस्था को पूरी संतुष्टि के साथ स्वीकार करवाना ज़रूरी था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि इसके लिए वह और क्या कर सकता है।

तब विजयवर्मन ने स्वयं कुछ प्रस्ताव रखा, 'मेरे स्वामी राजेंद्र
चोल, आपकी अनुमति से मुझे कुछ और देना है।'
राजेंद्र चोल को समझ नहीं आ रहा था कि क्या प्रतिक्रिया दें। यह अपरंपरागत था।
सब कुछ तय हो चुका था और दोनों पक्षों की मुहरें लग चुकी थीं। और संधि पर दोनों पक्षों की मुहरें लग चुकी थीं। लेकिन उसने कोई प्रतिकूल प्रतिक्रिया नहीं दिखाई। राजेंद्र ने अपना चेहरा स्थिर रखा। और बहुत सही ढंग से, अपना सिर हिलाया।

सहमति.

विजयवर्मन अपने पुजारी की ओर मुड़े, जो धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रहे थे
दरवाज़ा। अपने आका के एक इशारे पर, पंडित मुड़ा और दोनों पहरेदारों ने विशाल दरवाज़े खोल दिए। बाहर एक आदमी खड़ा था, जिसके हाथ में एक सामान्य आकार का गहनों का डिब्बा था, जो पूरी तरह से सोने से बना था। और उसके पीछे, छह आदमियों का एक दल एक बड़ा, अलंकृत नक्काशीदार संदूक लिए हुए था। वे लोग कक्ष के बीचोंबीच कूच करने लगे। वे कुछ मंत्रोच्चार कर रहे थे—बहुत धीमी आवाज़ में। पुजारी भी उनके साथ मंत्रोच्चार कर रहा था।

राजेंद्र चोल ने तुरंत उन भजनों को पहचान लिया। वे गरुड़ पुराण से थे। ये भजन आमतौर पर धार्मिक रीति-रिवाजों के अनुयायी —हिंदू, बौद्ध और जैन—अंतिम संस्कार के दौरान गाते हैं।

राजेंद्र ने अपनी तलवार की मूठ को हल्के से छुआ। भोजदेव परमार ने भी ऐसा ही किया।
व्यवस्था की शर्तों के अनुसार, केवल चोल पक्ष को ही शस्त्र धारण करने का अधिकार था। श्रीविजय पक्ष को अपने कोई भी शस्त्र कक्ष में ले जाने की अनुमति नहीं थी। राजेंद्र चोल दयालु थे, मूर्ख नहीं।

विजयवर्मन अपने सिंहासन से उठे और नरसिंह की ओर देखा। 'बहादुर
जनरल, मेरे पास आपके लिए एक उपहार है।'
नरसिम्हन तुरंत खड़े हो गए। उन्हें ऐसा करना ही था। वह सिर्फ़ एक जनरल थे।
और वहां एक राजा था, जो अब अपने सम्राट का सहयोगी था, उससे बात करने के लिए खड़ा था।

Machine Translated by Google

'सम्राट...' राजेंद्र चोल भी उठते हुए बोले। भोजदेव परमार भी खड़े हो गए।

"महाराज, इन बक्सों में शव के लिए कोई ख़तरनाक चीज़ नहीं है," विजयवर्मन ने कहा। "आपको मेरी शपथ है। लेकिन यह एक ऐसी चीज़ है जो मुझे उस सेनापति को देनी ही होगी जिसने मेरी सेना और नौसेना को नष्ट किया। इसमें सिर्फ़ वही है जिसका वह हक़दार है।"

नरसिम्हन को समझ नहीं आ रहा था कि क्या प्रतिक्रिया दें। उन्होंने श्रीविजय सम्राट को सम्मान देते हुए हाथ जोड़कर नमस्ते किया, क्योंकि वे शांति संधि को खतरे में नहीं डालना चाहते थे।

विजयवर्मन ने कहा, 'मैं युद्ध के दौरान नौसेना के एडमिरल जहाज जनरल पर था।'

नरसिम्हन उलझन में पड़ गए। फिर शाही ध्वज पर, शाही झंडा फहराते हुए, कौन था?

नरसिम्हन ने यह मानकर शाही जहाज पर हमला किया था कि श्रीविजय
सम्राट उस पर सवार था और कायरों की तरह भाग रहा था। उसने यह भी मान लिया था कि नौसेना के एडमिरल जहाज से उस पर जो हमले हो रहे हैं, वे एक बहादुर नौसैनिक कमांडर की ओर से आ रहे हैं, जो अपने भागते हुए सम्राट को बचाने के लिए खुद पर गोली चलाकर अपनी जान जोखिम में डाल रहा है।

लेकिन वास्तव में, ऐसा लग रहा था कि सम्राट विजयवर्मन स्वयं नौसेना के एडमिरल जहाज़ पर सवार थे, अपनी जान जोखिम में डालकर, चोल आक्रमणों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे, ताकि शाही जहाज़ बच सके। लेकिन क्यों?

राजेंद्र चोल को सबसे पहले समझ आया: हे महादेव!

एक अच्छा आदमी अपने परिवार के लिए कुछ भी करेगा, यहां तक कि अपनी जान भी कुर्बान कर देगा, खासकर उन लोगों के लिए जो अपनी रक्षा नहीं कर सकते।

विजयवर्मन ने संदेह की पुष्टि की। 'मैंने अपने अनमोल अंग खो दिए
उस रात परिवार.'

नरसिंह ने विजयवर्मन के सिंहासन के दाहिनी ओर एक क्षण के लिए नज़र दौड़ाई, जहाँ उसका बड़ा बेटा बैठा था। हाँ, उसने दो बेटों को खो दिया था, लेकिन एक अभी भी जीवित था। उसका उत्तराधिकारी अभी भी जीवित था। और जहाँ तक उसके अन्य बेटों की मृत्यु का प्रश्न है...
नरसिंह ठीक वैसा ही सोच रहे थे जैसा कोई और योद्धा सोचता। यह युद्ध है, इसमें लोग मारे जाते हैं...
... और पुरुष मर रहे हैं... हम सभी जानते हैं कि हमने क्या करने का निर्णय लिया है।

नरसिम्हन ने जो अनुमान नहीं लगाया था, वह राजेंद्र चोल को पहले से ही स्पष्ट था।

यह विजयवर्मन की दूसरी पत्नी के बारे में था।

चोलों को खुफिया रिपोर्ट मिली थी कि श्रीविजय सम्राट अपनी अधिकांश नौसेना के साथ सुमात्रा द्वीप के उत्तरी सिरे पर स्थित इलामुरीदेसम की ओर रवाना हो गए हैं, जो निकोबार द्वीपसमूह पर चोल नौसैनिक अड्डे से ज्यादा दूर नहीं है।

Machine Translated by Google

द्वीप। चोलों ने श्रीविजयवंशियों से दक्षिण-पूर्व में सुमात्रा द्वीप पर स्थित बड़े बंदरगाह शहर पनाई में युद्ध करने की योजना बनाई थी, जहाँ बंदरगाह कहीं अधिक सुरक्षित था। लेकिन उन्हें गुप्त सूचना मिली थी कि इलामुरीदेसम का स्थानीय शासक चोल आक्रमण से उत्पन्न भ्रम का लाभ उठाकर अपना विद्रोह भड़का रहा था। संभवतः विजयवर्मन उस विद्रोह को कुचलने के लिए गया था। चोल इस नई स्थिति के मद्देनजर अपनी युद्ध रणनीति बना रहे थे, तभी उन्हें आश्चर्यजनक सूचना मिली कि विजयवर्मन जल्दबाजी में इलामुरीदेसम से निकल गया है। चोलों ने श्रीविजय सम्राट के समुद्र में रहते हुए ही उनका पीछा करने का निर्णय लिया था। नरसिंह हमेशा से समुद्री हवाओं का एक कुशल पाठक रहा था। और नौसैनिक हमलों का एक शानदार सामरिक आयोजक था। उसने चोलों की तीव्र गति से श्रीविजयवंशियों को आश्चर्यचकित कर दिया था, और पनाई बंदरगाह की सुरक्षा में भागने से पहले ही विजयवर्मन के बेड़े को पकड़ लिया था।
इसी ने श्रीविजयवंशियों के भाग्य का फैसला कर दिया था।

राजेंद्र चोल को हमेशा आश्चर्य होता था कि विजयवर्मन विद्रोह को दबाने के लिए इलामुरीदेसम क्यों गए थे। वे अपने किसी एडमिरल को भेज सकते थे।

मैंने जो सुना है उसके अनुसार उनकी दूसरी पत्नी इलामुरीदेसम से थी।
राजेंद्र चोल ने कहा कि शायद यह विद्रोह को कुचलने का अभियान न होकर बचाव अभियान था।

विजयवर्मन ने कहा, 'महान सेनापति, शाही जहाज पर झंडे उलटे फहराये जा रहे थे।'

नरसिम्हन को इसका मतलब समझ आ गया। उस जहाज़ पर एक परिवार था।
इसलिए, हमला मत करो.
लेकिन रात का समय था... दृश्यता कम थी... हम झंडों की व्यवस्था के बारे में निश्चित नहीं हो सके... उसने असहाय होकर सोचा।

विजयवर्मन ने उस वाहक को इशारा किया जिसके हाथ में पहला छोटा सा आभूषण का डिब्बा था। पुजारी वाहक के साथ आगे बढ़े और डिब्बा खोला।
'यह उस शाही जहाज़ से है जिस पर आपने अपनी ट्रेबुशेट मशीनों से गोलाबारी की थी, महान जनरल।' 'सम्राट...

मुझे लगता है कि...' राजेंद्र चोल ने हस्तक्षेप करने की कोशिश की।
"हे प्रभु, मुझे इसकी अनुमति दीजिए," विजयवर्मन ने राजेंद्र चोल से आग्रह किया। "मैं आपसे फिर कभी कुछ नहीं माँगूँगा। मैं सदैव आपका वफ़ादार सेवक रहूँगा। लेकिन कृपया, मुझे इसकी अनुमति दीजिए।" राजेंद्र चोल चुप हो गए। परेशान।

नरसिम्हन ने खुले आभूषण बक्से की ओर देखा। उसमें एक सोने का वलय था।
अंदर। थोड़ा अंडाकार और पूरी तरह गोलाकार नहीं। यह एक के लिए बहुत बड़ा था

Machine Translated by Google

अंगूठी, एक वयस्क महिला की चूड़ी के लिए बहुत छोटी थी।

चोल सेनापति और भी अधिक भ्रमित हो गया।

राजेंद्र चोल ने भी देखा हे महादेव, उनकी दूसरी पत्नी से एक संतान हुई थी ... दया करना ... वह ...

विजयवर्मन की बाईं आँख से एक आँसू बह निकला। शरीर का वह भाग जहाँ उसका दिल बसता था। 'यह मेरी बेटी की पायल है। मेरी बेटी ओदिरत्ना की पायल.'

नरसिंह का मुँह खुला का खुला रह गया। महादेव! मुझे माफ़ कर दो... माफ़ कर दो मुझे ...

पायल इतनी छोटी थी कि किसी वयस्क महिला की नहीं हो सकती थी। उसके आकार को देखते हुए, आकार के अनुसार, वलय पायल पहनने वाले की उम्र चार साल से अधिक नहीं रही होगी या पांच वर्ष की आयु।

मैंने एक बच्चे को मार ... हे प्रभो ...

डाला राजेंद्र चोल ने एक बार फिर हस्तक्षेप करने की कोशिश की। 'मांग लो जो चाहो उन्होंने अपने इंडोनेशियाई समकक्ष से कहा, "महान् सम्राट, मुझे स्वीकार करें। मैं मना नहीं करूँगा।" लेकिन मेरे जनरल की जान मत मांगो। उसे नहीं पता था कि हममें से कोई नहीं जानता...' ...

'महान् सम्राट...' भोजदेव परमार बोले। 'कृपया मेरी बात सुनिए...' यह एक भयानक गलती थी ... लेकिन यह जानबूझकर नहीं किया गया था...'

नरसिम्हन अब तक इतने स्तब्ध थे कि कोई प्रतिक्रिया नहीं दे पाए थे। लेकिन राजेंद्र की बात सुनकर चोल और भोजदेव परमार के वचनों को सुनकर वह बोला, 'मैं अपने प्राण त्याग दूँगा।' इस जघन्य अपराध के लिए, सम्राट विजयवर्मन, आपको सज़ा मांगने का अधिकार है मेरी फांसी.'

विजयवर्मन ने नरसिम्हन से कहा, 'मैं तुम्हारी जान नहीं लेना चाहता।' 'तुम तुर्क नहीं हैं।' क्योंकि श्रीविजय के शासक जानते थे कि धर्म क्या सिखाता है उसे। कि तुर्क जैसे अनैतिक प्राणियों के लिए सबसे अच्छी सजा गजनी—जिसे बच्चों को भी चोट पहुँचाने में कोई अपराधबोध नहीं था—को मौत की सज़ा मिलनी चाहिए। मौत का डर उन्हें व्यवहार करने पर मजबूर कर देता था। लेकिन सभ्य लोगों के लिए, जैसे कि उनके भारत के विरोधियों को स्वाभाविक रूप से हत्या पर गहरा अफसोस होगा एक बच्चे के लिए, सबसे बुरी सजा अपराध बोध की लंबी जिंदगी होगी, बजाय इसके कि शीघ्र मृत्यु। 'मैं तुम्हें बस यह पायल देना चाहता हूँ। ओदिरत्ना की पायल।'

नरसिम्हन ने अपनी साँस रोक ली। उसके हाथ काँप रहे थे। महाकाव्य में महाभारत में भगवान कृष्ण ने योद्धा अश्वत्थामा को दण्डित किया था। उसके माथे पर दिव्य मणि के कारण पीड़ा से भरा अनंत जीवन, बच्चों की हत्या का अपराध। नरसिम्हन के लिए, यह पायल वैसी ही होगी दिव्य रत्न। इससे उसके मुँह से लगातार मवाद और खून निकलता रहता था संक्रमित, सड़ती आत्मा, दर्द के कभी न खत्म होने वाले चक्र में।

Machine Translated by Google

'शाश्वत धम्म के नाम पर ,' विजयवर्मन ने पाली का उपयोग करते हुए कहा-
धर्म के लिए भाषा का शब्द, 'मैं आपसे सम्मान की शपथ चाहता हूं, जनरल नरसिम्हन, कि आप इस पायल को हर समय
अपने पास रखेंगे, उस क्षण तक जब तक मेरी बेटी की प्रताड़ित आत्मा आपको माफ नहीं कर देती।'

नरसिम्हन अपने द्वारा किए गए अपराध की गंभीरता से स्तब्ध और स्तब्ध थे।
अनजाने में ही सही, उसने जो किया, उसके बावजूद भी उसने अपनी सहमति में सिर हिलाने की ताकत
पाई। उसे अपनी सज़ा स्वीकार करने के लिए पर्याप्त साहसी होना ज़रूरी था।

विजयवर्मन ने पायल उठाई और नरसिंह की खुली दाहिनी हथेली पर रख दी। चोल सेनापति सिहर उठा जब उसने महसूस किया कि वह वलय उसके शरीर, मन और आत्मा को जला रहा है। एक ऐसा व्यक्ति जो शत्रु की सबसे शक्तिशाली तलवारों के प्रहार से भी नहीं घबराया था, एक बालक के प्रहार से सबके सामने गिराया जा रहा था।

आभूषण.

लेकिन विजयवर्मन का काम अभी ख़त्म नहीं हुआ था। उनका दुःख अभी भी भड़क रहा था। उन्होंने पीछे खड़े, बड़े संदूक को पकड़े हुए, आगे आने का इशारा किया। वे आगे आए। विजयवर्मन ने अपने पुरोहित को ढक्कन खोलने का इशारा किया, नरसिंह की ओर देखा और फुसफुसाए, 'मुझे उम्मीद है कि यह जीत इसके लायक रही होगी, जनरल।'

नरसिंह, बहादुर नरसिंह, जो बड़े से बड़े खतरे से भी पीछे नहीं हटा था, अब डर के मारे काँप रहा था। क्योंकि उसे अंदाज़ा था कि ट्रंक के अंदर क्या है।

राजेंद्र चोल और भोजदेव परमार भी आंसू बहा रहे थे।
ट्रंक का ढक्कन पूरी तरह से खुला हुआ था।
नरसिंह ने अपना सिर पकड़ लिया और दुख और भय से रोने लगा।
वह अपने हृदय, अपनी आत्मा, अपने अमर पूर्वजों को उसके किये के लिए उसे कोसते हुए सुन सकता था।

यह एक बच्ची का पूरी तरह जला हुआ शरीर था। उसकी कद-काठी से, वह चार-पाँच साल से ज़्यादा बड़ी नहीं लग रही थी। भाले के आकार के एक तीर का अवशेष उसके शरीर में धँसा हुआ था। प्रक्षेपास्त्र, ज़ाहिर है, उस छोटी बच्ची की पीठ में, उसकी कमर के निचले हिस्से में, बेरहमी से घुसा था। यह पूरी तरह से फटकर आगे की ओर, जहाँ उसकी आँतें थीं, फट गया था। नरसिम्हन को अच्छी तरह याद था: इन भाले के आकार के प्रक्षेपास्त्रों को तेल में डुबोकर ट्रेबुशेट युद्ध मशीनों के गोफन में लादा जाता था, आग लगाई जाती थी और फिर भागते हुए श्रीविजय शाही जहाज़ पर लगातार दागे जाते थे। इनमें से एक जलते हुए प्रक्षेपास्त्र ने इस मासूम बच्ची को बुरी तरह से घायल कर दिया था। यह उसके उदर-गुहा को चीरता हुआ फट गया था। यह कोई त्वरित मौत नहीं होती। अगर यह उसके दिल या सिर पर लगता, तो छोटी राजकुमारी तुरंत मर जाती। लेकिन यह वह भयानक तीर उसे न सिर्फ़ बहुत खून बहाता, बल्कि उसे आग भी लगा देता। वह कई बार खून बहते हुए जिंदा जल गई होती।

...

...

Machine Translated by Google

मिनटों तक। एक वयस्क, शक्तिशाली योद्धा के लिए भी यह एक भयानक, दर्दनाक मौत होती। और यह एक छोटी बच्ची थी। बस एक छोटी बच्ची।

अब और नहीं! नरसिंह का मन पीड़ा से चीख उठा। अब और हत्या नहीं!

नरसिंह अचानक जाग गया। उसने चारों ओर देखा, उसे चक्कर आ रहा था। वह एक पालकी पर था, जिसे चार चोल सैनिक उठा रहे थे। उसका बायाँ हाथ उस अंगूठी के लटकन को कसकर पकड़े हुए था। वह उसके हाथ, उसके विवेक, उसकी आत्मा को जला रहा था। उसने फिर से अपनी आँखें बंद कर लीं। मुझे माफ़ करना, ओदिरत्ना। मुझे बहुत माफ़ करना।

'क्या आप ठीक हैं, नसरुल्लाह?' विजयन ने पूछा।

विजयन कूड़े के ठीक बगल में घोड़े पर सवार थे, जो एक पोर्टेबल से अधिक कुछ नहीं था बिस्तर पर, जिस पर नरसिम्हन लेटा हुआ था। इन इलाकों में मौसम का बेतहाशा अंतर, दिन में भीषण गर्मी और रात में कड़ाके की ठंड, नरसिम्हन को कमज़ोर कर रहा था। अमल उसे दवाइयाँ दे रहा था, लेकिन आराम करने की सलाह दी गई थी।

नरसिम्हन ने सिर हिलाया। 'मैं ठीक हूँ।' चोल-परमार पलटन

खुजदार की ओर जा रही थी, जो ग्वादर और ग़ज़नी के बीच रास्ते का एक चौथाई हिस्सा। कुछ दिन पहले, सोमेश्वर ग्वादर में अपने संपर्क, व्यापारी से मिले थे। गुजराती व्यापारी ने अपना फटा हुआ एक रुपये का हुंडी नोट दिखाया था। और उनके समकक्ष, एक स्थानीय व्यापारी ने भी अपना फटा हुआ आधा नोट दिखाया था। यह एकदम सही मेल था। स्थानीय ग्वादर व्यापारी ने सोमेश्वर को बताया था कि उनका अगला पड़ाव खुज़दार शहर में होगा, जहाँ उनकी मुलाक़ात फिरदौस नाम के एक व्यक्ति से होगी।

सोमेश्वर को फिरदौस के बारे में पहले ही पता चल चुका था। शाही ग़ज़नी दरबार में उसके संपर्क सूत्र ने उसे बताया था कि फिरदौस ही वह व्यक्ति है जिससे संपर्क करना है। उसे बस यह नहीं पता था कि वह फिरदौस से कहाँ मिल सकता है और सुरक्षित संपर्क स्थापित करने के लिए पासकोड क्या होगा। अब उसे सब पता चल गया था।

और भारतीय खुज़दार की ओर बढ़ रहे थे। धीरे-धीरे घुमावदार रास्ते से गुज़रते हुए उबड़-खाबड़ पहाड़ी इलाका.



खुज़दार एक धूल भरा छोटा सा कस्बा था, जो कहीं दूर बसा था। चार हज़ार फ़ीट से भी ज़्यादा की ऊँचाई पर, शाशन पहाड़ों से घिरा, इसके अस्तित्व का एकमात्र उद्देश्य क्वेटा जाने वाली सड़क पर एक पड़ाव बनना था।

Machine Translated by Google

क्वेटा गजनी और ग्वादर तट के बीच सबसे बड़ा शहर था और गजनी की यात्रा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में कार्य करता था।

यदि कोई गजनवी साम्राज्य के भीतर खुलेआम छिपना चाहता था, तो खुज़दार से बेहतर कोई जगह नहीं थी। वहाँ कोई महत्वपूर्ण लोग नहीं रहते थे। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण लोगों को ग़ज़नी आते-जाते या वहाँ से लौटते समय वहाँ से गुज़रना पड़ता था। संक्षेप में, अगर आप खुज़दार में रहते, तो आप कभी भी ताकतवर लोगों की नज़र में नहीं आते, इसलिए आप सुरक्षित थे। लेकिन आप खुज़दार के रेस्टोरेंट, सरायों और मस्जिदों में ताकतवर लोगों की बातचीत हमेशा सुन सकते थे, ताकि आप पता लगा सकें कि क्या हो रहा है।

यह किसी जासूस या दोहरे एजेंट के लिए छिपने के लिए एकदम उपयुक्त स्थान था।

सोमेश्वर को फिरदौस का खेत ढूँढ़ने में ज़्यादा वक़्त नहीं लगा। दिए गए निर्देश बिलकुल सटीक थे। यह स्वतंत्र खेत खुज़दार से कुछ मील उत्तर में, शहर के बाहर, ग़ज़नी के रास्ते पर था। इतनी दूर कि लगभग सभी खुज़दार लोग वहाँ अक्सर नहीं आते थे, इसलिए यह जगह एकांत में रहती थी। लेकिन फिरदौस के लिए यह इतना पास था कि अगर उसे ज़रूरत पड़े तो वह शहर में आसानी से पहुँच सकता था। खुज़दार में उसकी आड़ यह थी कि वह मेवों का व्यापारी था।

उत्तम।

ग़ज़नवी शाही विद्रोही का प्रतिनिधि, फ़िरदौस, बूढ़ा था। सोमेश्वर ने अनुमान लगाया कि उसकी उम्र पचपन से साठ के बीच रही होगी। फ़िरदौस कमज़ोर और चिड़चिड़े स्वभाव का था। उसके बाल बिखरे हुए, सफ़ेद और बिखरे हुए थे, जबकि उसकी दाढ़ी घनी, सफ़ेद और लहराती हुई थी। उसके वृद्ध चेहरे पर उसकी चिड़चिड़ी शख्सियत के अनुरूप झुर्रियाँ थीं। उसके होठों के किनारों पर गहरी नीचे की ओर रेखाएँ थीं, आँखों के पास कोई हँसी की रेखा नहीं थी। उसके माथे पर झुर्रियाँ इतनी फैली और गहरी थीं कि मानो ऊपरवाले ने खुद हथौड़े और छेनी लेकर उन्हें उसके चेहरे पर उकेर दिया हो। ऐसा लग रहा था मानो फ़िरदौस लगातार मुँह बना रहा हो, अपने भीतर के दानवों से लगातार जूझ रहा हो।

"अच्छा, क्या तुम मुझे जवाब दोगे?" फिरदौस ने रूखेपन से पूछा। "क्या चाहिए?" फिरदौस ने सिर्फ़

सोमेश्वर और इक़बाल को ही अपनी बेहद साधारण और आश्चर्यजनक रूप से साफ़-सुथरी झोपड़ी में आने दिया था। बाक़ी लोगों को बाहर इंतज़ार करने के लिए कह दिया गया था। गुजराती व्यापारी ने देखा कि एक पारंपरिक इस्लामी नमाज़ की चटाई बड़े करीने से लपेटकर दीवार में बने एक साफ़ चबूतरे पर रखी हुई थी।

सोमेश्वर ने कहा, 'मैं ग्वादर से आया हूं, मेरे दोस्त।'

"मैं तुम्हारा दोस्त नहीं हूँ। और जो भी दक्षिण से यहाँ आता है, वह ग्वादर से आता है। और कोई और जगह नहीं है जहाँ से आना हो। अपना काम बताओ।" सोमेश्वर फिरदौस का लहजा समझ नहीं पाया। लहजा भारतीय ज़रूर लग रहा था, लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं जैसा उसने

पहले कभी सुना हो। गुजराती ने विनम्रता से काम लिया।

Machine Translated by Google

हल्की-फुल्की बातें हुईं और फिर काम पर लग गए। 'मैं जहाँ से आया हूँ, वह धरती पर स्वर्ग है।' फिरदौस अचानक कुछ देर के लिए चुप हो गया।

उसका चेहरा साफ़ तौर पर नरम पड़ गया।

'हर कोई सोचता है कि उसकी मातृभूमि स्वर्ग है।'

सोमेश्वर ने पासकोड की अगली पंक्ति बोलते हुए कहा, "हाँ, मैं सच कह रहा हूँ। मेरे वतन में सब कुछ है। दौलत, खूबसूरती, अक्ल, हिम्मत और जुनून।" फिरदौस पहली बार हल्के से मुस्कुराई। "माफ़ करना दोस्त, पर तुम झूठ बोल रहे हो।"

हो सकता है अनजाने में, पर तुम झूठ बोल रहे हो। क्योंकि सच बोलने वाले सिर्फ़ मेरे ही लोग हैं, जब वे कहते हैं कि उनकी ज़मीन स्वर्ग है।'

सोमेश्वर ने बड़ी मुस्कान के साथ कहा, "मैं किसी दिन तुम्हारे वतन जाना चाहूँगा, मेरे दोस्त।" फिरदौस ने भौंहें चढ़ाईं। "यह लाइन पासकोड में नहीं

है।" "पता है। मैंने यूँ ही डाल दिया। मैं सचमुच तुम्हारे वतन जाना चाहूँगा।" फिरदौस मुस्कुराई, इस बार बड़ी

मुस्कान के साथ, और सोमेश्वर को गले लगा लिया। "आखिरकार, हम

राक्षसों से लड़ेंगे।' 'हम लड़ेंगे, मेरे दोस्त।' 'तुम्हारा नाम

क्या है?' 'सलमान।' फिरदौस ने

सोमेश्वर को घूरा। उसकी बाईं भौंह ऊपर

उठ गई। 'सच

में?' सोमेश्वर चुप रहा।

'तुम चाहते हो कि मैं तुम पर भरोसा करूँ? तो तुम्हें मुझ पर भरोसा करना ही होगा। एक बार फिर, तुम्हारा नाम क्या है?' 'सोमेश्वर।' फिरदौस मुस्कुराई। 'अब

तुम सच बोलो।' 'और

तुम्हारा नाम क्या है?' सोमेश्वर ने पूछा।

फ़िरदौस ने भौंहें चढ़ाईं। "फ़िरदौस। मैं तुमसे झूठ क्यों बोलूँगा?" सोमेश्वर धीरे से हँसा।

फ़िरदौस ने खिड़की से बाहर खुले मैदान की ओर देखा जहाँ भारतीय सैनिक जमा थे। "लगता है सोमेश्वर, तुम्हारे पास पर्याप्त लोग नहीं हैं।" "सलमान। सिर्फ़ सलमान का इस्तेमाल करो," सोमेश्वर ने कहा। "मैं भूल से भी कोई गलती बर्दाश्त नहीं कर सकता।"

"तुम सही हो। माफ़ी चाहती हूँ," फिरदौस ने पछतावे से कहा। "लेकिन मेरी बात वही है। तुम्हारे पास पर्याप्त लोग नहीं हैं, सलमान।" "हमारे पास सही संख्या में लोग हैं। बहुत कम नहीं। और साथ ही,

समय बहुत ज़्यादा नहीं है। हम कोई खुली जंग नहीं लड़ रहे हैं। हम

Machine Translated by Google

उसकी हत्या कर दो।' 'तुम्हारे

सैनिक ... उनमें से अधिकांश तुर्किक नहीं दिखते, सिवाय उस महिला के।
मुझे उम्मीद है कि उसने उन्हें अच्छी तरह प्रशिक्षित किया होगा और वे तुर्की भाषा समझते होंगे।' सोमेश्वर ने सहमति में सिर हिलाया।

'वे कौन हैं? वे कहाँ से हैं?' 'मुझे लगता है कि अभी यह न जानना ही
बेहतर है, फ़िरदौस,' सोमेश्वर ने कहा।

फिरदौस कुछ देर तक सोमेश्वर को घूरता रहा। फिर कंधे उचका दिए। "अच्छा, अगर वह तुम पर भरोसा करता है जिसके लिए मैं अपनी जान दे दूँ, तो मुझे भी यकीन है कि तुम जानते हो कि तुम क्या कर रहे हो। मेरे साथ चलो।"



'हम कहां जा रहे हैं?' सोमेश्वर ने पूछा, जब तीनों फिरदौस की झोपड़ी से बाहर निकले।

फिरदौस लालटेन पकड़े आगे चल रही थी और सूरज धीरे-धीरे डूब रहा था।
ऊँचे पहाड़ों के पीछे छिपते हुए। 'कबूतरों के बाड़े की ओर।' सोमेश्वर मुस्कुराया। उसे यह फिरदौस पसंद
आने लगी थी। उसने बिना समय गँवाए। संदेश तुरंत पक्षी-वाहक द्वारा ग़ज़नी में उसके संपर्क सूत्र को भेज दिया जाएगा। वह महमूद और उसके परिवार पर हमले की योजना बहुत समय से बना रहा होगा। और आखिरकार वह समय आ ही गया।

'क्या गजनी में आपका संपर्क तुरंत जवाब देता है?' सोमेश्वर ने पूछा।
यह एक हानिरहित प्रश्न है।
फिरदौस ने आँखों में चमक लिए पीछे मुड़कर देखा। उसे यह चतुर गुजराती पसंद आने लगी थी। अगर कोई व्यक्ति किसी और के बारे में लापरवाही से जवाब देता है, तो सबसे पहले वह उस व्यक्ति का लिंग बता देता है। चूँकि ज़्यादातर भाषाओं में लिंग का एक निश्चित भाव होता है, इसलिए अगर आप लापरवाही से बात करते हैं, तो आप वह या वह या उसके किसी अन्य रूप का इस्तेमाल करेंगे। और अगर सोमेश्वर को दरबार के वरिष्ठ स्तर पर संपर्क करने वाले व्यक्ति के लिंग के बारे में थोड़ी भी जानकारी होती, तो वह तुरंत विद्रोही की पहचान करने के लिए क्षेत्र को सीमित कर देता। 'अच्छा प्रयास,' फिरदौस ने उत्तर दिया।

सोमेश्वर चुप रहा और मुस्कुराया। वह इस बात से प्रभावित था कि कितनी सावधानी से
फिरदौस, हालांकि स्पष्टतः विचलित थी।

Machine Translated by Google

फिरदौस दूर खड़े भारतीयों की ओर मुड़ा और ऊँची आवाज़ में बोला, "तुम लोग खलिहान में अपना घर बना सकते हो। वहाँ तुम सबके लिए काफ़ी जगह है।" विजयन ने पुष्टि के लिए सोमेश्वर की ओर देखा। सोमेश्वर ने झुंड के नेता की भूमिका निभाते हुए सिर हिलाया। विजयन ने तुरंत खेत के बड़े खलिहान में एक शिविर

लगाने की तैयारी शुरू कर दी।

फिरदौस तेजी से आगे बढ़ी, उसके पीछे सोमेश्वर और इकबाल भी थे।
आपके सवाल का जवाब देने के लिए, जब मैं ग़ज़नी को कोई संदेश भेजता हूँ, तो वे जब भी संभव हो, जवाब देते हैं। कभी-कभी तो बस एक दिन का समय लग जाता है। कभी-कभी तो इसमें कुछ हफ़्ते भी लग जाते हैं।'

'वे?!' सोमेश्वर को जानकारी का मुख्य अंश समझ आ गया था—कम से कम उसके हिसाब से तो। और वह हैरान रह गया।

फ़िरदौस चलता रहा। चुपचाप।

'क्या गजनी दरबार के शीर्ष स्तर पर एक से अधिक विद्रोही हैं?'
सोमेश्वर ने पूछा।

'मैंने ऐसा कब कहा?' 'तुमने
अभी-अभी "वे" कहा।' 'हाँ,
"वे" का मतलब "वे/उन्हें" ही होता है। लेकिन वे एक ही व्यक्ति हैं।' सोमेश्वर अब पूरी तरह
उलझन में था। 'मैं समझ नहीं पा रहा हूँ।' 'तुम्हें समझना नहीं चाहिए।' सोमेश्वर चलता रहा,
हल्की-सी हाँफ रहा था, और किसी
तरह उसके साथ कदम मिलाने की कोशिश कर रहा था।
दुबली-पतली और तेज फिरदौस।

फिरदौस ने सहजता से कहा, 'मुझे कुछ सप्ताह से ग्वादर से कोई समाचार नहीं मिला है।'

'हम्म,' सोमेश्वर ने कहा।

'आपने वहां बंदरगाह पर किसी अब्बासी जहाज के आने के बारे में नहीं सुना है, क्या आपने सुना है?
तुम? ज़ाहिर है, इसमें खलीफा के रंग होंगे।' सोमेश्वर ज़रा भी नहीं हिचकिचाया। 'नहीं, मैंने नहीं

देखे।' वह अब्बासी जहाज़ के बारे में बाद में फिरदौस से बात करेगा। एक बार जब उसे उस

आदमी के बारे में यकीन हो जाएगा। लेकिन ज़ाहिर था कि खिलाफत का जहाज़ किसी काम से आ रहा था जो ग़ज़नी के शाही दरबार से जुड़ा था। हो सकता है कि ग़ज़नी में फिरदौस के किसी संपर्क ने उसे इसकी जानकारी दी हो। सोमेश्वर ने इकबाल की तरफ़ देखा। अपने दोस्त के हाव-भाव से उसे अंदाज़ा हो गया कि इकबाल भी उसी नतीजे पर पहुँचा था।

वे पहुँच गए थे। फिरदौस ने कबूतरखाने का लकड़ी का दरवाज़ा धक्का देकर खोला। अँधेरा था। फिरदौस के हाथ में जो लालटेन थी, वह यहाँ खास तौर पर काम आएगी। 'संदेश केंद्र में आ जाओ।'

Machine Translated by Google



सूरज बहुत पहले डूब चुका था। घना अँधेरा छा जाना चाहिए था। लेकिन ऐसा नहीं था। क्योंकि चाँद अपनी कोमल रोशनी हर जगह फैला रहा था। और हाँ, बर्फीले पहाड़ों की खासियत यह है कि वे बहुत ज़्यादा रोशनी परावर्तित करते हैं। नतीजतन, अभी भी काफ़ी दृश्यता थी।

शिविर खलिहान में लगाया गया था, जो परिस्थितियों को देखते हुए काफी आरामदायक था। भरपेट भोजन किया गया था। पुआल और जूट से अपेक्षाकृत मुलायम बिस्तर बनाए गए थे—पिछले हफ़्ते खुले में, जमी हुई, ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों पर जिस तरह पलटन सो रही थी, उसकी तुलना में यह सुखद था। सभी भारतीय जल्दी सो गए थे। सेना के कूच के दौरान सुनहरा नियम यह था कि अगर आपको किसी भी समय खाने और सोने का मौका मिले, तो आपको उसका लाभ उठाना चाहिए। संतरी की ड्यूटी और पहरेदारी का कार्यक्रम तय किया गया था, और नियुक्त पहरेदारों को हर दो घंटे में बदला जाता था। इस तरह सभी को सोने का पर्याप्त मौका मिलता था, और शिविर की सुरक्षा सुनिश्चित होती थी।

उनके अधीन सभी योद्धाओं के लिए आराम और सुरक्षा की गारंटी थी।
एक कमांडर इससे अधिक क्या चाह सकता है?

विजयन अब आराम कर सकता था। वह बड़े खेत के किनारे, उत्तरी बाड़ के ठीक बाहर, ज़मीन पर बिछे एक फर के गलीचे पर बैठ गया। उसे वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य, दूर से उठते बर्फ़ से ढके पहाड़ों, दूर से बहते झरने की आवाज़, और आस-पास की हरी-भरी वनस्पतियों से मंत्रमुग्ध हो जाना चाहिए था। खुज़दार उस इलाके की उन चंद घाटियों में से एक थी जहाँ पानी प्रचुर मात्रा में था। शुष्क भूरे और ठंडे सफ़ेद रंग के प्रभुत्व वाली ज़मीन पर, हरियाली का एक छोटा सा टुकड़ा।

उत्कृष्ट. आकर्षक. भव्य.

लेकिन विजयन तो अपने बगल में बैठी अलौकिक सुन्दरी से मोहित हो गए।

अमल.

पांड्य योद्धा ने एक क्षण के लिए उसका हाथ पकड़ लिया और फिर छोड़ दिया।

अपनी हथेलियाँ आपस में रगड़ीं और उनमें फूँक मारी। अमल ने अपने बगल में बैठे हट्टे-कट्टे मर्दाना लेकिन बेहद शर्मीले आदमी को घूरा, मुस्कुराई और फिर आसमान की तरफ देखा, उस पर बिखरे अनगिनत नक्षत्रों को निहारा।

Machine Translated by Google

'यह तो अद्भुत है,' उसने फुसफुसाते हुए कहा। 'मैंने ऐसा कुछ पहले कभी नहीं देखा।'
मेरे जीवन में। यह जमी हुई रेगिस्तानी हवा किसी न किसी तरह आसमान की खूबसूरती बढ़ा देती है।'

"हाँ," विजयन ने कहा। "मैंने अब तक कभी बर्फ़ नहीं देखी। रात में तो यह
धरती आकाश से भी अधिक चमकती है।'

"यह मेरा भी पहला मौका है, वलीद," अमल ने कहा। उसने अपनी उँगलियों से बालों में कंघी की और लहरों को कानों के पीछे धकेला। बर्फ़ से और भी ज़्यादा चाँदनी उसके बेदाग़ चेहरे पर पड़ रही थी, जिससे वह चमक रहा था। ऊपर वाले ने इस खूबसूरत चेहरे को बिना किसी दाग़ के बनाया था। "प्रकृति हमें अपने सामने आने वाले ख़तरों को दरकिनार करने के लिए उकसा रही है। ज़रा इसे दरकिनार कर दो..." अमल ने विजयन की तरफ़ देखा और शर्माते हुए मुस्कुराई।

··· और आनंद लें

फिर भी, वह हिचकिचाया.

यदि यह अवरोध इतना निराशाजनक न होता तो यह अत्यंत आकर्षक होता।

'वलीद...' अमल ने फुसफुसाया।

'हम्म?'

'विजयन...' अमल को

अपना नाम कहते सुनकर विजयन के शरीर में बिजली दौड़ गई। बहुत समय हो गया था। वह उसे कब से वलीद कह रही थी।

उसे कोई एतराज़ नहीं था कि कोई और उसका छद्म नाम इस्तेमाल करे। लेकिन उसके होठों से, वह अपना नाम सुनना चाहता था। उसके होंठ...

वह आगे झुका। थोड़ा सा। फिर भी हिचकिचा रहा था।

अमल पीछे नहीं हटी। वह मुस्कुराई, उसके होंठ ठंड से काँप रहे थे। उसकी आँखें उसे कोमलता से देख रही थीं। उन्होंने उसे एक पुरानी आग से गर्म कर दिया। उसने उम्मीद से अपनी ठुड्डी ऊपर उठाई, उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था।

विजयन ने धीरे से उसका चेहरा पकड़ा और अपना चेहरा उसके करीब ले आया।

केवल स्वर्ग ही जानता है कि वह किस बात का इंतजार कर रहा था।

अमल को बहुत हो गया था। उसने दूरी कम की और विजयन को चूमा। धीरे से।
फिर जोश से उसके होंठों को अलग करते हुए, वह कराह उठी और उसे अपनी बाहों में भरकर अपने पास खींच लिया।

विजयन अजीब तरह से पीछे हट गया। और नज़रें फेर लीं। अमल सीधी होकर बैठ गई, नज़रें फेर लीं। उसने अपने जलते गालों को छुआ।

'माफ़ करना... माफ़ करना...' पंड्या बुदबुदाया।

अमल ने स्पष्ट शब्दों में कहा, 'मुझे खेद नहीं है, विजयन।'
वह नाम जो उसे पसंद था।

विजयन उसे घूरता रहा, स्तब्ध होकर निष्क्रिय हो गया। लेकिन उसके चेहरे पर एक चौड़ी मुस्कान आ गई।
चेहरा। ऐसा लग रहा था जैसे उसने अभी-अभी स्वर्ग छुआ हो, पर बहुत ही क्षण भर के लिए। वह

Machine Translated by Google

अपना सिर उसके पास ले गया। और फिर वह फिर से हिचकिचाया।

किसी भी पुरुष का सामान्य डर जो यह सोचता है कि उसकी महिला बहुत अच्छी है
उसके लिए ... मैं जागूंगा और महसूस करूंगा कि यह सब एक सपना था।

अब, ज्यादातर महिलाएं ऐसे पुरुष से बेहद चिढ़ जाती हैं जो इतना
संकोची और घबराई हुई। लेकिन अमल नहीं। वह जानती थी कि, भले ही यह अजीब था, वह
ज़िम्मेदारी लेनी ही होगी। यह आदमी इसके लायक था। उसकी सादगी इसके लायक थी
यह।

'विजयन, यह सबके लिए स्पष्ट है। यह मेरे लिए भी स्पष्ट है। यह सबके लिए स्पष्ट है।
"तुम्हारे लिए। लेकिन किसी को तो यह कहना ही होगा।"

विजयन उसे घूरता रहा। महान योद्धा, जो लड़ सकता था
एक ही समय में कई दुश्मन, खोजने के लिए संघर्ष कर रहे थे
स्पष्ट शब्दों को कहने का साहस।

"तो मैं साफ़-साफ़ कह दूँ," अमल ने मुस्कुराते हुए कहा। "मैं तुमसे प्यार करता हूँ। और मैं
जान लो कि तुम मुझसे प्यार करते हो।'

विजयन का चेहरा लाल हो गया और वह बहुत शर्मिंदा हो गए, जो उनके चेहरे पर दिखाई दे रहा था।
उसकी काली त्वचा.

'तो,' अमल ने लगभग हँसते हुए कहा। 'क्या तुम्हारे पास कुछ है?
कहना?'

'मैं तुमसे प्यार करता हूँ!' विजयन को अचानक बोलने का साहस मिल गया। और वह चाहता था
इससे पहले कि उसकी बहादुरी फिर से उसका साथ छोड़ दे, वह सब कुछ कह पाता। 'मैं तुमसे इतना प्यार करता हूँ कि तुम्हें ... मैं
देखता ही रह जाता हूँ। तुम्हें देखकर मेरी साँसें थम सी जाती हैं।'
तुम पर मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं साँस नहीं ले रहा हूँ... अगर हम दोनों बच गए
पागल मिशन, क्या आप ... मैं तुमसे शादी ...क्या तुम इस बात पर विचार करोगे कि ... मेरा मतलब ... इच्छा
करना चाहती हूँ?'

अमल को बहुत हैरानी हुई। पहले तो वह कुछ बोल ही नहीं रहा था।
और अब, उन्होंने बहुत कुछ कह दिया!

'मैं तुमसे शादी करूंगी, मेरे शर्मीले योद्धा,' उसने कहा और हंस पड़ी।

विजयन को अपने कानों पर यकीन नहीं हुआ। वह कान से कान तक मुस्कुराया। जैसे
कहावत वाली बिल्ली को मलाई मिल गई। 'मैं... वाह... मेरा मतलब है.उम्म्मैं हूँ ...
... वह ... यह बहुत अच्छा है ...'

अमल अब बेबस होकर हँस रहा था। उसने उसकी छाती थपथपाई। उसे लगा
ज़िंदा। जितना उसने पहले कभी महसूस नहीं किया था, उससे भी ज़्यादा ज़िंदा। उसने उसकी तरफ़ हाथ बढ़ाया और फिर ठिठक गया।

उसने आँखें सिकोड़कर दूर तक देखा। अमल के कान भी खड़े हो गए। वे
उन्होंने एक-दूसरे को देखा। उन्हें उत्तर दिशा से एक धीमी सी भिनभिनाहट सुनाई दी। एक धुंधला-सा द्रव्यमान
नज़र में आया। मंद होती रोशनी के कारण मुश्किल से दिखाई दे रहा था। बहुत दूर।
दूर पहाड़ की चोटी पर। किसी विशालकाय की तरह उनकी ओर बढ़ रहा है
लहर।

Machine Translated by Google

वे अभी भी बहुत दूर थे। कम से कम आधे घंटे से पैंतालीस मिनट की दूरी पर।
वह एक मौत जैसी शांत रात थी, और पहाड़ों की शांति के कारण ध्वनि बहुत दूर तक जा रही थी।

विजयन और अमल तुरंत खड़े हो गए।
"वह क्या है?" अमल ने पूछा। "किसी तरह का झुंड?" विजयन, वह घबराया हुआ, प्रेम में डूबा
हुआ आदमी, तुरंत गायब हो गया। विजयन, वह तेज-तर्रार योद्धा, फिर से प्रकट हो गया था।

विजयन ने कहा, 'इतनी दूर तक देखने के लिए पर्याप्त रोशनी नहीं है।'
स्थिर और निश्चित। 'मैं नहीं बता सकता। खलिहान की ओर दौड़ो। हमारे सैनिकों को इकट्ठा करो। उत्तर दिशा से एक भीड़ आ रही है।'
"रुको!" अमल ने कहा। उसने अपना दाहिना कान पकड़ा। "सुन रही हो? ये तो इंसान हैं, बिल्कुल।"

"लगता है वे चिल्ला रहे हैं," विजयन ने कहा। "अमल, हमारे पास ज़्यादा समय नहीं है। दौड़कर दूसरों को खबरदार करो। ये लोग जल्द ही हम पर हमला करेंगे। सोमेश्वर, इक़बाल और फिरदौस को भी खबरदार करो। वे कबूतरखाने में हैं।"



फिरदौस ने अभी-अभी ग़ज़नी में अपने संपर्क को पत्र लिखना समाप्त किया था। इसमें काफ़ी समय लगा था क्योंकि पत्र को एन्क्रिप्ट करना था। और यह एन्क्रिप्शन सोमेश्वर में अब तक देखी गई किसी भी चीज़ से कहीं ज़्यादा मज़बूत था, यहाँ तक कि शाही परिवारों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली एन्क्रिप्शन तकनीकों से भी। फिरदौस और उसके संपर्क ने एन्क्रिप्शन कोड नियमित रूप से बदला; हर महीने के पहले शुक्रवार को एक नई क्रिप्टोग्राफ़िक कुंजी शीट घड़ी की सुई की तरह आ जाती थी।

महमूद के खिलाफ ये षड्यंत्रकारी बहुत सावधान थे।
गजनी। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वे अब तक पकड़े या खोजे नहीं जा सके थे।
फिरदौस ने वह चिट्ठी सोमेश्वर और इक़बाल को दिखाई, जो भी उससे खुश लग रहे थे। उसने उस छोटे से चर्मपत्र को, जिस पर छोटे अक्षरों में संदेश लिखा था, सावधानी से लपेटा और एक कैप्सूल में डालकर कबूतर के पैर में बाँध दिया।

चिड़िया को पकड़े हुए फिरदौस ने दरवाज़े की ओर इशारा किया। सोमेश्वर ने उसे खींचकर खोल दिया।

"शुभकामनाएँ, महान पक्षी," फ़िरदौस ने पक्षी को रात की हवा में छोड़ते हुए कहा। "हमारा संदेश ग़ज़नी पहुँचा दो।" "शुभकामनाएँ," सोमेश्वर ने कहा। "हमारा
संदेश उन तक पहुँचा दो।"

Machine Translated by Google

इक़बाल और फिरदौस सोमेश्वर की तरफ़ देखकर मुस्कुराए। वे उस चिड़िया की तरफ़ मुड़े जो ऊपर और ऊपर उड़ रही थी, एक छोटी सी धूसर गेंद जो जल्द ही अँधेरे में विलीन हो गई।

तभी उन्होंने अमल को खलिहान की ओर दौड़ते देखा। उन्हें इशारा करके, उसने उन्हें अपने साथ चलने का इशारा किया।

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 18

हड़ताल से पहले तूफान

खुजदार, अफ़ग़ानिस्तान के बाहर

चोल-परमार सैनिक युद्ध के लिए जल्दी से तैयार हो गए थे। उन्होंने अपनी धोतियाँ सैन्य शैली में कस लीं और धड़ पर कवच पहन लिया। अपनी भुजाओं की रक्षा के लिए कवच और पिंडली की रक्षा के लिए कवच पहन लिए। उन्होंने अपने हथियार और हेलमेट पहन लिए। अपनी तलवारों और चाकुओं के ब्लेड की जाँच की। अपनी ढालों को अपनी पीठ पर टिकाया। अपने धनुष बाँध लिए। और पंक्तिबद्ध होकर खलिहान के भीतर पहुँच गए।

नरसिंह इकट्ठे योद्धाओं के पास गए। अमल की सलाह के बिलकुल विपरीत, उन्होंने दर्द कम करने और ऊर्जा देने वाली दवाओं की दोहरी खुराक ले ली थी। उनके लकवाग्रस्त दाहिने हाथ को उनके धड़ से कसकर बाँधा गया था, और कंधे पर एक स्लिंग भी था जो मोटे कपड़े के ढाँचे का काम भी कर रहा था। उनकी बंधी हुई भुजा के आगे उनकी ढाल बंधी हुई थी, और उनके दाहिने कंधे पर एक बड़ा धातु का शोल्डर गार्ड लगा हुआ था। उनकी दोनों पिंडलियों में शिन गार्ड बंधे थे और उनके स्वस्थ बाएँ हाथ पर एक आर्म गार्ड लगा हुआ था। उनकी म्यान उनके दाहिने बाजू में बंधी थी। उन्होंने तलवार को आराम से बाहर निकाला, उसकी जाँच की और उसे म्यान में रख लिया। उन्होंने अपनी पिंडलियों में बंधे चार चाकुओं की जाँच की। और अपनी कमर के बाईं ओर बंधी छोटी म्यानों में लगे दो चाकुओं की भी।

फिर उसने अपने सैनिकों का निरीक्षण करना शुरू किया।

कुछ ही देर में उन्हें बाहर से तेज आवाजें सुनाई देने लगीं।

'नसरुल्लाह साहब!' यह

विजयन की आवाज थी.

नरसिंह ने सिर हिलाया और उसके एक सैनिक ने खलिहान का दरवाजा खोला।

नरसिम्हन और अमल बाहर निकल गए।

विजयन आगे बढ़े। उनके पीछे एक हज़ार से भी कम भूखे, थके हुए, अस्त-व्यस्त और घबराए हुए पुरुषों, महिलाओं और बच्चों का एक विशाल हुजूम उमड़ पड़ा। हालाँकि सभी घबराए हुए नहीं थे। उनमें से लगभग पचास लोग अनुशासित रहे, संगठित रहे और लोगों के समूह को साथ लेकर चलते रहे।

Machine Translated by Google

'क्या हो रहा है, वलीद?' नरसिम्हन ने विजयन के अंदाज़ में पूछा।
नाम।

"गज़नी से भागे हुए गुलाम, महोदय," विजयन ने उत्तर दिया। "इनमें अफ़्रीकी, यज़ीदी, कॉप्टिक ईसाई, पारसी पारसी हैं, लेकिन उनमें से ज़्यादातर हमारे ही भारतीय हैं—हिंदू, बौद्ध और मुसलमान। वे किसी तरह बचकर भागने में कामयाब रहे। लगभग नौ सौ गुलाम हैं। लेकिन उनके साथ पचास लड़ाके भी हैं, जो सभी भारतीय हैं। और महमूद की सेना उनका पीछा कर रही है।"

'महमूद के लड़ाके यहाँ आ रहे हैं?' 'लगता है।' 'वे कितनी दूर हैं?' 'शायद
छह-सात घंटे की दूरी पर। वे
शायद कल भोर तक यहाँ पहुँच जाएँगे।' 'इतनी
दूर?' नरसिम्हन ने पूछा। 'तो फिर उन्होंने उन्हें कैसे देखा?' 'मैंने भी यही पूछा।' 'और जवाब मिला?' 'वहाँ पहाड़ों में, अगर आप ऊँचाई पर हैं, तो घोड़े को आप तक
पहुँचने से कई घंटे पहले ही देख सकते हैं। क्योंकि एक पहाड़ से नीचे उतरने और अगले पहाड़ पर चढ़ने में बहुत समय लगता है।
और हाँ, शाम के समय वे ज़्यादा तेज़ नहीं हो
सकते, वरना फिसलकर मर जाएँगे।'
'कितने हैं?' 'दो सौ ग़ज़नवी घुड़सवार,' विजयन ने कहा।

नरसिंह ने आँखें सिकोड़ लीं। सिर्फ़ दो सौ। और हम हज़ार हैं। जिनमें से लगभग सौ प्रशिक्षित योद्धा हैं। यह एक अवसर है।

विजयन ने आगे कहा, "उनका नेतृत्व अबू कासिम नाम का एक आदमी कर रहा है, जो खुद को तुर्क कसाप-ए-हिंद कहता है। भारत का तुर्की कसाई।" अमल ने कहा, "तो फिर हमें कसाई का चाकू उसी पर चलाना होगा।"

विजयन ने सहमति जताते हुए कहा, 'मदुरै की मीनाक्षी के अनुसार, इससे बेहतर कुछ नहीं है।'
उन बर्बर लोगों को मारने से बेहतर जीवन और
क्या हो सकता है?' 'तुम्हारे बीच नेता कौन है?' नरसिंह ने दासों से पूछा।
'मैं हूं,' पुला ने उत्तर दिया।
नरसिंह ने पुला की ओर देखा। एक लंबा आदमी, लगभग चोल सेनापति के बराबर कद का। सांवले रंग का, सुंदर दाढ़ी वाले चेहरे वाला, पुला का शरीर मांसल, लचीला और गठीला था। लेकिन उसकी त्वचा पर खिंचाव के निशान बता रहे थे कि उसकी मांसपेशियाँ पहले और भी ज़्यादा शानदार थीं। पोषण की कमी ने

Machine Translated by Google

उसका शरीर कमज़ोर हो गया था। लेकिन उस कमज़ोर अवस्था में भी, पुला फुर्ती से चलता था, अपने स्वाभाविक योद्धा कौशल का प्रदर्शन करता हुआ। उम्र के हिसाब से, वह लगभग पच्चीस साल का लग रहा था। और गुलामी में बिताए वर्षों के बावजूद, उसके चेहरे पर एक स्वाभाविक चमक थी। वह नेतृत्व करने का आदी था। एक ऐसा व्यक्ति जो अपने आस-पास के कमज़ोर लोगों की ज़िम्मेदारियाँ उठाने का आदी था।

'तुम्हारा नाम क्या है, मेरे दोस्त?' नरसिम्हन ने पूछा।

"मैं पुला हूँ। पुलकित, अगर आप चाहें तो," पुला ने उत्तर दिया। "मैं सबसे छोटा हूँ।"

चालुक्य सम्राट जयसिंह के भाई, वातापी के सत्याश्रय के पुत्र। कई साल पहले, मेरे भाई ने मुझे कुछ सैनिकों के साथ सोलंकी और अन्य भारतीय राजवंशों के साथ सोमनाथजी की रक्षा के लिए भेजा था। मैं और मेरे लोग, और शहर के कई अन्य रक्षक, ग़ज़नवी सैनिकों द्वारा बंदी बना लिए गए थे।

हम तब से गुलाम हैं।'

स्तब्ध विजयन और अमल अविश्वास से देखते रह गए। उन्होंने अपने कमांडर नरसिम्हन की ओर देखा, और फिर पुलकित की ओर।

एक चालुक्य राजा!

वे चोल-चालुक्य की पौराणिक दुश्मनी से भली-भांति परिचित थे। उन्होंने आपस में कई युद्ध लड़े थे। और नरसिंह के गुरु, राजेंद्र चोल ने कई साल पहले पुलकित के पिता सत्याश्रय को आमने-सामने की लड़ाई में मार डाला था। पुलकित उस समय एक छोटा बच्चा रहा होगा।

सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि चालुक्य निगरानी दस्ता राज्य के लिए जिम्मेदार था
नरसिम्हन वहां मौजूद थे, उनका दाहिना हाथ लकवाग्रस्त था।

तुर्कों के उन तक पहुँचने से पहले उन्हें थोड़ी राहत मिली। नरसिम्हन
समय बर्बाद नहीं करना चाहता था। 'क्या आप मुझे पहचानते हैं, राजकुमार पुलकित?' पुला ने सिर हिलाया। 'मुझे पता है

कि नसरुल्लाह आपका असली नाम नहीं है।' नरसिम्हन एक पल के लिए झिझका। फिर बोला। 'आपके पिता

एक महान व्यक्ति। मैं अब भी अपने सम्राट के प्रति वफ़ादार हूँ। हालाँकि, इससे इस बात पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि आपके पिता एक महान व्यक्ति थे। और जो हुआ उसके लिए मुझे खेद है।' पुलकित ने गहरी साँस ली। 'यह युद्ध है। युद्ध में यही होता है।' विजयन आगे बोले। 'महाभारत के महायुद्ध में, दोनों

तरफ़ कुछ अच्छे लोग थे। पांडवों की तरफ़ और कौरवों की तरफ़।' पुलकित ने विजयन की तरफ़ देखा और फिर नरसिंह

की तरफ़। उनके शब्द धीमे लेकिन स्पष्ट थे। 'कौरव शायद सौ रहे होंगे। और पांडव शायद पाँच। लेकिन अगर कोई बाहरी हमला करता, तो वे एक सौ पाँच होते...'

Machine Translated by Google

पुलकित ने महान राजा युधिष्ठिर को उद्धृत किया था, जिन्हें भगवान भी कहा जाता है
धर्म का। सीधे शब्दों में कहें तो, संदेश यह था कि जब कोई बाहरी बर्बर व्यक्ति हमला करता है, तो धर्म के सभी लोगों को एकजुट होना चाहिए।

नरसिंह मुस्कुराए और दोस्ती का इज़हार करते हुए अपना बायाँ हाथ आगे बढ़ाया। "हम 105 हैं!" "हम 105 हैं!" पुलकित ने कहा और अपने दाहिने हाथ से

नरसिंह का बायाँ हाथ पकड़ लिया, जैसे योद्धा भाई एक-दूसरे को पकड़ते हैं।

'हम 105 हैं!' विजयन ने अपना हाथ जोड़ते हुए दोहराया।

अमल आगे बढ़ा और तीनों आदमियों के हाथ थाम लिए। 'हम 105 हैं!' 'जनरल, मेरे सैनिकों की कमान आपके

हाथ में है,' पुलकित ने नरसिम्हन से कहा। वह जानता था कि ज़्यादा अनुभवी और ज़्यादा ज़बरदस्त योद्धा कौन है। उसे नेतृत्व सौंपने में कोई असम्मान नहीं था।

नरसिम्हन ने सिर हिलाया और आगे झुके, 'हमारे पास आश्चर्य का तत्व है।
उन्हें उम्मीद है कि वे नौ सौ गुलामों और पचास सैनिकों का पीछा करेंगे, जो थके हुए, भूखे और हताश होंगे। उन्हें उम्मीद नहीं है कि हमें खाना मिलेगा, जो कि हमें मिलेगा।
वे हमसे चालीस और प्रशिक्षित योद्धाओं की उम्मीद नहीं करते, जो हमारे पास होंगे। वे हमसे लगभग एक हज़ार लोगों के पास हथियार होने की उम्मीद नहीं करते, लेकिन हम होंगे। क्योंकि फिरदौस के पास यहाँ हथियारों का भंडार है। वे हमसे यह उम्मीद नहीं करते कि हम जाल और छल-कपट के साथ तैयार और उनका इंतज़ार करेंगे। वे उम्मीद करते हैं कि वे हम पर हमला करेंगे और हम सबका कत्लेआम करेंगे। वे हमसे जवाबी कार्रवाई की उम्मीद नहीं करते।

हमें इस आश्चर्य के तत्व का लाभ उठाना चाहिए।' पुलकित, विजयन और

अमल ने सिर हिलाया।
'तो हम यह करेंगे।'



रात काफी हो चुकी थी। भागे हुए गुलाम और सैनिक नरसिंह द्वारा बनाई गई योजनाओं पर काम कर रहे थे। शिफ्ट में काम कर रहे थे, जिससे सबको सोने का भी समय मिल रहा था। इसके अलावा, फिरदौस ने अपने सूखे मेवों का विशाल भंडार सबके लिए खोल दिया था। एकदम सही। सूखे मेवे जल्दी खराब नहीं होते, इसलिए पुराने भंडार भी पूरी तरह खाने योग्य थे। और ये ज़बरदस्त ऊर्जा देते हैं। ठीक वही जिसकी रक्षकों को ज़रूरत थी।

बड़े खलिहान में, जहाँ बहुत से लोग सो रहे थे, आग जलाई गई थी। लेकिन बाहर कोई आग नहीं जलाई गई थी। वे कोई प्रकाश-स्तंभ जलाकर नहीं रखना चाहते थे।

Machine Translated by Google

तुर्कों को रात में उन्हें खोजने और उन्हें आश्चर्यचकित करने के लिए।

ध्रुव को मुख्यद्वार की तैयारियों का प्रभार सौंपा गया था
सुरक्षा व्यवस्था, और सोमेश्वर फिरदौस के साथ खेत के दूसरे छोर पर, खलिहान के पीछे, भोजन और हथियारों के जखीरे का प्रबंधन कर रहा था। इसीलिए वे एक-दूसरे से नहीं मिले थे। और सच कहूँ तो, अब खेत में एक हज़ार से भी कम लोग थे। लेकिन सोमेश्वर का काम पूरा हो चुका था, और वह झाड़ियों के पास, मुख्य द्वार के पास आ गया था। वहीं उसने उसे देखा था।

या फिर उसने सोचा कि उसने ऐसा किया है, क्योंकि गुलामी और कठिन परिश्रम के वर्षों ने उस युवक का रूप बदल दिया था।

'ध्रुव?!' सोमेश्वर ने विश्वास से परे अचंभित होकर पूछा।

रोशनी की कमी और थकान ने सोमेश्वर को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि उसका मन उसके साथ छल कर रहा है। लेकिन उसे पूछना ही था। ध्रुव ने पलटकर देखा। युवक ने सोमनाथ के व्यापारी की ओर देखा, उसके सांवले युवा ⋯

चेहरे पर आश्चर्य साफ़ झलक रहा था। 'पिताजी?!'

'ध्रुव!!' यह वही

बेटा था जिसे उन्होंने सोमनाथ मंदिर पर हमले के दौरान खो दिया था। उनके अनुसार, वह बेटा जो महान महादेव की रक्षा करते हुए शहीद हो गया था।

मेरा लड़का जीवित है?

वह अलग दिख रहा था, जैसे इन कुछ वर्षों में उसका चेहरा एक दशक बूढ़ा हो गया हो।
लेकिन वर्षों की लड़ाई और कड़ी मेहनत की वजह से अब उसके मध्यम कद के दुबले-पतले शरीर की मांसपेशियाँ लहरा रही थीं। उसके बाएँ गाल पर एक गौरवशाली युद्ध का निशान था। और एक और निशान उसकी छाती पर, धड़ के दाहिनी ओर तक फैला हुआ था। ये निशान इस बात का प्रमाण थे कि उसका बेटा अब एक मर्द बन गया है।

मेरा लड़का जीवित है!

सोमेश्वर की आवाज रात के सन्नाटे में मंदिर की घंटी की तरह गूंज रही थी।
'ध्रुव! मेरे बेटे! ध्रुव!' दोनों पुरुष एक-दूसरे से

ऐसे गले मिले जैसे प्रयागराज संगम पर गंगा और यमुना नदियाँ एक-दूसरे में विलीन हो रही हों । मानो भाग्य ने षडयंत्र रचकर ध्रुव को स्वर्ग से वापस खींच लिया हो, ताकि वह एक बार फिर अपने पिता को गले लगा सके। मानो राजा भगीरथ ने, जैसा कि किंवदंतियों में कहा गया है, पवित्र गंगा नदी को स्वर्ग से धरती पर उतारा हो।

आँसू बाढ़ की तरह बह निकले।

तेज़ आवाज़ें सुनकर, दूसरे लोग यह देखने के लिए इकट्ठा हो गए कि क्या हो रहा है। पुला अपने भरोसेमंद साथी को हैरानी से देख रहा था। नरसिम्हन और विजयन अपने मिलनसार बूढ़े दोस्त को ऐसे रोते हुए देख रहे थे जैसे उसे अभी-अभी दूसरी ज़िंदगी मिली हो।

उनका बेटा जीवित था। महादेव की जय हो। उनका बेटा जीवित था।

Machine Translated by Google



नरसिम्हन ने अपनी टीम और भागे हुए गुलामों के साथ पूरी रात काम किया था, तथा उन्हें अलग-अलग पाली में पहरा देने और सोने के लिए कहा था।

अपने प्रमुख सहयोगियों पुलकित, विजयन और अमल के माध्यम से, जनरल नरसिम्हन ने सुनिश्चित किया कि उनकी योजनाओं का क्रियान्वयन तेजी से हो।

सबसे पहले, उन्होंने फिरदौस के फार्म से दो किलोमीटर उत्तर में परिधि सुरक्षा स्थापित करवाई, जिसमें आने वाले दुश्मन के बारे में सूचना देने की व्यवस्था थी, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उनके सैनिक अचानक से आश्चर्यचकित न हो जाएं।

फिरदौस के हथियारों का विशाल भंडार भी खुल चुका था। वह लंबे समय से ग़ज़नवी के ख़िलाफ़ लड़ाई की तैयारी कर रहा था। सभी नब्बे सैनिक पूरी तरह से हथियारों से लैस थे। तलवारें, ढालें, हर व्यक्ति के पास कम से कम पाँच चाकू। और सबसे ख़ास बात, उन सभी के पास धनुष-बाण थे। वे दूर से ही तुर्कों पर निशाना साध सकते थे।

आज़ाद किए गए गुलामों को हथियार भी दिए गए। पास से वार करने के लिए चाकू, और दूर से तुर्कों पर हमला करने के लिए लंबे भाले और फावड़े। गुलामों को बताया गया कि उनका मुख्य काम दूर से तुर्क घोड़ों पर हमला करना है। एक बार तुर्क घोड़े से अलग हो गए, तो वे आसान शिकार बन जाएँगे।

चोल-परमार अपने घोड़ों के साथ आए थे, जिनकी संख्या लगभग चालीस थी और जो उन्होंने ग्वादर से खरीदे थे। कुछ चोल-परमार सैनिकों और पुलकित के कुछ आदमियों की एक संयुक्त टुकड़ी को आदेश दिया गया था कि वे इन घोड़ों पर सवार होकर बकरी के बाड़े और बड़ी झोपड़ी के पीछे छिप जाएँ। जब तुर्क खेत में किसी हाथापाई में फँस जाते, तो यह दल पार्श्व से हमला करता और दुश्मन को कुछ समझ आने से पहले ही जितने तुर्कों को मार सकता था, मार डालता। ग़ज़नवी निश्चित रूप से यह उम्मीद नहीं करते थे कि दासों के पास घुड़सवार सेना होगी जो उनकी सहायता के लिए दौड़ेगी।

भाषण देने की कोई ज़रूरत नहीं थी। भागे हुए गुलामों का उत्साह इससे बढ़कर नहीं हो सकता था। कोने में फँसे शिकार, जिनके पास भागने के लिए कोई जगह नहीं होती, वे क्रूर योद्धाओं में बदल सकते हैं क्योंकि उनके पास खोने के लिए कुछ नहीं होता।

सब कुछ तय था.

अब उन्हें बस इंतज़ार करना था।

Machine Translated by Google



सोमेश्वर का दिल किसी जंगली जानवर की तरह धड़क रहा था जो अपनी छाती रूपी पिंजरे से बाहर निकलने को बेताब था। उसे नींद नहीं आ रही थी। वह उत्सुकता से यह दृश्य देख रहा था।

वह अपने दोस्त की ओर मुड़ा। "इक़बाल, मेरा बेटा ज़िंदा है..." इकबाल
मुस्कुराया और सोमेश्वर के कंधे को छुआ, हाल के हालातों के कारण उसे अब भी उसके छद्म नाम से पुकार रहा था। "सलमान भाई, लगता है आपका बेटा अब राजकुमार पुलकित का भरोसेमंद अफ़सर है।" सोमेश्वर ने ज़ोर से सिर हिलाया, उसका गर्व झलक रहा था।

ध्रुव, भागे हुए अरब गुलाम ज़ैन हुसैन के साथ, नरसिम्हन और पुलकित के निर्देशन में, प्रवेश द्वार पर लगी झाड़ियों के पास काम कर रहा था। ऊँची झाड़ियाँ, द्वार से भीतरी खेत तक, लंबे और घुमावदार रास्ते के दोनों ओर फैली हुई थीं, एक प्राकृतिक अवरोध का काम कर रही थीं।

इसके अलावा, रास्ता इतना चौड़ा था कि एक बड़ी मालगाड़ी गुजर सकती थी। तुर्कों को इसी रास्ते से दो घोड़ों की कतार में, या ज़्यादा से ज़्यादा तीन घोड़ों की कतार में, अगर वे एक साथ घुस भी जाते, तो आगे बढ़ना पड़ता। किसी भी तरह, वे बाएँ और दाएँ लगभग दो मीटर ऊँची बाड़ों से घिर जाते, जिससे उनका आगे का दृश्य अवरुद्ध हो जाता। यह उनके घोड़ों को घायल करने या मारने के लिए एकदम सही जगह थी। दोनों तरफ़ बाड़ों में छोटे-छोटे छेद बनाए गए थे, जिनसे आज़ाद गुलाम अपने भाले और फावड़े डाल सकते थे। आगामी युद्ध के इस हिस्से की निगरानी करना ध्रुव की ज़िम्मेदारी थी।

सोमेश्वर का सीना गर्व से चौड़ा हो गया।
किसी भी व्यक्ति के लिए शायद सबसे बड़ा दुःख अपने बच्चों को अपनी आँखों के सामने मरते देखना होता है। सोमेश्वर ने लगभग अपने पूरे परिवार के साथ यही अनुभव किया था।
सबसे बड़ी, यद्यपि अप्रत्याशित खुशियों में से एक है अपने बच्चे को वापस लौटते देखना
सोमेश्वर को पिछली रात यह अनुभव हुआ था।
और उससे भी बड़ी खुशी यह थी कि अपने बेटे को सम्मान मिलता देख
और अन्य सफल व्यक्तियों द्वारा विश्वसनीय।
सोमेश्वर को इससे अधिक गर्व नहीं हो सकता।
सोमेश्वर ने कहा, 'इकबाल, किसने सोचा होगा कि मेरे जैसा अहिंसक शाकाहारी गुजराती व्यापारी, जिसने कभी चींटी भी नहीं मारी, एक योद्धा को जन्म दे सकता है जो तुर्कों से मुकाबला करेगा!'

Machine Translated by Google

इक़बाल धीरे से हँसा। उसने मज़ाक में कहा, "लगता है ध्रुव अपनी माँ हेतल बेन पर टूट पड़ा है।" सोमेश्वर ज़ोर से हँसा और इक़बाल की पीठ

पर मज़ाक में मारा।

इकबाल मुस्कुराते हुए अपने दिल की बात कहते रहे, 'और अंत में,
आखिरकार, हम उन राक्षसी तुर्कों में से कुछ को मारे जाते देखेंगे। हमारा बदला अब शुरू होता है। और तुम्हारा बेटा भारत के बदला लेने वालों में से एक होगा।' 'हर हर महादेव,' सोमेश्वर फुसफुसाया।

हर हर महादेव का मतलब था कि हम सभी महादेव के देवता हैं। ... हम सभी

'हर हर महादेव,' इकबाल ने दोहराया।

और फिर प्रकाश हुआ।

सोमेश्वर ने खुजदार पर्वत के पूर्व में सूर्य को धीरे-धीरे उगते देखा।
अपना सिर उठाकर दुनिया पर धीरे से झाँका, जिससे सबसे ऊँचे पहाड़ की चोटी रोशन हो गई। आसमान ने अपने ज्वलंत तारे का स्वागत गहरे लाल रंग में किया।

एक स्काउट घोड़े पर सवार होकर आया। सोमेश्वर जानता था कि इसका क्या मतलब है। दुश्मन का खुज़दार घाटी से पहले आखिरी पहाड़ी दर्रे पर घुड़सवार सेना को चढ़ते देखा गया था। वे लगभग एक घंटे की दूरी पर थे।

यह समय था।

युद्ध का समय.



'धिक्कार है...' विजयन फुसफुसाया।

वह धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रहा था। वह पूर्व दिशा में एक पेड़ पर चढ़ गया था।
खेत में बाड़ों और थोड़ी दूरी पर स्थित एस्टेट के प्रवेश द्वार का स्पष्ट दृश्य दिखाई देता था। वह तीर चलाने की सीमा में था। अमल उसके ऊपर वाली शाखा पर तैनात था। आस-पास के पेड़ों पर दस अन्य चोल सैनिक फैले हुए थे। नज़रों से ओझल। धनुष-बाणों से लैस, और ऊँची ज़मीन पर कब्ज़ा करने का महत्वपूर्ण सामरिक लाभ। उनका काम था, बाड़ों से हमले के कारण तुर्कों की प्रगति धीमी होने पर, जितना हो सके उतने तुर्कों को गोली मारना।

पुलकित की कमान में चालीस घुड़सवार योद्धा खेत के पश्चिम में, बकरियों के बाड़े और झोपड़ी के पीछे पेड़ों के बीच छिपे रहते थे। वे तुर्कों पर हमला करने के लिए सही समय पर आक्रमण करते थे। और चालीस भारतीय सैनिक,

Machine Translated by Google

चार सौ सशस्त्र दासों के साथ, नरसिंह के आदेश के तहत खलिहान में प्रतीक्षा कर रहे थे। हत्या क्षेत्र।

ध्रुव, पुलकित और विजयन को खलिहान पहुँचने से पहले ज़्यादा से ज़्यादा तुर्कों का वध करने का काम सौंपा गया था। या कम से कम उन्हें घोड़े से उतारना था। फिर नरसिंह और उसके आदमियों को उन सभी का वध करना था।

'बर्फ?' अमल ने विजयन के 'लानत' का जवाब देते हुए फुसफुसाया।

ताज़ा बर्फबारी अभी शुरू ही हुई थी।

'हम्म,' विजयन ने उत्तर दिया।

अमल ने कहा, "यह कोई समस्या नहीं है। यह हमारी पटरियों और रात भर किए गए हमारे काम को ढक देगा। पुरानी बर्फ पर कीचड़ तो साफ़ ज़ाहिर कर देता है।"

"यह सच है। लेकिन ताज़ी बर्फ़ के कण बाड़ को चिकना कर देंगे। इससे हमारे लड़ाकों के लिए भालों और काँटों से वार करना और मुश्किल हो जाएगा। गुलाम प्रशिक्षित सैनिक नहीं हैं। घोड़ों पर सवार तुर्क हमारे लिए सबसे ख़तरनाक होंगे। हमें उन घोड़ों को या तो अपंग या मार देना होगा।" अमल ने सिर हिलाया। "चलो, इसे ध्रुव पर छोड़ देते हैं। उसके साथ दो सौ आदमी हैं। काफ़ी से ज़्यादा आदमी। मुझे यकीन है कि वह काम पूरा करेगा।"

'मुझे उम्मीद है कि भाग्य ने ध्रुव के मिशन के खिलाफ कोई साजिश नहीं रची होगी, बस इतना ही।' 'मुझे

अल्लाह पर भरोसा है,' अमल ने कहा। 'उसने तुर्कों को यहाँ पहुँचाया है।'

हमने नरसंहार किया है। सब ठीक हो जाएगा।'

'इंशाअल्लाह,' विजयन ने कहा।

इंशाल्लाह एक अरबी अभिव्यक्ति थी जिसका अर्थ था अल्लाह की इच्छा से।

'और भगवान शिव के आशीर्वाद से,' अमल ने कहा।

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 19

खुजदार की लड़ाई

फिरदौस का खेत, खुजदार, अफगानिस्तान के करीब

'आआआआह! तूउउर्रर्क्कसस! नहीं!'

एक बच्चा चीखा। लगभग नाटकीय अंदाज़ में। मानो इशारा मिलते ही बाकी बच्चे भी रोने लगे। और उनके साथ अकेली एक युवती, उन्हें बेतहाशा खेत के दरवाज़े की ओर ले जाने लगी।

"थोड़ा ज़्यादा नाटकीय है," विजयन फुसफुसाया। पेड़ों के बीच से उसे साफ़ नज़ारा दिख रहा था। "उन्हें तुर्कों का ध्यान अपनी ओर खींचना होगा और उन्हें हमले के लिए उकसाना होगा। लेकिन लगता है कि यह ज़्यादा हो गया है।"

बच्चे खेत के गेट से अंदर घुसे और बाड़ से नीचे की ओर दौड़ पड़े-
रास्ते पर। उनके वयस्क सुपरवाइज़र ज़ोर से चिल्लाते हुए उनके पीछे दौड़े, 'भागो, बच्चों! भागो!' अमल ने आँखें घुमाते हुए कहा, 'ज़्यादा अभिनय करने के लिए हमें उनके खाने के राशन में कुछ कटौती करनी चाहिए।'

बच्चे दौड़ते हुए खिलखिला रहे थे और हँस रहे थे। अपनी नाज़ुक उम्र में, इतना कुछ सहने के बाद भी, उन्हें यह सब एक खेल सा लग रहा था। कई बच्चे ज़मीन पर छाई सुबह की घनी धुंध को ऐसे धकेल रहे थे मानो बादलों से खेल रहे हों।

विजयन ने अपने दाहिने हाथ से इशारा किया। 'देखो।' अमल उस दिशा में मुड़ी जिस
ओर विजयन ने इशारा किया था। उसने देखा कि तुर्क दूर पहाड़ी की चोटी पर दिखाई देने लगे हैं। आगे एक विशालकाय अकेला घुड़सवार। और भूतों की तरह, उसके पीछे घने कोहरे से घुड़सवार योद्धा उभरे, जिनकी रूपरेखा पहाड़ी की चोटी पर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। सुबह की धुंध ने एक दृष्टि भ्रम पैदा कर दिया था, जिससे पंक्तिबद्ध दुश्मन धुंधले धुंध से निकलते हुए प्रेत पिशाचों की एक अंतहीन पंक्ति की तरह लग रहे थे।

विजयन और अमल ने देखा कि सामने विशालकाय तुर्क घुड़सवार ने अपनी घुमावदार तलवार म्यान से निकाली और उसे ऊपर उठा लिया।

Machine Translated by Google

बच्चों की चीखें असर कर गई थीं। वे इतनी तेज़ थीं कि उनकी आवाज़ पहाड़ों तक गूँज रही थी। और तुर्क इस बात के आदी थे कि लोग उनकी उपस्थिति मात्र से ही डर जाते थे।

अबू क़ासिम अपने आदमियों की ओर मुड़ा। "उस लड़की पर नज़र रखो जिसे गवर्नर-मुफ़्ती चाहता है," उसने चेतावनी दी। "उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाना है । बाकी धर्मों की बात! सुल्तान की बात!"

··· कोई दया नहीं!' उसने अपनी कटार आगे की ओर तान दी और गरजा. 'के लिए

'ईमान के लिए! सुल्तान के लिए!' गजनवी सैनिक चिल्लाए।

'उन सबको मार डालो!' अबू कासिम ने दहाड़ते हुए अपने घोड़े को दौड़ाया।

अबू क़ासिम का घोड़ा ज़ोर से सिर उठाकर पिछले पैरों पर खड़ा हो गया। उसके अगले खुर ज़मीन पर धंस गए और वह भयानक सरपट दौड़ने लगा। तुर्की घुड़सवार तेज़ी से अपने नेता के पीछे-पीछे दौड़े और आगे बढ़ गए।

'सबको मार डालो!' वे खेत

की ओर दौड़े। वे शायद पाँच से दस मिनट की दूरी पर थे।

तुर्कों ने चारा खा लिया था।

विजयन ने ज़ोर से सीटी बजाकर चिड़िया को आवाज़ दी। वे आ रहे हैं।

ध्रुव ने झाड़ियों से एक और चिड़िया की आवाज़ निकाली। हम तैयार हैं। ज़ैन हुसैन,

ध्रुव के सामने वाली बाड़ के पीछे खड़े लोगों ने भी सीटी बजाकर जवाब दिया।

और पुलकित भी बकरियों के बाड़े और बड़ी झोपड़ी के पीछे छिप गया।

पश्चिम. हम तैयार हैं.

खलिहान से नरसिंह ने एक गहरी चिड़िया की आवाज़ निकाली। लगभग किसी चील की चीख़ जैसी, जो सबसे बड़ा शिकारी पक्षी है। गहरी मध्यम आवाज़ में। अवर्कल वराट्टुम!

नरसिम्हन का संदेश एक बोलचाल का शब्द था जिसका प्रयोग पूरे भारत में भारतीयों द्वारा किया जाता था।

कई रक्षात्मक लड़ाइयाँ। जब वे दुश्मन को उसके विनाश की ओर ले जाने के लिए फुसला रहे होते हैं। हिंदी में, एक कहता था, आने दो! पंजाबी में, आन देयो!

उन्हें आने दो!



तुर्क खेत के द्वार की ओर दौड़े और तुरंत ही नाले के पास पहुँच गए।

Machine Translated by Google

दास बच्चे और उनके पर्यवेक्षक बहुत पहले ही खलिहान में दौड़कर आ चुके थे।
खेत के दक्षिणी हिस्से में। नरसिंह के आदेशानुसार, दसर्णा बच्चों को दूसरे छोर पर ले गया, जहाँ से वे किसी की नज़रों से बचकर खलिहान के पिछले दरवाज़े से अंदर घुस गए। कुछ महिलाओं ने उनका स्वागत किया और उन्हें खलिहान के दक्षिण में दूर स्थित घने जंगल में ले गईं। यहीं पर सभी बच्चे, बूढ़े और कुछ सौ गैर-लड़ाकू महिलाएँ छिपी हुई थीं। सोमेश्वर और इकबाल के साथ। उन्हें स्पष्ट निर्देश दिए गए थे: अगर उन्हें लगे कि भारतीय युद्ध हार रहे हैं, तो उन्हें शहर की ओर दौड़ना चाहिए और तुर्कों के कब्ज़े से बचने के लिए वहाँ घुलने-मिलने की कोशिश करनी चाहिए।

इस बीच, अड़चन का सामना करते हुए, अबू कासिम ने अपने सैनिकों को तीन घुड़सवारों की पंक्तियां बनाने और बाड़दार रास्ते से खेत में एक साथ मार्च करने का आदेश दिया था।

विजयन और अमल दोनों ने देखा कि तुर्क अपने कपड़े नहीं पहन रहे थे
चमड़े के धड़ कवच। न ही उन्होंने अपने धनुषों पर डोरी चढ़ाई थी। योद्धा शायद ही कभी ऐसा करते थे जब तक कि उन्हें युद्ध का पूरा भरोसा न हो, क्योंकि धनुष पर ज़्यादा डोरी चढ़ाने से धनुष और डोरियाँ, दोनों ही कमज़ोर हो जाते थे।

जाहिर है, तुर्कों को उम्मीद थी कि वे आसानी से एकतरफा नरसंहार कर देंगे,
गंभीर युद्ध नहीं। उन्होंने सोचा था कि उनकी तलवारें और चाकू इस थके हुए, कायर गुलामों के समूह के लिए पर्याप्त होंगे।

सैनिकों के सबसे बड़े दुश्मनों में से एक है अति आत्मविश्वास। कई लड़ाइयाँ
इसके कारण खो गए हैं।

'वह धीरे-धीरे चल रहा है,' अमल ने फुसफुसाते हुए कहा। 'घास के रास्ते पर सरपट नहीं दौड़ रहा।' दोनों झाड़ियों के बीच का रास्ता घने जंगल से छिपा हुआ

था।
सुबह की धुंध, झाड़ियों की घनी पत्तियाँ और झाड़ियाँ मानो किसी इन्सुलेशन का काम कर रही थीं। धुंध इतनी घनी थी कि ऐसा लग रहा था जैसे रास्ते पर बादल छा गए हों। इससे रास्ते से गुज़रने वालों के लिए ज़मीन से दो फ़ीट की ऊँचाई तक कुछ भी देख पाना लगभग नामुमकिन हो गया था।

तुर्कों को अपनी गति धीमी करनी पड़ी । वे इस रास्ते से यूँ ही सरपट नहीं दौड़ सकते थे। अगर उनके घोड़े ज़मीन पर फिसल गए या लड़खड़ा गए तो क्या होगा? नतीजा यह हुआ कि तुर्क घोड़े धीरे-धीरे और सावधानी से रेंगते हुए आगे बढ़े, तीन-तीन की कतार में, बाएँ और दाएँ तरफ़ की झाड़ियों से सटे हुए।

उत्तम।

छुरा घोंपना बहुत आसान होगा.
अमल मुस्कुराई. अल्लाह हमारे साथ है.

Machine Translated by Google

विजयन ने पेड़ों पर खड़े अपने आदमियों को चिड़िया की आवाज़ में सीटी बजाई। रुको, अभी गोली नहीं चलाई गई है।
वह चाहता था कि आखिरी तुर्क भी गेट के अंदर रहे ताकि कोई बच न सके।

ध्रुव का भी यही विचार था। उसने सख्त हिदायत दी थी कि कोई भी गुलाम तब तक शोर न मचाए, न ही अपने भालों या फावड़ियों से वार करे जब तक कि उसका आदेश न मिल जाए। वह किसी भी तुर्क को हमला शुरू होने पर पीछे से निकल जाने का मौका नहीं देना चाहता था।

ध्रुव जहाँ बाड़ के पीछे छिपा था, वहाँ से तुर्कों को बिल्कुल भी नहीं देख पा रहा था। उसे सिर्फ़ घोड़ों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। वह विजयन के तेज़ पक्षी-पुकार के संकेत का इंतज़ार कर रहा था।

विजयन, पेड़ों की ऊँचाई से, तुर्कों का एकदम सही नज़ारा देख रहा था, उसने देखा कि तुर्क घुड़सवारों की आखिरी कतार आखिरकार मुख्य द्वार से होकर, झाड़ियों से घिरे रास्ते पर, घुमावदार रास्ते से खेतों में घुस गई। घुड़सवार तुर्क घुड़सवारों की पहली कतार घुमावदार, झाड़ियों से घिरे रास्ते के दूसरे छोर से थोड़ी ही दूरी पर थी, और फ़िरदौस के बड़े खुले खेत में घुसने ही वाली थी।

वे सभी अंदर थे.
जाल में.
यह समय था।

विजयन ने अपनी देवी का आह्वान करते हुए फुसफुसाया, 'मदुरै की मीनाक्षी द्वारा।' और पांड्या ने झाड़ियों के पीछे अपने साथियों के लिए जोर से सीटी बजाई, जो मोर के प्रजनन के समय की आवाज की नकल थी।

तुर्कों को यह स्पष्ट प्रश्न पूछना चाहिए था: आखिर उस क्षेत्र में मोर क्या कर रहा था?

लेकिन रक्तपिपासा और अति आत्मविश्वास ने उनकी सोच को धुंधला कर दिया था।
ध्रुव दहाड़ा, "हमला करो!" उसका आदेश ज़ोरदार और स्पष्ट था।

लगभग तुरंत ही, ज़ैन हुसैन, हेज लाइन के पीछे
रास्ते के दूसरी ओर खड़े लोग भी भयंकर रूप से चिल्लाए, 'हमला!'

गुलामों ने बेरहमी से अपने भालों से आगे की ओर वार करना शुरू कर दिया। तुर्कों के घोड़ों के पेट में गहरे तक भाले घुस गए। ध्रुव ने सोचा था कि चूँकि गुलामों ने कभी किसी की हत्या नहीं की थी, कम से कम उसकी जानकारी में तो नहीं, इसलिए वे थोड़ा हिचकिचाएँगे। खासकर निर्दोष घोड़ों पर भाले मारते समय, जिनका एकमात्र अपराध उन राक्षसी तुर्कों के लिए बोझ ढोने वाले जानवर होना था।

यही कारण है कि उसने दो सौ गुलामों को अपने अधीन कर लिया था, ताकि हर घोड़े के लिए उसके पास एक हत्यारा हो।

लेकिन आज़ाद गुलामों ने ज़रा भी हिचकिचाहट नहीं दिखाई। बरसों से दबा हुआ गुस्सा आखिरकार बाहर निकल आया था। वे बार-बार छुरा घोंपते रहे। तेज़ी से और क्रूरता से

Machine Translated by Google

हड़तालें.

भालों और फावड़ियों से घोड़ों के पेट में बुरी तरह से छेद होते देख, वे दर्द से कराह उठे। जानवर बेतहाशा उछलने लगे। उनकी पीठ पर सवार तुर्कों ने उन्हें थामे रखने की भरसक कोशिश की।

'घात लगाओ!' 'घात

लगाओ!' तुर्कों की तरफ़

से चीख़ें गूंजीं। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। वे फँस चुके थे।

ध्रुव ने पहले ही घोड़ों और तुर्कों को फाटक के प्रवेश द्वार पर ही मार डाला था। और वे वहीं गिर पड़े थे। रास्ते से भागने का रास्ता बंद हो गया था।

'छुरा मारते रहो! छुरा मारते रहो!' ध्रुव गरजा।

घोड़े उन ब्लेडों से दूर भागने की पूरी कोशिश कर रहे थे जो उन्हें बेरहमी और क्रूरता से घायल कर रहे थे। लेकिन उनके पास भागने की कोई जगह नहीं थी।

जानवरों को खतरनाक तरीके से संकरी गली में ठूँस दिया गया था। तीन-स्तंभों वाली घुड़सवार सेना की दाहिनी और बाईं पंक्तियों में घोड़ों के पास कोई मौका नहीं था। गुलामों ने बार-बार इतनी बेरहमी से आगे की ओर वार किया कि कई जानवरों के पेट फट गए और उनकी आँतें चिकनी होकर बाहर निकल आईं।

कुछ गुलामों ने अपने भाले ऊपर की ओर तान दिए और तुर्कों पर ही वार करते हुए उन्हें घायल कर दिया। तुर्कों के पास कोई मौका नहीं था। उनकी तलवारें उन गुलामों तक पहुँच ही नहीं पा रही थीं जो कम से कम एक भाले की दूरी पर थे। कई तुर्क अपने बेचैन घोड़ों से गिर पड़े और नीचे कुचले जाने लगे। जानवरों और इंसानों के गिरने से चारों तरफ खून के छींटे पड़ रहे थे, और बर्फ से ढकी सफेद धरती लाल रंग में बदल गई।

अबू कासिम, जो अनेक लड़ाइयों में अनुभवी थे, सहज रूप से जानते थे

उसके पास हालात बदलने के लिए बहुत कम समय बचा था। वह जल्दबाज़ी में घात लगाकर हमला करने के लिए दौड़ पड़ा था।

अति आत्मविश्वास। कई जनरलों का पतन।

'आगे बढ़ो!' गुस्से से कासिम गरजा। 'बाहर निकलने का एक ही रास्ता है!' 'बाहर निकलने का एक ही रास्ता है!' हुक्म तुरन्त

घुड़सवार सेना तक पहुँच गए। हर सवार

ज़ोर से चिल्लाया। तुर्कों का बारीक़ प्रशिक्षण काम आया।

'आगे बढ़ो!' मध्य

पंक्ति में खड़े तुर्क घुड़सवारों ने अपने घोड़ों को लात मारी और दौड़ पड़े।

वे आगे बढ़ते रहे और अपने साथियों को मरने के लिए बायीं और दायीं ओर छोड़ गए।

खून से सने रास्ते पर सरपट दौड़ते हुए। घने कोहरे की परवाह न करते हुए। उनके कमांडर ने आदेश दिया था। और उन्होंने आज्ञा का पालन किया।

तुर्क राक्षस थे। लेकिन वे साहसी राक्षस थे।

Machine Translated by Google

'आगे बढ़ो!' तुर्कों

की लगभग दो-तिहाई घुड़सवार सेना उस घने रास्ते में ही नष्ट हो चुकी थी। लेकिन बाकी, जिनकी संख्या सत्तर से कुछ ज़्यादा थी, खेतों की खुली ज़मीन में घुस आए।

'संरचनाएँ!' अबू कासिम चिल्लाया।

लेकिन आगे बढ़ते हुए गुलामों की चीख़ों का इतना शोर था कि सभी तुर्कों ने उसकी आज्ञा नहीं सुनी। पंक्ति में सबसे आगे खड़े कुछ तुर्क सहज ही बाड़ के चारों ओर दौड़ पड़े ताकि हरी बाड़ के पीछे से उन पर हमला करने वालों को मार सकें, और कुछ गुलामों को मार गिराया, जिनके पास उन पर हमला करने वाले घुड़सवारों के सामने कोई मौका नहीं था।

'गठबंधन!' अबू कासिम ने फिर गरजा।

उसे और भी जाल की उम्मीद थी। वह सही था।

इससे पहले कि तुर्क सेना एकजुट हो पाती, पूर्व दिशा में स्थित पेड़ों से उन पर घातक तीरों की बौछार होने लगी।

विजयन और अमल। और दस चोल-परमार सैनिक।

विजयन चिल्लाया, 'अपनी इच्छा से गोली चलाओ!'

पेड़ों की शाखाओं पर बैठे भारतीय तीरंदाज़ों को ऊँची ज़मीन पर होने का फ़ायदा था। इससे उनका निशाना सटीक और सटीक लगा।

उन्होंने लगभग लगातार बेरहमी से गोलीबारी की।

लगभग हर तीर निशाने पर लगा। तुर्कों पर, उनके मानक कवच या रक्षात्मक संरचनाओं के बिना, बार-बार प्रहार किए गए। तीखे प्रक्षेपास्त्र गजनवी सैनिकों पर बेरहमी से गिरे, उनकी आँखों, गालों, गले, धड़ और पैरों में धंस गए। कई तुर्कों को कई बार गोली मारी गई और वे मानव साही जैसे दिख रहे थे।

तुर्कों ने सहज ही मुड़कर खेत के पश्चिम की ओर बढ़ना शुरू कर दिया।

लेकिन उनकी मुसीबतें यहीं खत्म नहीं हुईं। वे तीरों की एक और बौछार में कूद पड़े।

पुलकित अपने चालीस घुड़सवार सैनिकों को, जो बकरियों के बाड़े और झोपड़ी के पीछे छिपे थे, युद्ध में ले गया था। बिल्कुल तरोताज़ा। बिल्कुल थके हुए। और मार-काट मचाने को आतुर। वे घोड़े पर सवार होकर तीरों की बौछार करते हुए तुर्कों की ओर तेज़ी से आगे बढ़े। और भी कई ग़ज़नवी सैनिक मारे गए।

अब तक घबराए और बेचैन तुर्कों ने, हर मोड़ पर घात लगाए बैठे देखकर, अपने घोड़ों की लगाम फिर से कसी, दिशा बदली और हताश होकर दक्षिण की ओर दौड़ पड़े। खेत का यही एकमात्र इलाका था जहाँ से उन पर हमला नहीं हो रहा था।

पेड़ों पर विजयन की सेना और तुर्कों का पीछा कर रहे पुलकित के घुड़सवार योद्धाओं के तीर बर्बर लोगों पर लगातार गिरते रहे।

Machine Translated by Google

कई और गजनवी सैनिक गिर पड़े, उन पर निर्दयतापूर्वक तीरों की मार पड़ी।

'खलिहान की ओर!' तुर्की घुड़सवारों की ओर से चीख उठी।

खलिहान खाली लग रहा था। दरवाज़े पर कोई नहीं था। अंदर से कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। सब सुरक्षित लग रहा था। लेकिन कभी-कभी दिखावा धोखा दे जाता है।

'खलिहान की ओर!' गजनवी फिर चिल्लाए।

खेत में फैली अफरा-तफरी और शोरगुल में बहुत कम लोगों ने अपने कमांडर अबू क़ासिम का आदेश सुना, 'खलिहान में न जाएँ!'

घूमो! घूमो! घूमो!' कासिम सही था। अब तक उसे समझ आ गया था

कि उनका सामना एक प्रतिभाशाली सैन्य दिमाग़ से था जिसने घात लगाने की पूरी योजना बनाई थी। उसे उम्मीद थी कि खलिहान में उनका इंतज़ार और भी बड़ा जाल होगा। वह उसके चारों ओर घूमना चाहता था।

लेकिन उसके केवल दो सैनिकों ने ही उसकी आज्ञा सुनी और उसका पालन किया।

अन्य जीवित बचे गजनवी सैनिक - जिनकी संख्या अब केवल चालीस थी - सीधे खलिहान में घुस गए।

सीधे नरसिंह की मांद में, जहां उसके चालीस सैनिक और चार सौ सशस्त्र दास उनकी प्रतीक्षा में खड़े थे।

अवर्कल वराट्टुम्!

उन्हें आने दो!

उन्हें आने दो! क्योंकि वे ज़िंदा नहीं जाएँगे!



खलिहान में घुसे चालीस गजनवी लोगों के पास कोई मौका नहीं था।

नरसिंह के सैनिक उनका इंतज़ार कर रहे थे। सीधे आगे और किनारे-किनारे। वे ज़मीन में गड़े हुए कई तीरों के साथ तैयार थे, ताकि आसानी से खींचे जा सकें। और एक तीर तो उनके धनुष में पहले से ही लगा हुआ था।

तुर्कों का स्वागत मिसाइलों की बौछार से किया गया।

इससे पहले कि वे प्रतिक्रिया कर पाते, प्रत्येक भारतीय सैनिक ने जमीन से एक अतिरिक्त तीर निकाला और एक और गोली चला दी।

'पीछे हटो!' जैसे

ही तुर्क अपने घोड़े मोड़ने लगे, पुलकित और उसके घुड़सवार सैनिक उनके पीछे दौड़ पड़े। खलिहान के द्वार पर, भारतीयों ने समय लिया, निशाना साधा और एकदम सटीक दिशा में गोलियाँ दाग दीं।

Machine Translated by Google

ग़ज़नवी की आखिरी कतार। ठीक उनकी गर्दन के पिछले हिस्से पर, जहाँ से बालों की रेखा शुरू होती है। हर तीर ने अपना निशाना साधा। और आखिरी कतार के सभी तुर्क मर गए, तीरों ने उनके गले को बेहूदा तरीके से छेद दिया।

भारतीय कभी भी अपने दुश्मन पर पीछे से हमला नहीं करते थे, क्योंकि इसे अधार्मिक माना जाता था। लेकिन तुर्कों के साथ भी वैसा ही व्यवहार होना चाहिए जैसा उन्होंने दूसरों के साथ किया था।

जैसा कि महाकाव्य महाभारत में बुद्धिमान विदुर ने कहा था, 'शठे शाठ्यम्
दुष्टों के साथ अत्यंत दुष्टता से व्यवहार किया जाना चाहिए ।

ज़्यादातर तुर्क पहले ही मर चुके थे। जो थोड़े-बहुत बच गए थे, वे अपने घोड़ों से गिर पड़े थे। पूर्व दास अपने भालों और फावड़ियों से लैस होकर आगे बढ़े। उन्होंने ग़ज़नवियों पर बार-बार वार किए। उनमें से कुछ बाहर भागे और उन्होंने तुर्कों को ज़मीन पर पड़े पाया। कुछ घायल, कुछ मृत। दासों ने उन सभी पर बार-बार वार किए। और फिर उन्होंने तुर्कों के शवों को क्षत-विक्षत करना शुरू कर दिया।

इस बीच, ध्रुव अपने आज़ाद गुलामों के दल को गलियारे में ले गया, और उन्होंने वहाँ मिले सभी घायल और अशक्त तुर्कों को बार-बार चाकू से मारा। यह सुनिश्चित करते हुए कि वे मर चुके हैं। और ध्रुव के ऐसा न करने के निर्देश के बावजूद, यहाँ भी कुछ गुलामों ने तुर्कों के शवों को क्षत-विक्षत करना शुरू कर दिया।

हालाँकि, नरसिंह के सैनिक उसके साथ रहे। अनुशासित। वे
भारतीय सैनिक थे। वे दुष्ट हो सकते थे, लेकिन बर्बर कभी नहीं। वे अपने दुश्मनों की लाशों को क्षत-विक्षत नहीं करते थे।

भारतीय सैनिक अगले आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके जनरल ने अभी तक कोई आदेश नहीं दिया था।
जीत के उल्लास में उसने मुट्ठी बाँध ली। "युद्ध तब तक ख़त्म नहीं होता जब तक जनरल यह न कह दे कि ख़त्म हो गया है।"

नरसिम्हन ने चारों ओर देखा। कुछ ठीक नहीं लग रहा था। उसकी सहज प्रवृत्ति
उसे चेतावनी देते रहे.
पुलकित खलिहान में गया और घोड़े से उतर गया।
नरसिम्हन ने पूछा, 'तुर्की कमांडर कहां है?'
'मैं भी उसे नहीं ढूँढ पा रहा हूँ, जनरल। वह खलिहान की ओर भाग गया था। मैंने
उसे देखा है। उसे यहाँ होना चाहिए...'

नरसिंह ने जल्दी से कहा, "गुलामों को वापस खलिहान में ले जाओ। वे तब तक सुरक्षित नहीं हैं जब तक..." और तभी उन्हें ज़ोरदार चीखें सुनाई दीं। खलिहान
के पीछे से। दक्षिण की ओर।

नरसिंह और अन्य भारतीय योद्धा तुरंत अपने-अपने स्थान पर आरूढ़ हो गए।
घोड़े लेकर सवार हो गए। शोरगुल की ओर। दक्षिण की ओर।

Machine Translated by Google



कुछ देर पहले, जब खलिहान में भीषण युद्ध चल रहा था और खेत के रास्ते में बचे हुए तुर्कों का कत्लेआम हो रहा था, अबू क़ासिम अपने दो सिपाहियों के साथ खलिहान के पीछे-पीछे घूम रहा था। दक्षिण की ओर। उसे वहाँ पेड़ों का एक घना झुरमुट दिखाई दिया। वह घोड़े से उतरा, अपने घोड़े को नीचे खींचकर छिप गया और चूहे की तरह चुप हो गया। उसने अपने सिपाहियों को भी ऐसा ही करने का आदेश दिया। फिर उसने उनमें से एक को चुपचाप झुरमुट में घुसने और वहाँ मिले किसी भी बम के जाल की सूचना देने को कहा।

उसने मुख्य खुजदार शहर की ओर भागने, स्थानीय बटालियन पर कब्ज़ा करने और फिर खेत में वापस आकर सब कुछ जला देने की योजना बनाई।
लेकिन उसे बाग़ में भी जाल होने की आशंका थी। और स्वाभाविक रूप से वह सतर्क था।

अंधेरे उपवन के अंदर, भयभीत यज़ादेह तीन तुर्कों को देख सकता था
पेड़ों की कतार के किनारे, जहाँ रोशनी ज़्यादा तेज़ थी, उसने भारत के तुर्की कसाई, अबू क़ासिम के विशाल राक्षसी रूप को पहचान लिया।

बेसहारा सी बच्ची बुरी तरह सिसक रही थी। उसका शरीर काँप रहा था, मानो उसके दिल में दहशत फैल गई हो। उसने घबराई हुई आवाज़ में अपने पिता से फुसफुसाते हुए कहा, "मैं वापस नहीं जा सकती! मैं वापस नहीं जाऊँगी। वो राक्षस मुझे मारता है! मुझे काटता है! मेरे साथ गंदी हरकतें करता है।" ··· राज्यपाल-मुफ्ती...

... मेरी आँतों में दर्द है, मैं ज़िंदा ··· वापस नहीं जा सकता, पापा। तुम मुझे मार दो! अभी मार दो!' 'चुप रहो, यज़ादेह!' आरिफ़ ने अपने बच्चे को गले लगाते हुए फुसफुसाया। उसके गाल पर एक आँसू टपक पड़ा। 'कसाई तुम्हारी आवाज़ सुन सकता है। लेकिन मैं तुमसे वादा करता हूँ, हमें ज़िंदा नहीं पकड़ा जाएगा। मैं तुमसे वादा करता हूँ, मेरे प्यारे बच्चे।'

इस बीच, तुर्की जासूस अबू क़ासिम के पास बाग़ से लौट आया था।

'वहाँ कोई सैनिक नहीं है, महाराज,' स्काउट फुसफुसाया। 'कोई जाल भी नहीं है। बस एक
भागे हुए गुलामों में से कुछ सौ।' 'क्या गुलाम हथियारबंद हैं?'
अबू कासिम ने बुदबुदाया।
'नहीं। सिर्फ़ औरतें और बच्चे। और कुछ बूढ़े।' 'ठीक है। हम घूमेंगे और दक्षिण की ओर
निकलेंगे।' बिल्कुल शांत माहौल में भी।
सैन्य पराजय के बावजूद, अबू क़ासिम का अहंकार अजेय था। उसने अपनी कार्रवाई को 'भागना' नहीं, बल्कि 'छोड़ना' बताया।
'हम खुज़दार जाएँगे और उनकी स्थानीय बटालियन के साथ लौटेंगे।'

Machine Translated by Google

'महाराज,' स्काउट फुसफुसाया, 'मैंने वहाँ उस खूबसूरत दासी को भी देखा था।'
यज़ादेह। जिसे हमें ग़ज़नी वापस लाने के लिए कहा गया है।'

एक आदमी को पता होना चाहिए कि वह कब हार गया है। क्योंकि तब वह समझदारी से चुनाव कर पाएगा। एक ज़बरदस्त हार में, मुख्य उद्देश्य जीवित रहना होना चाहिए, न कि एक बेहतर विकल्प हासिल करना। लेकिन एक आदमी यह चुनाव कैसे कर सकता है, अगर वह अपने अहंकार पर काबू पाने और यह स्वीकार करने से इनकार कर दे कि वह हार गया है?

'ठीक है,' अबू क़ासिम ने धीमी आवाज़ में कहा। कई विकल्प धुंधले पड़ गए।
उसका फैसला। ग़ज़नवी सैनिकों के नुकसान की भरपाई के लिए सुल्तान को दिखाने के लिए कुछ। अपनी हवस मिटाने के लिए एक लड़की। भागने से पहले दुश्मनों पर पलटवार करने का एक तरीका। कौन जाने उसके इस फैसले के पीछे क्या वजह थी, लेकिन अबू क़ासिम एक बार फिर अपनी किस्मत आजमाने में लगा हुआ था। 'हम अंदर जाएँगे, उसे पकड़ेंगे और सरपट भाग जाएँगे।'



जैसे ही अबू क़ासिम बाग़ में पहुँचा, गुलाम डर और घबराहट से चीख़ने लगे। उसने सोचा था कि खलिहान में लड़ाई अभी भी जारी होगी।

उसे पता ही नहीं था कि वहाँ मौजूद उसके सभी सैनिक लगभग तुरंत ही मारे जा चुके थे। और उसका दुश्मन नरसिंह
इस मौके और घोड़ों का फ़ायदा उठाकर उसके पीछे निकल गया था।

'एक भी तुर्क सैनिक ज़िंदा नहीं बचना चाहिए!' नरसिंह ने अपनी घुड़सवार सेना के आगे-आगे चलते हुए दहाड़ लगाई थी। 'कोई भी ग़ज़नवी सैनिक बचकर दूसरों को यहाँ जो हुआ उसकी खबर न दे!' उसके सैनिक अपने आदेशों के प्रति बिल्कुल स्पष्ट थे क्योंकि वे अपने सेनापति के पीछे दौड़े जा रहे थे।

अबू क़ासिम भागती हुई यज़ादेह की ओर तेज़ी से बढ़ा, घने पेड़ों के बीच की पतली जगहों से चतुराई से आगे बढ़ता हुआ। उसकी गहरी आँखें दुष्टता की जीत और वासना से चमक रही थीं। घोड़े पर सवार रहते हुए ही वह नीचे झुका और उसके चमकते, लहराते बालों को पकड़कर उसे अपनी काठी पर खींचने की कोशिश की। यज़ादेह ने अपना सिर झटका। उसकी पकड़ ढीली पड़ गई। वह चीखी और एक पेड़ से टिककर गेंद की तरह सिमट गई।

'मैं तुम्हें अपनी बेटी नहीं ले जाने दूंगा, राक्षस!' आरिफ चिल्लाया
हताश बहादुरी, अपनी कमजोर मुट्ठियों से हवा में मुक्का मारना।

अन्य दास इधर-उधर भाग रहे थे।

Machine Translated by Google

अबू क़ासिम ने अपना घोड़ा रोका और नीचे झुककर एक हाथ से आरिफ़ की गर्दन पकड़ी और उसे किसी कमज़ोर और लाचार खरगोश की तरह ऊपर खींच लिया।
उसने अपनी छोटी तलवार बूढ़े आदमी के पेट में घुसा दी, रीढ़ की हड्डी को छेद दिया, और उसके शरीर को एक तरफ फेंक दिया।

यज़ादेह डर के मारे चीखी और उठने की कोशिश की। 'पिताजी!' आरिफ़ उसकी फैली हुई बाहों में गिर
गया और लड़की फिर से पीछे गिर गई, उसकी
पिता की लाश ने उसे जकड़ रखा था।
'धिक्कार है!' अबू कासिम तलवार को वापस म्यान में डालते हुए चिल्लाया।
काठी म्यान. 'मुझे ढक दो!'

अबू क़ासिम के सैनिक उसके आगे-आगे चलते रहे और उसकी बगलों की रक्षा करते रहे।
कसाई घोड़े से उतरा। उसे आरिफ़ की लाश को यज़ादेह से उतारकर उसे अपनी काठी पर चढ़ाना था।

एक तुर्क सैनिक ने भयभीत होकर अपने सेनापति की ओर देखा ।
बहुत अधिक समय लग रहा है!
अबू क़ासिम ने बड़ी सहजता से आरिफ़ को उठाया और उसकी लाश को ऐसे फेंक दिया जैसे वो कोई चिथड़े से बनी गुड़िया हो। इस बीच, सोमेश्वर एक पेड़ के पीछे से निकलकर यज़ादेह के पास पहुँच गया।

अबू कासिम, यज़ादेह को उठाने पर ध्यान केंद्रित कर रहा था, उसने सोमेश्वर को नहीं देखा।
गुजराती व्यापारी ने चाकू उठाया और पूरी ताकत से उसे नीचे गिरा दिया। चाकू तुर्क सेनापति की जांघ में धंस गया। अबू क़ासिम
दर्द से कराह उठा और यज़ादेह को छोड़ दिया। वह झुक गया, कमज़ोर सोमेश्वर के एक और वार से बच गया।

सोमेश्वर के वीरतापूर्ण कार्य से प्रेरणा लेकर कुछ अन्य गुलाम एकत्र हो गए और अबू कासिम की रक्षा कर रहे दो घुड़सवार सैनिकों पर पत्थर फेंकने लगे।

'तुम इस छोटी बच्ची को नहीं ले जाओगे!' बुजुर्ग गुजराती व्यापारी चिल्लाया।
अबू क़ासिम आगे बढ़ा और सोमेश्वर की कमर में लात मारी। बूढ़ा आदमी दर्द से कराहता हुआ घुटनों के बल गिर पड़ा। उसका चाकू ज़मीन पर गिर पड़ा।
अबू क़ासिम ने अपनी कटार निकाली और दोनों हाथों से उसे ऊपर उठाया। उसने उसे एक ही झटके में नीचे गिरा दिया। एक ज़बरदस्त वार। कटार ने सोमेश्वर की खोपड़ी को चीरकर दो टुकड़ों में बाँट दिया, लगभग उसके मुँह तक, और उसकी तुरंत मौत हो गई।

तुर्क कसाई ने क्षत-विक्षत शरीर से अपना हथियार निकालने की कोशिश की।
ग़ज़नी में भारतीयों के मिशन के जनक। लेकिन वह खोपड़ी की मोटी हड्डी में फँसा हुआ था। उसने लकवाग्रस्त यज़ादेह की ओर देखा, उसकी आँखें भय से चौड़ी हो गई थीं, और मुस्कुराया। 'ज़रा रुको, वेश्या। मेरा इंतज़ार करो।'

Machine Translated by Google

कसाई की आँखें रक्तपिपासा से बीमार होकर नाच रही थीं जब वह अपनी तलवार चला रहा था
सोमेश्वर की खोपड़ी की हड्डी से उसे अलग करने के लिए उसने उसे बगल से चीरते हुए उसके गालों को चीर दिया। अबू
क़ासिम के लिए यह कटार बहुत महत्वपूर्ण थी।
अंततः अपनी तलवार को मुक्त करने में सफल होकर उसने उसे वापस म्यान में डाल दिया।

वह मुड़ा और यज़ादेह को उठा लिया।

तभी अबू क़ासिम के साथ दो तुर्क सैनिकों पर कई तीर लगे। वे अपने घोड़ों से गिर पड़े। मर गए।

भारतीय घुड़सवार सेना बचाव के लिए आगे आई थी।

अबू क़ासिम ने एक गड़गड़ाहट सुनी। एक धीमी, घूमती हुई दहाड़। मानो बिजली कड़क रही हो। किसी जागते हुए शेर की जलती हुई, ख़तरनाक दहाड़ जैसी। अबू क़ासिम की पीठ के बाल घोड़े के ब्रश की तरह अकड़ गए थे।

दो पागल आँखें किसी उठते हुए पहाड़ के ऊपर जंगल की लपटों की तरह चमक रही थीं।

नरसिंह सोमेश्वर के क्षत-विक्षत शरीर को घूर रहा था। उसका मित्र। वह
छोटी बच्ची को घूर रहा था। उसके चेहरे पर खून लगा था।

उसका वलय पेंडेंट उसकी त्वचा में जल गया।

इसने न्याय की मांग की।

और कभी-कभी, एकमात्र न्याय क्रूर निष्पादन होता है।

अबू क़ासिम घूम गया। एक फँसा हुआ जानवर जिसे मौत का आभास हो गया था। उसे लगा
एक विदेशी भावना.

भय. आतंक.

नरसिंह ने अपने पैर घुमाए और आसानी से घोड़े से उतर गया। अबू क़ासिम से नज़रें हटाए बिना, उसने अपनी तलवार खींच ली। उसने अपना सिर घुमाया और अपने लकवाग्रस्त दाहिने कंधे पर लगे मोटे लोहे के कवच को पीछे की ओर धकेल दिया। ढाल उसके लकवाग्रस्त दाहिने हाथ पर कसकर और स्थिर रूप से बंधी हुई थी। उसने तलवार को अपने शरीर से थोड़ा दूर रखा, मानो वह उसके बाएँ हाथ का ही एक हिस्सा हो।

पुलकित, दसर्णा और उसके पीछे के भारतीय सवारों ने अपनी-अपनी धमकियाँ देनी शुरू कर दीं
छाती और दहाड़.

'मारो! मारो! मारो!' अबू

क़ासिम हिल भी नहीं पा रहा था। वह बेहोश था। उपवन में, मंत्रोच्चार हो रहा था
एक शानदार चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया।

नरसिम्हन क्रूर तुर्क के सामने खड़ा था। अबू क़ासिम ने यज़ादेह को गिरा दिया।
एक टहनी की तरह और लगभग तुरंत ही अपनी तलवार घुमा दी। बाईं ओर से।
उम्मीद है कि विशालकाय नरसिम्हन को उसके लकवाग्रस्त दाहिने हिस्से पर पीछे धकेला जा सकेगा।
भारतीय ने आखिरी क्षण में अपना दाहिना बाजू ऊपर उठाया, क़ासिम के भीषण प्रहार को अपनी ढाल से एक तरफ़ कर दिया, और अपनी तलवार से ऊपर की ओर वार किया। नरसिंह ने ग़ज़नवी के दाहिने अग्रभाग को पकड़ लिया।

Machine Translated by Google

अपने वार के बाद, उसने प्रसारक पेशियों को बेरहमी से काट डाला और उन्हें अशक्त कर दिया। तलवार तुर्क की तलवार वाली भुजा से एक लाल चमक के साथ उड़ गई, जिससे उसका हाथ नियंत्रण खो बैठा, और उसकी कटी हुई मांसपेशियों से खून की धार बहने लगी।

क़ासिम पीछे हट गया। उसका चेहरा भय से ढँक गया था। उसने यह भी नहीं देखा था कि दुश्मन का वार कहाँ से हुआ था। और फिर भी, उसकी तलवार वाली भुजा का अग्रभाग बुरी तरह से कट गया था। वह जानता था कि उसका सामना एक असाधारण योद्धा से हो रहा है। मनुष्यों में एक सिंह। ...

वह जानता था ... वह जानता था कि वह मर चुका है।

पीछे प्रतीक्षा कर रहे भारतीय अपनी छाती पीटते और गर्जना करते रहे,

'मार डालो! मार डालो! मार डालो!'

क़ासिम ने जल्दी से अपना बायाँ हाथ उसकी बगल की तरफ़ बढ़ाया। चाकू की तरफ़ अपनी म्यान में। लेकिन इससे पहले कि वह उसे युद्ध में उतार पाता, नरसिम्हन, मानवीय रूप से संभव से भी तेज़ गति से, क़ासिम पर निशाना साधते हुए, अपने कंधे के कवच से आगे बढ़ा। यह दूर से किसी ट्रेबुशे से दागी गई चट्टानी मिसाइल की तरह आया। कवच तुर्क के बाएँ कंधे पर लगा। नरसिम्हन के कंधे के कवच के भारी लोहे के कवच ने क़ासिम के कंधे के जोड़ को उसकी सबसे कमज़ोर जगह पर चकनाचूर कर दिया, जिससे उसकी मोटी कंधे की हड्डी उसके जोड़ से बाहर निकल गई। तुर्क कसाई का उखड़ता हुआ कंधा किसी पतली सूंड के कॉलर से लटकी हुई टूटी हुई पेड़ की टहनी की तरह झुक गया।

अबू क़ासिम अब दर्द से चीख रहा था।

'मारो! मारो! मारो!' उसने

अपना दाहिना हाथ बेतहाशा घुमाया, शक्तिशाली को चकमा देने की नाकाम कोशिश में चोल योद्धा, अपनी भयावह यातना की राख से एक तेजस्वी फीनिक्स की तरह उठ खड़ा हुआ।

निर्दोषों के खून के दाग को धोने का सबसे अच्छा तरीका दुष्टों का खून बहाना है।

नरसिंह ने वारों से ऐसे परहेज किया मानो किसी घायल बच्चे के साथ कोई भीषण युद्ध खेल रहा हो। शेर अपने शिकार से खेल रहा था। तुर्क जानता था कि उसका शिकार खत्म हो गया है। वह किसी कोने में फँसे जानवर की तरह पीछे हट गया।

अबू क़ासिम ने नरसिम्हन को जानलेवा नफ़रत से देखा। उसने अपनी हाथ तोड़ दिया और जनरल को अस्पष्ट गालियाँ दीं। हालाँकि, एक शब्द स्पष्ट था।

काफ़िर.

काफ़िर.

काफ़िर.

Machine Translated by Google

चोल योद्धा ने बेरहमी से अपनी शक्तिशाली तलवार घुमाई, जिससे तुर्क का दाहिना हाथ कोहनी के ठीक ऊपर से कट गया। कासिम के खुले घाव से खून की धार फूट पड़ी और वह दर्द से कराह उठा। नरसिंह ने गजनवी की कमर में ज़ोर से लात मारी। तुर्क ज़मीन पर गिर पड़ा।

नरसिम्हन एक घुटने पर बैठ गए और अपनी तलवार नीचे की ओर घुमाई
कासिम का गला। ऐसा वार जिससे कसाई का सिर धड़ से अलग हो जाता। लेकिन चोल सेनापति उस बेचारे तुर्क से बस दो इंच की दूरी पर रुक गया। फिर उसने नीचे देखा। उसे याद आया कि कैसे पौराणिक भगवान नरसिंह ने हिरण्यकश्यप का वध किया था, वह घृणित राक्षस जिसने उसे मारने की कोशिश की थी।

अपना ही बेटा.

नरसिम्हन। जिस भगवान के नाम पर उनका नाम रखा गया था।

नश्वर नरसिंह ने अपनी तलवार खड़ी कर दी और निर्दयता से वार किया
नीचे की ओर, तुर्क के पेट में। वार इतना ज़ोरदार था कि तलवार तुर्क की पीठ को चीरती हुई, जंगल की ज़मीन में धँस गई।

चारों ओर सब लोग अविचलित होकर इस भयावह दृश्य को देख रहे थे।

नरसिंह भयंकर गर्जना कर उठे। उन्होंने अपनी बाँहें मोड़ीं और तलवार को और भी अंदर तक घुसा दिया। लगभग दैवीय प्रकोप के साथ। जब तक तलवार का मूठ तुर्क के पेट में धंस नहीं गया। तलवार, सचमुच, और अंदर नहीं जा सकी।

कासिम के पेट से होते हुए जमीन में गहराई तक धंसी तलवार ने अब गजनवी योद्धा को स्थिर कर दिया था, उसे धरती में ठोंक दिया था, जैसे कोई खूंटी तम्बू को जमीन में ठोंक देती है।

चोल सेनापति ने चारों ओर देखा और गरजकर कहा, 'यह आदमी खून से लथपथ होकर मर जाएगा! कोई दया नहीं दिखाएगा! कोई नहीं!'

भारत का तुर्की कसाई, अबू क़ासिम, पीड़ा से चीख़ता रहा। उसे एक घंटे और चीख़ना पड़ा, उसके बाद उसका खून बह गया और उसे दयापूर्वक मौत मिली।



फ़िरदौस के खेत से ज़मीन दक्षिण की ओर एक पहाड़ी तक जाती थी। और फिर खुज़दार कस्बे तक एक लंबी सड़क थी।

तालिब पूरी सुबह इसी पहाड़ी पर था। देर रात वह घोड़े पर सवार होकर आया था, पहाड़ी के ऊपर बने जंगल में मुड़ा और अपने घोड़े को एक पेड़ से बाँध दिया। फिर

Machine Translated by Google

वह खेत को अच्छी तरह देखने के लिए एक ऊंचे पेड़ पर चढ़ गया था।

सोमेश्वर की मदद करने वाला स्थानीय ग्वादर व्यापारी तालिब की पूँजी था। क्यों? क्योंकि ज़्यादातर ग्वादरवासी महमूद ग़ज़नी से नफ़रत करते थे। वे उसके साम्राज्य का हिस्सा नहीं बनना चाहते थे। ग्वादर में बहुसंख्यक समुदाय, बलूच, आज़ादी चाहते थे। यह स्थानीय व्यापारी अपने विश्वासों पर चलने वाला था। इसलिए, वह अक्सर महमूद के ख़िलाफ़ काम करने वालों का साथ देता था। बेशक, इस प्रक्रिया को सुचारू रूप से चलाने के लिए कुछ पैसे हमेशा मददगार साबित होते थे।

नतीजा यह हुआ कि तालिब को सोमेश्वर की योजनाओं का पता चल गया। स्थानीय ग्वादारी व्यापारी ने अनुमान लगाया था कि महमूद के खिलाफ एक से दो बेहतर होंगे, क्योंकि दुश्मन का दुश्मन दोस्त ही होता है। स्थानीय ग्वादारी व्यापारी ने सही अनुमान लगाया था।

तालिब को सोमेश्वर के अब्बासिद पदक के बारे में भी पता चल गया था।
ग्वादारी के व्यापारी को दिखाया गया। अपने साथ यात्रा कर रहे दल के कौशल का प्रदर्शन करने और अधिक हथियार समर्थन प्राप्त करने के लिए। इसने स्थानीय ग्वादारी व्यापारी को आश्वस्त कर दिया था। इसने तालिब को भी आश्वस्त कर दिया था, जिसने फिरदौस के खेत में जाकर भारतीयों के साथ गठबंधन करने का फैसला किया था। जहाँ तक तालिब का सवाल था, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि महमूद की हत्या अरबों ने की थी या भारतीयों ने, जब तक सुल्तान मारा जाता।

तालिब पेड़ की चोटी से देख रहा था और पास जाने की योजना बना रहा था।
वह बिना मारे भारतीयों को बचा रहा था, तभी उसने अचानक घाटी के दूसरी ओर से, दूर से, एक घुड़सवार सेना को निकलते देखा। जब तक घुड़सवार सेना खेत तक पहुँची, तब तक वह अबू क़ासिम के विशिष्ट रूप को पहचान गया।

तालिब अपने दुर्भाग्य को कोस रहा था। ऐसा लग रहा था कि उसके प्रशंसित अरब सहयोगियों की तरह, भारतीय भी भाग्य के हाथों मारे जाएँगे। क्योंकि भारत के तुर्की कसाई , तुर्क कसाप-ए-हिंद के हमले से कौन बच सकता है?

और फिर उसने अपनी सुविधाजनक जगह से, सबसे शानदार ढंग से अंजाम दिए गए घात को देखा जिसकी वह कल्पना कर सकता था। गलियारे में हमला, पेड़ों पर तीरंदाज़, बकरियों के बाड़े के पीछे से आती घुड़सवार सेना और फिर खलिहान में हुआ नरसंहार।

तालिब दंग रह गया। उसने इस क्षमता के योद्धा पहले कभी नहीं देखे थे। वे उसके मालिक इस्माइल के काम के लिए बिल्कुल उपयुक्त थे।

जब अल्लाह एक दरवाज़ा बंद करता है तो दूसरा खोल देता है।

तालिब ने अपने खुदा का शुक्रिया अदा करने के लिए ऊपर देखा। उसने फुसफुसाते हुए कहा, "महमूद, तुम्हारे दिन अब गिने हुए हैं..."

Machine Translated by Google

अब उसे बस यह योजना बनानी थी कि वह इन भयावह लोगों से कैसे निपटेगा।
भारतीयों को अपने स्वामी के उद्देश्य के लिए अपनी शक्ति को एकजुट करना होगा।

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 20

पिछले पापों का ऋण

ग़ज़नी, अफ़ग़ानिस्तान

'मेरे लड़के!' महमूद ग़ज़नी गर्व से बोला। 'मेरे जवान शेर!'

भारत का विजेता!' 'मेरे चाचा!'

सुल्तान के भतीजे सालार मकसूद ने चिल्लाकर कहा।

वह जामा मस्जिद के पुनर्निर्मित फर्श पर महमूद की ओर तेजी से चला।

मस्जिद। दोनों पुरुषों ने प्रशंसा और गर्मजोशी से एक-दूसरे को अपनी बाहों में भर लिया। महमूद ने सालार मकसूद के दोनों गालों पर बार-बार चुंबन किया। उसने उसकी ओर देखा और मुस्कुरा दिया।

'चाचा, आप भारत के विजेता हैं!' सालार मकसूद ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया। 'मैं तो बस आपका सेवक हूँ, और काफ़िरों के देश में आपके लिए नियंत्रण का जुआ संभालता हूँ।' 'उन चिढ़ाने वाले भारतीयों पर नियंत्रण सुनिश्चित करने का एकमात्र तरीका उन्हें बार-बार पीटते रहना है! वे खूनी तिलचट्टों की तरह विद्रोह

पर उठते रहते हैं। वे फ़ारसियों जैसे नहीं हैं... एक बार पिटने के बाद वे शांत नहीं बैठते...' ... दुखद, पर सत्य। मेरा एक नियम है। जब मैं भारत में होता हूँ, तो हर सुबह, मैं बस 'सच में उठता हूँ और कुछ भारतीयों को बेतरतीब ढंग से पीटता हूँ। बस उन्हें तब तक पीटता रहूँ जब तक वे अपनी जगह पर, हमारे चरणों में रहना न सीख जाएँ।' महमूद घूरता रहा। 'सुना है, विधर्मियों में फिर से उपद्रव मच रहा है?' 'कोई गंभीर बात नहीं है, श्रावस्ती का एक

चाचा! निम्न कुल का हिंदू राजकुमार डाकुओं के एक दल के साथ घूम रहा है। एक छोटी-सी झुंझलाहट। मैं उसे मक्खी की तरह मार दूँगा, उत्सव समाप्त होने के बाद मैं भारत लौट रहा हूँ।' 'हम्म...' महमूद ने सोचा। 'क्या नाम है उसका?' 'सुहेलदेव। चिंता मत करो। दुनिया के सुल्तान, जल्द ही खलीफा बनने वाले को ऐसी छोटी-मोटी बातों में सोचने की ज़रूरत नहीं

होती। मैं इसे संभाल लूँगा, सुहेलदेव।'

... मैं इसे संभाल सकता हूँ,' सालार मकसूद ने जवाब दिया। 'कुछ

Machine Translated by Google

महमूद ने बगल से देखा। 'मैं तुम्हें हॉग कर रहा हूँ! तुम्हारी चाची बेसब्री से तुम्हारा इंतज़ार कर रही हैं। और हाँ, तुम्हारे चाचा, मेरे भाई, ग़ज़नी के गवर्नर-मुफ़्ती!' 'मेरी औरत।' सालार मक़सूद ने तेज़ी से सलाम किया और कौसरी जहाँ को झुककर प्रणाम किया। रानी ने धीरे से सिर हिलाया, उनके शाही चेहरे पर एक

सावधानी से रची हुई गर्मजोशी भरी मुस्कान छा गई। सालार मक़सूद इस्माइल की ओर मुड़े, जो सुल्तान के दाहिनी ओर खड़े थे। उन्होंने उस चाचा को झुककर प्रणाम किया जिनसे वे अब तक कभी नहीं मिले थे।

'मेरे चाचा! आखिरकार, गुज़गान से वापस आ गए। मुझे लगता है आपका प्रवास सुखद रहा होगा।' 'युवा ग़ज़नवी जनरल ने कपटपूर्ण सौहार्द के साथ मुस्कुराया।

"अरे भतीजे, काश तुम आते और मुझे अपनी आलीशान जगह पर तुम्हारी मेज़बानी करने का मौक़ा देते," इस्माइल ने हँसते हुए कहा। उसने गर्मजोशी से अपनी बाहें फैला दीं। सालार मकसूद उसके गले लग गया।

इस्माइल ने कहा, "मेरे भाई तुम्हारी बहुत तारीफ़ करते हैं, भतीजे।" "ग़ज़नवी सल्तनत भारत में तुम्हारी वीरता के किस्से सुनाती है। मेरे भाई के दिल में तुम्हारा जो ख़ास स्थान है, वो सुल्तान के बेटों को भी नहीं मिलता।" "आप बहुत दयालु हैं, मेरे मालिक, गवर्नर-मुफ़्ती," सालार मकसूद ने विनम्रता से जवाब दिया।

सालार मकसूद ने एक शर्मीले युवक को अपने पास आने का इशारा किया। वह दो कदम पीछे, सावधानी से चल रहा था।

'चाचा, आपको मेरा दाहिना हाथ केरीम तो याद ही होगा। भारत में मिली सफलताओं के लिए उसे भी उतना ही ज़िम्मेदार मानिए।'

महमूद खिलखिलाकर हँसा। "बिल्कुल! केरीम का ज़िक्र किए बिना सालार मकसूद का ज़िक्र करना मुश्किल है," उसने आँखों में चमक लाते हुए कहा। "तुम वाकई एक अच्छे नौजवान हो, केरीम," उसने धीरे से अपनी नज़रें लंबे, दुबले-पतले और अस्वाभाविक रूप से गोरे केरीम पर सिर से पैर तक घुमाते हुए कहा। "वाकई अच्छे हो।" केरीम शरमा गया।

इस्माइल ने अजीब तरह से रानी की ओर देखा और उसे असामान्य प्रतिध्वनि महसूस हुई। इस्लाम की उनकी समझ में समलैंगिक संबंधों की अनुमति नहीं थी।

'वास्तव में, वह है, मेरे प्रभु,' सालार मकसूद ने कहा। 'अच्छे लोगों की बात करें तो, मैं उम्मीद है कि जाने से पहले मैं अबू क़ासिम से मिल सकूँगा। सुना है वह शिकार पर निकला है।'

"वह है," सुल्तान ने कहा। "मेरे साथ चलो, भतीजे।" दोनों आदमी जामा मस्जिद के मुख्य

हॉल की ओर टहलते हुए चले गए। बाकी तीन पीछे रह गए।

'गुलाम कैसे भाग गए, चाचा?' सालार मकसूद ने पूछा।

Machine Translated by Google

"घिनौना काम है, मकसूद," महमूद ने कहा। "मेरे भाई ने समारोहों से पहले मस्जिद की मरम्मत के लिए कुछ काफ़िरों को भर्ती किया था। वे एक रात, यूँ ही भाग निकले। इस झड़प में कई पहरेदार मारे गए। इस्माइल को शक है कि यह किसी अंदरूनी काम का नतीजा था। कौसरी को यह बेतुका लगता है। मैं अपनी पत्नी और भाई, दोनों से बहुत प्यार करता हूँ, लेकिन उनकी आपस में बनती नहीं है।" "यह कोई राज़ की बात नहीं है, चाचा। पूरा शहर इस झगड़े के बारे में जानता है।"

रानी और गवर्नर-मुफ़्ती।' 'मैं किसका पक्ष लूँ?' 'मैं इसमें आपकी
मदद नहीं कर सकता, चाचा।' सालार मकसूद

मुस्कुराया। उसने देखा
महमूद से बात की और गंभीरता से कहा, 'लेकिन हां, यह सच है कि उनके आपसी झगड़े के
कारण पूरा प्रशासन निष्क्रिय हो गया है।'

'और इन सबके बावजूद, हमने यह कर दिखाया!' महमूद ने अपना हाथ हिलाया
हाथ हिलाकर, भव्य मस्जिद दिखाते हुए, खुशी से हाथ मिलाया। 'यही वह शानदार जगह है जहाँ मैं अपनी नई भूमिका में कदम रखूँगा—एक ऐसी भूमिका जो मुझे सर्वोच्च सत्ता द्वारा सौंपी गई है। खलीफा बनते ही, मैं एक और जिहाद के लिए भारत लौटूँगा। हम इस नए राजकुमार का दमन करेंगे, जिसकी तुम बात कर रहे हो। हम इस देश के हिंदू और बौद्ध राजाओं का नाश कर देंगे। हम उन सभी का धर्म परिवर्तन करेंगे या उन्हें मार डालेंगे। मैं ग़ज़वा-ए-हिंद की भविष्यवाणी को पूरा करूँगा , भारत की विजय और काफ़िरों के विनाश की भविष्यवाणी ! हम हमेशा भारत पर राज करेंगे!'

'या कम से कम अभी के लिए उत्तर भारत। हम उनके राज्यों को एक-एक करके ध्वस्त कर सकते हैं। वे जातियों में गहराई से बँटे हुए हैं, और उनमें से कई अहिंसा में विश्वास करते हैं!' सालार मक़सूद ने यह कहते हुए नाक भौं सिकोड़ी। 'और ज़्यादातर बौद्ध वास्तव में सोचते हैं कि हम उनके प्रति दयालु होंगे, क्योंकि हम खुद भी हाल तक बौद्ध थे।' महमूद भी हँसा। 'वे मूर्ख हैं। वे नहीं समझते। हम अपने पूर्वजों का नाश करके अपने नए धर्म के प्रति अपनी वफ़ादारी
साबित करते हैं। हमसे पहले वाले जाहिलियत में थे, बर्बर अज्ञानता के युग में। अब हम पवित्र हैं क्योंकि हमने एकमात्र सच्चे धर्म को स्वीकार कर लिया है। हम अपने पूर्वजों के धर्म को हर जगह तबाह करके साबित करते हैं कि हम अच्छे मुसलमान हैं। बौद्ध धर्म को कहीं भी ज़िंदा नहीं रहने दिया जाएगा।' लेकिन दक्षिण में स्थिति ज़्यादा कठोर होगी,' सालार मक़सूद ने आगे कहा। 'वे अभी भी उग्र हिंदू हैं, वास्तव में बहुत उग्र हिंदू। वे पशु बलि भी देते हैं। और राजेंद्र चोल बहुत शक्तिशाली है।' 'ठीक है, मुझे अगली पीढ़ी के लिए कुछ तो छोड़ना ही होगा।' 'यह सच है, चाचा।
'सत्य ... लेकिन, एकमात्र सच्चे धर्म को भारत में लाना ग़ज़नी की ज़िम्मेदारी है। हम उनकी विधर्मी धरती को उनके खून से तब तक भिगोएँगे, जब तक कि वे

Machine Translated by Google

या तो वे इस्लाम धर्म अपना लें, या फिर उनकी निम्न धिम्मी स्थिति को स्वीकार कर लें और हमें तथा उनकी महिलाओं को धन के रूप में जजिया दें ।'

'आमीन ...' महमूद ने अरबी भाषा में आमीन का प्रयोग करते हुए कहा, जिसे आस्थावान व्यक्ति प्रार्थना के अंत में कहता है और अपने ईश्वर से अपनी प्रार्थना पूरी करने की प्रार्थना करता है।

'सुम्मा अमीन,' सालार मकसूद ने उत्तर दिया।



इस्माइल और कौसरी मस्जिद के प्रवेश द्वार के पास एक-दूसरे के पास उदास खड़े थे। खूबसूरत युवक केरीम, उस दुष्ट जोड़ी को छोड़कर मस्जिद का जायज़ा लेने चला गया था।

रानी ने घमंड भरी नज़रों से इस्माइल की ओर देखा, लेकिन उनकी आँखों में गुस्से की आग साफ़ दिखाई दे रही थी। कम से कम उस व्यक्ति के लिए तो यह साफ़ था जो बारीकियों को भाँप सकता था, जैसे कि इस्माइल।

'हर रात चर्बी का एक मोटा टब मेरे घर के बाहर आकर इंतज़ार करता रहता है
'चैम्बर्स...' उसने कहा, उसका स्वर बातचीतपूर्ण और विनम्र था।

इस्माइल ने उसकी ओर देखा, उसके चेहरे पर एक अजीब सा भाव था, हालाँकि वह अच्छी तरह जानता था कि रानी किसके बारे में बात कर रही है। 'चर्बी का मोटा टब?'

रानी के चेहरे पर हल्की सी हंसी थी जब वह इस्माइल को घूर रही थी।
'तुम उतने होशियार नहीं हो जितना लोग कहते हैं।'

किसी भोले-भाले राहगीर को ऐसा लगेगा मानो रानी और
गवर्नर-मुफ़्ती मौसम पर चर्चा कर रहे थे। लेकिन यह बातचीत तलवारबाज़ी से कम नहीं थी।

'ओह,' इस्माइल ने नाटकीय अंदाज़ में आह भरी और फिर धीरे से हँसा। 'वह चर्बी का मोटा टब! महान रानी, आपकी हास्य-भावना बहुत अच्छी है। मैं उसके लिए यही वर्णन करूँगा।' 'आपने मुझे अभी तक यह नहीं बताया कि वह फ़ारसी डगमगाता दरियाई घोड़ा मेरे कमरे के बाहर क्या कर रहा था।'

इस्माइल ज़ोर से हँसा। 'डगमगाता दरियाई घोड़ा। मैं भी इसका इस्तेमाल करने वाला हूँ। लेकिन जहाँ तक तुम्हारे सवाल का सवाल ⋯ है, मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं है। दरियाई घोड़े का अपना दिमाग होता है। कौन बता सकता है कि इन फारसियों का दिमाग कैसे काम करता है?' रानी के चेहरे पर गंभीरता छा गई। 'दरियाई घोड़े किसी भी दिशा में डगमगा सकते हैं... यह इस बात पर निर्भर करता है कि कौन

सबसे ज़ोर से कोड़ा मारता है।' 'सच। मुझे भी ऐसा ही अनुभव हुआ था जब मेरी टीम भाग गई थी। मुझे यकीन है कि तुम्हें भी हुआ होगा।'

इससे कोई लेना-देना नहीं है.'

Machine Translated by Google

‘मुझे यकीन है कि तुम्हें यकीन है।’ इस्माइल
मुस्कुराया। ‘और फिर भी, मस्जिद फिर से बन गई।’ ‘क्योंकि मैंने मदद की थी।’ ‘मुझे
यकीन है कि तुमने मदद की
थी।’ ‘एक बार फिर, मुझे
यकीन है कि तुम्हें यकीन है।’ इस्माइल हँसा और जवाब देने की
परवाह न करते हुए दूसरी तरफ़ देखने लगा।

कौसरी की आँखों में कुछ पल के लिए आग सी चमक उठी। 'आप बहुत कम समय के लिए वापस आए हैं, सावधान रहिए,
… महान राज्यपाल-मुफ़्ती।' 'मैं तो जन्मजात ही सावधान हूँ,
महान रानी। लेकिन क्या आप यह सुनिश्चित कर रही हैं कि आपका आधार
'सत्ता सावधान है?'

कौसरी चुप रही। सार्वजनिक जगह पर सुल्तान के बारे में साफ़-साफ़ ज़िक्र सुनकर वह गुस्से में थी। लेकिन उसने अपना गुस्सा अच्छी तरह छुपा लिया। इस्माइल ज़रूर बहुत ताकतवर हो गया होगा कि इतनी बेबाकी से बोल रहा है।

इस्माइल ने अपने हाथ अपनी लंबी, ढीली आस्तीन के नीचे डाल लिए। 'मुझे बोलने दो।'
साफ़-साफ़ कह रहा हूँ, प्यारी रानी। आप जानती हैं कि जो रास्ता चुना गया है वह ख़तरनाक है। कोई भी
तुर्क, कोई भी ग़ैर-अरब उस भूमिका में कभी स्वीकार नहीं किया जाएगा। मुझे पता है कि आपने उसे रोकने की कोशिश की है, लेकिन आपकी शक्ति का आधार नहीं माना। अगर कुछ अनहोनी हो जाए, तो आपके पास कौन बचेगा? अब पूरे साम्राज्य में मेरे वफ़ादार हैं। आप मुझ पर भरोसा रख सकती हैं, आपको सही चुनाव करना होगा।'

… लेकिन इसके लिए,

कौसरी जहाँ ने आँखें सिकोड़ लीं। खुली बातचीत से स्तब्ध। उसने चारों ओर नज़र दौड़ाई ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कोई उसकी बात सुन तो नहीं रहा। उसे तुरंत पछतावा हुआ। उसने कमज़ोरी दिखाई थी। वह जानती थी कि अगर कोई उसकी बात सुन रहा होता, तो इस्माइल ये शब्द कभी नहीं कहता।

कौसरी ने फुसफुसाते हुए कहा, 'तुम जो कह रही हो उसके लिए मैं तुम्हें फांसी पर चढ़ा सकती हूं।'
शब्द कोमल और लगभग फुसफुसाहट में।

"और मैं क्या कहना चाह रहा था , मेरी औरत?" इस्माइल ने हाथ उठाकर, मानो मस्जिद की दीवारों पर की गई लिखावट का प्रदर्शन कर रहा हो, चिढ़ाते हुए कहा। "अल्लाह के घर को नापाक ख़यालों से गंदा मत करो..."

लेकिन हम ज़्यादा खुलकर बातचीत किसी

और जगह पर कर सकते हैं—अगर आप चाहें तो मेरे महल में। मुझे लगता है कि अगर हम साथ मिलकर काम करें तो हम सचमुच एक-दूसरे की ताकत बन सकते हैं। मैं सुनता हूँ, तुम जानते हो कौन नहीं...

मैं तो बस तुम्हें और बेहतर जानना चाहता हूँ। बहुत बेहतर। हालाँकि मैं पहले से ही बहुत कुछ जानता हूँ।' रानी उसकी
धृष्टता से अचंभित रह गई।
गुस्से से उसने नज़रें फेर लीं। और देखा कि सुल्तान और सालार मकसूद चले आ रहे हैं।
उनकी ओर वापस.

Machine Translated by Google

वह मुस्कुराई और इस्माइल की ओर मुड़ी। "आप दिन-ब-दिन और भी निडर होते जा रहे हैं, गवर्नर-मुफ़्ती," उसने धीरे से कहा। "बहादुरी और मूर्खता के बीच बहुत पतली रेखा होती है।" इस्माइल ने गर्मजोशी से मुस्कुराया ताकि सुल्तान को शक न हो। लेकिन

उसकी आवाज़ में तल्खी थी। 'मैं कभी उस सीमा को पार नहीं करूँगा।' कौसरी ने

इस्माइल की तरफ़ देखा। 'मैं दुआ करता हूँ कि तुम ऐसा करो।'



यालान सुल्तान के महल में नौकरों के कमरों से निकला और धीरे-धीरे गलियारे में दबे पाँव चला। उसने कोई जूता नहीं पहना था, उसके कदम पंख जैसे हल्के थे। सूर्योदय होने में अभी कुछ घंटे बाकी थे और उसका घबराया हुआ दिल उसके कानों में धड़क रहा था।

वह कई सालों से सुल्तान के रसोइये का हिस्सा था। उसकी नियुक्ति ख्वाजा हसन की सिफ़ारिश पर हुई थी, भले ही उसकी पृष्ठभूमि बहुत अच्छी न रही हो। उसे हमेशा से पता था कि एक दिन ऐसा आएगा जब उसे उस एहसान का बदला चुकाना होगा। वह धार्मिक पुलिस, जुंदीन-उल-दीन, के लिए गुप्त काम कर रहा था, और उसे उम्मीद थी कि बस इतना ही काफ़ी होगा। लेकिन दिल ही दिल में, वह जानता था कि उसका काम इतना ख़तरनाक नहीं था कि वह प्रधानमंत्री का कर्ज़ चुका सके। वह बस उस भारी जोखिम के लिए तैयार नहीं था जो आखिरकार उससे माँगा गया था। हालाँकि, उसके पास कोई विकल्प नहीं था।

अपने कार्य की तैयारी के लिए, पिछले सप्ताह ही उन्हें सुल्तान के निजी स्टाफ में स्थानांतरित कर दिया गया था।

महल में चारों तरफ नींद की चादर बिछी हुई थी, सिवाय बाहरी परिधि पर गश्त लगा रहे ज़मीनी कर्मचारियों के। उसने तारों भरे आसमान की ओर देखा और गलियारे के अंत तक चला गया। उसने रेलिंग पर हाथ रखकर नीचे ज़मीन का जायज़ा लिया। ठंडी हवा उसके चेहरे पर बर्फ़ के टुकड़ों की तरह चुभ रही थी। उसने देखा कि दो पहरेदार दाहिनी ओर मुड़कर महल की पूरी लंबाई में चल रहे हैं।

छह मिनट की खिड़की.

पहरेदार फिर से दाएँ मुड़ते और उससे दूर, दूर चले जाते। यालान ने झुककर अपना सिर ऊपर की ओर किया। तभी उसके ऊपर वाली खिड़की से एक हल्की पीली रोशनी निकली, जो उस कमरे की खिड़की थी जिसमें उसका निशाना सो रहा था—या शायद जाग रहा था।

यालान रेलिंग पर चढ़ गया और एक खंभे से चिपक गया। उसने अपना बायाँ पैर आगे बढ़ाया और बलुआ पत्थर की ईंटों के बीच एक दरार में पैर रखने की जगह ढूँढ़ ली। उसने आगे बढ़ाया।

Machine Translated by Google

अपने बाएं हाथ से संकरी नाली के किनारे को पकड़ लिया। उसका दाहिना हाथ जल्दी से उसके पीछे गया और फिर दाहिना पैर। और अब मुश्किल हिस्सा आया। उसने अपना बायां पैर दीवार की दरार में संकरी जगह पर रखा, स्तंभ के सहारे को पकड़ने के लिए अपनी बाईं बांह को जितना हो सके फैलाया और अच्छी पकड़ सुनिश्चित की। फिर उसने चढ़ना शुरू किया। उसकी पीठ, उंगलियों और पैरों पर भारी दबाव पड़ा। उसके कंधे जलने लगे, लेकिन वह चढ़ता रहा, जब तक कि वह लक्षित किनारे तक नहीं पहुंच गया। जोर से सांस लेते हुए, उसने अपना अग्रभाग किनारे के ऊपर रखा और खुद को ऊपर खींच लिया। वह खिड़की के किनारे के ऊपर दुबक गया। तीन की गिनती पर वह आधा खड़ा हुआ, खिड़की के फ्रेम को पकड़ा और अपना संतुलन पाया।

उसने धीमी स्त्री स्वर में अरबी मंत्र की धुन सुनी। वह धीरे से उठा और कमरे में झाँका। वह महिला आलीशान शाही शयनकक्ष के दूर वाले छोर पर पतले पतले पर्दों के पीछे बैठी थी। उसने अपने पैर और सीधे किए और गौर से देखा।

रात की हवा में पर्दा हिल रहा था, जिससे रानी दिखाई दे रही थी। वह बैठी थी फर्श पर, उसकी पीठ खिड़की की ओर थी। सिर पर कुछ भी न ढँके होने के कारण, उसके भूरे बाल उसकी पीठ पर समुद्र की तूफानी लहरों की तरह लुढ़क रहे थे और फर्श पर एक चमकते हुए ढेर की तरह गिर रहे थे। उसका शरीर उसके ध्यान के प्रकाश-स्रोत को ढँक रहा था।

धीमी झंकार वाले मंत्रों की आवाज़ें उस तक पहुँचते-पहुँचते लगभग खामोशी में बदल गईं। वह समझ गया कि शायद यह अरबी में था। बस उसे समझ नहीं आ रहा था कि शब्द क्या थे। और उसे पता था कि उसे कुछ देना होगा।
जवाब.

इस अलौकिक समय पर आप क्या जप रही हैं, रानी?

यलान अचानक चौंक गया।

उसे अपनी दाहिनी बांह पर ठंडी सरसराहट महसूस हुई। वह फुफकार उठा और उसने अपना हाथ झटका, खिड़की के चौखट पर से उसकी पकड़ लगभग छूट गई। एक घोंघा खिड़की के किनारे पर गिरा और थोड़ी दूर जाकर गिरा। यालान ने चौखट को फिर से पकड़ लिया। तब तक किसी का ध्यान न आने पर, गिरते हुए घोंघे ने खिड़की के दूसरे छोर पर चुपचाप बैठी एक छोटी चिड़िया को चौंका दिया। घबराकर, उस पंख वाले जीव ने कूक की, अपने पंख फैलाए और उड़ गया।

यालान ने मन ही मन प्रार्थना की और ऊपर देखा। और ठिठक गया।

उसकी आँखें खिड़की पर खड़ी रानी की क्रोधित निगाहों पर टिक गईं। उसका नपुंसक रक्षक उसके बगल में खड़ा था।

खौफ़! खौफ़! वह एक बिलबिलाते खरगोश की तरह फँस गया था।

यालान ने जल्दी से वहाँ से भागने की कोशिश की लेकिन हकीम ने उसकी दोनों कलाइयाँ पकड़ लीं। उसने अपने हाथों को जासूस की बगलों के नीचे ले जाकर उसे एक छोटे से व्यक्ति की तरह ऊपर खींच लिया

Machine Translated by Google

कुत्ते का पिल्ला।

कौसरी जहाँ ने उसे घूरा। वह हकीम की ओर मुड़ी और फुसफुसाई, "बकवास!"
पवित्र झील और पवित्र पर्वत, समय बिल्कुल सही था।'

यालान हकीम की लोहे की पकड़ में छटपटा रहा था, छूटने की बेताब कोशिश कर रहा था। हकीम ने अब अपने विशाल बाएँ हाथ से उसका मुँह ढक लिया था, इसलिए वह कोई आवाज़ नहीं निकाल पा रहा था। फिर भी उसे अहम जानकारी मिल गई। 'समय बिल्कुल सही था।' क्या वह मेरा इंतज़ार कर रही थी? क्या मुझे फँसाया गया है?

हकीम ने फुसफुसाते हुए कहा, 'अगर तुमने आवाज निकाली तो तुम मर जाओगे।'
यालान ने सिर हिलाया। ये शब्द उसकी समझ में आ गए।

हिजड़े के अंगरक्षक ने जासूस से उसका पेशकब्ज़, यानी घातक फ़ारसी खंजर, छुड़ा लिया । और उसे ज़मीन पर पटक दिया। कौसरी जहाँ यालान के पास गई और उसके बगल में दुबक गई। वह उसे घूरता रहा। उसकी अलौकिक सुंदरता पर स्तब्ध, उसकी आँखों में छिपे ख़तरनाक ख़तर से स्तब्ध।

'मैं तुम्हें पहचानती हूँ,' उसने फुसफुसाते हुए कहा। 'तुम जुंदी-उल-दीन के लिए काम करते हो। वह
साँप इस्माइल ने अब सचमुच हद पार कर दी है...' यालान कहने ही वाला था कि उसे यहाँ
आने का हुक्म प्रधानमंत्री ख्वाजा हसन ने दिया था, गवर्नर-मुफ़्ती इस्माइल ने नहीं। लेकिन आत्मरक्षा की उसकी प्रवृत्ति इतनी प्रबल थी कि वह चुप रहा। छोटे आदमी जानते हैं कि वे ताकतवर लोगों की चालों को कभी ठीक से नहीं समझ सकते।

'मुझे बहुत माफ़ करना, महारानी। मैं तो बस आपके आदेश का पालन कर रहा था। मैं आपका अनुसरण करूँगा।'
अब। प्लीज़ मुझे बताओ कि मैं क्या करूँ।' कौसरी मुस्कुराई।

'और तुम मेरे लिए क्या करोगे, नासमझ?' 'जो भी तुम चाहो, मेरी रानी।' कौसरी ने अपनी भौहें उठाईं और धीरे
से हँसी। वह जानती थी, किसी भी खूबसूरत औरत की तरह,
कि एक आम आदमी पर उसका लगभग मोहिनी जैसा असर होता है। लेकिन लहजा और शब्द बिल्कुल सही होने चाहिए थे।

"बताओ, नासमझ," कौसरी बोली। "मेरे कमरे के बाहर से क्या सुना?" न चाहते हुए भी, यालान ने रानी के वक्षस्थल पर एक नज़र डाली। कई पुरुष
उसके सामने खुद को रोक नहीं पाते। उसने एक चीज़ को अपने सीने से लगा लिया, उसे नज़रों से ओझल कर दिया।

'मैंने कुछ नहीं सुना, मेरी रानी। मैं समझ गया कि आप अरबी में प्रार्थना कर रही थीं। लेकिन मैं शब्दों को समझ नहीं पाया।'

'हम्म।' 'हम्म'

सुनकर यालान और भी घबरा गया। वह अपनी उपयोगिता साबित करने की कोशिश में बड़बड़ाता रहा। 'लेकिन मैं आपका जासूस तो बन ही सकता हूँ, महारानी। आपको कोई भी खबर पहुँचा दूँगा।'

Machine Translated by Google

तुम्हें पसंद है।'

कौसरी ने यालान की तरफ़ देखा। उसके चेहरे पर मुस्कान थी। उसने दिलचस्पी का दिखावा किया।
'खबर?' 'हाँ,

मेरी रानी। सुल्तान के बारे में खबर। प्रधानमंत्री के बारे में। गवर्नर-मुफ़्ती के बारे में। मैं आपको सब कुछ लाऊँगा।'

रानी मुस्कुराई। वह सचमुच एक शानदार मुस्कान थी जो वह अपने प्रिय के लिए रखती थी, या जब उसे किसी पुरुष को यह भुलाना होता था कि उसके पास दिमाग है ताकि वह ठीक वही करे जो वह उसे करने का आदेश देती है।

मुस्कुराहट का असर हुआ। ज़ाहिर है।

'मैं आपके प्रति शाश्वत वफ़ादारी की प्रतिज्ञा करता हूँ, मेरी रानी,' यालान ने साहसपूर्वक कहा,
फिर से उसकी छाती की ओर देखते हुए, 'आप जो भी कहेंगी, मैं करूँगी।'

कौसरी जहाँ ने सिर हिलाया। फिर हकीम की ओर मुड़ी। "इस भले आदमी की ज़बान काट दो। इसकी हड्डियाँ तोड़ दो, पर चेहरा सलामत रखो। इसके परिवार को उठा लो।"
वे सुरक्षित घर में हमारे मेहमान होंगे। उनके लिए एक हज़ार स्वर्ण मुद्राएँ अलग रख दो। सुबह का स्वागत करने के लिए तैयार हो जाओ, गवर्नर-मुफ़्ती पर एक जंदीन-उल-दीन जासूस के हाथों ग़ज़नी की रानी की हत्या की कोशिश करने के लिए औपचारिक आरोप लगाए जाएँगे।' यालान चुप रहा। मिलने वाली सज़ा की आशंका से स्तब्ध। कोई भी इंसान अपनी ज़ुबान नहीं खोना चाहता।

लेकिन एक हज़ार स्वर्ण मुद्राओं का मतलब था कि उसके परिवार की हमेशा के लिए देखभाल की जाएगी। कोई भी इंसान ऐसा मौका नहीं छोड़ेगा।

लेकिन उसके पास प्रस्ताव के बारे में और अधिक सोचने, विचार करने का समय नहीं था।
फायदे और नुकसान। क्योंकि यह असल में कोई प्रस्ताव नहीं था। यह एक अल्टीमेटम सा था। उसके पास समय भी नहीं था, क्योंकि उसके विचार तब बाधित हुए जब हकीम ने उसे अपनी विशाल मुट्ठियों से ज़ोर से मारा और बेहोश कर दिया।

रानी उठी और खिड़की की ओर चली गई। उसने आकाश की ओर देखा और
चाँद देखा। उसने सिर हिलाया और मुस्कुराई। उसकी नज़र घोंघे पर पड़ी। वह बड़ी मेहनत से खिड़की की चौखट के बीचोंबीच रेंगकर वापस आ गया था। बिल्कुल मिस्र के स्कारब गोबर भृंग , खेपर की तरह।

उसने घोंघे को अपनी दाहिनी तर्जनी उंगली के सिरे पर उठाया, उसे श्रद्धा से अपने माथे के पास लाया और अपनी आँखें बंद कर लीं।

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 21

वह आदमी जिसने यह सब शुरू किया

फिरदौस का खेत, खुजदार, अफगानिस्तान के करीब

ध्रुव फिरदौस के घर के किनारे बर्फ में बैठा था। उसे ठंड का एहसास नहीं हो रहा था। गर्म आँसुओं ने उस हताश युवक के खुरदुरे, बर्फ से ठिठुरते चेहरे पर पतली, चिकनी लकीरें बना दी थीं।

भागे हुए गुलामों का पीछा करने वाले तुर्क शिकारी दल के विनाश को चौबीस घंटे बीत चुके थे। शिकारियों का आखिरी आदमी तक शिकार किया जा चुका था, जिसमें भारत का कभी खौफ़नाक तुर्की कसाई भी शामिल था।

जीत तो मिल गई थी, लेकिन इसकी कीमत बहुत चुकानी पड़ी।

पिछली शाम, सभी भारतीय उस विनम्र गुजराती व्यापारी के लिए सम्मानपूर्वक खड़े होकर शोक मना रहे थे, जब शोकाकुल ध्रुव ने अपने कुलीन पिता सोमेश्वर का पूरे वैदिक रीति-रिवाजों के साथ अंतिम संस्कार किया था। गरुड़ पुराण के मधुर मंत्र, जो आमतौर पर अंतिम संस्कार के दौरान पढ़े जाते हैं, इस गंभीर समारोह के साथ थे। अब तक मिशन की यह प्रथा, जिसमें भारतीय अपनी कल्पित मुस्लिम पहचान को हर समय सामने और केंद्र में रखते थे, इस दुखद अवसर को देखते हुए कुछ समय के लिए त्याग दी गई थी। लेकिन मंत्रोच्चार यथासंभव धीमे स्वर में किया गया था, ताकि ध्वनि दूर तक न जाए।

युद्ध से एक रात पहले ध्रुव को विश्वास था कि भाग्य ने उसे उसके पिता से फिर मिला दिया है। लेकिन भाग्य इतना निर्दयी कैसे हो सकता है? उसने उसे उसका खोया हुआ स्वर्ग कुछ देर के लिए दिखाया, और फिर बेरहमी से उसे छीन लिया।

यज़ीदी रीति-रिवाजों के अनुसार जब उसके प्यारे पिता आरिफ़ के लिए कब्र खोदी गई और उन्हें उसमें दफ़नाया गया, तो यज़ादेह लगातार रोती रही। सभी भारतीय और आज़ाद हुए गुलाम इस कठिन समय में उसके साथ खड़े रहे और उसका साथ दिया। अमल ने एक रक्षक माँ की तरह उस यज़ीदी लड़की को अपने संरक्षण में रखा था।

बहादुर खेत मालिक, फिरदौस, जो ग़ज़नी के गद्दार का संपर्क सूत्र था, भी मारा गया था। क़ासिम के एक आदमी ने फिरदौस का सिर काट दिया था क्योंकि उसने

Machine Translated by Google

बहादुरी से एक गुलाम को बचाने की कोशिश की। इकबाल भी लड़ाई में घायल हुआ था, लेकिन ज़्यादा गंभीर नहीं। फिरदौस को खेत में ही पूरी इस्लामी रस्मों के साथ दफनाया गया, जिसमें सभी शामिल हुए।

लगभग साठ गुलाम मारे गए थे, जिनमें से ज़्यादातर की मौत मार्ग पर हुई झड़प में हुई थी। और पुलकित के आठ सैनिकों और चोल सैनिकों ने सर्वोच्च बलिदान दिया था। नरसिंहन, विजयन और पुलकित ने यह सुनिश्चित किया था कि सभी का अंतिम संस्कार, मृतकों की अपनी-अपनी पारंपरिक मान्यताओं के अनुसार, उचित ढंग से किया जाए।

दो सौ ग़ज़नी सैनिकों की लाशें खलिहान के पीछे ढेर में रखी थीं, उन पर बर्फ़ गिर रही थी। कुछ लोग चाहते थे कि लाशों को बेतरतीब ढंग से पास की एक चट्टान से फेंक दिया जाए, ताकि जंगली जानवर उन्हें खा जाएँ और मुर्दाखोर पक्षी उन पर चोंच मारें। किसी में भी उन राक्षसों का अंतिम संस्कार करने की ऊर्जा, इच्छा या प्रेरणा नहीं थी। पूर्व दासों में से मुसलमानों, यहाँ तक कि अमल ने भी नरसिंह से कहा था कि जहाँ तक उनका सवाल है, ये लोग मुसलमान नहीं थे। दरअसल, ये इस्लाम के नाम पर एक कलंक थे। लेकिन नरसिंह ने ग़ज़नवी तुर्क लाशों के बारे में अभी तक कोई फ़ैसला नहीं लिया था। कड़ाके की ठंड ने उन्हें कुछ समय दिया क्योंकि लाशें इतनी जल्दी सड़ नहीं रही थीं।

तुर्कों के कवच, हथियार और बचे हुए घोड़े
भारतीयों द्वारा उपयोग किये जाने के लिए इसे कब्ज़ा कर लिया गया।

नरसिम्हन अपने अधीन काम करने वाले लोगों के लिए नाश्ते की व्यवस्था देख रहे थे, तभी उन्होंने ध्रुव को फार्म के एक कोने में अकेले बैठे देखा।

जीत तो मिल गई थी, लेकिन इसकी कीमत बहुत चुकानी पड़ी।

नरसिम्हन उस शोकाकुल युवक के पास गए और उसके पास बैठ गए।

'ध्रुव, तुम्हारे पिता अद्भुत गुणों और उद्देश्यपूर्ण व्यक्ति थे। वे महादेव के सच्चे भक्त थे। वे भारत माता के एक महान सपूत थे।'

सुबह की धूप में बर्फ़ थोड़ी पिघलने लगी थी। ध्रुव
कमांडर के जवाब में उन्होंने आदरपूर्वक अपने हाथ जोड़े।

नरसिंह ने ध्रुव के कंधे पर हाथ रखा।

ध्रुव ने अपनी आँख की कोर से निकले आँसू को पोंछा। "यह कैसी यातना है! मैं अपने पिता को, बस थोड़ी देर के लिए, देखता हूँ। उन्हें गले लगाता हूँ। उनसे आशीर्वाद लेता हूँ। अपनी किस्मत को धन्यवाद देता हूँ कि देवता अब मेरे विरुद्ध नहीं हैं। और अगली सुबह, मैं उनका क्षत-विक्षत शरीर देखता हूँ..."

लॉर्ड, मेरे पिता को उनके विनाश की ओर ले जाने वाले सबसे ... मैं उसे इस तरह मरते हुए देखता हूँ...सचमुच,
अच्छे इंसान, बहुत क्रूर हैं। अगर वे भारत में रहते तो आज भी जीवित होते।'

Machine Translated by Google

"लेकिन ध्रुव, तब तो तुम मर ही गए होते," नरसिंह ने धीरे से कहा। "अगर तुम गजनी से यह साहसिक पलायन कर भी लेते, तो भी तुर्क तुम्हारे पीछे उसी तरह आते जैसे उन्होंने किया। हमारे सैनिक, जो सिर्फ़ तुम्हारे पिता की वजह से यहाँ हैं, अगर समय रहते हस्तक्षेप न करते, तो इसमें कोई शक नहीं कि तुम और तुम्हारे सभी साथी अब तक मर चुके होते।"

ध्रुव दंग रह गया और चुप हो गया। उसने पहले कभी इस नज़र से नहीं देखा था।

"क्या तुम इस संभावना पर विचार कर सकते हो कि शायद तुम्हारे पिता को हमारे साथ यहाँ इसलिए भेजा गया था ताकि तुम ज़िंदा बच सको? तुम्हारे पिता हम सबको यहाँ लाए थे ताकि उनका बेटा अबू·क़ासिम के हमले से बच जाए। और फिर, तुम्हारी किस्मत फिर से लिखकर, वे आगे बढ़ गए..." ध्रुव चुप रहा। उसके गालों पर आँसू बह रहे थे।

'प्रश्न यह है कि आपको मिले इस दूसरे जीवन का आप क्या करेंगे?
तुम्हारे पिता के बलिदान के कारण?' ध्रुव ने गहरी साँस ली और
नीचे देखा।

'मेरे सम्राट राजेंद्र चोल ने एक बार मुझसे एक बहुत ही सुंदर बात कही थी...' ध्रुव ने नरसिंह की ओर देखा।

नरसिंह ने आगे कहा, 'अगर भगवान महादेव आपसे कुछ ऐसा छीन सकते हैं जिसकी आपने कभी कल्पना भी नहीं की होगी, तो वे आपको कुछ ऐसा भी दे सकते हैं जिसकी आपको कभी कल्पना भी नहीं होगी। आपको बस जीते रहना है, चलते रहना है। जैसा कि ऐतरेय उपनिषद में कहा गया है, "चरैवेति, चरैवेति।" चलते रहो, चलते रहो।' ध्रुव ने आँसू भरी नज़रों से नीचे देखा। 'मेरे पिताजी ने भी एक बार मुझसे कुछ ऐसा ही कहा था। मैंने उनकी बात नहीं मानी थी।

... मेरी समझ में नहीं आया ...'

सोमेश्वर ध्रुव को बार-बार अपनी प्राचीन संस्कृति के बारे में बताते थे।

वह बहुत छोटा और विद्रोही था, इसलिए कभी ध्यान से सुन नहीं पाया। काश मैंने आपकी बात ज़्यादा सुनी होती, पिताजी। काश मैंने आपके साथ·ज़्यादा समय बिताया होता।

'तो अब अपने पिता की बात सुनो।' ध्रुव ने सिर हिलाया।

"तो उठो," नरसिंह ने दृढ़ स्वर में कहा। "जीवितों की दुनिया में लौट आओ। अपने पिता का सम्मान करो, उनकी स्मृति का सम्मान करो —वह व्यक्ति बनकर जो तुम्हारे पिता तुम्हें बनते देखना चाहते थे।"

ध्रुव के आँसू अब बह रहे थे।

'तुम्हारे पिता की आत्मा अभी भी यहाँ है। वह देख रहा है। उन पर गर्व करो।'

Machine Translated by Google



नरसिम्हन और ध्रुव अब मुख्य फार्म की इमारतों की ओर चल रहे थे।

ध्रुव ने गहरी साँस ली और फुसफुसाया, "मैं भारत वापस नहीं जा रहा हूँ, जनरल। मैं आपके साथ ग़ज़नी आ रहा हूँ। मेरे पिता आपको यहाँ तक लाए हैं। मैं उनकी ज़िम्मेदारी निभाऊँगा। मैं महान महादेव के प्रति उनके आध्यात्मिक ऋण को चुकाऊँगा, भगवान शिव की आज्ञा।" नरसिंह मुस्कुराए और ध्रुव के कंधे पर थपथपाया। "मुझे गर्व होगा कि आप हमारी सेना में शामिल हो गए।" ध्रुव रुका और नरसिंह को औपचारिक रूप से सलामी दी। ⋯ यानी, अगर आप मुझे अपने साथ शामिल होने की अनुमति देंगे

नरसिंह ने सिर हिलाया। उसका स्वर आदेशात्मक हो गया। 'आराम से रहो, सिपाही।' जैसे ही नरसिम्हन मुड़े, उन्होंने इकबाल, विजयन और पुलकित को आते देखा।

विजयन और पुलकित ने वृद्ध इकबाल की सहायता की, जो बाएँ हाथ और दाहिनी जांघ पर ज़ख्मों के बावजूद धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। ध्रुव सेनापति से अलग होकर अपने पिता के मित्र की ओर बढ़ा। वृद्ध की आँखें उस बालक पर पड़ीं तो चमक उठीं। वह रुका और अपनी बाहें फैला दीं, उसके थके हुए चेहरे पर बच्चों जैसी मुस्कान थी। उसकी आँखों से आँसू बह निकले।

दोनों ने बिना कुछ कहे एक दूसरे को पकड़ लिया।

विजयन और युवा पुलकित नरसिम्हन के पास गए और सावधान मुद्रा में खड़े हो गए। जनरल ने सलामी के तौर पर अपनी बाईं मुट्ठी सीने पर रखी। कभी दुश्मन रहे नरसिम्हन और पुलकित, जो अपने-अपने राज्यों में युद्धरत थे, अब एक-दूसरे को सम्मान से देख रहे थे। दोनों ने शानदार ढंग से, साहस और कुशलता से युद्ध लड़ा था।

'नमस्ते, सेनापति,' पुलकित ने धनुष के साथ महान योद्धा को संबोधित किया।

सिर पर हाथ रखकर, अपनी हथेलियाँ आपस में जोड़ते हुए।

नरसिम्हन ने कहा, 'नमस्ते, प्रिंस पुलकित।'

पुलकित ने विजयन की ओर और फिर नरसिम्हन की ओर देखा। 'मुझे बताया गया था तुम्हारे ब्रिगेडियर... हमारे देश छोड़ने से पहले मेरे लोगों के साथ तुम्हारी अप्रिय मुठभेड़ के बारे में।' नरसिंह मुस्कुराए। 'तुम्हारे सैनिकों ने वही किया जो

कोई भी सम्माननीय व्यक्ति करता—अपने राजा की मृत्यु का बदला लेना। और मैं फिर कहूँगा, तुम्हारे पिता एक महान व्यक्ति थे। उन्होंने सम्मान और धर्म के साथ युद्ध किया। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हम विरोधी पक्षों में थे।' 'अब हम विरोधी पक्षों में नहीं हैं...'

Machine Translated by Google

'हम तो बिल्कुल नहीं हैं, महान राजकुमार। आपको अपना साथी कहते हुए मुझे गर्व हो रहा है।' 'और मुझे आपको अपना सहयोगी और

सेनापति कहते हुए गर्व हो रहा है—अगर आप मुझे स्वीकार करें।' नरसिंह आश्चर्यचकित हुआ। 'क्या आप हमारे साथ ग़ज़नी वापस आने का इरादा

रखते हैं?' 'हाँ।' 'लेकिन क्या आप अभी-अभी भागे नहीं थे? लकड़बग्घे की माँद में वापस क्यों जाएँ?' 'मैं गुलामों को बचाने और उन्हें आज़ादी दिलाने

के लिए

भागा था। लेकिन मुझे लकड़बग्घे की माँद में वापस जाना ही होगा। ज़रूर। क्यों? क्योंकि वह घिनौना लकड़बग्घा अभी भी

ज़िंदा है। और शेरों को लकड़बग्घे का शिकार करना बहुत पसंद है!' नरसिंह मुस्कुराया। 'मैं तुममें तुम्हारे महान पिता को देखता हूँ...'

राजकुमार, आपको

हमारी टीम में पाकर मुझे बहुत गर्व होगा।' 'तो फिर मैं, पुलकित, अपने साथ

यात्रा कर रहे सैनिकों के साथ उपस्थित होता हूँ।'

मुझे आपकी आज्ञा पर छोड़ दो।'

'राजकुमार, आपकी सेवा स्वीकार करना मेरा सौभाग्य है।' 'पुलकित...' पुलकित ने सुधारा।

नरसिम्हन ने भौंहें चढ़ाईं।

'मैं आपकी कमान में हूँ, सेनापति। जब आप मुझे संबोधित करते हैं तो मैं कोई राजकुमार नहीं होता। मैं आपका सैनिक हूँ।' नरसिंह मुस्कुराया। 'ठीक है, पुलकित।' 'फिर भी, मेरा एक

अनुरोध है।' 'हाँ?' पुलकित ने आगे कहा, 'मैंने बचाए गए दासों से वादा

किया था कि मैं उन्हें भारत पहुँचा दूँगा। अगर मैं

आपके

साथ ग़ज़नी लौटता हूँ, तो मैं उनसे किया अपना वचन तोड़ रहा हूँ। हम चालुक्य सूर्यवंशी हैं, भगवान राम के कुल। हम अपनी मर्ज़ी तोड़ने के बजाय मरना पसंद करेंगे। क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं?'

'जब तक मैं मदद के लिए मौजूद हूँ, कोई भी चालुक्य अपना वादा नहीं तोड़ेगा, पुलकित। मैं एक दल बनाकर उन्हें ग्वादर बंदरगाह तक पहुँचाऊँगा। हमारा जहाज़ अब से दो हफ़्ते बाद बंदरगाह पर आएगा। इसलिए अभी काफ़ी समय है। जहाज़ उन्हें सुरक्षित भारत पहुँचा देंगे।' विजयन ने बीच में ही कहा, 'मेरा सुझाव है कि हम इक़बालजी को उनके साथ उनके मार्गदर्शक और नेता के रूप में भेजें। वह घायल हैं और उन्हें घर भेज देना चाहिए। उनकी उपस्थिति यह सुनिश्चित करेगी

कि जहाज़ का चालक दल आज़ाद गुलामों को पहचान ले और उन्हें जहाज़ पर चढ़ने दे। और फिर हम एक छोटी सी टीम के साथ ग़ज़नी जा सकेंगे।' उन्होंने इक़बाल की ओर देखा। उसने कोई आपत्ति नहीं जताई।

Machine Translated by Google

नरसिम्हन ने कहा, "अच्छा लग रहा है।" अचानक, उनके चेहरे पर एक अजीब सा भाव आया क्योंकि उन्हें अपने लगातार बढ़ते दर्द का एहसास हुआ और उन्होंने अपने लकवाग्रस्त दाहिने हाथ को अपने बाएँ हाथ से ठीक करने की कोशिश की।

पुलकित ने चिंता से उसकी ओर देखा, 'अगर तुम्हें कोई आपत्ति न हो, तो क्या मैं देख सकता हूँ?'
तुम्हारा घाव? मुझे लगता है मुझे पता है कि मेरे लोगों ने तुम पर कौन सा हथियार इस्तेमाल किया होगा।' नरसिंह ने सिर हिलाया। और वे फिरदौस
की झोपड़ी की ओर चल पड़े।



नरसिंह के दाहिने हाथ का ब्रेस हटा दिया गया था। पट्टियाँ भी हटा दी गई थीं। चोल सेनापति ने मुड़कर पुलकित को अपनी पीठ का निरीक्षण करने दिया। वातापी के राजकुमार ने विषैले बाण से बने काले, आंशिक रूप से ठीक हुए घाव पर अपना हाथ फेरा।

'जनरल, जब से तुम्हें गोली लगी है, तब से तुम्हें कैसा लग रहा है?' पुलकित ने आँखें सिकोड़ते हुए और त्वचा में उभरे कच्चे छेद को देखते हुए पूछा। 'मुझे सारे लक्षण बताओ।' 'भयानक,' नरसिंह ने संक्षिप्त स्वर में उत्तर दिया। 'जब ये शापित उत्तेजक जड़ी-बूटियाँ मेरी नसों में आग की नदियों की तरह बहती हैं, तो
मैं बहुत कमज़ोर महसूस करता हूँ। ये जड़ी-बूटियाँ मुझे पुनर्जीवित तो करती हैं, लेकिन पुराने दर्द को भुलाने के लिए एक नया दर्द भी देती हैं। और जहाँ घाव है, वहाँ एक गहरा, लगातार बना रहने वाला दर्द है, कभी-कभी एक तेज़, अचानक नया दर्द बढ़ जाता है।' 'क्या मतली आ रही है?' पुलकित ने पूछा।

··· ऐसा लगता है जैसे घाव से पिघला हुआ स्टील रिस रहा है। लेकिन

'बहुत,' नरसिंह ने आह भरते हुए कहा। 'सुबह से तीन बार उल्टी हो चुकी है।' 'खाँसी?' 'हाँ। खासकर...' 'रात में?' पुलकित ने नरसिंह की बात पूरी करते हुए
बीच में ही टोक
दिया।

नरसिंह ने पलटकर देखा। हैरान। 'लगता है तुम्हें लक्षण बिलकुल ठीक-ठीक पता हैं, राजकुमार।' 'पुलकित।' नरसिंह मुस्कुराया। 'माफ़ करना... पुलकित। लेकिन
लगता है तुम्हें
ठीक-ठीक पता है कि मुझे क्या तकलीफ़ है।' 'मुझे लगता है मुझे पता है।'

Machine Translated by Google

नरसिंह गंभीर हो गया। 'क्या मैं धीरे-धीरे मर रहा हूँ?' 'नहीं, मुझे नहीं लगता कि तुम मर रहे

हो,' पुलकित ने कहा। 'इस खास ज़हर ने तुम्हें अब तक मार डाला होता। यह अविश्वसनीय है कि तुम इतने लंबे समय तक जीवित रहे।

और तो और, तुम न सिर्फ़ घूम-फिर सकते हो, बल्कि लड़ने में भी सक्षम हो।' 'यह कौन सा ज़हर है?' ' जब मैं वातापी में था, तब मेरे लोग एक नए

ज़हर को निखार रहे थे। यह कुनाति

नाम का एक धूसर पदार्थ था, जिसे तीर या चाकू के नुकीले लोहे के साथ मिलाकर बनाया जाता था। इसकी थोड़ी सी भी खुराक किसी को तकलीफ़ दे सकती थी और ज़्यादा खुराक भी तुरंत मौत का कारण बन सकती थी। ऐसा लगता है कि मेरे लोगों ने किसी व्यक्ति की तकलीफ़ को लंबे समय तक बनाए रखने के लिए उसे सही खुराक देना सीख लिया है, इससे पहले कि वह अंततः दम तोड़ दे। मुझे लगभग यकीन है कि यही वह ज़हर है जो तुम्हारे शरीर में गया है। लक्षण बिल्कुल मेल खाते हैं।' 'ठीक है,' नरसिम्हन ने उदास होकर कहा। 'मुझे बताया गया है कि मैं बेहोश हो गया था।

उसी क्षण तीर मेरी त्वचा को चीरता हुआ निकल गया।' पुलकित ने अपने होंठ

भींच लिए। 'बिल्कुल सही लग रहा है।' पुलकित अमल की ओर मुड़ा,

जो भी उनके साथ आ गए थे। 'अमलजी, क्या तीर का सिरा निकालने से पहले ही घाव के अंदर ही टूटकर बिखर गया था ?'

'हाँ, हुआ था,' अमल ने कहा। 'इसीलिए हम उसके शरीर से तीर के सिरे के टुकड़ों का एक बड़ा हिस्सा नहीं निकाल पाए। वे इतने छोटे थे कि उन्हें निकालने की कोशिश में और भी ज़्यादा नुकसान हो सकता था।'

'हम्म...' पुलकित ने कहा, 'यही तो नई तकनीक थी जो मेरे लोग विकसित कर रहे थे। एक तीर का सिरा जो न सिर्फ़ कुनाती से सना हुआ है, बल्कि कुनाती से बना भी है! जनरल के शरीर में इस समय ज़हर का भंडार है और उनका खून इस समय भी उनके पूरे शरीर में फैल रहा है। लगातार। यह धीरे-धीरे निकलने वाला ज़हर है, इंसान के लिए ज्ञात सबसे घातक ज़हरों में से एक।' पुलकित नरसिंह की ओर मुड़ा। 'मुझे सच में हैरानी है कि आप अभी भी ज़िंदा हैं, जनरल।'

'आप निराश लग रहे हैं!' नरसिम्हन हँसे।

पुलकित ने हंसते हुए कहा, 'अब बहुत देर हो चुकी है!'

नरसिंह खिलखिलाकर हंस पड़े।

'लेकिन गंभीरता से, हमें आपके शरीर से तीर के सिरे के टुकड़े निकालने होंगे।

वे जितने ज़्यादा देर तक वहाँ रहेंगे, आपके लक्षण उतने ही बदतर होते जाएँगे। मैं उन्हें निकाल सकता हूँ। लेकिन यह प्रक्रिया बहुत आक्रामक और दर्दनाक होगी, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि तीर का सिरा कहाँ लगा है। जब तक...' 'जब तक?' नरसिम्हन ने भौंहें चढ़ाईं।

Machine Translated by Google

'जब तक हमारे पास कोई ऐसा लोडस्टोन न हो जो काटने के बाद टुकड़ों को बाहर निकाल सके
पुलकित ने कहा, 'तुम्हारी त्वचा और आस-पास का मांस पर्याप्त चौड़ा है।'

विजयन ने टिप्पणी की, 'एक लोडस्टोन?'

"हाँ, एक चुंबक। एक चुंबकीय पदार्थ। यह कुणाति को आकर्षित करके बाहर निकाल देगा , क्योंकि विष लौह मिश्रधातु के माध्यम से दिया जाता है। लेकिन यह वातापी नहीं है। वहाँ हमें सभी आवश्यक उपकरण उपलब्ध होते। लेकिन इस भगवान-भुलाए हुए देश में हमें चुंबक कहाँ से मिलेगा?" विजयन ने नरसिंह की ओर देखा, उसकी आँखें खुशी से चौड़ी हो गईं। चमत्कार हो गया है।

हमारे साथ सफ़र कर रहा था। हमें बस इसका अंदाज़ा नहीं था।

चुंबक पत्थर ... सोमनाथ शिव लिंग स्वयं एक शक्तिशाली शिवलिंग था।
चुंबक पत्थर.

'क्या?' पुलकित ने नरसिम्हन, विजयन और अमल के चेहरे पर उत्साह देखकर पूछा।

'हमारे पास एक लोडस्टोन है ... वास्तव में, हमारे पास वह ध्रुव-पत्थर है...'



पुलकित विस्मय से देखता रहा।

वह अमल और इकबाल के साथ कबूतरखाने के बगल में बने छोटे से केबिन में था।
वहाँ, एक आले में छिपा हुआ एक कीमती बक्सा था, जिसकी सुरक्षा भारतीयों ने हमेशा सुनिश्चित की थी और उसे किसी की नज़रों से दूर रखा था। अमल और इकबाल ने केबिन में घुसने से पहले अपनी चप्पलें उतार दी थीं। जैसे ही पुलकित को एहसास हुआ कि वह क्या है, उसने भी अपनी चप्पलें उतार दीं।

उसकी आँखों में अनायास ही आँसू आ गए। 'क्या यह...' 'हाँ, यही है,' अमल
ने उत्तर दिया।

इकबाल ने अत्यंत सम्मान के साथ, दोनों हाथों से बक्से से उस अनमोल पवित्र अवशेष को उठाया। पुलकित ने सिर झुकाकर, मानो प्रार्थना कर रहा हो, हथेलियाँ जोड़ लीं। इकबाल ने पवित्र वस्तु उसके हाथों में रख दी।

पुलकित के शरीर में बिजली दौड़ गई। वह रोने लगा। 'ॐ नमः शिवाय ...'
ओम नमः शिवाय ...' 'जय सोमनाथजी,'
इकबाल ने कहा।

'जय सोमनाथर,' अमल ने दोहराया।

पुलकित ने सोमनाथ शिव लिंग के टुकड़े को अपनी मुट्ठी में कसकर पकड़ लिया,
उसके भीतर क्रोध उमड़ पड़ा, 'महमूद को मरना ही होगा।'

Machine Translated by Google

अमल ने पुलकित के कंधे पर हाथ रखा, "वह मरेगा। वह कुत्ते की मौत मरेगा।"



नरसिम्हन ने पूछा, "तुर्की सवार?" उसके दाहिने हाथ में एक बार फिर से ब्रेस बाँध दिया गया था।

सेनापति को उस खबर पर आश्चर्य हुआ जो वफादार परमार सेनापति दसर्णा ने अभी-अभी दी थी। ज़ाहिर था, एक तुर्क, जिसने अपना परिचय तालिब के रूप में दिया था, अभी-अभी खेत में घुसा था और सेनापति से मिलना चाह रहा था।

दसरना ने कहा, 'उन्होंने विशेष रूप से सलमान के बारे में पूछा था, जनरल।'
सलमान, स्वर्गीय सोमेश्वर का मुस्लिम नाम था, जब वे
ग़ज़नवी क्षेत्र। नरसिम्हन ने विजयन की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा।

"पता नहीं ये क्या मामला है, जनरल," विजयन ने कहा। "लेकिन अगर उन्हें सलमान का नाम पता हो, तो शायद हमें उनसे मिलना चाहिए।"

'मैं सहमत हूँ,' नरसिंह ने दशार्ण की ओर मुड़कर कहा। 'तुर्क को ले आओ
खलिहान में। लेकिन पहले उसे निहत्था कर दो। और छिपे हुए हथियारों की जाँच करो।' 'जी हाँ,
जनरल,' दासर्ण ने कहा और सलामी दी।



खलिहान खाली हो चुका था। केवल विजयन और नरसिम्हन ही मौजूद थे।

और तालिब उनके सामने.

सब असुविधाजनक बेंचों पर बैठे थे। आख़िरकार, वह एक खलिहान था।

नरसिम्हन ने तालिब को घूरा। वह साफ़ तौर पर तुर्क था। बूढ़ा।
झुकी हुई पीठ। छोटी-छोटी काली आँखें। लेकिन शांत, सौम्य स्वभाव।

नरसिम्हन को यह अच्छा लगा कि तुर्क ज़्यादा नहीं बोल रहा था। एक मूर्ख आदमी
दूसरों को प्रभावित करने के लिए अक्सर लोग ज़रूरत से ज़्यादा बोलते हैं। एक बुद्धिमान व्यक्ति तब तक चुप रहता है जब तक कि उसके शब्द ज़रूरी न हों।

नरसिंह की अंतरात्मा ने उसे बता दिया था कि यह ग़ज़नवी एक चतुर और योग्य व्यक्ति है। वह शत्रु है या मित्र, यह अभी तय
होना बाकी था।

Machine Translated by Google

जब नरसिम्हन ने बातचीत शुरू करने से इनकार कर दिया तो अंततः तालिब ने बात की।

'मेरा मानना है कि यह आपके ही भारतीय चाणक्य ही थे जिन्होंने सदियों पहले कहा था कि दुश्मन का दुश्मन भी दोस्त होता है।' नरसिम्हन चुप रहे। लेकिन चाणक्य का ज़िक्र सुनकर उन्हें आश्चर्य हुआ।

'मैं जो कुछ भी तुम्हें बताने जा रहा हूँ, तुम उसे यज़ादेह से जाँच सकते हो, जो मैं तुम्हें बताता हूँ। तुम्हारे शिविर में देखा। वह जानती है कि मैं कौन हूँ। और मेरी पहचान सत्यापित कर सकती है।' 'तुम यज़ादेह को कैसे जानते हो?' नरसिंह ने पूछा।

'कोई बात नहीं। मैं सलमान को भी जानता हूँ।' 'सुना है। लेकिन इसका कोई मतलब नहीं है।' 'शायद सोमेश्वर का मतलब कुछ और होगा?' अब नरसिम्हन सचमुच चौंक गए। विजयन भी। लेकिन उन्होंने अपनी बात भावशून्य रखी।

'आप क्या चाहते हैं?' नरसिम्हन ने पूछा।

'तुम सोमेश्वर को यहां क्यों नहीं लाते?' 'तुम क्या चाहते हो?' नरसिंह ने दोहराया।

तालिब ने साँस रोक ली। 'वह युद्ध में बच नहीं पाया, है ना?' नरसिम्हन और विजयन के चेहरों के भाव देखकर तालिब को एहसास हुआ कि वह सही था।

'यह तो बदकिस्मती है। ग्वादर के व्यापारी को सोमेश्वर बहुत पसंद आया।' और पैसे गिर गए। नरसिम्हन और विजयन को समझ आ गया कि इसका स्रोत क्या है।
तालिब की जानकारी.

नरसिंह ने कहा, "मैं आखिरी बार पूछूँगा। तुम क्या चाहते हो?" "वही जो तुम चाहते हो," तालिब ने जवाब दिया। "सुल्तान की मौत।"

नरसिम्हन और विजयन आगे झुके। दिलचस्पी थी।

"मेरा नाम तालिब है। मैं इस्माइल का सेवक हूँ, जो ग़ज़नी का गवर्नर-मुफ़्ती और सुल्तान महमूद का छोटा भाई था। महमूद द्वारा पदच्युत किए जाने से पहले लॉर्ड इस्माइल ही असली राजा थे। मैं अब्बासिद ख़िलाफ़त से अरब राजदूतों का स्वागत करने ग्वादर आया था, जो सुल्तान की हत्या में हमारी मदद करने वाले थे। मुझे पता है कि उनके साथ क्या हुआ।" विजयन ने अपनी भाव-भंगिमाएँ स्थिर रखीं, लेकिन अंदर ही अंदर वह स्तब्ध था। कैसे?

इस कमीने को कितना पता है?

नरसिम्हन ने कहा, 'आगे बढ़ो।'

'ग्वादरी व्यापारी ने मुझे आश्वासन दिया था कि आप सभी बहुत सक्षम हैं। मैं इसका सबूत कल देखा.'

Machine Translated by Google

'बताओ।' 'मेरे

मालिक को इस बात से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि हत्या कौन करता है, जब तक कि वो खुद न हो या उसका कोई कर्मचारी न हो। वो अरब भी हो सकता है या भारतीय भी।'
जब तक हमारा लक्ष्य एक ही है, हमें हथियार की उत्पत्ति की परवाह नहीं है। ऐसा लगता है कि हमारे बीच एक अस्थायी गठबंधन संभव हो सकता है,' तालिब ने कहा।

"और हम तुम पर भरोसा क्यों करें?" "जिस वजह से मैं तुम

पर भरोसा कर रहा हूँ, उसी वजह से। हमारे पास और कोई चारा नहीं है।" नरसिंह ने बिना किसी प्रतिबद्धता के घुरघुराते हुए कहा।

लेकिन मन ही मन उसे यकीन होता जा रहा था। हाँ, बिल्कुल, उस आदमी पर भरोसा नहीं किया जा सकता। हम शायद किसी जाल में फँस रहे हैं। लेकिन हमारे पास क्या चारा है? सोमेश्वर और फिरदौस की मौत के बाद, हमारे पास कोई सहारा नहीं बचा है। यही हमारी एकमात्र उम्मीद है।

और हो सकता है कि गवर्नर-मुफ्ती ही वह शाही संपर्क व्यक्ति हो जिसे फिरदौस ने किसी भी हालत में नियुक्त किया हो।

"और अगर मैं सचमुच दूसरी तरफ़ होता, तो अपने मालिक के अधिकार का इस्तेमाल करके स्थानीय खुज़दार बटालियन के साथ यहाँ आ सकता था। तुम लोग इतने सक्षम हो, क्या तुम्हें सचमुच लगता है कि तुम दो हज़ार प्रशिक्षित तुर्कों की घुड़सवार सेना का सामना कर सकते हो? मैंने ऐसा नहीं किया, यह बात अपने आप में मेरे इरादों का सबूत है," तालिब ने कहा।

नरसिम्हन चुप रहे। अच्छी बात है।

'हम आपसे बस इतना चाहते हैं कि आप सुल्तान और उसके प्रमुख सहयोगियों को मार डालें—जिनमें से एक, अबू क़ासिम को आप पहले ही मार चुके हैं। हमें उसके जुड़वां बेटों को भी मरवाना होगा।'

विजयन को अपनी खुशकिस्मती पर यकीन नहीं हो रहा था। मिशन कामयाब होता दिख रहा था।
सोमेश्वर और फिरदौस की मृत्यु के साथ, वे अपाहिज हो गए, क्योंकि ग़ज़नी राजपरिवार में किसी की भी उस गद्दार तक पहुँच नहीं थी।
लेकिन देवताओं ने एक और व्यक्ति को, जो स्पष्ट रूप से गद्दार की नौकरी में था, सीधे उनकी निगरानी में नियुक्त कर दिया था।

नरसिम्हन ने पूछा, 'क्या आप सचमुच सोचते हैं कि सुल्तान को मारना इतना आसान है?'

'हाँ, हो सकता है। लगता है अल्लाह ने हमें मिलाया है। आपका मिशन हो सकता है

यह बहुत आसान है, अगर आपके पास सुल्तान का भाई आपकी मदद करने को तैयार है... मैं तुम्हें
छुपाकर ग़ज़नी ले जाऊँगा। हम तुम सबको एक सुरक्षित घर में पनाह देंगे और सही समय पर सही जगह पर हमला करने के लिए तैनात करेंगे।
और बदले में... तुम क्या चाहते हो?' 'हम सुल्तान की मौत चाहते हैं। और सोमनाथ शिवलिंग के वो टुकड़े जो तुम्हारे लोगों ने तुम्हारी मुख्य मस्जिद की सीढ़ियों के

नीचे गाड़ दिए हैं।'

Machine Translated by Google

तालिब हैरान हुआ। 'बस इतना ही? सोना नहीं? कीमती पत्थर नहीं? ज़मीन नहीं?' 'सोमनाथ का शिवलिंग दुनिया की सारी दौलत से ज़्यादा कीमती है।' तालिब ने भौंहें चढ़ाईं। अजीब हैं ये लोग।

वह विजयन के विचार नहीं सुन सका, जिससे उसके संदेह दूर हो जाते। हम भारतीय धन कमाते हैं, लूटते नहीं।

नरसिम्हन ने पूछा, 'क्या हमारा सौदा पक्का हो गया है?'

'ज़रूर, हम करते हैं। लेकिन...' 'लेकिन, क्या?'

'हमारी एक और माँग है

जिस पर कोई समझौता नहीं हो सकता।' 'कौन सी माँग?' 'दास, यज़ादेह।' नरसिंह ने विजयन की ओर देखा। यह बिल्कुल अप्रत्याशित था।

तालिब को समझाने की ज़रूरत महसूस हुई। 'यह एक निजी अनुरोध होगा। मेरे मालिक उस पर मोहित हैं।' नरसिंह भौंचक्का रह गया। 'लेकिन वह बच्ची है।..तेरह-चौदह साल से ज़्यादा नहीं।' 'यह बात नहीं मानी

जा सकती। सोच लो।'



फिरदौस की झोपड़ी को साफ कर दिया गया था और उसे अस्थायी सर्जरी इकाई में बदल दिया गया था।

नरसिम्हन के दाहिने हाथ पर लगी पट्टी और ब्रेस खोल दिए गए थे।
उसकी पीठ को साफ़ पानी से धोया गया और स्थानीय जड़ी-बूटियों से यथासंभव कीटाणुरहित किया गया। उसे कुछ दवाइयाँ दी गईं जो भारतीय अपने साथ लाए थे, ताकि उसकी पीठ को सुन्न किया जा सके, जहाँ उसकी सर्जरी होनी थी। पुलकित ने उसे चेतावनी दी थी कि उनके पास पर्याप्त एनेस्थीसिया देने के लिए पर्याप्त दवाइयाँ नहीं हैं और उसे दर्द सहना होगा।

उस समय दसर्णा ने मज़ाक में एक अमर पंक्ति कही थी, जो उत्तर भारतीय लोक नाटकों में विशेष रूप से लोकप्रिय थी: 'मर्द को दर्द नहीं होता!' एक असली मर्द को दर्द महसूस नहीं होता।

नरसिम्हन मज़ाक सुनकर धीरे से हँसे थे। वह पेट के बल लेटे हुए थे।
और उसे नींद आने लगी। लेकिन उसने खुद को जागते रहने के लिए मजबूर किया, क्योंकि उसे पुलकित के सवालों का जवाब देना था कि वह क्या महसूस कर रहा है।

Machine Translated by Google

'मुझे आश्चर्य है...' नरसिम्हन ने कहा।

'क्या आश्चर्य है, जनरल?' अमल ने पूछा, जो दसर्ण और
ज़ैन हुसैन, सैनिटाइज़ किए गए सर्जिकल उपकरणों को एक प्लेट पर रख रहे थे
चालुक्य राजकुमार ने पुलकित को अपने हाथ धोने के लिए प्रयोग किया।

'मुझे आश्चर्य है... शायद... मुझे मेरे पापों के कारण चालुक्यों का बाण नहीं लगा ...' ... भुगतान करने के लिए

'आपका क्या मतलब है, जनरल?' विजयन ने नरसिम्हन की कलाई बांधते हुए पूछा।
उसने अपने अंगों को मुलायम सूती कपड़े से बिस्तर पर बांध दिया, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वह कोई नुकसान न पहुंचाए।
प्रक्रिया शुरू होते ही उन्हें अचानक दर्द महसूस होने लगा।

'शायद... शायद मुझे इसलिए मारा गया ताकि मेरा शरीर उसे ले जा सके
वह यंत्र जो महमूद को उसके पापों का दण्ड देगा ...'

'कैसे?' पुलकित ने पूछा, जो अब बिस्तर के पास खड़ा था।

'महमूद हमारे विशालरक्षितः हैं ... जिसे जहर देने का लक्ष्य बनाया गया है ...
जो तीर के टुकड़े तुम मुझसे निकालोगे, उन्हें मत फेंकना... हम
उनका इस्तेमाल महमूद पर.क़रेंगे...'

पुलकित मुस्कुराया और विजयन और अमल की ओर देखा, फिर वापस मुड़ा।
नरसिम्हन। 'जैसी आपकी आज्ञा, जनरल। हम अभी शुरू करते हैं। तैयार!'
अपने आप को।'

नरसिम्हन मुस्कुराए, 'मैं तो जन्म से ही तैयार था।'

पुरुष, असली पुरुष, खतरे के समय मूर्खतापूर्ण चुटकुलों से अपनी मर्दानगी साबित करते हैं।
और अन्य पुरुष, वास्तविक पुरुष, ऐसे समय में अपने साथियों के साथ हंसते हैं
पुरुष बंधन को मजबूत करें.

पुलकित और विजयन, दसर्ना और ज़ैन हुसैन के साथ खड़े हैं
उनके पीछे खड़े लोग नरसिम्हन के मज़ाक पर हँस पड़े। अमल ने आँखें घुमाईं और
नरसिम्हन के सिर के पिछले हिस्से को धीरे से छुआ। उसने एक छोटी सी लंबाई रखी
जनरल के दांतों के बीच रस्सी डाल दी गई, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वह उसके दांत न काट ले।
सर्जरी के दौरान उसकी जीभ काट दी गई। और फिर उसने धीरे से उसका सिर नीचे किया।
दर्द जल्द ही शुरू हो जाएगा.

पुलकित ने अभी तक पूरी तरह ठीक न हुए घाव पर कसैला पदार्थ छिड़का। इकबाल
उसे फ़िरदौस की दुकानों में मिला था। इस कसैले पदार्थ को गर्म करके आसुत किया गया था।
आगे। यह उस थोड़े से खुले घाव के संपर्क में आने पर ज़ोर से चुभता था जो अभी भी मौजूद था
निशान ऊतक.

नरसिम्हन का शरीर अकड़ गया, लेकिन उसने कोई आवाज़ नहीं की।

'मैं अब काटने जा रहा हूँ, जनरल।'
नरसिम्हन ने अपनी सांस रोक ली।

पुलकित ने घाव के ऊतकों, त्वचा और चमड़े के नीचे के ऊतकों को चीर दिया।
सर्जिकल चाकू। नरसिम्हन ने रस्सी को ज़ोर से काटा, गहरी साँस ली और

Machine Translated by Google

और गहरा। वह गुर्राया जब पुलकित ने ज़हरीले, बिना ठीक हुए मांस में, कुनाती तीर के सिरे के टुकड़ों को ध्यान से ढूँढ़ते हुए, और भी गहरे धँसना शुरू कर दिया।

आखिरकार उसे जनरल के बहते ज़हरीले खून के नीले-लाल रंग में काले लोहे के पहले निशान दिखाई दिए। मांस को अलग करते हुए, उसने अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ाया। दशार्ण ने पवित्र चुंबक-शिला का अवशेष पुलकित को सौंप दिया।

चालुक्य राजकुमार ने इसकी पतली धार नरसिंह के घाव में घुसा दी।

हे मेरे भगवान शिव, मुझे माफ़ करना कि मैंने आपका इस तरह इस्तेमाल किया। लेकिन सिर्फ़ आप ही ऐसा कर सकते हैं।
विष बाहर निकालो, जैसा तुमने सागर मंथन के दौरान किया था।

अपने मजबूत चुंबकीय गुणों के कारण, इस चुंबक-पत्थर ने कुनाति-युक्त लोहे के टुकड़ों को अपनी ओर आकर्षित करना शुरू कर दिया।

महान चोल योद्धा ज़ोर से चीखा। उसके जीवन के हिंसक दृश्य उसके मन में कौंध गए। ऐसा लगा जैसे उसकी सारी नकारात्मक ऊर्जा, सारा दर्द, उस सारी हिंसा का सारा अपराधबोध, उससे बाहर खींचा जा रहा हो। उसकी पीठ के ऊपरी हिस्से पर खुले घाव की ओर। और वहाँ से, उसे असीम कृपा और दया के दिव्य कृत्य द्वारा, उससे बाहर निकाला जा रहा था।

नरसिम्हन का दिमाग खाली हो गया और वह अचेत अवस्था में अंधेरे में चले गए।

फिर, जीवन भर लगने वाले समय के बाद, विजयन और ज़ैन ने अपनी पकड़ ढीली कर दी
उसके कंधों और भुजाओं पर, लेकिन केवल थोड़ा सा। पुला ने शिवलिंग का टुकड़ा ऊपर उठाया, जिस पर खून और धातु के टुकड़े चिपके हुए थे। उसने शिवलिंग का वह पत्थर दशार्ण को सौंप दिया, जो पवित्र अवशेष लेने के लिए एक ताज़ा साफ़ कपड़ा पकड़े हुए था। इसे बाद में धोकर अच्छी तरह साफ़ किया जाएगा।

कुनाति से भरे तीरों के टुकड़ों को जमा करके उन्हें नया रूप दिया जाएगा, ताकि महमूद पर उनका इस्तेमाल किया जा सके। और इस पवित्र अवशेष के इस्तेमाल के लिए क्षमा मांगने हेतु शिवलिंग के खंड की पूजा की जाएगी।

ढंग।

'जनरल जवाब ... जनरल...' पुलकित नरसिम्हन को समझाने की कोशिश कर रहे थे
दें.

लेकिन नरसिंह कुछ नहीं बोला। उसका शरीर थोड़ा ऐंठ रहा था।

'जनरल, दर्द तो होगा ही। पर क्या अंदर पिघले हुए इस्पात का एहसास है?
क्या आपकी पीठ और कंधा गायब हो गया है?'

नरसिंह की साँसें तेज़ चल रही थीं, कोई प्रतिक्रिया नहीं हो रही थी। पुलकित ने अमल की तरफ़ देखा, जिसने खुले घाव पर और गर्म आसुत कसैला पदार्थ डाला ताकि उसे और साफ़ किया जा सके और फिर रुई के फाहे से उसके आस-पास के हिस्से को पोंछा।

तरल पदार्थ की जलन से नरसिम्हन की नींद खुल गई, क्योंकि उनका
सिर थोड़ा सा हिल गया.

Machine Translated by Google

'जनरल...' पुलकित ने दोहराया। 'क्या आपकी पीठ के भीतर पिघले हुए इस्पात का एहसास खत्म हो गया है?' 'यह... खत्म हो गया है...' नरसिंह के शब्द टूट

गए। 'वह... एहसास... खत्म हो गया है...' पुलकित ने अपने आस-पास के लोगों को देखकर विजयी भाव से मुस्कुराया और नरसिंह की ओर मुड़ा। 'ज़हरीले टुकड़े

बाहर आ गए हैं। नीलकंठ ने एक बार फिर ज़हर बाहर निकाल दिया है।' 'एक बार फिर' से पुलकित सागर मंथन की ओर इशारा कर रहे थे , भारतीय किंवदंतियों में समुद्र मंथन की घटना , जब भगवान शिव ने देवों और असुरों, यानी देवताओं और प्रतिदेवों , दोनों की मदद की थी , जब समुद्र के घूमते पानी से ज़हर निकला था।

वह विष जो पूरे ब्रह्मांड का नाश कर सकता था। शक्तिशाली भगवान शिव ने पूरी सृष्टि को विष से बचाने के लिए यह विष पी लिया था। विष इतना तीव्र था कि उनका कंठ नीला पड़ गया। इसीलिए उनका नाम नीलकंठ पड़ा, यानी नीले कंठ वाला। यह एक बहुत ही रोचक कहानी है। अगर आपने इसे नहीं सुना है, तो अपने माता-पिता से पूछिए।

पुलकित ने गुडुची टांकों से घाव को कुशलतापूर्वक बंद कर दिया । यह तकनीक उन सभी भारतीय सैनिकों को पता थी जो युद्ध के दौरान इस पौधे के रेशे लेकर चलते थे। इस औषधीय पौधे से बने टांकों में एंटीसेप्टिक गुण होते हैं और समय के साथ ये प्राकृतिक रूप से घुल जाते हैं। फिर पुलकित ने घाव को साफ़ करने के लिए पट्टी बाँधी।

अमल, जो खुद एक वैद्य थी, ने पुलकित की ओर प्रशंसा से देखा। 'तुमने बहुत अच्छा काम किया है।' 'शुक्रिया,' पुलकित ने नरसिम्हन की ओर देखने से पहले कहा।

जनरल ने हिलना-डुलना बंद कर दिया था। अब कोई ऐंठन नहीं थी। ज़ैन ने धीरे से नरसिम्हन के मुँह से रस्सी खींची। उन्होंने उसे सोने दिया। खतरा टल गया था। अब इलाज का समय था।

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 22

असंभावित सहयोगी

फिरदौस का खेत, खुजदार, अफगानिस्तान के करीब

नरसिंह की पीठ से कुनाति विष-युक्त बाणों के टुकड़े निकाले हुए दो दिन हो चुके थे । वह आश्चर्यजनक रूप से तेज़ी से ठीक हो रहा था। दर्द नाटकीय रूप से कम हो गया था। वह अपना दाहिना हाथ भी थोड़ा-बहुत हिला पा रहा था। पुलकित का मानना था कि नरसिंह को अपने दाहिने हाथ और कंधे का पूरा इस्तेमाल फिर से करने में बस एक या ज़्यादा से ज़्यादा दो हफ़्ते का ही समय लगेगा। पहाड़ों का ठंडा और शुष्क वातावरण उसके ठीक होने की प्रक्रिया को और तेज़ कर देगा।

इकबाल के नेतृत्व में पूर्व गुलामों का कारवां ग्वादर के लिए रवाना होने के लिए तैयार था।
वे समय से पहले बंदरगाह शहर पहुँच जाते थे ताकि जहाज़ों पर सवार होकर भारत भाग सकें। दासों को कपड़े और जूते जैसी सुविधाएँ दी जाती थीं, और उन्हें नहलाया, साफ़-सुथरा और दाढ़ी बनवाई जाती थी, ताकि वे आम नागरिकों जैसे दिखें। उनके लिए एक ऐसा रास्ता बनाया गया था जो मुख्य आबादी वाले इलाकों से दूर हो।

पुलकित यज़ादेह को वापस लेने की योजना से बेहद नाखुश थे
ग़ज़नी। वह एकमात्र पूर्व दासी होगी जो भारत नहीं भागेगी। लेकिन नरसिम्हन ने समझाया था कि उनके पास कोई विकल्प नहीं है, और उन्होंने पुलकित को आश्वासन दिया था कि महमूद की हत्या के बाद जब वे ग़ज़नी से भागेंगे, तो वह यज़ादेह को वहाँ से निकाल लाएगा। नरसिम्हन ने अपनी जान की क़सम खाकर यह वादा किया था। उसने पुलकित को इंडोनेशियाई राजकुमारी ओदिरत्ना के बारे में बताया था और बताया था कि कैसे वह अपनी वजह से फिर कभी किसी छोटी बच्ची को नुकसान नहीं पहुँचाने देगा। अमल ने भी पुलकित के सामने अपने खून की क़सम खाकर कहा था कि वह यज़ादेह की छोटी बहन की तरह देखभाल करेगी। वह यह सुनिश्चित करेगी कि मिशन के बाद जब वे ग़ज़नी से भागेंगे, तो यज़ादेह उनके साथ रहे। काफ़ी समझाने-बुझाने के बाद, पुलकित मान गया था।

पुलकित को समझाने में यज़ादेह की अपनी इच्छा ने उसे और भी आसान बना दिया था।
वापस जाओ। वह बस इतना ही ज़ोर दे रही थी कि अगर नरसिम्हन के पास ज़रा भी मौका है, तो उसे गवर्नर मुफ़्ती इस्माइल को भी मार देना चाहिए। नरसिम्हन

Machine Translated by Google

यज़ादेह की माँग सुनकर वह हैरान रह गई, क्योंकि वह अभी बच्ची ही थी। लेकिन अमल ने बाद में जनरल को समझाया था कि अगर कोई बेटी अपने प्यारे पिता को अपनी रक्षा करते हुए, अपने सामने मरते हुए देखे, तो वह पूरी तरह बदल जाएगी। वह रोने के लिए कंधा ढूँढ़ने वाली एक लाचार औरत नहीं बन जाएगी। वह देवी दुर्गा बन जाएगी, जो न्यायपूर्ण प्रतिशोध की तलाश में है।

दरअसल, यज़ादेह ने अमल से उसे छुरा घोंपने की बुनियादी तकनीकें सिखाने के लिए कहा था। और अमल उसे सिखाने के लिए तैयार भी थी, क्योंकि ग़ज़नी उन सभी के लिए एक ख़तरनाक जगह थी।

जब इकबाल जाने की तैयारी कर रहा था, तो उसने अपने दोस्त के बेटे ध्रुव को ढूंढ़ा।
इकबाल ने एक सीलबंद चिट्ठी थमाते हुए कहा, "इसे अपने पास रखो। यह तुम्हारे पिता की दुनिया भर में फैली संपत्तियों की पूरी सूची है। इसमें वह गुप्त स्थान भी लिखा है जहाँ तुम्हें संपत्ति के स्वामित्व के दस्तावेज़ मिलेंगे, साथ ही सोने और कीमती पत्थरों का खज़ाना भी। यह पहले से बहुत कम है, क्योंकि तुम्हारे पिता ने अपनी बहुत सारी संपत्ति इस मिशन पर खर्च की थी। फिर भी यह एक बड़ी रकम है। घर लौटने के बाद तुम्हें इसका प्रबंध करना होगा।" ध्रुव मुस्कुराया। "इसे तुम ही रखो, इकबाल चाचा। अगर मैं वापस नहीं आया तो क्या होगा?" इकबाल ने ध्रुव का कान खींचा। "चुप रहो! किस्मत को लुभाने के लिए बेतुकी बातें मत करो।" ...

तुम्हें कुछ नहीं होगा। तुम वापस आओगे। और जब तुम लौटोगे, तो अपने पिता की संपत्ति, व्यवसाय और ज़िम्मेदारियों को अपने नियंत्रण में ले लोगे।
मेरा बेटा तुम्हारा जूनियर पार्टनर होगा, जैसे मैं तुम्हारे पिता का था।'

ध्रुव मुस्कुराया और इकबाल को गले लगा लिया। 'जब मैं
लौट आओ, चाचा। तब तक, क्या तुम मेरी खातिर इस सूची को संभाल कर रखोगे?' इकबाल ने ध्रुव के गालों को छुआ, उसकी आँखों में

आँसू थे। 'तुम्हारे पिता की अमर आत्मा तुम्हारी रक्षा करेगी, मेरे बेटे। मैं तुम्हारा इंतज़ार करूँगा। हम साथ मिलकर और भी बड़े व्यवसाय बनाएँगे।' थोड़ी देर बाद, इकबाल अपने पूर्व गुलामों के बड़े कारवां के साथ निकल पड़ा।

उन्हें चोल जहाजों के कप्तानों को सूचित करने के लिए कहा गया था कि नरसिम्हन और उनके साथियों की वापसी में देरी हो सकती है। इसलिए, उन्हें गुलामों को भारत पहुँचाकर जल्दी से ग्वादर लौट जाना चाहिए। नरसिम्हन का एक हस्ताक्षरित पत्र, जिसमें ये निर्देश हों, उन्हें आश्वस्त कर देगा। इसके अलावा, इकबाल को जहाज के कबूतरों का इस्तेमाल करके सम्राट चोल को मिशन की जानकारी देने वाला संदेश भेजने के लिए कहा गया था।

अगले दिन सुबह-सुबह तालिब और नरसिम्हन अपने घोड़ों पर सवार होकर फिरदौस के खेत के दरवाज़े पर थे। नरसिम्हन ने पीछे मुड़कर देखा।
लगभग अस्सी सैनिक घोड़ों पर सवार थे, पूरी तरह से हथियारों से लैस,

Machine Translated by Google

तरोताज़ा और अच्छी तरह से खिलाया हुआ। मारे गए तुर्कों के घोड़ों और हथियारों का अच्छा इस्तेमाल किया जा रहा था। वे यात्रा के लिए पर्याप्त सूखा भोजन और फल ले जा रहे थे। वे तैयार थे। हत्या के मिशन के लिए तैयार।

पीछे, वह बड़े खलिहान में आग की लपटें देख सकता था। तालिब ने नरसिंह को आश्वस्त किया था कि दो सौ मृत तुर्क सैनिकों की लाशों को चट्टान से नीचे फेंकना एक भूल होगी। हवा में शिकारी पक्षियों की असामान्य रूप से बड़ी उपस्थिति खुजदार कस्बे में तैनात बटालियन का ध्यान आकर्षित कर सकती थी। शवों की जाँच और पहचान की जा सकती थी। तुर्कों के नरसंहार की खबर गजनी तक पहुँच जाती, जिससे महमूद अपनी सुरक्षा बढ़ा देता और हत्या का अभियान मुश्किल हो जाता। बेहतर होता अगर महमूद यह मान लेता कि अबू कासिम अभी भी गुलामों की तलाश में है। और इसलिए भारतीयों ने तुर्कों की लाशों को खलिहान में ढेर करके आग लगा दी थी।

नाटक को पूरा करने के लिए तालिब ने महमूद को भेजने के लिए एक संदेश का मसौदा तैयार किया था। ग़ज़नी में। पत्र में लिखा था कि भारत के तुर्की कसाई ने लगभग दो सौ गुलामों को ढूंढकर मार डाला था और उनके शवों को वहीं जला दिया था जहाँ उन्हें पाया था। साथ ही, यज़ादेह उन गुलामों में शामिल नहीं था जिन्हें उसने मारा था। और यह कि बाकी गुलाम शायद फ़ारसी ज़मीनों पर भाग गए थे और अबू क़ासिम उन्हें ढूँढ़ने के लिए आगे बढ़ रहा था। यह देखते हुए कि अबू क़ासिम अब फ़ारस में दुश्मन के इलाके में होगा, भले ही सीमावर्ती इलाकों में ही क्यों न हो, वह सुरक्षा कारणों से संचार को कम से कम रखेगा। महमूद को पत्र की प्रामाणिकता का यकीन दिलाने के लिए, तालिब ने अबू क़ासिम की ठंडी, मृत उंगली से एक अंगूठी निकाली और उससे चर्मपत्र पर अपनी मुहर लगा दी। फिर पत्र को पक्षी कूरियर द्वारा ग़ज़नी भेज दिया गया।

"क्या हम चलें, नसरुल्लाह?" तालिब ने नरसिम्हन का छद्म मुस्लिम नाम लेते हुए पूछा। उसे अच्छी तरह से जानकारी दी गई थी।

नरसिम्हन ने उत्तर दिया, "हम करेंगे। मेरी बात याद रखना, सुल्तान
'जल्द ही डायर स्ट्रेट्स।'

नरसिंहन से थोड़ा पीछे, लेकिन सुनने की दूरी पर, विजयन मुस्कुराया और बोला। 'मैं सहमत हूँ। महमूद जल्द ही जल्लाद के फंदे पर झूल जाएगा और झूलों का सुल्तान बन जाएगा।' पुलकित ने धीरे से हँसते हुए अपने घोड़े को दौड़ाया। 'कभी-कभी,

अच्छा मज़ाक है 'इतना दूर मुझसे, इतना दूर, मैं बस देख नहीं सकता।'

नरसिम्हन ने पुलकित और विजयन की ओर देखा। 'सच है, मेरे भाईयों।' 'बस!' अमल ने झटके से कहा। 'चलो चुपचाप चलते हैं!'

Machine Translated by Google

विजयन ने फुसफुसाते हुए कहा, "क्या तुमने 'द साउंड ऑफ साइलेंस' सुनी है? गार्फ नाम के एक अंकल ने इसे लिखा है।"

अमल ने आगे बढ़कर विजयन के सिर के पीछे मारा, और सभी लोग जोर से हंसने लगे।



ग़ज़नी, अफ़ग़ानिस्तान

'तुम कहाँ थे?' मलिक अयाज फुसफुसाया।

तालिब अभी-अभी ग़ज़नी में गवर्नर मुफ़्ती इस्माइल के महल में लौटा था, जहाँ उसने भारतीयों को एक सुरक्षित घर में बसाया था। महल में प्रवेश करते ही वह तुरंत दासी रेशमा से मिलने गया था, और रेशमा ने उसे बताया था कि इस्माइल को लगभग तीन हफ़्ते पहले शाही पहरेदारों ने गिरफ़्तार कर लिया था।

रानी कौसरी जहां ने उन पर गंभीर आरोप लगाए थे।
उन पर जासूसी से लेकर रानी की हत्या के प्रयास और यहाँ तक कि गैर-इस्लामी व्यवहार तक, जघन्य अपराधों के आरोप लगाए गए थे। तालिब इस बात से स्तब्ध थे कि ऐसे आरोप भी उन पर लग गए। क्योंकि राज्य के शक्तिशाली गवर्नर-मुफ़्ती के ख़िलाफ़ गिरफ़्तारी वारंट जारी करने के लिए भारी सबूतों की ज़रूरत होती। और वह भी सुल्तान महमूद के ख़लीफ़ा बनने से कुछ ही दिन पहले। तालिब इस जानकारी को समझ पाते, उससे पहले ही मलिक अयाज़ गवर्नर-मुफ़्ती के महल में पहुँच गए और तालिब से उनके स्वामी और स्वामी के लिए संकट के इस समय में उनकी अनुपस्थिति के बारे में पूछताछ की। तालिब ने रेशमा से कहा था कि वह नौकरों के क्वार्टर में रहे और शहर से भाग जाए, अगर लाहौर के राजा के साथ बातचीत अच्छी न हुई।

'मेरे प्रभु, आपको कैसे पता चला कि मैं वापस आ गया हूँ?' तालिब ने स्पष्ट प्रश्नों को टालने की कोशिश करते हुए पूछा, ताकि वह झूठ गढ़ सके।
वह अरबों के साथ षड्यंत्र के बारे में कुछ भी बताना नहीं चाहता था।

'जाहिर है, मैंने यहाँ बाहर मुखबिर तैनात कर रखे हैं!' अयाज़ गुस्से से लाल हो गया।
'क्या यह आप ही थे जिन्होंने मेरे पिता के खिलाफ सबूत मुहैया कराए थे?'

"बिल्कुल नहीं, मेरे मालिक," तालिब चीखा। "आप मुझ पर यह इल्ज़ाम कैसे लगा सकते हैं?"

'तथ्य यह है कि जब यह तूफान मेरे घर आया तो आप सुविधाजनक रूप से अनुपस्थित थे।
पिताजी बहुत ही संदिग्ध हैं।'

Machine Translated by Google

अब तक तालिब को सबसे बुरा डर सताने लगा था। क्या मलिक अयाज़ तालिब को छोड़ देगा?
अपने पिता इस्माइल को कैसे बचाएँ? वह जानता था कि शीर्ष पर बैठे लोगों की राजनीति हमेशा बेहद निर्दयी होती है। वे खुद को या अपने से बड़े खिलाड़ियों को बचाने के लिए, चाहे वह कितना भी वफ़ादार क्यों न हो, किसी भी मोहरे को सौंपने से नहीं हिचकिचाते थे।

'मुझे गवर्नर-मुफ्ती ने स्वयं ग्वादर भेजा था, मेरे प्रभु,' तालिब ने चिल्लाते हुए कहा, और जल्दी से एक दस्तावेज निकाला जिस पर इस्माइल की मुहर लगी थी, जो कुछ महत्वपूर्ण राजकीय अतिथियों के स्वागत के लिए ग्वादर बंदरगाह में प्रवेश के लिए था।

मलिक अयाज़ ने पत्र पकड़ा, उस पर नज़र डाली और इधर-उधर देखा। 'तो कहाँ?'
महत्वपूर्ण राजकीय अतिथि क्या हैं?' 'उम्म... महाराज...'
'ठीक है। मुझे और स्पष्ट करने दीजिए।
अरब कहाँ हैं?' तालिब चौंक गया। उसे कहा गया था कि अरबों के बारे में किसी से बात न करे,

मलिक अयाज़ समेत। 'उहह...' 'बेहतर होगा कि वे यहीं रहें,
वरना तुम मर जाओगे, तालिब।' तालिब को एहसास हुआ कि अब सच बोलने का
समय आ गया है। अपनी जान बचाने के लिए।
शायद इस्माइल ने ही मलिक अयाज़ को अब्बासियों के साथ गुप्त योजना के बारे में बताया था। इसलिए तालिब ने कैनरी की तरह गाना शुरू कर दिया। उसने मलिक अयाज़ को सब कुछ बता दिया।
भारतीयों द्वारा अरबों की हत्या, खुजदार के बाहर खेत में अबू कासिम और उसके आदमियों के नरसंहार और भारतीयों को अपने उद्देश्य में भर्ती करने के बारे में।

'खुजदार के बाहर खेत? कौन सा खेत?' मलिक अयाज ने पूछा।
'वहाँ फिरदौस नाम के किसी आदमी का खेत था। हो सकता है कि भारतीयों ने उस बेचारे को धमकाकर उसकी ज़मीन हड़प ली हो। लेकिन मैं पक्के तौर पर नहीं कह सकता क्योंकि जब तक मैं वहाँ पहुँचा, तब तक फिरदौस मारा जा चुका था।'

तालिब को लगा कि उसने मलिक अयाज़ को फिरदौस का ज़िक्र सुनते ही तेज़ साँस लेते देखा है।
लेकिन ज़्यादा सोचा नहीं। 'क्या करें, हुज़ूर?' 'हिंदुस्तानी कहाँ हैं?' 'किसी सुरक्षित घर में।' 'गज़नी में?'
'जी हाँ, हुज़ूर।' 'और किसी को पता नहीं?'
'जल्द ही आपको पता चल
जाएगा, हुज़ूर... तो,
आपके और मेरे अलावा किसी
को नहीं।' 'क्या आपको पता है कि प्रधानमंत्री हसन के जासूस
आपका पीछा कर रहे थे?' तालिब का चेहरा सफेद पड़ गया। 'मैंने उन्हें ग़ज़नी के बाहरी इलाके में देखा था, हुज़ूर। लेकिन वे भीतरी दीवारों के बाहर उपनगर में मेरी नज़रों से ओझल हो गए। मुझे इस बात का पूरा यकीन है।

किसी और ने मुझे नहीं देखा.'

Machine Translated by Google

मलिक अयाज़ ने तालिब की ओर देखा, सिर हिलाया, फिर दीवार की ओर मुड़ गया।
वह हुक्का पीते हुए उसे घूरता रहा।

'मेरे रब?' 'चुप!

मुझे सोचने दो...' 'जी, मेरे रब। माफ़ी

चाहता हूँ...' मलिक अयाज़ कुछ देर तक चुप बैठा

रहा, फिर मानो उसने अपना मन बना लिया हो। वह तालिब की ओर मुड़ा। 'हो सकता है, आखिरकार यह सब अच्छे के लिए ही हो। हम अभी भी मेरे पिता को बचा सकते हैं।'

फिर अयाज़ ने तालिब को योजना समझाई, जिसके मन में कई सवाल थे—जैसे, "अल्लाह के नाम पर उन्हें इस्माइल जैसे ताकतवर आदमी को गिरफ्तार करने के सबूत कैसे मिले?" ग़ज़नी में हर कोई रानी और गवर्नर-मुफ़्ती के बीच के झगड़े के बारे में जानता था, लेकिन इस्माइल के साथ जो हुआ वह अविश्वसनीय लग रहा था।

अयाज़ ने तालिब को बताया कि सबूत अकाट्य प्रतीत होते हैं। जुंदीन-उल-दीन धार्मिक पुलिस का एक गुप्त सदस्य यालान, जिसे रात के अंधेरे में रानी के शयनकक्ष में झाँकते हुए पकड़ा गया था, और सभी जानते थे कि धार्मिक पुलिस का मुखिया इस्माइल था। हालाँकि यालान की जीभ अतिक्रमण की सज़ा के तौर पर काट दी गई थी, फिर भी अदालत में जब उससे पूछा गया कि उसे इस अजीबोगरीब मिशन पर किसने भेजा था, तो उसने बार-बार और ज़ोर से इस्माइल की ओर इशारा किया था।

तालिब को नाम सुनकर आश्चर्य हुआ और उसने स्पष्ट संदेह जताया: 'क्या?
'यालान कैसा नाम है?'

'बिल्कुल!' अयाज़ ने कहा। 'नाम ही इशारा है कि कुछ गड़बड़ है।' और फिर मलिक अयाज़ ने बताया कि आखिर कैसे पता

चला कि यालान ने...
पिछले सप्ताह ही उन्हें सुल्तान के घरेलू कर्मचारियों को हस्तांतरित कर दिया गया था।

'प्रधानमंत्री...' तालिब ने फुसफुसाते हुए कहा।

'बिल्कुल, केवल ख्वाजा हसन ही ऐसा आदेश जारी कर सकते थे। लेकिन उन्होंने शपथ लेकर कहा कि गवर्नर-मुफ़्ती ने उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर किया था, या तो रानी की हत्या करने के लिए या उनके खिलाफ मनगढ़ंत सबूत गढ़ने के लिए। यह तथ्य कि जासूसों ने पहले भी गवर्नर-मुफ़्ती और प्रधानमंत्री के रानी के महल के बाहर नियमित रूप से मिलने की रिपोर्ट दर्ज की थी, इस सबूत को और भी ज़्यादा निंदनीय बना देता है!'

तालिब हक्का-बक्का रह गया। 'हे भगवान! वो चुड़ैल महीनों से यही सब प्लान कर रही है!' अयाज़ ने सिर झुकाकर तालिब को घूरा। मौन संदेश छिपा हुआ

था, पर साफ़ था। अपनी औकात पहचानो, गुलाम। अगर ये सच भी है कि कौसरी जहाँ चुड़ैल है, तो ये बातें कहने का हक़
तुम्हारा नहीं है।

Machine Translated by Google

तालिब को तुरंत अपनी गलती का एहसास हुआ। 'माफ़ी चाहता हूँ, हुज़ूर। दिल से माफ़ी चाहता हूँ।' अयाज़ ने तालिब को चुपचाप माफ़ करते हुए एक

गहरी साँस ली। 'लेकिन भारतीय हत्यारों के साथ आपकी वापसी ने हालात बदल दिए हैं। शायद मेरे पिता की तपस्या काम आई।' तालिब के भ्रमित चेहरे पर अयाज़ ने बताया कि जिस दिन इस्माइल को गिरफ़्तार किया गया था, उसी दिन उसने मांस, शराब और औरतों से दूर

रहने की कसम खा ली थी। उसने वादा किया था कि जब तक अल्लाह उसे इन अनुचित आरोपों से मुक्त नहीं कर देता, वह इन स्व-निर्धारित नियमों का प्रायश्चित के रूप में पालन करेगा।

तालिब ने कहा, 'ऐसा लगता है कि जब सब लोग तुम्हारे पिता के खिलाफ हो गए थे, तब भगवान उन्हें बचाने आए।'

मलिक अयाज़ ने सिर हिलाया, 'लेकिन पहले, यह सुनिश्चित कर लें कि उसे फाँसी न हो।'
और उसे जेल से बाहर निकालो। फिर हम बाकी योजना पर अमल करेंगे।'



दसर्ना ने कहा, 'जनरल, तालिब एक अन्य व्यक्ति के साथ हमसे मिलने आया है।'

नरसिंह और उसके अस्सी बहादुर सैनिक पिछली शाम ग़ज़नी में दाखिल हुए थे। तालिब उन्हें एक अजीबोगरीब सुरक्षित घर में ले गया था। एक ऐसा सुरक्षित घर जो इतना खुला था कि मानो छुप गया हो।

एक उच्च श्रेणी का वेश्यालय.

साफ़ नज़रों से छिपना। होशियार।

वेश्यालय इतना विशिष्ट और महंगा था कि कोई भी आम आदमी वहां नहीं जाता था।
और अमीर कुलीन वर्ग आमतौर पर घर पर ही सेवा देने की माँग करता था, इसलिए वे अक्सर इस प्रतिष्ठान में नहीं आते थे। मुट्ठी भर लोगों को छोड़कर सभी को पता नहीं था कि इस वेश्यालय का मालिक इस्माइल था—कुछ 'नाममात्र मालिकों' की आड़ में।

अवधि।

'यह कौन है?' नरसिम्हन ने पूछा।

भारतीयों को गजनी पहुंचने में विशेष रूप से लंबा समय लगा था, क्योंकि उन्होंने
अनावश्यक ध्यान से बचने के लिए कम इस्तेमाल होने वाले और लंबे रास्ते अपनाए।

इन सुनसान रास्तों से होते हुए, वे कभी-कभी शानदार, निर्जन, भूतिया कस्बों से गुज़रते थे, जिनमें प्राचीन वास्तुकला के अवशेष थे, जिनका पता तुर्कों द्वारा धूल में मिलाई गई सभ्यताओं से लगाया जा सकता था। हिंदू शाही पठानों और बौद्ध-हिंदू बलूचों द्वारा बनाए गए भव्य शहर, जिन्हें लंबे समय से इन जीवंत सभ्य कस्बों में बसने वाले लोगों के रूप में छोड़ दिया गया था।

Machine Translated by Google

या तो नरसंहार किया गया था या जातीय सफाया कर दिया गया था। कई आधुनिक भारतीयों को यह भी नहीं पता था कि उपरिस्येन पर्वतों का नया नाम, हिंदू कुश पर्वत, वास्तव में हिंदुओं के वध का स्थान था, ठीक उसी तरह जैसे नश्लकुश का अर्थ नरसंहार और खुदकुशी का अर्थ आत्महत्या था।

दसर्ना ने कहा, "लगता है, लाहौर के राजा मलिक अयाज़ तालिब के साथ आए हैं। लेकिन उनकी बड़ी उपाधि चाहे जो भी हो, वे एक गवर्नर ज़्यादा हैं और अपना ज़्यादातर समय यहीं ग़ज़नी में बिताते हैं।"

नरसिम्हन ने ज़ोर देकर कहा था कि उन्हें और उनके सैनिकों को वेश्यालय के किसी खाली हिस्से में रखा जाए। इसका मतलब था कि वे तंग जगह में थे, जहाँ एक कमरे में औसतन आठ लोग रहते थे। लेकिन इसका यह भी मतलब था कि उन्हें रात में अजनबियों द्वारा घात लगाए जाने का कोई ख़तरा नहीं था और न ही उनके किसी भी आदमी को इमारत के आम निवासियों द्वारा बहकाए जाने का ख़तरा था, जिससे वे सभी खतरे में पड़ जाते।

"हम्म। तुर्क कुलीन वर्ग के किसी व्यक्ति का इतनी सुबह उठकर इधर-उधर घूमना अजीब है..." नरसिम्हन ने अपना मोटा फर कोट सीधा किया, क्योंकि उसे बहुत ठंड लग रही थी। "वैसे भी, हमारे पास ज़्यादा विकल्प नहीं हैं।" थोड़ी देर बाद, मलिक अयाज़ और तालिब उस कमरे में आए जहाँ नरसिम्हन उनका इंतज़ार कर रहे थे। नरसिम्हन के साथ पुलकित, विजयन, अमल, ध्रुव, ज़ैन हुसैन और यहाँ तक कि यज़ादेह भी थे। ... चलो उससे मिलते हैं.'

मलिक अयाज़ ने यज़ादेह की तरफ़ सिर हिलाया। वह पुलकित, ध्रुव या
ज़ैन, ज़ाहिर है, क्योंकि ग़ज़नी में अपने समय के दौरान वे नीच गुलाम थे। और वह बाकियों से पहली बार मिल रहा था। लाहौर के राजा ने नरसिम्हन की ओर देखा और उस पर विचार किया।

नरसिम्हन ने देखा कि यज़ादेह ज़्यादा असहज नहीं लग रही थी
मलिक अयाज की उपस्थिति।

'बैठिए, कृपया,' काफी देर की खामोशी के बाद अयाज ने कहा और खुद भी बैठ गया।

नरसिम्हन बैठते हुए बोले, "शुक्रिया।" उन्होंने देखा कि मलिक
अयाज़ का लहजा गहरा, संतुलित और शांत था। वह एक गंभीर व्यक्ति था।

बाकी लोग खड़े रहे।

लाहौर के राजा ने चारों ओर देखा। उनकी नज़र अमल पर पड़ी और वे मुस्कुराए। औरतों में 'साफ़' आँखों वाले और कामुक इरादों से रहित पुरुषों के प्रति छठी इंद्री होती है। इससे उन्हें सुरक्षा का एहसास होता है। मलिक अयाज़ की आँखें साफ़ थीं। 'मेरे वतन जॉर्जिया में भी महिला योद्धा हैं। वे महान माता मरियम के झंडे तले लड़ती हैं।'

नरसिम्हन ने भौंहें चढ़ाईं, 'मैंने सोचा था कि तुम मुसलमान हो?'

Machine Translated by Google

'मेरे पिता मुसलमान हैं। मेरी दिवंगत माँ ईसाई थीं।' 'कुछ भारतीयों को ईसा मसीह भी बहुत प्रेरणादायक

लगते हैं। सबके प्रति प्रेम का उनका संदेश जैन तीर्थंकर भगवान महावीर के उपदेशों जैसा ही है।' मलिक अयाज़ मुस्कुराए। 'हम्म। मुझे भी जैन धर्म बहुत प्रेरणादायक लगता है।' 'शायद मैं भी इस युद्धप्रिय जीवन से मुक्त होकर यही रास्ता अपनाऊँगा। अहिंसा और शाकाहार आत्मा के लिए अच्छे हैं।' 'हम्म।'

... लेकिन कुछ आत्माएं दूसरों के लिए कष्ट सहने के लिए बनी हैं ... क्योंकि आप अहिंसक तभी हो सकते हैं जब आपके सामने कोई दूसरा खड़ा हो, जो आपकी रक्षा के लिए हिंसक होने को तैयार हो।'

नरसिम्हन मुस्कुराये।

उनके आस-पास किसी को भी इस तरह की बातचीत की उम्मीद नहीं थी। इस समय तो बिल्कुल नहीं। समय। मलिक अयाज़ ने साफ़-साफ़ कहा। 'चलो बात करते हैं कि हम असल में यहाँ किस लिए आए हैं।' 'हाँ, बिल्कुल,' नरसिम्हन ने कहा।

'तुमने गवर्नर-मुफ़्ती के बारे में तो सुना ही होगा।' 'हाँ।' 'कल उन्हें रिहा कर दिया जाएगा।
और वे मेरे

घर आएँगे।' नरसिम्हन को आश्चर्य हुआ, पर वे कुछ बोले नहीं।

'तुम्हारे पास यज़ादेह है, इसलिए तुमसे कुछ छिपाने का कोई मतलब नहीं है
"यह तो आपको उनसे ही पता चल जाएगा। गवर्नर-मुफ़्ती इस्माइल... मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।" नरसिम्हन ने समझदारी से कोई टिप्पणी नहीं करते हुए सिर हिलाया।

'तुम एक हफ़्ते से दस दिन तक यहीं बैठे रहोगे। मैं सही समय आने पर तुम्हें सुल्तान के पास शारीरिक रूप से पहुँचाने का इंतज़ाम करूँगा। फिर, तुम उसकी हत्या कर दोगे और अपनी टीम के साथ यहाँ से भाग जाओगे। मैं तुमसे या तुम्हारे लोगों से फिर कभी कोई बात नहीं सुनना चाहता।' 'ज़रूर।' 'लेकिन'

... मेरी एक शर्त है ... आपमें से कोई भी गवर्नर-मुफ्ती को नहीं मारेगा इस्माइल।' मलिक अयाज़ ने यह कहते हुए इधर-उधर देखा, फिर नरसिम्हन की ओर मुड़ा। 'अपने खुदा के नाम पर मुझे अपना वचन दो। मैं जानता हूँ कि अगर हिंदुस्तानियों ने अपने खुदा की कसम खाई है, तो वे अपना वचन कभी नहीं तोड़ेंगे।' तालिब ने पीछे से मलिक अयाज़ को देखा। प्रशंसा से। पहली बार नहीं, उसे इस बात का अपराधबोध हुआ कि वह लाहौर के बादशाह को सच नहीं बता सका, कि

उसके पिता इस्माइल उसकी ज़रा भी परवाह नहीं करते थे।

Machine Translated by Google

नरसिम्हन ने अपना चाकू निकाला, अपनी हथेली काट ली और खून की कसम खा ली
थोड़ी ऊँची आवाज़ में अपना छद्म नाम बोला। 'मैं, नसरुल्लाह, महादेव की कसम खाता हूँ कि न तो मैं और न ही मेरे सैनिकों में से कोई गवर्नर मुफ़्ती इस्माइल को मारेगा।' मलिक अयाज़ संतुष्ट लग रहा था। वह यज़ादेह की ओर मुड़ा। 'जब मेरे पिता लौटेंगे तो मैं तुम्हें अपनी हवेली ले जाऊँगा। चिंता मत करो, तुम्हें कोई नुकसान

नहीं पहुँचाया जाएगा। मुझे बस इतना चाहिए कि तुम उन्हें हत्या तक शांत और स्थिर रखो। और उसके बाद तुम भी भाग सकते हो।' यज़ादेह ने, नरसिम्हन को आश्चर्यचकित करते हुए, सिर हिलाया।

लेकिन नरसिंह को यह समझ नहीं आया कि यज़ादेह क्या सोच रही थी। वह उसकी सेना में शामिल नहीं थी क्योंकि उसने उसके प्रति वफ़ादारी का वादा नहीं किया था।

अमल ने कहा, "मैं उसकी सुरक्षा के लिए साथ आऊँगी।" उसने व्यक्तिगत रूप से
उसने शपथ ली कि वह यज़ादेह की रक्षा करेगी।

मलिक अयाज़ ने सहमति में सिर हिलाया। और फिर स्पष्ट किया, "लेकिन आपको एक सेवक के रूप में आना होगा। और अपने सेनापति की शपथ याद रखना... मुझे क्या नाम बताना था... नसरुल्लाह?"

हां, ... याद रखें
यह वही प्रतिज्ञा है जो आपके जनरल नसरुल्लाह ने अभी-अभी ली है।'

अमल ने कहा, 'मैं नसरुल्लाह की प्रतिज्ञा का सम्मान करूंगा।'

अयाज़ ज़ैन की ओर मुड़ा और अचानक अरबी में बोला, "क्या तुम अरब हो?" "हाँ, हुज़ूर," ज़ैन ने अपनी मातृभाषा में पूछे गए सवाल का

तुरंत तुर्किक में जवाब दिया।

'और तुम भारतीयों के साथ हो? क्यों?' 'मैं यहाँ गुलाम था।' अयाज़
सचमुच हैरान था। एक अरब गुलाम?

इसका मतलब तो बस एक ही हो सकता है। 'तुम्हारा नाम क्या है?' 'मेरा नाम ज़ैन है, साहब।' 'आपका पूरा नाम।' ज़ैन सख्त हो गया।

'तुम्हें कोई खतरा नहीं है, अरब के ज़ैन,' मलिक अयाज़ ने कहा। 'तुम्हारा पूरा नाम क्या है?' 'ज़ैन हुसैन।' मलिक अयाज़ पीछे झुक गया। मानो वह कुछ सोच

रहा हो। नरसिम्हन

समझ में नहीं आया.

अयाज़ ने कहा, 'आप शिया हैं।'

ज़ैन ने सिर हिलाया.

Machine Translated by Google

मलिक अयाज़ ने कहा, "तुम्हारी अरब पहचान काम आ सकती है। लेकिन अपनी पहचान का इस्तेमाल मत करो।"
पूरा नाम बताओ, मैं तुम्हें कहाँ भेजूँगा।' 'हाँ, प्रभु,' ज़ैन ने

कहा।

मलिक अयाज़ अचानक उठ खड़ा हुआ और नरसिम्हन की ओर देखा, 'हमारा व्यवसाय
"यह हो गया। मैं आप सभी से जल्द ही मिलूँगा।"

नरसिम्हन भी खड़े हुए, मुस्कुराये और मलिक अयाज से सम्मानपूर्वक बात की।
'हाँ, लाहौर के राजा।'



विजयन दुखी था और उसने अमल के बिखरे बालों को उसके कान के पीछे धकेल दिया। 'मैं इससे खुश नहीं हूँ।' 'वलीद,' अमल ने कहा, 'मैं शायद राजा अयाज़ के महल में तुम

सब से ज़्यादा सुरक्षित हूँ, तुम्हारे हत्या के मिशन पर। मुझे ही तुम्हारी चिंता करनी चाहिए!' विजयन धीरे से हँसा। साहस का पहला संकेत हास्य-बोध था।

ख़तरे का सामना करते हुए। वह हमेशा अपनी प्रिय अमल की वीरता की प्रशंसा करता था।

"वलीद, हमने यज़ादेह की रक्षा करने की शपथ ली है," अमल ने आगे कहा। "हम अपनी बात से मुकर नहीं सकते। मुझे
यह सुनिश्चित करना होगा कि महमूद की हत्या के बाद उसे सुरक्षित निकालने के लिए हममें से कोई मौजूद रहे।" विजयन ने सिर हिलाया।

'मेरे पास कोई विकल्प नहीं है...' 'मुझे पता

है,' विजयन ने दुखी होकर कहा। 'तर्क निर्विवाद है। लेकिन वह
इसका मतलब यह नहीं है कि मुझे यह पसंद करना ही होगा।'

अमल हँसा, 'मैं तुम्हें शहर के बाहर मीटिंग पॉइंट पर मिलूँगा जब
सब हो गया है। तुम ज़िंदा रहना और वहाँ मुझसे मिलना।'

'हाँ। क्योंकि अगर मैं तुमसे मिलने से चूक गया, तो मुझे कौन बचाएगा और भारत ले जाएगा!' 'बिल्कुल!' विजयन और अमल
हँसे और एक-दूसरे को गले लगा लिया। उन्होंने

कसकर गले लगा

लिया।

उनके प्रबल प्रेम ने उनकी चिंताओं को दबा दिया।

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 23

भ्रम का न्यायालय

ग़ज़नी, अफ़ग़ानिस्तान

इस्माइल दरबार कक्ष के बीच में सुल्तान के सामने खड़ा था। महमूद गजनवी कक्ष के सबसे ऊपरी सिरे पर बैठा था। उसके बगल में कौसरी जहाँ, मलिक अयाज़ और फ़ारसी प्रधानमंत्री ख्वाजा हसन बैठे थे।

अन्य वरिष्ठ गजनी सरदार भी पूर्ण रूप से उपस्थित थे।

सभी को उम्मीद थी कि गवर्नर-मुफ्ती को मौत की सजा दी जाएगी।
उसके खिलाफ बहुत सारे सबूत थे। बस शक तारीख और शायद फांसी के तरीके को लेकर था।

इस्माइल को भी मृत्युदंड की सज़ा मिलने की आशंका थी। उसे यह भी यकीन था कि
असली फाँसी महमूद के खलीफा बनने के बाद होगी। इस्माइल अपने बड़े भाई को अच्छी तरह जानता था। वह अंदाज़ा लगा
सकता था कि महमूद अपने जीवन के इस सुनहरे दौर में किसी भी तरह की बाधा नहीं डालना चाहेगा।

इस्माइल ने अपने दिलो-दिमाग़ को सबसे बुरे हालात के लिए तैयार कर लिया था। उसे एक हैरानी का सामना करना पड़ा। सिर्फ़
उस ऐलान की वजह से नहीं, बल्कि इसलिए भी कि वह कहाँ से आया था।

कौसरी जहाँ ने तीखे स्वर में कहा, 'मेरे सुल्तान, मेरे राजा, मैं ही हूँ जिसे इस भयानक आदमी ने चोट पहुँचाई है।'

इस्माइल ने भावशून्य भाव से कौसरी की ओर देखा। हाँ। हाँ। मत करो।
मुझे बोर कर रही है। आगे बढ़ो।

'मुझे न्याय और न्याय की मांग करने का पूरा अधिकार है।'
कौसरी ने आगे कहा, 'लेकिन...'

इस्माइल ने भौंहें चढ़ाईं, लेकिन?

'लेकिन मैं गवर्नर मुफ्ती इस्माइल से चाहे जितनी भी नफरत करूं, मैं आपसे उससे भी ज्यादा प्यार करता हूं।
मेरे आधिपत्य, गजनी के सुल्तान महमूद। मैं तुम्हें अपनी जान से भी ज़्यादा प्यार करता हूँ।' महमूद ने अपनी पत्नी को कोमलता
से देखा और फिर अपने छोटे भाई इस्माइल को घूरा।

Machine Translated by Google

शानदार वेशभूषा और केश-सज्जा में सजे मलिक अयाज, जो झुककर चल रहे थे
अब तक अपनी भव्य कुर्सी पर बैठे, धीरे से हँसे और अपनी आँखें घुमाईं।

कुछ अन्य रईसों ने लाहौर के राजा के इस भाव को देखा। और अधिकांश सोना खोदने वाली कश्मीरी चुड़ैल को
यही सोच रहा था। बेशक सुल्तान... कौन बेवकूफ़ इस पर ...
यकीन करेगा?

कौसरी ने ऐसे कहा जैसे उसे कुछ भी ध्यान न आया हो। 'और इसलिए, मेरे प्यारे पति, आपके प्रति अपने असीम प्रेम में, मैं आपसे विनती करती हूँ कि आप अपने छोटे भाई इस्माइल को मृत्युदंड से बख्श दें।'

इस्माइल दंग रह गया। क्या?!?

गवर्नर-मुफ्ती ने अपने गुप्त नाजायज बेटे मलिक अयाज की ओर देखा।
मलिक अयाज़ के चेहरे पर पूरी तरह से हैरानी के भाव थे। लेकिन इस्माइल जानता था कि उसका बेटा कितना अच्छा एक्टर है। क्या मेरे बेटे ने कोई डील पक्की कर ली है?

कौसरी ने कहा, 'लेकिन यह सुनिश्चित करने के लिए कि आपको या मुझे कोई खतरा न हो, मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि राज्यपाल-मुफ्ती को कुछ समय के लिए नजरबंद रखा जाए।'

महमूद ने जोर से कहा, 'रानी दयालु और बुद्धिमान है।'

"रानी की जय हो! सुल्तान की जय हो!" मलिक अयाज़ ने ज़ोर से कहा, मानो वह अपने सदमे पर काबू पाने की पूरी कोशिश कर रहा हो। पूरा दरबार उसी चीख़ से गूंज उठा। कोई भी चंचल महमूद के साथ नहीं रहना चाहता था।

"मैं रानी की बात से सहमत हूँ," महमूद ने कहा। "गवर्नर-मुफ़्ती को लाहौर के राजा मलिक अयाज़ के महल में नज़रबंद कर दिया गया है। गवर्नर-मुफ़्ती के किसी भी कर्मचारी को उनके साथ रहने की इजाज़त नहीं दी जाएगी। हम इस मामले पर एक महीने बाद फिर से विचार करेंगे। जैसा लिखा जाएगा, वैसा ही किया जाएगा।"

महमूद ने अपना हाथ उठाया और उसका मुंशी एक चर्मपत्र लेकर जल्दी से आया।
जिस पर पहले से ही लिखा हुआ था। यह अजीब था, क्योंकि फ़ैसला अभी-अभी सुनाया गया था। महमूद ने उस पर अपनी मुहर लगाई और मलिक अयाज़ को दे दिया। 'इसे लागू करो, अयाज़।'

'आपकी इच्छा, मेरे प्रभु,' मलिक अयाज ने झुककर और सलाम करते हुए कहा, हालांकि उसकी अभिव्यक्ति ने किसी को भी संदेह नहीं छोड़ा कि वह क्या सोच रहा था: यह अब मेरा सिरदर्द क्यों बन गया है?!

हालाँकि, इस्माइल को महमूद की कही हुई एक और बात समझ में आ गई थी।
एक महीने में? अगले दो हफ़्तों में वो खलीफ़ा बन जाएगा। एक महीने में उसे किसी ग्रैंड मुफ़्ती की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। खलीफ़ा होने के नाते, वो दुनिया के किसी भी मुफ़्ती से ऊपर होगा। मैं फिर भी मारा जाऊँगा। महमूद मुझे खलीफ़ा बनने तक ज़िंदा रखेगा। हे भगवान, मैं अभी सुरक्षित नहीं हूँ...

... मैं अभी भी सुरक्षित नहीं हूँ
...

Machine Translated by Google

इस समय तक मलिक अयाज़ दस सैनिकों के साथ इस्माइल के पास पहुँच चुका था।
जो अयाज की कमान में थे, वे भी आगे बढ़ गए थे।

अयाज़ ने स्त्रीवत झुंझलाहट के साथ कहा, 'मेरे साथ आओ,
राज्यपाल-मुफ्ती।'

और इस प्रकार, आश्चर्यजनक रूप से छोटी अदालती कार्यवाही समाप्त हो गई।



"अभी क्या हुआ?" इस्माइल ने पूछा। "क्या तुमने यह काम पूरा कर लिया, मेरे बेटे?"

मलिक अयाज़ ने अपनी हवेली में प्रवेश करते हुए कहा, "पिताजी, सौदा तय हो गया है।"
अब स्वर और आचरण पूरी तरह से अलग है।

'लेकिन मैं फिर भी मारा जाऊंगा।' इस्माइल की आवाज ऊंची हो गई थी, जो
जब भी वह घबराता था, यही होता था। 'वह बस खलीफा बनने का इंतज़ार कर रहा है।' 'अभी तो आप ज़िंदा हैं, अब्बा। इसी पर ध्यान दीजिए। एक

महीने में बहुत कुछ हो सकता है।' 'हाँ, बहुत कुछ हो सकता है। क्या आपको याद नहीं कि जामा मस्जिद के पिछले ग्रैंड मुफ़्ती के साथ क्या

हुआ था? क्या आप सचमुच मानते हैं कि वह मस्जिद की मीनार की सीढ़ियों से गलती से गिर गए थे?' 'तो क्या मैं सुझाव दे सकता हूँ कि अभी आप किसी मीनार पर न चढ़ें?' मलिक अयाज़ धीरे से हँसा।

'ये मज़ाक का वक़्त नहीं है, अयाज़!' 'शांत हो जाओ,

अब्बा। यहाँ कोई मस्जिद की मीनारें नहीं हैं। और अभी तो तुम ज़िंदा हो। हमारे पास कोई योजना बनाने के लिए एक महीना है।' 'तुमने क्या सौदा किया था?' 'ऐसा कुछ भी नहीं जो तुम किसी भी हाल में नहीं करने वाले थे। तुम एक

फ़तवा, एक राय दोगे, जिसमें क़ुरान और हदीसों के ज़्यादा से

ज़्यादा हवाले हों, ताकि साबित हो सके कि एक ग़ैर-अरबी भी ख़लीफ़ा बन सकता है, बशर्ते उसने सुल्तान महमूद जैसी उपलब्धियाँ हासिल कर ली हों।'

'मेरे ख़याल से यह मुमकिन नहीं। सिर्फ़ एक अरब ही ख़लीफ़ा हो सकता है।' 'क्या आप जीना चाहते हैं, अब्बा?'

इस्माइल चुप रहा।

'तो फिर यह सुनिश्चित करो कि तुम एक फ़तवा जारी करो कि कोई ग़ैर-अरबी ख़लीफ़ा बन सकता है। मुझे पता है कि तुम इस पर काम कर रहे थे, वैसे भी। तुम बस यूँ ही रुक गए थे।

Machine Translated by Google

पिछले तीन हफ़्तों से। उस काम को फिर से शुरू करो, और मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि मेरे पिता
'यह सदैव मेरे साथ रहेगा।'

इस्माइल ने गहरी साँस ली, 'क्या मैं अपने महल वापस नहीं जा सकता?'

'यह आपकी रिहाई की शर्तों में से एक है, पिताजी। आप वापस नहीं जा सकते।'

आपके महल में, और आपके पुराने कर्मचारियों में से कोई भी आपसे नहीं मिल सकता। आपको अंदर ही रहना होगा
मेरे भवन में केवल मेरे सेवक ही रहेंगे।'

इस्माइल बड़बड़ाया। उसकी घबराहट कम हो रही थी। और वह
बातचीत शुरू हो गई है।

'मुझे यज़ादेह मिल गई है। और मैं उसे यहाँ लाऊँगा।'

'तुम्हारे पास है!' इस्माइल का मूड अचानक ठीक हो गया।

'अपनी प्रतिज्ञा याद रखो।'

'बिल्कुल! मैं ब्रह्मचर्य और अविवाहित रहने की अपनी प्रतिज्ञा का पालन करूंगी।
मैं तब तक शराब नहीं पीता जब तक कि मुझ पर लगे इन घृणित और झूठे आरोपों से मैं पूरी तरह मुक्त नहीं हो जाता।
लेकिन यज़ादेह का आस-पास होना अच्छा रहेगा। बस उसे देखने के लिए।'

मलिक अयाज़ मुस्कुराया.



भारतीय योद्धाओं ने पूरे तीन दिन तक भव्य सुरक्षित स्थान पर प्रतीक्षा की,
जंदीन-उल-दीन के कुछ लोगों द्वारा संरक्षित, जो अभी भी उसके प्रति वफादार थे
राज्यपाल-मुफ़्ती इस्माइल। चौथे दिन दोपहर को मलिक अयाज़ और
तालिब ने उनसे मुलाकात की।

मलिक अयाज के प्रवेश करते ही नरसिंह खड़े हो गए और राजा का स्वागत किया।
लाहौर में सम्मानपूर्वक। अपने सेनापति पुलकित के नेतृत्व में, विजयन,
अमल, ध्रुव, ज़ैन हुसैन और यज़ादेह भी खड़े हो गए।

नरसिंह ने कहा, 'आपका स्वागत है, महान राजा।'

'नमस्ते,' मलिक अयाज़ ने कहा।

यह शब्द तुर्किक लहजे में बहुत अलग लगता था, और इसलिए नरसिम्हन
मलिक अयाज़ ने जो कहा था उसे समझने में उसे एक पल लगा। जैसे ही उसने
समझ गया, चोल सेनापति गर्मजोशी से मुस्कुराया और अपनी हथेलियाँ जोड़ लीं
नमस्ते.

'कृपया बैठिए ... उम ...तुम्हारा नाम क्या होना चाहिए था? ओह हाँ, नसरुल्लाह,' ... नारा ... नारी ... नरीमन ... नहीं ... मलिक अयाज़ ने कहा, जैसे ही उसने लिया
एक सीट पर बैठी, शरारत से मुस्कुराई।

Machine Translated by Google

नरसिम्हन मुस्कुराए और बैठ गए। 'राज्यपाल-मुफ़्ती की रिहाई पर बधाई।' मलिक अयाज़ मुस्कुराए और सिर हिलाया। 'लेकिन यह तो बस पहला

कदम है।' वह मुड़े।

अमल और यज़ादेह से। 'गवर्नर-मुफ़्ती इस्माइल की रिहाई की शर्तों में एक शर्त यह है कि वह सिर्फ़ मेरे घर में ही रह सकते हैं। और गवर्नर के घरेलू कर्मचारियों में से किसी को भी उनकी सेवा करने की इजाज़त नहीं है। इसलिए घर में सिर्फ़ मेरे कर्मचारी ही रहेंगे। तालिब वहाँ नहीं होंगे। मुझे उम्मीद है कि सब ठीक रहेगा।'

अमल ने यज़ादेह की ओर रुख किया। यज़ीदी लड़की ने सिर हिलाया। वह ज़्यादा परेशान नहीं लग रही थी।

मलिक अयाज़ की नज़रें एक पल के लिए उस पर टिकी रहीं, फिर उसकी ओर मुड़ गईं।

नरसिम्हन। 'मुझे उम्मीद है कि आपके लोग अपनी शपथ याद रखेंगे।' 'वे याद रखेंगे,' नरसिम्हन ने पुष्टि

की।

मलिक अयाज़ ने सिर हिलाया और नीचे देखा, जैसे वह कुछ सोच रहा हो।

नरसिंह ने पूछा, 'क्या योजना है, प्रभु?' 'कौन...' मलिक अयाज़ झिझका।

उसने गहरी साँस ली और नरसिंह को घूरने लगा। 'तुममें से असल में हत्या कौन करेगा? मैं सही समय पर एक से ज़्यादा लोगों को नहीं ला पाऊँगा।'

नरसिम्हन को इसका आशय समझ आ गया। और उन्हें अपना निर्णय लेने के लिए ज़्यादा सोचने की ज़रूरत नहीं पड़ी। 'मैं ही होऊँगा।'

मलिक अयाज़ आगे झुका। वह एक होशियार आदमी था, लाहौर का बादशाह।

बहादुर तो था ही। लेकिन उसकी हिम्मत बुद्धि और शाही षडयंत्रों के दायरे में थी। उसमें वो शारीरिक साहस नहीं था जो सिर्फ़ योद्धाओं में होता है। और किसी भी बुद्धिमान, आत्मविश्वासी व्यक्ति की तरह, अयाज़ उन लोगों की प्रशंसा करता था जिनमें ऐसी क्षमताएँ थीं जो उसमें नहीं थीं।

"क्या आपको यकीन है, जनरल?" मलिक अयाज़ ने पूछा। "यह एक..." "... एकतरफ़ा यात्रा हो सकती है,"

नरसिम्हन ने अयाज़ की बात पूरी करते हुए कहा।

'ज़रूरी नहीं कि ऐसा हो, लेकिन ज़्यादातर यही होगा...' मलिक अयाज़ ने जवाब दिया। 'क्या आपको यकीन है?' कमरे में सबकी नज़रें जनरल पर टिकी थीं।

नरसिम्हन के चेहरे पर एक ठंडा भाव था। निश्चल। अभेद्य। उनकी आवाज़

एक धीमी फुसफुसाहट थी, लेकिन स्वर इस्पात जैसा कठोर था। उसने अपने प्रिय कवि, बैबिंगटन नामक एक यूरोपीय कवि को उद्धृत किया, जिसने एक प्राचीन रोमन युद्ध नायक पर एक कविता लिखी थी। 'मनुष्य भयावह परिस्थितियों का सामना करने से बेहतर कैसे मर सकता है; अपने पूर्वजों की राख और अपने देवताओं के मंदिरों के लिए।' मलिक अयाज़ मुस्कुराया। वह पढ़ा-लिखा था। '"होराटियस एट द ब्रिज"...' नरसिंह ने सिर हिलाया। 'हाँ। यह उसी

कविता से है।'

Machine Translated by Google

'ज़्यादातर लोगों को वह कविता पसंद आएगी। लेकिन बहुत कम लोग उसे जी पाते हैं।' 'उन पंक्तियों को जीने से बड़ा कोई सम्मान नहीं...'

मलिक अयाज़ ने सिर हिलाया। 'आप एक असाधारण व्यक्ति हैं, जनरल। ठीक है...'

मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि आप सही समय पर सही जगह पर हों। यह अब से लगभग दस दिन बाद होगा।'

नरसिम्हन ने सिर हिलाया।

मलिक अयाज ने पूछा, 'आपने कौन सा हथियार चुना है?'

नरसिंह ने पुलकित की ओर रुख किया। चालुक्य राजकुमार ने अपने वस्त्र की तहों में हाथ डाला और एक छोटा, कच्चा मछली काटने वाला चाकू निकाला। उसका लकड़ी का हैंडल कुनाति-युक्त धातु के एक छोटे से टुकड़े से बंधा हुआ था।

मलिक अयाज़ मुस्कुराया। 'यह अंदर से टूट जाएगा?' नरसिम्हन अयाज़ के हथियार

के बारे में दिए गए अनुमान से प्रभावित हुआ।

योद्धा न होने के बावजूद। 'हाँ।' 'अच्छा ज़हर?' 'सबसे अच्छा।'

'सिर्फ़ सुल्तान के लिए सबसे

अच्छा,' मलिक

अयाज़ हँसा।

नरसिम्हन हँसे। और बाकी लोग भी हँसे।

अयाज़ ने पूछा, 'क्या आपके पास ऐसा कोई दूसरा चाकू नहीं है?'

नरसिम्हन ने सिर हिलाया। 'मुझे डर है कि ऐसा नहीं होगा।' 'यह बहुत बुरा है। यह मेरे

लिए भी उपयोगी हो सकता था...' मलिक अयाज़ ज़ैन की ओर मुड़ा। 'मैं चाहता हूँ कि तुम हैंडल पर अरबी में कुछ लिख दो: "सिर्फ़ एक अरब। हमेशा एक अरब।" ज़ैन मुस्कुराया। 'होशियार।' नरसिम्हन ने मलिक अयाज़ की ओर देखा। 'मैंने सुना है कि कई तुर्क ख़ुद यह नहीं मानते कि एक तुर्क को कभी ख़लीफ़ा बनना चाहिए...'

'केवल

एक अरब ही खलीफा होना चाहिए।'

'सच है। उन्हें यह सोचने दो कि अरब उनसे सहमत हैं।' अयाज़ ने विजयन की ओर रुख किया, जो स्पष्ट रूप से दूसरे नंबर का अधिकारी था। 'बाकी लोगों के लिए, मैं समय आने पर निर्देश भेजूँगा, जिसमें यह भी शामिल होगा कि मस्जिद से अपने ईश्वर के पवित्र अवशेषों को कैसे निकाला जाए।' 'शुक्रिया,' विजयन ने कहा।

'अभी के लिए, तुम सब इसी इमारत में रहो। तुम यहाँ सुरक्षित हो। मैं यहाँ दोबारा नहीं आऊँगा। अब से सारी खबरें तालिब से ही आएंगी। सिर्फ़ उसके निर्देशों पर भरोसा करो।'

मलिक अयाज़ के पीछे खड़े तालिब मुस्कुराए। नरसिम्हन और उनके अनुयायियों ने सिर हिलाया।

Machine Translated by Google

मलिक अयाज़ खड़ा हुआ और अमल और यज़ादेह की ओर मुड़ा। 'और अब, देवियो,
मुझे उम्मीद है कि तुम मेरे साथ मेरे घर चलने के लिए तैयार हो। अब समय आ गया है।'

यज़ादेह का घबराया हुआ दिल तेज़ी से धड़कने लगा। उसने अमल की तरफ़ देखा।
उन्हें पहले ही सूचित कर दिया गया था। वे तैयार भी थे। लेकिन चाहे जो भी हो
कोई कितना भी तैयार क्यों न हो, सच्चाई का क्षण हमेशा कुछ हिचकिचाहट लेकर आता है। और
इस झिझक को हराने का सबसे अच्छा तरीका है कि तुरंत आगे बढ़ें, इससे पहले कि
अनिर्णय मन पर छाने लगता है।

अमल ने कहा, 'चलो चलें।'

'आखिरकार, मेरे बेटे ... इतने वर्षों के बाद,' इस्माइल ने कहा।

इस्माइल कुछ दिनों से मलिक अयाज़ की हवेली में था। उसने शुरू में
असहज रहा ... आखिरकार, यह एक नई जगह थी, अपरिचित लोगों का एक समूह
नौकरों, एक अलग रसोइया लेकिन मलिक अयाज अपने को बनाने की कोशिश कर रहा था
पिता को घर जैसा महसूस हो। गवर्नर-मुफ़्ती के महल से कुछ फ़र्नीचर
इस्माइल को अपनापन का एहसास दिलाने के लिए उसे अयाज की हवेली में लाया गया था।
अयाज़ के नौकरों को यथासंभव विनम्र रहने का निर्देश दिया गया था।
शेफ को बार-बार उन खाद्य पदार्थों को सीखने और फिर से बनाने का निर्देश दिया गया था जो
गवर्नर-मुफ़्ती ने इसका भरपूर आनंद लिया। और रसोइया भी बहुत कोशिश कर रहा था क्योंकि, ज़ाहिर है,
यह बात उनके स्वामी, लाहौर के राजा के लिए बहुत मायने रखती थी।

लेकिन मलिक अयाज़ अपने पिता को आराम देने के लिए एक और उपहार लेकर लौटा था
और भी। हालाँकि, उपहार अभी तक प्रकट नहीं हुआ था। 'मुझे पता है, पिताजी। आखिरकार,
सुल्तान तुम्हारे विरुद्ध किये गये पापों का दंड भुगतेगा।'

'मैं भाग्य के काम करने के तरीके से चकित हूं।' इस्माइल ने स्नेहपूर्वक मुस्कुराते हुए कहा।
'रहस्यमय ... जो दास मुझसे बच गए हैं, वे मेरे भाई के दासों को ले गए हैं।
मेरे लिए हत्यारे! सचमुच अद्भुत।'

'प्रभु रहस्यमय तरीके से काम करते हैं, पिताजी।'

'यह सच है,' इस्माइल ने कहा। वह गंभीर होते हुए बोला, 'लेकिन... उन्हें भी होना चाहिए...' ... सुल्तान का
बेटे

'हाँ पापा। इसका इंतज़ाम हो गया है। चिंता मत करो।'

'और कोई सबूत नहीं होना चाहिए...'

'कोई सबूत नहीं होगा.'

"खैर, नसरुल्लाह हमारे कब्ज़े वाले सुल्तान के साथ ही मर जाएगा," ... और उसके साथी हैं
इस्माइल ने आँख मारते हुए कहा। "महमूद के गिरते ही हम..."

Machine Translated by Google

इन "संदिग्धों" को पकड़ो और उनके साथ वही करो जो कौसरी जहाँ ने मेरे आदमी के साथ किया था।' मलिक अयाज़ बस मुस्कुराया। चुप।

इस्माइल हँसते हुए बोला। वह खुश और बातूनी मूड में था।
'भारतीय अपने साथ सभी "सबूत" लेकर आए हैं: अबू कासिम और उसके आदमियों के चुराए गए वस्त्र और कवच।'

'पिताजी, इन बातों पर बात करने की कोई ज़रूरत नहीं है। दीवारों के भी कान होते हैं।' 'बिल्कुल। आप सही कह रहे हैं।' 'लेकिन याद रखिए कि हमने

रानी के बारे में क्या फैसला किया था। जब बात

उसके सामने आती है तो मर्दों का फिसलना बहुत आसान होता है।'

'मैं नहीं करूँगा!' इस्माइल ने चिढ़कर कहा। 'ऐसा लग रहा है जैसे तुम्हें लगता है कि मेरा खुद पर कोई नियंत्रण नहीं है।'
हालाँकि, इस्माइल ने खुलकर अपनी

बात नहीं कही। उसे और कुछ नहीं चाहिए था।
अपने बिस्तर में उग्र कौसरी जहाँ को वश में करने से बेहतर है। लेकिन यह बाद में हो सकता है।

'खैर, मेरे पास आपके लिए एक तोहफ़ा है, पिता जी।' लाहौर के बादशाह ने ताली बजाई

और कमरे का दरवाज़ा खुल गया। यज़ादेह के अंदर आते ही इस्माइल ने साँस रोक ली, उसके चेहरे पर एक सुखद मुस्कान थी। अमल दरवाज़े पर पर्दे के पीछे इंतज़ार कर रही थी।

मलिक अयाज़ ने कहा, "यह इनाम दस दिन में तुम्हारा होगा, क्योंकि तब तक तुम यज़ादेह को छू भी नहीं सकते। हो सकता है तब महमूद को ख़लीफ़ा बना दिया जाए, लेकिन अल्लाह के सारे उपहार तुम्हारे लिए सुरक्षित हैं, पिता।"

इस्माइल ऐसे खिलखिलाया जैसे कोई छोटा बच्चा हो जिसे अभी-अभी उसका पसंदीदा खिलौना मिल गया हो।



नरसिम्हन ने कहा, "ज़ैन, मैं समझ सकता हूँ कि तुम महमूद की हत्या में हमारी मदद कर रहे हो। उसकी सेना ने तुम्हें और तुम्हारे कुछ कबीले के लोगों को गुलाम बना लिया था। लेकिन तुम शिवलिंग के पवित्र अवशेषों को वापस पाने में हमारी मदद क्यों कर रहे हो? क्या यह तुम्हारे धर्म के विरुद्ध नहीं है?"

ज़ैन और नरसिम्हन सुरक्षित घर में थे। नाश्ता खा लिया गया था।
दिन भर का शारीरिक व्यायाम पूरा हो चुका था। वे बाहर नहीं निकल सकते थे।
वे बस बातें ही कर सकते थे। तो यही तो वे कर रहे थे।

ज़ैन मुस्कुराया, 'क्या तुम जानते हो कि मेरा पूरा नाम मेरे बारे में क्या कहता है?'

Machine Translated by Google

'हाँ, मुझे याद है मलिक अयाज़ ने मुसलमान क्या कहा था, है ना?' 'हाँ। ··· इसका मतलब है कि आप शिया हैं
शिया , शिया अली यानी

अली के अनुयायियों का संक्षिप्त रूप है। हम वो लोग हैं जो इमाम अली को मानते हैं, जो एक खलीफ़ा भी थे। हम सुन्नी मुसलमानों से अलग हैं। तुर्क सब सुन्नी हैं।'

अमल ने मुझे इसके बारे में बताया। उसने यह भी बताया कि वह एक सुन्नी मुसलमान है।
"हालाँकि वो भारतीय है। तुम्हें उससे कोई दिक्कत नहीं है, है ना?"

'बिल्कुल नहीं। अमल एक अच्छी और दयालु महिला हैं। हालाँकि, शिया और सुन्नी के बीच मुख्य अंतर यह है कि हम शिया पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) के परिवार के वंश का पालन करते हैं, जबकि सुन्नी कहते हैं कि वे सुन्ना, यानी पैगंबर की परंपराओं और उदाहरणों का पालन करते हैं।'

'मैं समझता हूँ। लेकिन इससे आपको सुन्नियों से कोई समस्या क्यों होनी चाहिए?'

'मुझे सुन्नियों से कोई समस्या नहीं है। मैं तलाश में मदद नहीं कर रहा हूँ।'
शिवलिंग के पवित्र अवशेषों के लिए, क्योंकि तुम दुश्मन के दुश्मन हो।' 'तो फिर तुम... क्यों हो?' 'यह एक लंबी कहानी है।' नरसिम्हन हँसा। 'तुम्हें

कहीं जाना है?' ज़ैन भी हँसा। 'ठीक है, मैं

तुम्हें संक्षेप में कहानी सुनाता हूँ।

यह

इसकी शुरुआत कर्बला नामक स्थान से होती है।'

'वह कहाँ है?' 'अरब देशों में,

हमारे पश्चिम में।' 'ठीक है। वहाँ क्या हुआ था?' 'तीन सौ

साल से भी ज़्यादा पहले, कर्बला में एक बड़ी लड़ाई हुई थी,

और
हमारे इमाम हुसैन, इमाम अली के बेटे और पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पोते, उमय्यद वंश के खलीफा यज़ीद के सैनिकों ने अन्यायपूर्वक कत्ल कर दिए।' नरसिंह का मुँह खुला का खुला रह गया। 'क्या कह रहे हो? तुम्हारे पैगंबर के वंशज? एक इमाम? और एक अरब मुस्लिम खलीफा ने उसे कत्ल करवा दिया?' 'हाँ।

हम शिया इमाम हुसैन की हत्या को सबसे बड़ी बात मानते हैं।

मानवता के लिए त्रासदी।'

'यह भयानक है। और यह बेहद शर्मनाक है कि एक मुस्लिम शासक ने ऐसा करवाया।' 'हम आज भी इमाम हुसैन की कुर्बानी का शोक मनाते हैं।' नरसिम्हन ने सहानुभूति में सिर हिलाया।

Machine Translated by Google

ज़ैन ने आगे कहा, 'भारत में बहुत से लोग यह नहीं जानते कि यहां एक जनजाति है
मोहयाल ब्राह्मण कहलाने वाले भारतीयों में से...'
'मोहयाल ब्राह्मण?' नरसिम्हन ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'मैंने उनके बारे में नहीं सुना है।'
वे कहां से हैं?' 'भारतीय उपमहाद्वीप के
उत्तरी भाग में पंजाब क्षेत्र से।'

'ठीक है। तो मोहयाल ब्राह्मणों का इस कहानी से क्या लेना-देना है?' 'इतिहास बताता है कि कर्बला की लड़ाई के समय अरब
देशों में कुछ मोहयाल ब्राह्मण थे। उन्होंने हमारे इमाम हुसैन की रक्षा के लिए लड़ाई लड़ी। उनमें से कई उस लड़ाई में मारे गए। वे गर्वित हिंदू थे, लेकिन उन्होंने हमारे इमाम की रक्षा के लिए अपनी जान दे दी।' 'मुझे यह नहीं पता था...' 'सिर्फ इतना ही नहीं, उमय्यद खिलाफत के लगातार हमलों के कारण पैगंबर के परिवार के कुछ सदस्यों को भागना पड़ा था। और उन्हें सिंध के हिंदू राजा, राजा दाहिर ने शरण दी थी।' 'मुझे भी इस बारे में कोई जानकारी नहीं थी।' 'हम
में से कई शिया जो यह जानते हैं, मानते हैं
कि यह हमारा कर्तव्य है कि हम

हिंदुओं ने हमारे पैगंबर के परिवार की रक्षा और सुरक्षा के लिए लड़ाई लड़ी।
अगर हम उस नेकी का बदला न चुकाएँ, तो हम किस तरह के मुसलमान होंगे? इसलिए हम हिंदू देवी-देवताओं और हिंदू मान्यताओं की रक्षा के लिए लड़ते हैं। इसी तरह हम आपके समुदाय का कर्ज़ चुकाते हैं।' नरसिम्हन मुस्कुराए और ज़ैन को गले लगा लिया। 'शुक्रिया, मेरे दोस्त।'

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 24

राह में एक मोड़

ग़ज़नी, अफ़ग़ानिस्तान

मलिक अयाज ने यह मान लिया था कि महमूद खलीफा के रूप में अपने अभिषेक के लिए अरबों के इस समर्थन से प्रसन्न होंगे, लेकिन सुल्तान को संदेह हुआ।
जैसे-जैसे उसकी ज़िंदगी का सबसे बड़ा दिन नज़दीक आ रहा था, शक्तिशाली महमूद भी घबराने लगा था। उसे हर तरफ़ ख़तरा नज़र आ रहा था।

'महाराज,' मलिक अयाज ने शांति और कोमलता से कहा, 'एक के लिए
अब्बासिद दरबार से किसी अरब का आपके अभिषेक के दौरान यहाँ उपस्थित होना ही एक
सशक्त कथन है। लेकिन ज़ुबैर उस्मान जो पेशकश कर रहे हैं, वह यह है कि वे स्वयं आपके नाम से दिन की सभी पाँचों नमाज़ें पढ़ेंगे। और वह भी पुनर्निर्मित जामा मस्जिद से। यह आपके खलीफ़ा बनने के लिए एक खुले अरब समर्थन की तरह है।'

ज़ुबैर उस्मान वह उपयुक्त सुन्नी मुस्लिम नाम था जिससे ज़ैन हुसैन का महमूद से परिचय हुआ था। ग़ज़नी के सुल्तान ने उस अरब से संक्षिप्त मुलाक़ात की थी और शुरू में इस समारोह में अब्बासी दरबार के किसी व्यक्ति की उपस्थिति को लेकर बेहद उत्साहित थे। उन्होंने ज़ैन के गले में लटके पदक को ध्यान से देखा था। यह एक गोलाकार सुनहरा पदक था जिस पर अब्बासी ख़िलाफ़त की गोल, काली मुहर अंकित थी—जो इस बात का स्पष्ट प्रमाण था कि इसे पहनने वाला व्यक्ति अब्बासी दरबार का एक वरिष्ठ अधिकारी था। यह वही पदक था जिसे विजयन ने युद्ध के दौरान अरब जहाज़ के कप्तान की हत्या करते समय छीन लिया था।

समुद्र में।

लेकिन अब, कुछ घंटों तक इस पर विचार करने के बाद, महमूद पुनर्मूल्यांकन कर रहा था
अपने निजी कक्ष में लिए गए फ़ैसले पर वह अनिश्चित लग रहे थे।

"मेरे सुल्तान," कौसरी जहाँ ने कहा, "ऐसा कम ही होता है कि मैं लाहौर के बादशाह से सहमत होऊँ। और आप जानते ही हैं कि आपको खलीफा घोषित किए जाने के खतरों के बारे में मेरे विचार हमेशा से क्या रहे हैं। लेकिन इस बार, मैं मलिक अयाज़ से सहमत हूँ। मुझे लगता है कि अब्बासिद दरबार से किसी की मौजूदगी ही आपकी

Machine Translated by Google

खलीफा के रूप में अभिषेक आम लोगों की नजरों में और उससे भी महत्वपूर्ण रूप से, कुलीनों के लिए अधिक आकर्षक है। याद रखें, हम चाहते हैं कि तुर्की के कुलीन वर्ग के सभी सदस्य और यहां तक कि आदिवासी बुजुर्ग भी खलीफा के रूप में आपके प्रति अपनी वफादारी की प्रतिज्ञा करें। यह आपकी नई भूमिका को मजबूत करेगा। अब्बासिद प्रतिनिधि की उपस्थिति केवल इसमें सहायता करती है।' मलिक अयाज ने कौसरी को देखा। वह थकी हुई लग रही थी, उसकी आँखों के नीचे काले घेरे थे। जैसे वह कई दिनों से सोई न हो। वह समझ सकता था कि क्यों। 'आपके समर्थन के लिए धन्यवाद,

महान रानी।' महमूद हँसा। 'आप दोनों को एक-दूसरे से सहमत होते देखना अजीब है।' 'अयाज के साथ मेरे मतभेद जो भी हों,' कौसरी जहान ने मुस्कुराते हुए कहा, 'हम दोनों वही चाहते हैं जो आपके लिए सबसे अच्छा है, पति

महमूद ने पूछा, "लेकिन ज़ुबैर के उस अनुरोध के बारे में क्या, जिसमें उसने मुझसे अब्बासियों को फ़ारसी बुईद उत्पीड़न से मुक्त कराने में मदद करने को कहा था? तुम दोनों इस बारे में क्या सोचते हो?"

मलिक अयाज़ ने कहा, "मैं कहता हूँ कि यह एक अवसर है, महाराज।" "अरब ने
अब्बासी खलीफा—दरअसल, जो जल्द ही पूर्व खलीफा बनने वाला था—का एक पत्र जिसमें तुम्हें अपने क्षेत्र पर आक्रमण करने और फारसी बुईदों को हराने का निमंत्रण दिया गया है। इससे तुम्हें उनकी भूमि पर आक्रमण करने का एक कानूनी बहाना मिल जाता है।' बेशक, महमूद को यह नहीं पता था कि अब्बासियों का वह कथित पत्र जाली था।

"उस निमंत्रण का क्या करना है, यह हम बाद में तय करेंगे, मेरे सुल्तान," कौसरी ने कहा। "मैं अभी अरबों पर हमला नहीं करूँगा। वे अपने फ़ारसी अधिपतियों से आज़ाद होना चाहते हैं—यह समझ में आता है। लेकिन इससे हमें क्या फ़ायदा? फ़ारसी बुईद बहुत मज़बूत हैं। और हमारे अपने प्रशासन में भी बहुत से फ़ारसी हैं, जिनमें प्रधानमंत्री ख़्वाजा हसन भी शामिल हैं। अगर हम बुईदों पर आक्रमण करते हैं, तो हम उनकी वफ़ादारी पर कभी पूरा भरोसा नहीं कर पाएँगे। ये फ़ारसी हमेशा एकजुट रहते हैं।"

"हम्म," महमूद ने कहा। उसकी नज़र से यह बात छिपी नहीं रही कि मलिक अयाज़ अपनी रानी द्वारा फारसियों के विरुद्ध युद्ध के विरोध से नाखुश लग रहा था।

कौसरी जहां ने आगे कहा, 'इन सबका समय आएगा, मेरे पति।'
'लेकिन अभी के लिए, मुझे लगता है कि जब आपको खलीफा घोषित किया जाएगा तो जामा मस्जिद में आपके नाम से अरब द्वारा नमाज पढ़वाना आपके लिए ही फायदेमंद होगा।'

Machine Translated by Google

महमूद लाहौर के राजा की ओर मुड़ा। "अच्छा, अयाज़, लगता है मेरी बीवी ने मुझे तुम्हारे विचार पर राज़ी कर लिया है। उम्मीद है तुम उसके एहसानमंद होगे।" मलिक अयाज़ हँसने लगा, उसके चेहरे पर एक धाँसू आदमी का घमंड साफ़ झलक रहा था। "मुझे यकीन है कि रानी और मैं जल्द ही एक-दूसरे से लड़ने के नए बहाने ढूँढ़ लेंगे।"

लेकिन फिलहाल हम दोनों आपके खलीफा बनने के लिए प्रतिबद्ध हैं, मेरे सुल्तान।'

महमूद हँसा और मलिक अयाज़ की पीठ पर ज़ोर से थपथपाया। इससे दुबले-पतले अयाज़ का संतुलन कुछ देर के लिए बिगड़ गया, जिससे महमूद और भी ज़ोर से हँसने लगा। कौसरी भी हँसने लगी। और महमूद देख सकता था कि मलिक अयाज़ कौसरी को बमुश्किल छिपी हुई झुंझलाहट से घूर रहा था, और फिर लाहौर के बादशाह भी उसके साथ हँस पड़े।



"समय हो गया है!" जुंदीन-उल-दीन गार्ड फैज़ फुसफुसाया। "हम दोपहर से तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं!" रात हो चुकी थी और वेश्यालय वाली सुनसान सड़क पूरी तरह सोई हुई थी।

तैनात गार्डों की जगह लेने आए नए गार्डों ने कोई प्रतिक्रिया देने की ज़हमत नहीं उठाई। उनमें से एक ने बस आलस से अपना हाथ बढ़ाया। फैज़ ने अपने साथी गार्डों की तरफ़ देखा, गालियाँ दीं और हस्ताक्षरित वारंट थमा दिया। नए गार्ड ने दस्तावेज़ पर नज़र डाली। सब कुछ व्यवस्थित लग रहा था; वे इस वारंट का इस्तेमाल उस आलीशान वेश्यालय में आने-जाने वाले किसी भी व्यक्ति की जाँच के लिए कर सकते थे।

फ़ैज़ और उनके साथी तुरंत बाहर निकलने लगे।
घर। वे पहले से ही देर हो चुकी थी।

जैसे ही वे सड़क से दूर एक छोटी सी गली में मुड़े, उन्हें एक भारी-भरकम अफ़्रीकी मूल के आदमी ने रोक लिया। कम से कम छह फुट तीन इंच लंबा। विशालकाय, लहराती मांसपेशियों वाला, जो उसकी जुंदीन-उल-दीन वर्दी को पूरी तरह से भर रहा था। वर्दी पर निशान साफ़ दिखा रहे थे कि वह एक कैप्टन था।

फैज़ ने सलामी दी, एक अनुशासित सिपाही होने के नाते उसने यह स्पष्ट प्रश्न नहीं पूछा: इतनी देर रात को इस सुनसान गली में जंदुइन-उल-दीन कप्तान अकेले क्या कर रहा था?

Machine Translated by Google

लेकिन स्वाभाविक सवाल उठने का और समय नहीं था। पाँच सिपाही भारी डंडे लिए हुए, परछाईं से निकले। फैज़ और उसके साथियों पर पीछे से भारी लाठियाँ बरसाई गईं। सीधे उनके सिर पर।

उनकी खोपड़ियाँ टुकड़ों में बिखर गईं, मस्तिष्क के टुकड़े गाढ़े गुलाबी-भूरे पेस्ट की तरह बाहर निकल रहे थे।

सब मर गए। बहुत कम खून। लगभग कोई आवाज़ नहीं।

'बहुत बढ़िया काम किया,' विशालकाय अफ्रीकी मूल के कप्तान ने अपने आदमियों से फुसफुसाते हुए कहा,
अपनी स्पष्ट रूप से खराब फिटिंग वाली वर्दी को ठीक करते हुए, जो कुछ साइजों में बहुत तंग थी।

'धन्यवाद, कैप्टन हकीम।' हकीम ने गली के कोने से

वेश्यालय के दरवाजे की ओर देखा।
सुरक्षित घर जहां नरसिम्हन और उसका गिरोह छिपा हुआ था।

वहाँ कुछ भी अप्रिय नहीं था। कोई आवाज़ नहीं। वहाँ कोई नहीं था, सिवाय रानी के चुराई हुई जुंदी-उल-दीन वर्दी पहने पहरेदारों के। अब वे ही सुरक्षित घर में आने-जाने के एकमात्र रास्ते पर नियंत्रण रखते थे। हकीम के सिपाही भी बारी-बारी से सुरक्षा गार्ड के रूप में तैनात होते थे, क्योंकि किसी भी जुंदी को सुरक्षित घर में आने का नया आदेश नहीं मिलता था—क्योंकि रानी के पहरेदारों के पास हस्ताक्षरित वारंट था। इसी तरह की रणनीति अपनाते हुए, उन्होंने पहले भी गुलाम शिविर में कई जुंदी सैनिकों को बदल दिया था; धार्मिक पुलिस की कमान और नियंत्रण प्रणाली सेना या शाही अंगरक्षकों जितनी अच्छी नहीं थी।

हकीम ने फिर सिर हिलाया। 'बहुत बढ़िया।' वह अपने आदमियों की

ओर मुड़ा और फुसफुसाया, 'इन आदमियों की वर्दी उतार दो।'
शवों को भीतरी दीवार के किनारे स्थित शहर के भट्टे में फेंक दो।'

अपने सैनिकों की बात मानकर, हकीम महल की ओर चल पड़ा ताकि तुरंत अपनी मालकिन, रानी कौसरी जहाँ को इस ऑपरेशन की खबर दे सके।



'सब ठीक है?' मलिक अयाज ने पूछा।

'हाँ, महाराज,' तालिब ने फुसफुसाया।

तालिब और अयाज अपने घर के बाहरी हिस्से में थे और सुल्तान के आदेश का सख्ती से पालन कर रहे थे कि इस्माइल के निजी स्टाफ के किसी भी सदस्य को उस घर के अंदर जाने की अनुमति नहीं दी जाएगी जहां गवर्नर-मुफ्ती इस्माइल को नजरबंद कर दिया गया था।

Machine Translated by Google

‘क्या सब कुछ पहुँचा दिया गया है?’ ‘जी हाँ, हुज़ूर।’ ‘कुछ

अनहोनी तो नहीं हुई?’ ‘नहीं,

महाराज,’ तालिब ने कहा। ‘नसरुल्लाह

और उनकी टीम स्थिर हैं, अपने खाली समय में प्रशिक्षण ले रहे हैं। जुंदीउद्दीन के पहरेदार नियमित रूप से बदल रहे हैं और हमेशा सतर्क रहते हैं।’ ‘अच्छा।’ ‘क्या मुझे ज़ुबैर के लिए कुछ लाना होगा?’ तालिब ने बनावटी अंदाज़ में पूछा।

अरब ज़ैन का नाम।

महमूद के निर्देशानुसार ज़ैन मलिक अयाज़ की हवेली में रह रहा था।

मलिक अयाज़ ने जवाब दिया, "नहीं। यहाँ सब नियंत्रण में है।" तालिब ने सिर हिलाया और जाने के
लिए उठ खड़ा हुआ।

'और भी...' अयाज़ ने लापरवाही से हाथ उठाते हुए कहा।

'जी हाँ, हुज़ूर?' 'परसों

सुबह तक घर पर ही रहो,' मलिक अयाज़ ने कहा। 'जब तक सब कुछ न हो जाए। किसी से मिलना मत। किसी से बात मत करना।'

तालिब होशियार आदमी था। वह समझ गया। तो यह सब अगली रात ही होगा। तार्किक। अगले दिन महमूद को खलीफा बनाया जाएगा।

शाम तक पूरा शहर जश्न और पार्टी में डूबा होता। और सुल्तान सबसे ज़्यादा पार्टी कर रहा होता। सुरक्षा व्यवस्था ढीली होती।

तालिब ने कहा, 'कल भी चांदनी रात से ठीक एक दिन पहले है, प्रभु।'

"यह एक अँधेरी रात होगी। समय इससे ज़्यादा सही नहीं हो सकता।" मलिक अयाज़
मुस्कुराया। "अपना ध्यान रखना, तालिब।" परीक्षा तय
हो चुकी थी। तालिब इसमें पास होगा या किसी जाल में फँसेगा, यह तो तय है।

अगले दिन दोपहर तक पता चल ही जाएगा। देखते हैं।



अगले दिन दोपहर हो चुकी थी।

"हम ख़त्म हो गए!" इस्माइल मलिक अयाज़ के साथ हवेली में घुसते हुए चीखा। गवर्नर-मुफ़्ती गुस्से से आगबबूला हो गया। घबराया हुआ, किसी कोने में फँसे जानवर की तरह।

महमूद का खलीफा के रूप में अभिषेक बिना किसी बाधा के संपन्न हुआ। इस्माइल ने जामा मस्जिद के चौक में अपना फतवा सुनाया , जैसा कि उन्हें करना चाहिए था।

Machine Translated by Google

सार्वजनिक रूप से यह राय देना कि एक गैर-अरब ख़लीफ़ा बन सकता है। और फिर सभी
अन्य समारोह पुजारियों और आदिवासी बुजुर्गों द्वारा आयोजित किए गए थे
उपस्थित। अब्बासिद दरबार का एक अरब, नाम की नमाज़ पढ़ रहा है
सुल्तान के इस बयान ने जनता पर गहरा प्रभाव डाला था। महमूद
उनके महल में जश्न शुरू हो चुका था।

मलिक अयाज़ ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उसने अपने नौकरों को घूरा, जो दौड़कर आए थे।
दूर, हवेली के भीतरी कक्षों में। अयाज़ ने शांति से इस्माइल का नेतृत्व किया।
अपने निजी कक्ष में ले जाओ। और तभी वह बोला। 'तुम्हें अपने निजी कक्ष में रखना सीखना होगा।
अपनी भावनाओं पर काबू रखो, पिताजी। मैंने तुमसे कितनी बार कहा है, दीवारें
कान हैं.'

लेकिन इस्माइल की समझ से परे था, 'क्या तुमने सही निर्देश दिए थे?
तालिब? और भारतीयों के बारे में? मुझे आश्चर्य है कि क्या आप हर चीज़ पर नज़र रखते थे। मेरे पास था
विशेष रूप से कहा कि...'

अयाज़ ने दृढ़ता से कहा, 'मैंने सभी उचित निर्देश दे दिए थे, पिताजी,'
इस्माइल ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'क्रोध में ऐसा कुछ मत कहो या करो जिस पर तुम्हें पछताना पड़े।
आपमें ऐसा करने की प्रवृत्ति है।'

अयाज़ की आवाज़ में कुछ ऐसा था कि इस्माइल पीछे हट गया। उसने साँस लेना शुरू कर दिया।
उसके दिल में अब भी डर समाया हुआ था।

'मुझे माफ़ करना, बेटा। लेकिन तुमने तो कहा था कि हत्या
आज दोपहर मस्जिद के ठीक बाहर हुई घटना... जब उनकी सुरक्षा
सबसे कमजोर होगा महमूद अब अपने महल में वापस आ गया है वह है ...
खलीफा अब... क्या... क्या हुआ?'

'मुझे नहीं पता। मुझे पता लगाना होगा।'

'मुझे यकीन है कि ये तालिब की गलती है! वो बेवकूफ है! वो बेवकूफ कभी नहीं हो सकता!'
भरोसा किया!'

अयाज़ ने गहरी साँस ली। क्योंकि अब उसे यकीन हो गया था। यकीन था कि तालिब हो सकता है
विश्वसनीय, क्योंकि उसने जानकारी किसी को नहीं दी थी। 'तालिब वफ़ादार रहा है
पिताजी, मैं दशकों तक आपके साथ रहूंगा।'

'वह बेवकूफ़ है! मैं तुमसे कह रहा हूँ, वह बेवकूफ़ है!'

'उतार-चढ़ाव ज़िंदगी का हिस्सा हैं। आपको गहरी साँस लेना, शांत रहना सीखना होगा।'
शांत रहें, मुक्कों का सामना करें और सही समय आने पर पलटवार करें।' मलिक अयाज़
उसने अभी-अभी वही बात कही थी जो उसकी प्यारी माँ ने एक बार उससे कही थी।

'मुझे अभी आत्म-सहायता पाठ की आवश्यकता नहीं है, अयाज़!'

'शांत रहो, पिताजी। मुझे पता लगाने दो कि क्या हुआ।'

'मैं मर चुका हूं, मैं तुमसे कहता हूं... मैं मर गया ...'

'पापा, कोई आपको कुछ नहीं करेगा। जब तक मैं सामने खड़ा हूँ, तब तक नहीं।'
आप में से।'

Machine Translated by Google

'मैं मर गया ...'

मलिक अयाज़ जाने के लिए मुड़ा।

'तुम कहाँ जा रहे हो?' इस्माइल घबराहट में चिल्लाया।

'मुझे महल जाना है, पिताजी। सुल्तान वहाँ मेरा इंतज़ार कर रहा होगा।'

'उससे पहले सुरक्षित घर जाओ। पता लगाओ कि वे कायर भारतीय कहाँ हैं।'
हैं! इन हिंदू हिजड़ों पर भरोसा नहीं कर सकते! ये जन्मजात कायर हैं। इन्हें मार डालो
इससे पहले कि वे कोई रहस्य उजागर करें।'

'मैं अब सुरक्षित घर नहीं जा सकती, पिताजी। आप यह जानते हैं। क्या आप?
क्या आप चाहते हैं कि मेरी जासूसी की जाए और मैं स्वयं मुसीबत में पड़ जाऊं?'

'नहीं, नहीं, बिल्कुल नहीं। 'लेकिन मैं ... तुम ही एकमात्र हो जिस पर मैं भरोसा कर सकता हूं।'
महल जाने से पहले तालिब से मिलूंगा।'

'मार डालो उसे! मार डालो उस बेवकूफ को! सब उसकी गलती है!'

मलिक अयाज़ ने सिर हिलाया। उसे पता था कि उसे तालिब के साथ क्या करना है।

'मुझे गजनी से बाहर निकालो, मेरे बेटे,' इस्माइल ने अपने बेटे का हाथ पकड़ते हुए विनती की।
कस कर। 'कृपया कल सूरज उगने से पहले... वरना मैं मर गया। मैं मर गया। महमूद अब खलीफा है। वह राज्य का मुखिया है और ...
...
धर्म। पूरे इस्लाम में उससे ज़्यादा शक्तिशाली कोई नहीं है
अभी। उसे अब किसी ग्रैंड मुफ़्ती की ज़रूरत नहीं है। मैं मर चुका हूँ...' ... मैं मर गया

'तुम अभी मरे नहीं हो। शांत रहो। मैं जल्द ही लौट आऊँगा।'

'मुझे गजनी से बाहर निकालो, मेरे बेटे। मैं तुमसे विनती करता हूँ।'

'पिता ...'

'प्लीज़! मुझे यहाँ से निकालो। प्लीज़...'

मलिक अयाज़ आखिरकार मान गए। 'मैं कुछ सैनिकों का इंतज़ाम करूँगा ताकि
जब अंधेरा हो और सुरक्षित हो, तो मैं तुम्हें शहर से बाहर ले जाऊँगा। मैं तुमसे एक जगह मिलूँगा।
'मिलन स्थल के बाहर.'

इस्माइल राहत से उछल पड़ा, 'शुक्रिया! बहुत-बहुत शुक्रिया, मेरे दोस्त!'
बेटा!'

मलिक अयाज़ जाने के लिए मुड़ा, 'अब यहीं रुको। मैं किसी को तुम्हारे साथ भेजता हूँ।'
मेरी अंगूठी ले लो। वह तुम्हें शहर से बाहर ले जाएगा।'

'और यज़ादेह भी,' इस्माइल ने बातचीत करते हुए कहा, क्योंकि तत्काल
उनकी राय में ख़तरा नियंत्रण में था।

मलिक अयाज़ ने नाटकीय अंदाज़ में आह भरी। लेकिन उसे पता था कि ऐसा होगा। उसे पता था
उसके पिता। इसीलिए अमल और यज़ादेह को हवेली में लाया गया था।
इसके अलावा, उनके स्वार्थ उसके साथ जुड़े हुए थे। क्योंकि किसी भी अन्य व्यक्ति के विपरीत,
ग़ज़नी में परिवार होने के कारण, अमल और यज़ादेह को कभी किसी के द्वारा प्रभावित नहीं किया जा सका
सुल्तान के प्रति वफ़ादार। मलिक अयाज़ यह जानता था। और वे उसके पिता को छुड़ाएँगे

Machine Translated by Google

जहाँ वह उन्हें ले जाना चाहता था। 'सिर्फ़ यज़ादेह को ही नहीं, अमल को भी। लेकिन तुम यहीं रहो जब तक मैं उन आदमियों को न भेज दूँ जो तुम्हें ग़ज़नी से बाहर ले जाएँगे।' 'ठीक है। लेकिन मैं यहाँ अकेला रहूँगा। अगर कोई...' 'मैं अपने

पहरेदारों को दरवाज़े पर छोड़ रहा हूँ,' मलिक अयाज़ ने अपने पिता की बात काटते हुए कहा।

'इस कमरे से बाहर मत निकलना। यहीं रहो, जहाँ सुरक्षित हो। सुरक्षित रहो, जब तक मेरा दूत प्रकट न हो जाए।' 'उसे जल्दी भेजो...' 'मैं भेजूँगा। लेकिन यह रात होने से पहले नहीं हो सकता। मुझे अभी जाने दो।'



'क्या सब कुछ ठीक है, महाराज?'

तालिब को इस बात पर हैरानी हुई कि उसे इस बैठक में बुलाया गया था। महमूद को खलीफा बनाए हुए अभी कुछ ही घंटे हुए थे। सूरज अभी भी नहीं डूबा था। और तालिब को लग रहा था कि हत्या देर रात, महल में ही होगी।

मलिक अयाज़ ने सहज भाव से उत्तर दिया, 'सब कुछ तय है, तालिब।'
आरामदायक सोफ़ा. 'बस कुछ घंटे और.'

तालिब ने खड़े-खड़े ही चारों ओर देखा। बाहरी दीवार से सटा विश्रामगृह छोटा और साधारण सा था। गुप्त बैठक के लिए एकदम सही जगह। उसे नहीं पता था कि यह घर मलिक अयाज़ का गुप्त मालिक था। 'मुझे यहाँ क्यों बुलाया गया है, मालिक? क्या आपको मुझसे कुछ करवाना है?' मलिक अयाज़ के शब्द धीमे और शांत थे। 'मैं चाहता हूँ कि आप शहर छोड़ दें।' तालिब ने भौंहें चढ़ाईं। वह कुछ पूछने ही वाला था। लेकिन वह झिझक गया।

'तुम बहुत होशियार आदमी हो, तालिब। तुम्हें पता होना चाहिए कि तुम्हारे लिए क्या अच्छा है।' 'हाँ... हाँ, हुज़ूर।' तालिब अभी भी इसके

निहितार्थ समझने की कोशिश कर रहा था। उसे यकीन था कि महमूद की हत्या हो जाएगी। वरना, मलिक अयाज़ और उससे पहले इस्माइल भी शहर छोड़कर भाग जाते। और जब महमूद मारा जाएगा, तो तालिब की भी भूमिका होगी। वह काम आएगा।

जब तक ...

मलिक अयाज़ अचानक उठे और तालिब को एक थैली थमा दी। नौकर
वह असमंजस में था, उसे समझ नहीं आ रहा था कि थैली खोले या नहीं।

'आप अंदर देख सकते हैं।' मलिक अयाज़ का स्वर दयालु था।

राजा की आवाज़ में कोमलता देखकर तालिब को आश्चर्य हुआ। उसने थैली खोली।
और अंदर एक हुंडी मिली । एक वचन पत्र। पैसे के लिए। नंबर

Machine Translated by Google

उस पर लिखा हुआ देखकर वह दंग रह गया। सोने की यह मात्रा उसके सपनों से भी परे थी।

तालिब का मुँह खुला का खुला रह गया। 'हुज़ूर?' 'मेरे आदमी
बाहर इंतज़ार कर रहे हैं,' मलिक अयाज़ ने कहा। 'तुरंत निकल जाइए। वे एक दिन के सफ़र में आपका साथ देंगे। उसके बाद, आप लाहौर जाएँगे। वहाँ हुंडी छुड़ाई जाएगी। और फिर आप गायब हो जाएँगे। अपना नाम और हुलिया बदल लीजिए। मैं आपको फिर कभी देखना या सुनना नहीं चाहता।'

तालिब इस उदारता को समझ नहीं पाया। यह तो उससे भी बड़ी नेमत थी। जितना उसने कभी सोचा भी नहीं था। बस एक चीज़ की कमी थी... क्या वह इसके बिना रह सकता था? लेक्रिन क्या उसके पास कोई विकल्प था?

मलिक अयाज़ ने तालिब के मन में चुपचाप चल रहे सवालों के जवाब दिए। लाहौर के राजा की आवाज़ कोमल थी, लेकिन उनका चेहरा भावहीन था। उदासीन।
"रेशमा मेरे कुछ सिपाहियों के साथ शहर के फाटक से एक घंटे की दूरी पर इंतज़ार कर रही है। अगर तुम अभी निकल जाओ, तो रात होने से पहले तुम आसानी से उसके पास पहुँच जाओगे।"
तालिब का अभिभूत हृदय अब और सहन नहीं कर सका। उसके सारे सपने, उसकी सारी कल्पनाएँ, पल भर में पूरी हो गईं। वह रोने लगा और मलिक अयाज़ के पैरों पर गिर पड़ा।

मलिक अयाज़ के चेहरे पर बनावटी मुँह बना हुआ था, जैसे ज़्यादातर अच्छे लोग किसी बहुत ज़्यादा कृतज्ञ व्यक्ति के सामने आने पर बना लेते हैं। उसने तालिब को ऊपर खींच लिया। "तालिब, वह तुम्हारे जैसे बूढ़े आदमी के लिए बहुत छोटी है। लेकिन अगर तुम दोनों खुश हो, तो मैं शिकायत करने वाला कौन होता हूँ?"

तालिब अभी भी स्तब्ध था। मलिक अयाज़ को अपनी दासी रेशमा से अपने प्रेम का पता कैसे चला? उसके अपने मालिक इस्माइल को भी इसका अंदाज़ा नहीं था। लाहौर के बादशाह की अंतरात्मा अविश्वसनीय थी। मानो उन्हें इसी तरह पाला-पोसा गया हो, इसी तरह प्रशिक्षित किया गया हो। ऐसा लग रहा था मानो
...
और फिर पर्दा उठ गया।

तालिब को अंततः समझ आ गया।
समझ गया कि वह शहर में क्यों नहीं आ सकता था। उसे क्यों जाना था। क्यों इसी पल जाना था—न पहले, न बाद में।
अंततः उसे समझ में आ गया कि मलिक अयाज ऐसा क्यों कर रहा था।
या अल्लाह, ...

तालिब की आँखों में फिर आँसू आ गए। उन नेमतों के लिए शुक्रगुज़ारी से नहीं जो उसे मिली थीं। अभी-अभी मिला था। लेकिन अपने उपकारकर्ता के प्रति सहानुभूति के कारण, उसने हाथ बढ़ाकर लाहौर के राजा का हाथ थाम लिया। और गहरी साँस ली।
करुणा में सिर हिलाते हुए। समझ में।
यह करना ही होगा। न्याय का यही एकमात्र रास्ता है।

Machine Translated by Google

दो बहुत ही चतुर पुरुष। स्त्रीत्व की बुद्धिमान अंतर्ज्ञान के साथ। और
पुरुषोचित न्याय की धार्मिक इच्छा।

'मेरे रब...' तालिब ने रोते हुए कहा। 'मैं... आप क्या...' तालिब ने एक नज़र डाली।
खुद को संभालने के लिए एक पल। 'तुम क्या कर रहे हो... तुम क्या करने वाले हो
जो करना है वह न्याय है। यह न्याय है।'

मलिक अयाज़ ने गहरी साँस ली। और फिर आँसू बहते हुए फुसफुसाया,
उसकी आँखों में देखा, 'उसका नाम सारा था।'

तालिब और भी ज़ोर से रोया। सारा। अरामी में कुलीन स्त्री। बात तो समझ में आई।

'सारा ...अल्लाह उसे आशीर्वाद दे...अल्लाह उसे आशीर्वाद दे, मेरे भगवान।'

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 25

पवित्र संधि

ग़ज़नी, अफ़ग़ानिस्तान

मलिक अयाज़ खिलखिलाकर हँसा और लड़खड़ाते हुए सुल्तान के बिस्तर से उतर गया। उसके हाथ में शराब का प्याला था। उसके पैर लड़खड़ा रहे थे।

'उफ़!' कुछ शराब महंगे कालीन पर गिर गई।

आधी रात से डेढ़ घंटा पहले का समय था।

"वापस आओ... बदमाश..." महमूद ने अपनी प्रेमिका को चिढ़ाया। "आओ..." मलिक अयाज़ ठिठक गया। अचानक सतर्क हो ... बी॰ए गया।

उसकी नशे की खुमारी लगभग
तुरन्त गायब हो गया।

'सुल्तान?' मलिक अयाज ने पूछा।

महमूद ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे ले रहा था। वह कई घंटों से शराब पी रहा था, नाच रहा था और वासना में डूबा हुआ था। महमूद जैसी तीव्र भूख वाला आदमी भी तृप्ति, शराब और थकान से सुस्त पड़ सकता है। मलिक अयाज़ ने उसकी शराब में जो शामक दवा मिलाई थी, उसकी गुणवत्ता और मात्रा भी उसे चरम पर पहुँचाने के लिए बिलकुल सही थी।

'खलीफा?' अयाज ने अब और ऊंची आवाज में पुकारा।

महमूद के खर्राटे बेरोकटोक जारी रहे। वह सचमुच बेहोश हो गया था।
शामक दवा का प्रभाव कम से कम दो घंटे तक रहेगा।

लाहौर के बादशाह ने जल्दी से कपड़े पहने। वह तेज़ी से भीतरी कक्ष के दरवाज़े तक गए, धीरे से उसका ताला खोला और बाहर निकल गए। फिर वह मुख्य कक्ष के प्रवेश द्वार की ओर बढ़े और दरवाज़ा ज़ोर से खोला। उन्होंने पहरेदारों को पहचान लिया। नए पहरेदार। उभरती हुई हुकूमत के प्रति पूरी तरह वफ़ादार। 'तुम दोनों अंदर के दरवाज़े पर इंतज़ार करो। बाकी लोग मुख्य कक्ष के बाहर इंतज़ार करो।'

'हाँ, प्रभु,' लंबे सिपाही ने उत्तर दिया।

'किसी को भी अंदर या बाहर नहीं जाना है। अगर सुल्तान हिले, तो तुममें से कोई मुझे ढूँढ़ने दौड़कर आएगा।' 'जी हाँ, मालिक।'

Machine Translated by Google

'वह कहाँ है?' अयाज़ ने पूछा।
"उसके कमरे में।" मलिक

अयाज़ ने सिर हिलाया और तेज़ी से चलने लगा। समय बहुत कम था।



हकीम ने दूर से ही मलिक अयाज़ को अपनी ओर आते हुए पहचान लिया। लगभग अमावस्या वाली इस रात में अँधेरा था और देर हो चुकी थी। हॉल के आलों में जलती हुई मशालों से थोड़ी-बहुत रोशनी फैल रही थी, लेकिन पर्याप्त नहीं। हालाँकि, मलिक अयाज़ की चाल तुरंत पहचानी जा सकती थी।

'मेरे प्रभु,' वफादार हकीम ने अपना सिर झुकाते हुए कहा।

मलिक अयाज़ ने आश्चर्य से भौंहें चढ़ाकर कहा, 'तुमने कभी नहीं...'
हकीम, तुमने मुझे पहले भी ऐसा कहा था।'

हकीम ने अपना सिर और भी झुका लिया। 'अभी तक सही समय नहीं था।' 'और अब है...' हकीम ने सहमति जताई। 'और अब है, हुज़ूर।' 'वह अंदर है?' 'हाँ, हुज़ूर।

वह प्रार्थना कर रही है।' मलिक अयाज़ ने सिर हिलाया और तेज़ी से ग़ज़नी
की रानी के कक्ष में चला

गया।



मलिक अयाज़ कौसरी जहाँ के कमरे में अंदर जाते हुए धीमे-धीमे मंत्रोच्चार की आवाज़ सुन सकता था। वह पहले कभी अंदर नहीं गया था। जाने की कोई वजह भी नहीं थी।

लेकिन वह ठीक-ठीक जानता था कि कक्ष की संरचना और व्यवस्था कैसी है। उसे हर छोटी-बड़ी बात पता थी। उसे इसके बारे में कई बार बताया जा चुका था। इसलिए उसके कदम आत्मविश्वास और दृढ़ता से चल रहे थे।

वह गद्दियों और सोफों के आगे से होते हुए भीतरी कमरे के एक कोने में बने आले की ओर बढ़ा। हल्के साटन के पर्दे हिल रहे थे, रात की हवा दक्षिण दिशा वाली खिड़की से अंदर आ रही थी, जिससे कमरा और भी ठंडा हो रहा था।

Machine Translated by Google

अयाज़ उस कोने तक गया, जहाँ से मंत्रोच्चार की आवाज़ आ रही थी।
से। वह खूबसूरत रानी को ध्यान मुद्रा में जमीन पर बैठे देख सकता था, उसके लहराते भूरे बाल
उसकी पीठ पर लहरा रहे थे। उन्होंने देखा कि एक इस्लामी प्रार्थना चटाई को बड़े करीने से लपेटा गया था
और सम्मानपूर्वक दीवार के खिलाफ रखी गई थी। सुल्तान महमूद की असाधारण और सोने की परत वाली
प्रार्थना चटाई के विपरीत, रानी से संबंधित यह चटाई सरल और सादा थी, जैसा कि धर्मनिष्ठ किसानों
के पास होती है। एक आला था जिसका सामना कौसरी जहाँ कर रही थी। यह आमतौर पर एक स्लाइडिंग दीवार
से ढका होता था जो सतह के साथ समतल होती थी, इस तरह से कि जब दीवार बंद हो जाती थी, तो यह
नोटिस करना लगभग असंभव था कि वहाँ एक उद्घाटन था। लेकिन इस बार, स्लाइडिंग दीवार खुली थी। और
इसके पीछे छोटे छिपे हुए आले में एक छोटी मूर्ति दिखाई दी।

दक्षिणामूर्ति । दक्षिणमुखी मूर्ति।

कौसरी ने मुड़कर नहीं देखा। वह प्रार्थना करते समय विचलित नहीं होती थी।
मलिक अयाज़ विनम्रता से इंतज़ार कर रहा था। धीमे मंत्र को सुन रहा था। वह इसका मतलब जानता था। लेकिन
उसने इसे पहले कभी पारंपरिक मंत्रोच्चार के रूप में नहीं सुना था।
कौसरी ने अपनी आवाज़ लगभग फुसफुसाहट जैसी ही रखी। उसे ऐसा करना ही था। लेकिन लाहौर के
बादशाह उसकी आवाज़ साफ़ सुन सकते थे।

ओम ... नमः... शिवाय ...' नमः...

ओम ... शिवाय ...' नमः... शिवाय ...'

ॐ वह ...

जानता था कि उसे एक सौ आठ बार जाप पूरा करना होगा।
उसे इंतज़ार करना होगा। तभी उसकी नज़र कमरे में मौजूद दूसरे व्यक्ति पर पड़ी। एक विशालकाय, भारी-भरकम
व्यक्ति। भारत के तुर्की कसाई, खूँखार अबू क़ासिम से थोड़ा बड़ा। एक पल के लिए, अयाज़ का दिल डर के मारे
धड़क उठा।
और फिर, लगभग तुरंत ही, उसे एहसास हुआ कि वह कौन था, और वह मुस्कुराया।

दैत्य ने धीरे से फुसफुसाया, 'लाहौर के बादशाह, नमस्कार।' मलिक अयाज ने सिर
हिलाया और धीरे से कहा, 'नमस्ते, नसरुल्लाह।' नरसिंह को हकीम के पहरेदारों की
मदद से महल के कौसरी वाले हिस्से में छिपा दिया गया था, जो जंदीन-उल-दीन के वेश में सुरक्षित घर में
तैनात थे।

जैसे ही उन्होंने कोठरी से हलचल सुनी, उनकी बोलती बंद हो गई।
कौसरी जहाँ आगे झुकीं और अपना सिर ज़मीन से लगा लिया। उन्होंने मूर्ति के चरण छुए, आँखें बंद ही थीं। आख़िरकार, कुछ पल बाद,
वह उठीं और मुड़ीं। और उन दोनों आदमियों को देखकर मुस्कुराईं।

'नमस्ते, बेनीथ,' मलिक अयाज़ ने बड़े के लिए कश्मीरी शब्द का उपयोग करते हुए कहा
वह कौसरी जहाँ के पास गया, झुका और उसके पैर छुए,

Machine Translated by Google

रानी के मूल कश्मीर की परंपराओं के प्रति सम्मान प्रदर्शित करना।

कौसरी ने अयाज़ के सिर पर हाथ रखा, "लंबी उम्र जियो और खूब तरक्की करो, ज़माओ।"
उसने भाई के लिए जॉर्जियाई शब्द का प्रयोग करते हुए कहा।

मलिक अयाज़ मुस्कुराया। 'आखिरकार रात आ ही गई...' 'आखिरकार रात आ ही गई...'

'इससे बेहतर रात और क्या हो सकती थी,' नरसिंह ने

कहा। 'मासिक शिवरात्रि।' भगवान शिव के भक्तों का सबसे बड़ा त्योहार भारतीय फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को होता है। उस रात

को महाशिवरात्रि कहा जाता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है शिव की महान रात्रि। यह सर्वविदित है। कम ही लोग जानते हैं
कि एक मासिक शिवरात्रि भी होती है।

प्रत्येक माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को महादेव के अनन्य भक्त मासिक शिवरात्रि के रूप में मनाते हैं।

मलिक अयाज़ ने वही पूछा जो वह हमेशा से पूछना चाहता था। और वह जानता था कि वह ज़रूर पूछेगा।
इस रात के बाद फिर कभी मौका नहीं मिलेगा। 'महारानी, आप एक कट्टर मुसलमान हैं। मुझे पता है। फिर आप शिव की भी पूजा क्यों करती हैं?'

कौसरी मुस्कुराई। "मेरा पूरा नाम कौसरी जहाँ मट्टू है। मेरे पिता ने इस्लाम धर्म अपना लिया था। लेकिन हम कश्मीरी मुसलमान साफ़ हैं। हमने सिर्फ़ अपना धर्म बदला है। हमने अपने पूर्वजों को नहीं बदला। मैं अल्लाह और भगवान शिव, दोनों की पूजा करती हूँ। ईश्वर के सभी रूप एक ही हैं।"

नरसिम्हन ने कहा, 'तुर्क इससे सहमत नहीं दिखते।'

मलिक अयाज ने कहा, 'ये तुर्क इस्लाम को नहीं समझते।'

'क्या हमारा आदमी सो गया है?' कौसरी जहाँ ने अपने काम पर ध्यान केंद्रित करते हुए पूछा,
क्योंकि समय कम था।

"हाँ," मलिक अयाज़ ने नरसिंह की ओर मुड़ते हुए कहा। "क्या तुम्हें यकीन है?" मलिक अयाज़ और नरसिंह के बीच एक खास रणनीति पर लंबी बहस हुई थी। अयाज़ ने सुझाव दिया था कि नरसिंह महमूद को तब मार डाले जब वह अभी भी नशे में सो रहा हो। नरसिंह ने साफ़ मना कर दिया था। एक धार्मिक योद्धा होने के नाते, वह सोते हुए दुश्मन पर हमला नहीं करता। इसके अलावा, नरसिंह को राजेंद्र चोल ने निर्देश दिया था कि वह महमूद को यह संदेश दे कि उसे क्यों मारा जा रहा है। इसलिए सुल्तान का जागना ज़रूरी था।

'हाँ। बिल्कुल पक्का।' नरसिम्हन ने साफ़ कहा। 'मैं उसके जागने का इंतज़ार करूँगा। तुमने कहा था कि वो रात में कई बार टॉयलेट जाने के लिए उठता है...' 'ठीक है। गार्ड तुम्हें अंदर आने देंगे।' नरसिम्हन ने सिर हिलाया।

'वह बहुत जोर से चिल्लाता है।'

Machine Translated by Google

नरसिम्हन ने इस बेकार सी लगने वाली जानकारी पर नाराजगी जताई।

मलिक अयाज़ ने स्पष्ट किया, 'पहले उसका जबड़ा तोड़ना सुनिश्चित करो।' 'उसकी आवाज़ें इतनी रात में क्या होगा, ये तो दूर की बात है।'

नरसिम्हन हल्के से मुस्कुराए। 'हर छोटी-छोटी बात पर ध्यान देना।' मलिक अयाज़ मुस्कुराए।

'जिनके पास शारीरिक शक्ति है, वे तो बस यूँ ही काम चला लेते हैं। लेकिन जो अपनी बुद्धि पर भरोसा करते हैं, जैसे मैं, उन्हें हर छोटी-बड़ी बात पर गौर करना चाहिए, ताकि हमें ऐसी चुनौती का सामना न करना पड़े जो हमारी शारीरिक क्षमता से परे हो।' नरसिम्हन अब पूरी तरह मुस्कुराए।

मलिक अयाज ने कहा, 'और अपने सम्राट राजेंद्र चोल के मित्र सम्राट भोजदेव परमार से कहो कि काकेशियन ने अब अपना कर्ज चुका दिया है।' नरसिंह का मुंह थोड़ा खुला का खुला रह गया, क्योंकि उसे आखिरकार एहसास हुआ कि यह कभी नहीं हुआ था।

भोजदेव परमार का संपर्क ग़ज़नी में था। कॉकेशियन ने उन पर पहले भी हमला किया था। यह साफ़ ... ज़ाहिर था। जॉर्जिया काकेशस पर्वतों के क्षेत्र में है।

नरसिम्हन मुस्कुराए और बोले, 'धन्यवाद, लॉर्ड अयाज।' 'धन्यवाद, जनरल नरसिम्हन,' मलिक अयाज ने मुस्कुराते हुए कहा।

नसरुल्लाह का वास्तविक नाम.

नरसिंह धीरे से हँसा। दोनों आदमी गंभीरता से कौसरी जहाँ की ओर मुड़े।

मलिक अयाज़ जानता था कि जवाब क्या होगा। लेकिन उसे पूछना ही था।

"मेरी रानी, क्या आपको यकीन है? ऐसे तरीके हैं जिनसे..." कौसरी जहाँ ने लाहौर के राजा को बीच में ही टोक दिया। "इसे फिर से शुरू मत कीजिए, मैं इसे जारी नहीं रखना चाहती... मेरा मन और मेरा दिल ... अयाज़..." ...

मैंने सुलह कर ली।'

कौसरी जहां मट्टू का जब अपहरण हुआ था, तब वह पहले से ही शादीशुदा थीं।

महमूद ग़ज़नी। कश्मीर में फिरदौस मट्टू से विवाहित। वह उसे कभी नहीं भूल पाएगी। वह उसे कभी नहीं भूल सकता था। जब तुर्क बादशाह ने भारत पर अपने एक हमले के दौरान कश्मीर के लोहकोट से उसका अपहरण कर लिया था, तब फिरदौस ने ग़ज़नवी सेना का पीछा किया था, क्योंकि महमूद के जिहादी अपने वतन लौट रहे थे। फिरदौस खुज़दार के पास बस गया, और लोहकोट में अपनी संपत्ति बेचकर मिले पैसों से वहाँ खेती की ज़मीनें खरीद लीं।

कौसरी और उसने एक गुप्त एन्क्रिप्टेड कबूतर संचार प्रणाली स्थापित की। उन्होंने कई वर्षों तक धीरे-धीरे ऐसे योद्धाओं की तलाश की जो महमूद की हत्या कर सकें, ताकि कौसरी अपने सच्चे प्यार के पास वापस लौट सके। इसीलिए कौसरी ने सोमेश्वर के साथ एक गुप्त गठबंधन स्थापित किया;

Machine Translated by Google

वह 'शाही परिवार का गद्दार' था जिसने गुमनाम रूप से गुजराती व्यापारी को महमूद से बदला लेने के उसके अभियान में मदद करने का वादा किया था। हालाँकि कौसरी का प्रारंभिक उद्देश्य फिरदौस लौटना था, लेकिन गजनी में रहते हुए उसने तुर्कों को गहराई से समझा। उसने महसूस किया कि केवल महमूद को ही राक्षस समझना स्थिति की अपर्याप्त समझ थी। गजनी में, खासकर कुलीन वर्ग में, उसके जैसे कई और लोग थे। वे पागल कुत्तों की तरह थे जो केवल काटना जानते थे। महमूद को मारने का मतलब केवल यही था कि उसके जैसा ही एक और पागल कुत्ता उसकी जगह ले लेगा। और अगर हत्या का संदेह कौसरी पर पड़ा, तो वह जानती थी कि गजनवी प्रतिशोध में उसके प्रिय कश्मीर को जला डालेंगे।

इसलिए, उसके विवेकशील मन ने उसे यह समझा दिया था कि उसकी ज़मीन तभी बच सकती है जब सुल्तान के साथ उसकी भी हत्या कर दी जाए। जब उसे कुछ दिन पहले ही मलिक अयाज़ से फिरदौस की मौत की खबर मिली, तो उसका दुःखी मन उसके विवेकशील मन से सहमत हो गया।

'यह सबसे अच्छा तरीका है... यही एक रास्ता है ... पागल कुत्तों से बातचीत करना नामुमकिन है। पागल कुत्तों में डर पैदा करना नामुमकिन है। शिक्षा और संस्कृति के ज़रिए पागल कुत्तों को सभ्य बनाना नामुमकिन है। उन्हें आप पर हमला करने से रोकने का एक ही तरीका है कि उन्हें एक-दूसरे पर हमला करने पर मजबूर किया जाए। यही तो योजना थी। गृहयुद्ध शुरू करने की।'

जामा मस्जिद के पिछले ग्रैंड मुफ्ती ने कौसरी की बात से सहमति जताई थी। ग़ज़नवी का विश्लेषण। इसीलिए वह महमूद के विरुद्ध षड्यंत्र में शामिल होने के लिए तैयार हो गया था। सोमेश्वर ने राजेंद्र चोल को जो पत्र दिखाया था, उस पर उसकी मुहर थी, साथ ही कौसरी द्वारा अंकित शाही मुहर भी। यह पिछले ग्रैंड मुफ़्ती की हत्या और इस्माइल को उस पद पर बिठाए जाने से पहले की बात है।

'यह सबसे अच्छा तरीका है...' नरसिम्हन ने सहमति जताई।
तीनों ने एक दूसरे का हाथ पकड़ लिया।

यह वह रात होगी जब वे सभी अपना धर्मी प्रतिशोध लेंगे।

पत्नी.

बेटा.

भक्त.

अंततः तीनों को न्याय मिलेगा।

Machine Translated by Google

"हम सर्व-विजेता तुर्क हैं," ग़ज़नवी सैनिक बड़बड़ाया। "हमें इन टिड्डी-भक्षी अरबों की बात क्यों माननी है?"

जामा मस्जिद लगभग वीरान थी। आधी रात से एक घंटा पहले का समय था। दिन भर के समारोहों और उसके बाद के उत्सवों ने मस्जिद के अधिकांश कर्मचारियों को थका दिया था। पाँच सैनिकों की एक छोटी-सी सुरक्षा टीम बची थी। उन्हें अरबों के नेतृत्व वाले प्रतिनिधिमंडल की मदद करने का आदेश दिया गया था, क्योंकि वे मस्जिद में कुछ नमाज़ें अदा कर रहे थे। अरबों का दावा था कि यह उस मस्जिद में होने वाली एक मानक रस्म थी जहाँ किसी खलीफा का अभिषेक हुआ हो। और कोई भी तुर्क उनसे बहस नहीं कर सकता था, क्योंकि उनमें से किसी को भी अरब रस्मों के बारे में पूरी जानकारी नहीं थी। लेकिन ग़ज़नवियों के बीच इस पर प्रतिक्रियाएँ अलग-अलग थीं।

कुछ लोग अरबों के अनुष्ठान करने के अधिकार का सम्मान करते थे, क्योंकि वे मूल मुसलमान थे—आखिरकार, पहले मुसलमान भी। लेकिन कुछ अन्य, जैसे यह ग़ज़नवी सैनिक, अरबों को दिए जा रहे अनावश्यक सम्मान से नाराज़ थे। क्योंकि अरब अब कोई योद्धा जाति नहीं रहे थे; उनकी रुचि विज्ञान और संस्कृति में ज़्यादा थी। और ज़्यादातर ग़ज़नवी तुर्क एक ही चीज़ का सम्मान करते थे: विजय और संहार की उत्कृष्ट कला।

'चुप रहो, दाऊद,' एक और सिपाही फुसफुसाया। 'हो सकता है वे तुम्हें सुन लें।' 'यहाँ अरब के पचास सिपाही हैं।' दाऊद बड़बड़ाता रहा।
'उन्हें हमारी क्या ज़रूरत है? चलो घर चलते हैं।'

'दाऊद!' शांत रात्रि में दूर से एक आदेश उनके कानों में पड़ा।

दाऊद ने आह भरी और सलाम किया, फिर धीरे-धीरे अरब की ओर बढ़ा। बाकी चार ग़ज़नवी सैनिक भी उसके पीछे-पीछे चल पड़े।

'मुझे आप सभी की भीतरी तिमाहियों में ज़रूरत है,' अरब ने कहा। 'कुछ एक रस्म के लिए इंतज़ाम करने की ज़रूरत है। यह आखिरी जगह है जहाँ से सभी जा सकते हैं।' 'आपकी मर्ज़ी, ज़ुबैर ⋯ फिर आप साहब,' दाऊद ने कहा,

उसे खुशी हुई कि वह और उसके दोस्त अंततः उन्हें ड्यूटी से मुक्त कर दिया जाएगा और वे घर जा सकेंगे।

ज़ैन हुसैन ने सिर हिलाया। वह मुड़ा और तुर्कों को उस ओर ले जाने लगा। मस्जिद के मुख्य भवन के किनारे, भीतरी कक्षों में। यहीं पर महमूद दिन में पहले इंतज़ार कर रहा था, जब उसके अभिषेक की रस्में तैयार हो रही थीं। इसलिए ग़ज़नवी सैनिकों को यह मानने का कारण था कि शायद अरबों को वहाँ भी कुछ काम करना है।

दरवाज़ा पहले से ही खुला था। दरवाज़े के दूर सिरे पर एक जलती हुई मशाल थी। ज़ैन दरवाज़े के बाहर, एक तरफ़ इंतज़ार कर रहा था, और ग़ज़नवी सैनिकों को कमरे में दाखिल होने के लिए अपने पास से गुज़रने दिया।

ग़ज़नवी लोगों की पहली ग़लती यही थी। उन्हें शक हो जाना चाहिए था। वे कोई औरतें नहीं थीं जिनकी सेवा कोई सज्जन कर रहा था,

Machine Translated by Google

कौन उन्हें पहले दरवाज़ा इस्तेमाल करने देगा। वे अपने कमांडर का अनुसरण करने वाले सैनिक थे। एक कमांडर अपने सैनिकों को जाने देने के लिए कभी नहीं रुकता। एक नेता हमेशा आगे बढ़ता है। आप पीछे से नेतृत्व नहीं करते।

ग़ज़नवी लोगों की दूसरी गलती यह थी कि वे अंदर घुसते ही सतर्क नहीं रहे और दरवाज़े के पीछे नहीं देखे। मानक सैनिक प्रशिक्षण में यह नियम है कि अँधेरे कमरे में प्रवेश करते ही दरवाज़े के पीछे के क्षेत्र की जाँच और सफाई कर लें। आप अंदर नहीं जाना चाहते और पीछे से घात लगाकर हमला नहीं करना चाहते।

और ठीक वैसा ही हुआ। एक तेज़ घात। हर ग़ज़नवी सैनिक पर दो भारतीय सैनिक तैनात। कत्लेआम तेज़ और प्रभावी था।
चुपचाप।
सहज। लगभग बहुत आसान।

विजयन कमरे के बाहर इंतज़ार कर रहे ज़ैन की ओर मुड़े और फुसफुसाए, 'हो गया।' ज़ैन तुरंत अंदर आया और कागज़ की तहों से एक चर्मपत्र निकाला।

उसका लबादा। मलिक अयाज़ और नरसिम्हन के साथ पहले ही इसकी विषय-वस्तु पर चर्चा हो चुकी थी।
दस्तावेज़ कमरे की दूर वाली दीवार पर चिपका हुआ था।
इस पर अरबी और फ़ारसी दोनों भाषाओं में एक सरल संदेश लिखा हुआ था।

हमेशा एक अरब। सिर्फ़ एक अरब।
सभी सच्चे मुसलमान, चाहे वे तुर्क, फ़ारसी या अरब हों, यह बात सच मानते हैं।
जो असहमत हैं वे मुर्तद हैं।
और मुर्तद को सिर्फ एक ही सजा मिलनी चाहिए।
मौत. मौत. मौत.
जो लोग इस्लाम का पालन करते हैं वे इस्लाम के लिए हत्या करने या शहीद होने को तैयार हैं।

इस्लामी न्याय का प्रमाण देखिए।

मुर्तद अरबी भाषा में धर्मत्यागी के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द था । लेकिन इस सार्वजनिक पत्र में जिस चतुराई से शब्द का इस्तेमाल किया गया था, वह था 'शहीद'। अरबी और फ़ारसी, दोनों में शहीद के लिए शब्द शाहिद था , जो महमूद के बड़े जुड़वां बेटे का भी नाम था। सभी जानते थे कि शाहिद शाही परिवार का सबसे धार्मिक व्यक्ति था। छोटा जुड़वां, मोहम्मद, रुचियों और आदतों के मामले में अपने पिता महमूद जैसा ही था, और सभी जानते थे कि वह सुल्तान और उसकी रानी कौसरी जहाँ के प्रति वफ़ादार था।

उत्तम।

लोग यह समझें कि शायद यह कट्टर धार्मिक और कट्टर सिद्धांतवादी शाहिद था, जो अपने भ्रष्ट पिता के खिलाफत के प्रयास से आहत था और महमूद को मरवाने के लिए अरब अब्बासियों से मिल गया था। अरबी में शाहिद का अर्थ शहीद के अलावा गवाह भी होता है । यह

Machine Translated by Google

फ़ारसी में ऐसा नहीं था। इसलिए, आखिरी पंक्ति में 'गवाह' शब्द के इस्तेमाल से साज़िश और भी साफ़ हो गई।

उम्मीद थी कि शाहिद और उसके छोटे जुड़वां भाई मोहम्मद के बीच गृहयुद्ध छिड़ जाएगा।

'और अब, महादेव की ओर,' पुलकित ने फुसफुसाते हुए कहा।
'हाँ,' विजयन ने धीरे से कहा। 'भगवान के लिए...'

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 26

प्रभु को पुनः प्राप्त करना

ग़ज़नी, अफ़ग़ानिस्तान

विजयन के आदेशानुसार, ज़ैन और दसरना के नेतृत्व में तीस सैनिक जामा मस्जिद के मुख्य द्वार पर तैनात थे, ताकि आने-जाने वालों को भगाया जा सके। लेकिन इतनी रात में मस्जिद में कोई नहीं आया। ज़्यादातर लोग सो रहे थे। और जो नहीं आए थे, वे मस्जिद की लंबी परछाइयों से दूर, जश्न मना रहे थे और साफ़ तौर पर गैर-धार्मिक गतिविधियों में लगे हुए थे।

विजयन और पुलकित, बीस सैनिकों के साथ, मस्जिद के मुख्य प्रांगण में, प्रांगण से मुख्य प्रार्थना कक्ष की ओर जाने वाली मुख्य सीढ़ी के पश्चिमी छोर पर, उनके ठीक पीछे, केंद्रीय कुंड में, जहाँ श्रद्धालु वज़ू करते थे, मौजूद थे। मलिक अयाज़ के निर्देश स्पष्ट थे। इस्माइल ने पुनर्निर्माण परियोजना की देखरेख की थी। वह सभी वास्तुशिल्प डिज़ाइनों और छोटी से छोटी बारीकियों से वाकिफ था। अयाज़ ने इस्माइल से जानकारी प्राप्त की थी और उसे भारतीयों तक पहुँचाया था।

'आंगन से छठी सीढ़ी पर,' विजयन ने अपनी टीम का नेतृत्व करते हुए फुसफुसाते हुए कहा।
वे छह सीढ़ियाँ चढ़ गये।
'दाहिनी ओर पंद्रह कदम।' चोल-परमार
दस्ता उनके पीछे-पीछे चल पड़ा, उनके दिल तेजी से धड़क रहे थे।
सैनिकों के बीच धीमी गड़गड़ाहट शुरू हो गई थी।
'नमः शिवाय ...' 'नमः
शिवाय ...' 'नमः शिवाय ...'
पुलकित और विजयन जहाँ
पहुँचने वाले थे, वहाँ पहुँच गए और तुरंत एक कदम पीछे हट गए। वे पवित्र भूमि पर खड़े नहीं हो सकते थे। पुलकित ने पीछे से हाथ बढ़ाया, और एक सैनिक ने उसे एक मज़बूत स्टील का लोहदंड दिया। उसने विजयन की ओर देखा, जिसकी गीली आँखें किसी भी शब्द से ज़्यादा कह रही थीं। विजयन ने सिर हिलाया। पुलकित और उसने लोहदंड से संगमरमर की पटिया को छुआ। और नीचे से एक हल्का सा चुंबकीय खिंचाव महसूस किया।

Machine Translated by Google

पुलकित का मुँह खुला ...

का खुला रह गया और वह ज़ोर से हाँफने लगा, उसकी भावनाएँ उस पर हावी हो गईं। विजयन घुटनों के बल बैठ गया और पत्थर की शिला को हाथ से छूकर सम्मान प्रकट किया।

लोडस्टोन हमेशा स्टील को आकर्षित करते हैं। और महादेव हमेशा स्टील के पुरुषों को आकर्षित करते हैं।

विजयन ने अपने आदमियों की ओर देखा, उसकी आँखों में आँसू तैर रहे थे। 'भगवान यहाँ हैं...' 'जल्दी करो,' पुलकित ... वह फुसफुसाया।

भारतीयों ने अपने खोजी उपकरणों को बड़े पैमाने पर छोटे अंतरालों में डाल दिया
संगमरमर की पटिया और सीढ़ी की सहायक चिनाई। वे लगन और सावधानी से काम करते हुए धीमे-धीमे मंत्रोच्चार करते रहे।

'नमः शिवाय ...' 'नमः
शिवाय ...' दोनों परतों को
जोड़ने वाला हाल ही में बिछाया गया गारा ढीला पड़ गया और स्लैब ढीला होकर नीचे का खोखला अँधेरा दिखाई देने लगा। विजयन ने अपना हाथ अँधेरे में डाला। आँसू बेतहाशा बहने लगे और उसकी आँखें अंधी हो गईं। उसकी उँगलियों ने एक चिकनी सतह को महसूस किया। दोनों हाथों से उसने अपनी मछलियाँ मोड़ीं और एक काला पत्थर निकाला, जिसकी बनावट सोमेश्वर के पास मौजूद उस अवशेष से मिलती-जुलती थी।

सभी लोग घुटनों के बल गिर पड़े और ईश्वर के टूटे हुए पवित्र अंश के आगे दंडवत हो गए। लेकिन वे सभी लगभग तुरंत ही अपनी आँखें पोंछते हुए उठ खड़े हुए। अभी काम बाकी था।

कुछ लोगों ने नए कपड़े के थैले खोले और विजयन ने ध्यान से उनमें कपड़े रखे।
अंदर पवित्र अवशेष.

'नमः शिवाय ...' पुलकित ने श्रद्धापूर्वक कहा और दूसरा टुकड़ा निकाला
पवित्र शिव लिंग को गुहा से बाहर निकाला और उसे धीरे से कपड़े की थैली में रख दिया।

काम जारी रहा। बिना किसी शोर के, सिर्फ़ धीमे-धीमे मंत्रोच्चार की आवाज़ें आ रही थीं।

'नमः शिवाय ...' 'नमः
शिवाय ...' 'नमः शिवाय ...'
जल्द ही, सभी पवित्र अवशेष
दो कपड़ों के अंदर सुरक्षित रूप से स्थानांतरित कर दिए गए थे
बैग। और फिर भारतीयों ने चुपचाप काम जारी रखते हुए, अंधेरी खोखली जगह को संगमरमर के स्लैब से ढक दिया और गारे को वापस अपनी जगह पर धकेल दिया, जिससे सीढ़ी लगभग अछूती सी लग रही थी।

Machine Translated by Google

'हम मस्जिद से बाहर निकलते समय किसी का ध्यान आकर्षित नहीं करना चाहते'
और शहर में। हमें सामान्य दिखना चाहिए, जैसे सैनिक किसी आदेश का पालन कर रहे हों, दूसरों से अलग न दिखें। अपनी भावनाओं को गहराई में दबाएँ। मन को शांत करें। दिल को स्थिर रखें। कोई आँसू नहीं।' विजयन का आदेश नरम लेकिन दृढ़ था, क्योंकि पुरुषों के चेहरों पर किसी भी तरह की अति भावना संदेह को जन्म दे सकती थी।

राजकुमार पुलकित ने कहा, 'हम शिव के अनुयायी हैं। हम पुरुष हैं। हम
हमारे चेहरों पर कोई कमजोरी नहीं दिखनी चाहिए।' सभी ने

सिर हिलाया।

'चलो चलें,' विजयन ने आदेश दिया।

वे शांतिपूर्वक, सुनिश्चित कदमों से मस्जिद से बाहर निकले।

मलिक अयाज़ एक घंटे से भी ज़्यादा समय से तेज़ रफ़्तार से दौड़ रहा था। आधी रात होने वाली थी।
अब वह शहर से बाहर निकल चुका था। वह बरसों से इन ज़मीनों पर घूमता रहा था और लगभग इतने ही समय से उसने यहीं मुलाक़ात की योजना बनाई थी।
वह अपना रास्ता आसानी से ढूंढ सकता था, यहां तक कि उस रात भी जब चाँद की एक छोटी सी किरण से रोशनी बहुत कम थी।

उसने चट्टानी उभार पर बनी पहाड़ी को पहचान लिया। उसने अपने घोड़े को उसके चारों ओर घुमाते हुए, दो चट्टानी उभारों के बीच बने संकरे रास्ते से गुज़रा। रास्ता इतना संकरा और छोटा था कि दिन में भी ज़्यादातर लोग उसे देख नहीं पाते। रास्ते से आगे बढ़ते ही, वह इलाका एक बड़े, समतल घेरे में खुलता था, जिसके चारों ओर ऊँची, ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियाँ थीं।

ऊँची पथरीली चट्टानों से घिरा एक खुला इलाका। इसे ढूँढ़ना लगभग नामुमकिन था, जब तक कि आपको पहले से पता न हो कि यह वहाँ है।

उत्तम।

मलिक अयाज जो करना चाहते थे, उसके लिए यह बिल्कुल सही था।

उसने अपने घोड़े की लगाम खींची, कूद पड़ा और उसे लंगड़ाते हुए आगे बढ़ाया। और फिर उसने ज़ोर से सीटी बजी। एक लंबी, साफ़, तीखी सीटी।

और जवाब में उसने एक और सीटी सुनी। लगभग हूबहू उसकी ही नकल।

'उसे लाओ।' और

उसे लाया गया।

इस्माइल। सुल्तान महमूद के छोटे भाई। राजधानी ग़ज़नी के पूर्व गवर्नर-मुफ़्ती।

मलिक अयाज़ के पिता.

Machine Translated by Google

अमल के नेतृत्व में छह सैनिक उनके साथ थे। और सैनिकों के पीछे-पीछे
यज़ादेह था।

"मेरे बेटे!" इस्माइल ने कहा। "अल्लाह का शुक्र है कि तुम यहाँ हो।"
ये बेवकूफ़ अमल मेरी बात नहीं सुन रही! और सारे सिपाही उसके पीछे पड़े हैं
'आदेश, मेरा नहीं!'

मलिक अयाज़ अमल की ओर मुड़ा। उसकी आवाज़ दृढ़ और गहरी, नाटकीय थी।
महमूद के महल में रहते हुए उसकी आवाज़ उससे अलग थी।
घटित?'

इस्माइल ने बीच में ही जवाब दिया, 'मैंने इस बेवकूफ से कहा था कि हमें गाड़ी चलाते रहना चाहिए,
अँधेरा रहते हुए ग़ज़नी से जितना हो सके दूर चले जाओ। इससे पहले कि मेरी अनुपस्थिति
ध्यान दिया। मैं तो बस यही सोच रहा था क्योंकि मुसीबत आ गई थी।' ··· क्योंकि यह आपको परेशानी में डाल सकता है

मलिक अयाज ने कहा, 'मैं जानता हूं कि आप मेरी कितनी परवाह करते हैं।'

अयाज़ के लहज़े से इस्माइल और भी घबरा गया। और जब भी इस्माइल
वह घबरा गया, उसकी आवाज तीखी हो गई और वह जरूरत से ज्यादा बोलने लगा,
तनावग्रस्त, उन्मादी हृदय को शांत करने के लिए लंबी-चौड़ी बकबक। इस बार ऐसा नहीं था
अपवाद।

"तुम समझ नहीं रहे हो, बेटा," इस्माइल बोला। "ये मूर्ख हैं। और सिपाही तो और भी बड़े मूर्ख ··· अमल एक
हैं, क्योंकि उससे आदेश लेकर सिर्फ़ तुम्हारे बारे में सोच रहे थे..." ··· मैं
मैं आपके लिए कोई परेशानी पैदा नहीं करना चाहता,
मेरा बेटा ··· इसीलिए मैं कह रहा था कि हमें सवारी करते रहना चाहिए... वह लेकिन
लगातार इस बात पर अड़ा रहा कि हमें इंतज़ार करना होगा, मुझे ··· कि हमें आपका इंतज़ार करना होगा... मैं
पता है कि आघने मुझे भागने में मदद करने के लिए कोई तुर्क सैनिक क्यों नहीं जुटाया।
... वे महमूद के प्रति अपनी वफादारी के कारण हमें धोखा दे सके, इस्माइल ने घृणा से अपना ··· लेकिन इन ...'
चेहरा बिगाड़ लिया और अपने साथ के सैनिकों की ओर इशारा किया।
'ये जोरास्ट्रियन और यूनानी और अब्दिस ... वे सोच नहीं सकते... वे
आनुवंशिक रूप से मूर्ख इससे·भी बदतर, वे एक महिला के आदेश सुन रहे थे
··· वह तुर्क हो सकती है, लेकिन वह एक महिला है!'

इस्माइल का मानना था कि अमल एक तुर्क महिला थी, क्योंकि वह दिखने में भी तुर्क जैसी ही थी।

अयाज़ ने इस्माइल की सुरक्षा में तैनात छह सैनिकों की ओर देखा। उनमें से कुछ थे:
पारसी पारसी, ईसाई यूनानी और अफ्रीकी मुसलमान। अफ्रीकी
तुर्क मुसलमानों को अब्दिस कहते थे ; अब्दि अरबी भाषा में "अब्दिस" शब्द है ।
मलिक अयाज़ को यह शब्द नापसंद था।

'अगर ये फारसी, यूनानी और अफ्रीकी तुम्हें परेशान करते हैं, तो मेरे पास और भी उपाय हैं
लाहौर के राजा ने कहा, "यहाँ भी कई राष्ट्रीयताएँ हैं।" मलिक अयाज़ ने सीटी बजाई।
तीन छोटे-छोटे धमाके। ज़ोर से। लगभग दस सैनिक लगभग तुरंत ही अंदर आ गए, मानो
वे प्रवेश द्वार पर इंतज़ार कर रहे थे। 'यहाँ भारतीय आ रहे हैं।'

Machine Translated by Google

सैनिक जल्दी से उतर गए, अपने घोड़ों को बांधकर और गाड़ी में सवार हो गए
मलिक अयाज के पीछे एक फार्मेशन था।

मलिक अयाज़ ने कहा, "स्वागत है ध्रुव। क्या तुम अतिरिक्त कपड़े ले जा रहे हो?"
मेरे लिए?'

'हाँ, प्रभु,' ध्रुव ने सिर झुकाकर उत्तर दिया। 'आप हर चीज़ के बारे में सोचते हैं
विवरण।'

इस्माइल उलझन में लग रहा था। उसका डर बढ़ता जा रहा था। 'क्या हुआ?'
'क्या हो रहा है, मेरे बेटे?'

मलिक अयाज़ ने अपने पिता को कोई जवाब नहीं दिया। वह अमल की ओर मुड़ा। 'शायद तुम
'यज़ादेह को ले जाना चाहिए।'

मलिक अयाज़ ने अमल को बता दिया था कि वह क्या करने वाला है। उसने सिर्फ़ अमल पर भरोसा किया था।
दो महिलाएं जो उसके सबसे गहरे और सबसे काले राज़ से वाकिफ़ हैं। कौसरी जहाँ और अमल। वह
उसे दोनों को बताना पड़ा, क्योंकि उसे उनकी मदद की ज़रूरत थी। साज़िश नहीं हो सकती थी
कौसरी के बिना ही उसे बाहर निकाला जा सकता था। और वह जानता था कि वह अमल पर भरोसा कर सकता है
अपने पिता को इस जगह पहुँचाने के लिए। उसका स्वार्थ उसके स्वार्थ से जुड़ा हुआ था।
उसने तालिब से उसकी योद्धा क्षमताओं के बारे में सुना था। इसीलिए उसने
वह उसे गजनी के सुरक्षित घर से अपने घर ले जाने के लिए सहमत हो गया।

अमल जानती थी कि मलिक अयाज़ क्या करने वाला है। और वह यह भी जानती थी कि
यज़ादेह क्या चाहती होगी? उसने लगभग तुरंत जवाब दिया। 'उसे रुकना चाहिए।'

अयाज़ ने ज़ोर देकर कहा, "वह बच्ची है। कुछ चीज़ें ऐसी होती हैं जो बच्चे..."
'नहीं देखना चाहिए.'

अमल ने अपनी बात पर अड़ी रही, 'कुछ चीजें ऐसी होती हैं जो कभी नहीं होनी चाहिए थीं।
बच्चों के साथ जो अपराध हुए हैं, उनका आपको अंदाज़ा भी नहीं है।
यज़ादेह पर किया गया, राजा अयाज़। यकीन मानिए। वह यह देखना चाहेगी।'

'देखा क्या?!' इस्माइल चीखा। अब उसे यकीन हो गया था कि वह अंदर है।
ख़तरा। गंभीर ख़तरा। लेकिन फिर भी उसने उम्मीद नहीं छोड़ी। लगभग मूर्खतापूर्ण ढंग से।

'बेटा चलो जल्दी... सीखबेटा दूर ... मेरे पास पर्याप्त पैसा है
है... हम साथ-साथ सुरक्षित रहेंगे...'

'उसका नाम सारा था।' मलिक अयाज़ की आँखें भर आईं जब उसने यह कहा,
उसकी आवाज़ भारी और भावुक थी। उसकी मुट्ठियाँ कसी हुई थीं।

इस्माइल उलझन में था, 'क्या? कौन? सारा किसका नाम था?'

'वही जिसकी पेंटिंग मैंने तुम्हें दिखाई थी।' अयाज़ के मुँह से शब्द फूट पड़े।
दांत पीसते हुए मानो चाबुक सा लग गया हो। 'वही जिसकी पेंटिंग तुम्हें सुंदर लगी थी।'

'बेटा, मुझे नहीं पता तुमैं क्या बात कर रहे हो... हम करेंगे
बाद में बात करने के लिए हमेशा समय होता है। सारा के बारे में भी, अगर तुम चाहो तो यहाँ से चले ... लेकिन आइए
जाओ...' इस्माइल ने आगे बढ़ने की कोशिश की, लेकिन उसे पकड़ लिया गया
सैनिकों द्वारा वापस लाया गया।

Machine Translated by Google

मलिक अयाज़ ने कहा, 'मैं तीन साल से थोड़ा ज़्यादा का था। एक बच्चा।'
किसी को भी बचपन की कोई बात याद नहीं रहती... लेकिन मैं करता हूँ मैं ...
करता हूँ ... मुझे हर विवरण याद है...'
बाद में अभी ही मैं बोलने की कोशिश कर रहा है। ... लेकिन चलो यहाँ से निकलते हैं...' इस्माइल

'चुप रहो!' अमल चिल्लाया।

इस्माइल अंततः चुप हो गया।

मलिक अयाज़ फिर बोला, "आप चार साल बाद तिब्लिसी लौटे थे..."
मेरी माँ को विश्वास था कि आप मुझे स्वीकार करेंगे, क्योंकि मैं आपकी संतान हूँ।
मांस। उसका मानना था कि अगर आप उसे स्वीकार नहीं भी करते, तो भी कम से कम
मुझे, अपनी बच्ची को, स्वीकार कर लो। और अगर तुम ऐसा करोगे, तो मेरी ज़िंदगी बन जाएगी। इसलिए उसने
भोलेपन से आपसे मिलने आपके महल में गया था। आपके निजी दरबार में, जब आप
तुम्हारे दोस्तों के साथ थे। मुझे याद है, दस दोस्त थे। उसने तुम्हें बताया था
मैं कौन था। तुम्हारा बेटा। और तुम हँसे। और फिर तुमने उसे पीटा। मुझे याद है
... मुझे याद ... मैं दूर वाली दीवार से सटकर बैठी थी। तुमने उसे तब तक पीटा जब तक वह
खून बहाया। और फिर तुमने उसका बलात्कार किया। और फिर तुमने उसे फिर से पीटा। और फिर तुमने
तुम्हारे दोस्तों ने उसका बलात्कार किया था उन सभी ने... बारी-बारी से तुमने उसे पीटा ...
हर बार के बीच। मैंने यह सब देखा, यह सब देखा...' ... मैं लगातार रो रहा था... मैं

इस्माइल को सचमुच ये सब याद नहीं था। उसने ऐसी हरकतें कई बार की थीं।
और काफ़िर औरतें तो शिकार के लिए बिलकुल सही थीं। वह सचमुच मानता था कि उसका धर्म
उन्होंने कहा कि काफ़िर औरतों का बलात्कार करना या उन्हें पीटना ग़लत नहीं है । लेकिन उन्हें समझ थी
चुप रहना.

यज़ादेह इस्माइल को घूर रहा था। मुट्ठियाँ कसी हुई थीं। शरीर गुस्से से काँप रहा था।
उसने उसके साथ भी यही किया था। उसे मारा-पीटा और फिर बलात्कार किया। अक्सर।

'मेरी माँ उस रात बच गई...' मलिक अयाज़ ने आगे कहा। 'वह लाईं
मैं जानता हूं कि उसने मुझसे कभी कुछ नहीं छिपाया... मुझे सब कुछ सिखाया, ... उसने मुझे कठोर बना दिया... वह
स्मृति ही मेरा भगवान है।' ... उसने मेरे लिए अपना सब कुछ त्याग दिया ...

इस्माइल ने कुछ कहने की कोशिश की, लेकिन उसके मुँह से शब्द नहीं निकले।

मलिक अयाज़ ने ईसाई क्रॉस के आकार का एक पेंडेंट पकड़ा हुआ था,
अब उसकी गर्दन पर लटक रही थी। कसी हुई। उसकी उँगलियाँ सफ़ेद थीं। यह उसकी थी। यह
उसकी माँ का पेंडेंट था। 'उसका नाम सारा था।'

अमल रो रही थी। सहानुभूति में। लेकिन उसके आस-पास के पुरुषों की एक ही भावना थी।
और सिर्फ़ एक ही भावना। क्रोध। शुद्ध, निष्कलंक क्रोध। मनुष्य क्या है?
अगर वह उस औरत का बदला नहीं ले सकता जिसने उसे जन्म दिया, तो उसका क्या मूल्य है?
क्या वह आदमी किसी लायक है, अगर वह उस महिला को न्याय नहीं दिला सकता जिसने उसे पाला है?

Machine Translated by Google

एक आदमी का क्या मूल्य है, जो महानतम के सम्मान के लिए नहीं लड़ सकता?
वह कौन सी महिला है जिसे वह कभी जान पाएगा?

'मैं प्रतीक्षारत हूं ... दशकों से वह तुम्हें ... तुम्हारे सभी दोस्त मर चुके हैं ... आप रिहा करने वाला आखिरी ... महमूद ने तुम्हें अकेले रिहा नहीं किया ... मैं आश्वस्त हूं व्यक्ति है...'

इस्माइल का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। उसे अब भी दया की उम्मीद थी। किसी तरह।
लेकिन उसकी मोटी खोपड़ी भी उस विचार को रोक नहीं सकी जो उस पर हावी हो रहा था।
में. यह अंत था.

मलिक अयाज़ ने अपनी म्यान से एक छोटी तलवार निकाली। उसमें एक ख़तरनाक,
अनियमित दाँतेदार किनारा। ऐसा कि बहुत दर्द होता। 'आप कर सकते हैं
जितना चाहो चिल्लाओ। ये चट्टानें हमारे चारों ओर हैं।' ... कोई आवाज़ बाहर नहीं निकलती

'अयाज़...' इस्माइल ने आखिरकार फुसफुसाते हुए कहा, 'मेरी बात सुनो, ... मैं हूँ... हम कर सकते हैं ... तुम मेरे बेटे हो, मैं तुम्हारा बाप हूँ...'

'तुम मेरे पिता नहीं हो!' मलिक अयाज़ दहाड़ा। 'तुम सिर्फ़ वो आदमी हो जो
मेरी माँ का बलात्कार किया! मैं तुम्हारा बेटा नहीं हूँ! मैं अपनी माँ का बेटा हूँ!'

इस्माइल ने फिर भागने की कोशिश की, लेकिन उसे घेरे हुए सैनिकों ने उसे रोक लिया।

माँ का कर्ज़ चुकाने का वक़्त आ गया था। और मलिक अयाज़ ने कर्ज़ चुकाना शुरू कर दिया।
कर्ज़। खून और दर्द के साथ।

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 27

प्रतिशोध

महमूद का महल, गजनी, अफगानिस्तान

आधी रात के बाद आधा घंटा हो चुका था।

नरसिंह सुल्तान के कक्ष में, बिस्तर के पास वाली भीतरी दीवार के पास, धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रहा था, जहाँ महमूद नंगे बदन और ढीले रेशमी पायजामे में सोया था।

पूर्व दिशा वाली खिड़की से आती हवा, महीने के हिसाब से, बहुत ठंडी थी। मोटे लिनन के पर्दों ने ज़्यादातर हवा रोक रखी थी।
लेकिन कुछ रोशनी उस जगह से अंदर आ रही थी जहाँ परदे थोड़े खुले थे, जिससे कमरा ठंडा हो रहा था। हालाँकि, बहुत कम रोशनी अंदर आ रही थी। इस रात चाँद बस थोड़ा सा ही दिखाई दे रहा था। और तो और, वह महल के दूसरी तरफ था। आधी रात हो चुकी थी और चाँद पश्चिमी आकाश में था, जबकि महमूद के कक्षों की खिड़कियाँ पूर्व की ओर थीं।

इसका मतलब यह था कि सुल्तान के बिस्तर के पास वाली मेज़ पर रखे छोटे से लौ वाले लैंप के अलावा, कमरे के उस हिस्से में लगभग कोई रोशनी नहीं थी। बेशक, अगर कोई महमूद के बिस्तर से दूर, मुख्य द्वार के पास, जहाँ सोफ़े और गद्दियाँ थीं, जाता, तो खड़े लैंप पर्याप्त रोशनी देते थे।

नरसिम्हन उस जगह के पास था जहाँ महमूद सो रहा था। और वह लगभग अदृश्य था।

वह ज़मीन पर, पास की दीवार से सटकर, पालथी मारकर बैठा था। दोनों हाथ घुटनों पर रखे हुए। किसी योगी की तरह। जागा हुआ। सतर्क। शांत और धीमी साँसें।
महमूद के गहरी नींद से जागने का इंतज़ार कर रहा था।

उसने तय कर लिया था कि अगर महमूद आधी रात के एक घंटे बाद तक नहीं उठा,
वह उसे जगा देगा। वह हमेशा इंतज़ार नहीं कर सकता था। सूर्योदय आधी रात के लगभग छह घंटे बाद होगा।

सौभाग्यवश नरसिम्हन के साथ ऐसी नौबत नहीं आई।

महमूद नींद में करवट बदलने लगा। एक धीमी, भयानक आवाज़ सुनाई दी।
'हम्म...'

Machine Translated by Google

नरसिम्हन तुरन्त उठ खड़े हुए।

महमूद की आँखें थोड़ी खुलीं। अभी भी बेहोशी सी। 'हम्म... पानी... अयाज़...' नरसिंह, जिसकी आँखें अँधेरे में ढल चुकी थीं, दीवार के पास रखी बड़ी संगमरमर की मेज के पास गया और उस पत्थर को देखा, जो शिवलिंग का एक टुकड़ा था जिसे उसने पहले वहाँ रखा था—अपने भक्त के आने वाले कर्म का साक्षी बनकर। उसने पवित्र अवशेष को छुआ, फिर पास में रखा एक चाँदी का जग उठाया और उसमें से पानी बगल में रखे चाँदी के प्याले में डाला। फिर वह बिस्तर पर चला गया।

धुंधली आँखों वाले महमूद ने अँधेरे में अपनी ओर आ रहे विशालकाय नरसिम्हन की ओर सिर घुमाया। उसकी आँखें आधी झुकी हुई थीं, दृष्टि अभी भी धुंधली थी। 'हम्म? अबू क़ासिम... तुम कब... लौटे?' नरसिम्हन बिस्तर के पास ही खड़ा था। उसने कोई जवाब नहीं दिया।

महमूद ने धीरे से अपनी कोहनियों के बल खुद को सहारा दिया। 'मेरे कमबख्त सिर में दर्द हो रहा है...' उसने पानी का गिलास लेने के लिए हाथ बढ़ाया।

नरसिंह ने महमूद को गिलास थमा दिया और पीछे हट गया। परछाईं में। उसने तुरंत अपनी कमर में बंधे छोटे कपड़े के बंडल को उठाया। और उसमें से एक बड़ा कीमती पत्थर निकाला। लगभग एक चट्टान जितना बड़ा।

एक हीरा। गोलकुंडा की खदानों से। कौसरी जहाँ का एक उपहार। महमूद के लिए केवल शुभकामनाएँ।

हीरा मनुष्य द्वारा ज्ञात सबसे कठोर प्राकृतिक पदार्थ है। चट्टानों से कहीं अधिक मजबूत.

यह विशेष हीरा बहुत बड़ा था और इसे बहुत ही खूबसूरती से काटा गया था। एक सपाट, सघन आधार की ओर पतला होता हुआ बड़ा सिर।

प्रभु के प्रतिशोध का साधन.

इस बीच, महमूद ने पानी गटक लिया था, हालांकि उसका अधिकांश हिस्सा उसके मुंह के किनारे से निकलकर उसकी गर्दन और छाती पर गिर गया था।

उसने अपना सिर तकिये पर टिका दिया, आँखें बंद कर लीं और हाथ आगे बढ़ाया ताकि गिलास उससे ले लिया जाए।

नरसिम्हन ने कोई जवाब नहीं दिया।

सुल्तान ने गिलास पकड़े हुए अपना हाथ हिलाया और अधीरता से गुर्राया। 'हम्म...' नरसिम्हन

नहीं हिला।

महमूद ने आँखें खोलीं और गुस्से से चिल्लाया, "अबू! गिलास ले लो!" अब वह जाग गया है।

नरसिम्हन अपने विशालकाय शरीर के बावजूद बिजली की तरह तेज चलते थे। वह अपने पंजों पर तेज़ी से आगे बढ़ा, पैरों पर हल्का सा। उसने महमूद के दाहिने हाथ को अपने बाएँ हाथ से झटक दिया, और गिलास ज़मीन पर गिर गया।

Machine Translated by Google

लगभग उसी समय, नरसिम्हन आगे की ओर झुका, अपने शक्तिशाली कंधे और पीठ को मोड़ते हुए, अपने दाहिने हाथ को नीचे की ओर एक क्रूर प्रहार में लाया। ठोस हीरे को पकड़े हुए उसका हाथ प्रहार के लिए पूरी तरह से संरेखित था।

सीधा वार। जबड़े पर। नरसिम्हन ऐसा नहीं कर सकते थे

इससे बेहतर कुछ नहीं हो सकता।

मुक्केबाजों को उनके कोच द्वारा सिखाई जाने वाली पहली चीजों में से एक है कि उन्हें कैसे सुरक्षित रहना है।
लड़ाई के दौरान उनके चेहरे पर अपनी ठुड्डी को अंदर की ओर दबाएँ, रक्षात्मक मुट्ठी ऊपर रखें और अपने जबड़े को भींच लें। इससे यह सुनिश्चित होगा कि निचले जबड़े को प्रतिद्वंद्वी द्वारा उसके सबसे कमज़ोर बिंदु, यानी जबड़े की हड्डी के जोड़ पर फ्रैक्चर न किया जाए।
मजबूत मांसपेशियां इसे स्थिर रखती हैं।

महमूद ने अपना जबड़ा भींचा नहीं था। उसे नहीं पता था कि वह मारा जाने वाला है।
उससे भी बुरी बात यह थी कि उसकी जीभ उसके दांतों के बीच फंस गई थी।

नरसिम्हन के सटीक प्रहार से न केवल महमूद का जबड़ा टूट गया
बल्कि उसके दांतों ने उसकी जीभ को भी काट डाला।

सुल्तान के हाथ बेतहाशा दर्द से उसके मुँह तक पहुँच गए। वह चीखने की कोशिश कर रहा था। लेकिन कोई सुरीली आवाज़ नहीं निकल रही थी। उसकी जीभ कटी हुई थी। और उसका जबड़ा टूटा हुआ था।

नरसिम्हन पीछे हट गए। परछाई में।

महमूद अपने बिस्तर से उछल पड़ा। भयंकर दर्द के बावजूद, उसने परछाइयों से एक गहरी, ख़तरनाक, गुर्राहट की आवाज़ सुनी।

"तुम एक पागल कुत्ते हो," नरसिम्हन गुर्राया। "लेकिन एक साहसी पागल कुत्ता।"
मैं वह तुम्हें दे दूंगा.'

गुस्से से लाल महमूद, जिसके मुंह से खून टपक रहा था, अपने नीचे पहुंचा।
तकिये से छोटी म्यान निकाली। एक योद्धा हमेशा युद्ध के लिए तैयार रहता है।

नरसिंह ने अपनी कमर में बँधे म्यान पर नज़र डाली और फिर महमूद को घूरा। वह पीछे हट गया, और गहरे साये में चला गया। "चलो, इसे न्यायसंगत बनाते हैं।"
मैं अभी चाकू का इस्तेमाल नहीं करूँगा... हम धर्मिक हैं, तुम्हारे जैसे कायर जिहादी लकड़बग्घे नहीं, जो बिना किसी चेतावनी के हमला कर देते हैं। लेकिन मुझे तुम्हारा जबड़ा तब तोड़ना पड़ा जब तुम तैयार नहीं थे, क्योंकि मैं तुम्हें चीखते-चिल्लाते और दूसरों को मदद के लिए बुलाते हुए नहीं देख सकता था। इसलिए इसकी भरपाई के लिए, मैं तुम्हें चाकू से लड़ने दूँगा। जब तक मैं उन सबसे महान महिलाओं में से एक के उपहार से लैस हूँ जिनसे मैं अब तक मिला हूँ।'

भारतीय और पीछे हट गया, जहाँ खड़े लैंपों की रोशनी
पीछे से कोई उसे छूकर थोड़ा रोशन कर सकता था। उसने कौसरी जहाँ का दिया हुआ हीरा उठाया। 'याद है? यह शोभा बढ़ाता था।'

Machine Translated by Google

सोमनाथ के गर्भगृह की मुख्य दीवार। शक्तिशाली चालुक्यों ने
यह हीरा हमारे भगवान महादेव को दान कर दिया। तुमने इसे चुरा लिया जब तुम
मंदिर को अपवित्र किया। और उसे दे दिया...'

महमूद आगे बढ़ता रहा। उसके अंदर भयंकर क्रोध उमड़ रहा था।
कौसरी ... मैं उसे मार डालूँगा ...

'हां ... आपने इसे अपनी पत्नी को दे दिया ... और उसने इसे मुझे इस्तेमाल करने के लिए दिया
तुम।'

महमूद अपने हमलावर की ओर बढ़ता रहा, लेकिन उसे दूर खींचा जा रहा था।
नरसिम्हन ने अपने बिस्तर के पास से चोल सेनापति को दूसरे के बारे में बताया था।
बिस्तर के नीचे ब्लेड छिपाए गए थे।

नरसिम्हन ने कहा, 'हमारे भगवान शिव आसानी से क्षमा कर देते हैं और भूल जाते हैं।' 'लेकिन उनके
अनुयायी नहीं करते। हम याद करते हैं। और हम उसका बदला लेते हैं।'

महमूद ने अपना सिर बाईं ओर झुकाया और ऐसा कदम बढ़ाया मानो बाईं ओर कदम बढ़ा रहा हो। और
फिर, अचानक, अपने बाएं पैर को स्प्रिंग की तरह इस्तेमाल करते हुए, वह आगे की ओर झपटा और
दाईं ओर, चाकू को बग़ल में घुमाते हुए। यह एक अच्छा कदम था। किसी भी
एक अच्छा योद्धा। या फिर एक असाधारण योद्धा भी।

लेकिन नरसिम्हन सिर्फ एक असाधारण योद्धा नहीं थे। वह एक ऐसे योद्धा थे, जो
अरब.

नरसिम्हन ने अपनी बाईं ओर मुड़कर आसानी से वार को टाल दिया।
'तुम बेहतर कर सकते हो,' वह हँसते हुए बोला। 'चलो, ... आप प्रसिद्ध महमूद गजनवी हैं।
तुम बेहतर कर सकते हो।'

महमूद ने आगे बढ़ते हुए दहाड़ने की कोशिश की, लेकिन उसके मुंह से केवल
एक विचित्र अस्पष्ट बड़बड़ाहट। नरसिम्हन पीछे हट गए,
एक बार फिर आसानी से झटका चकमा दे दिया।

महमूद आगे बढ़ता रहा और नरसिम्हन को धक्का देने की कोशिश करता रहा।
नरसिम्हन, अपने कक्ष के मुख्य द्वार की ओर, और पीछे की ओर।
उन्होंने आसानी से हर वार को टाल दिया और पीछे हटते रहे। वे धीरे-धीरे
खड़े हुए लैंपों में से एक के प्रकाश शेड में ले जाया गया। पहली बार,
महमूद नरसिम्हन को साफ़ देख सकता था और समझ सकता था कि वह भारतीय था।

महमूद ने भारी साँस ली और बार-बार असफल होकर झपट्टा मारा।
समय। और तभी नरसिम्हन ने एक ऐसी आवाज़ सुनी जिसे ग़लती से समय नहीं समझा जा सकता था।
और कुछ भी। एक ज़ोरदार फुफकार। उसने महमूद के नीले रेशमी पजामे पर नज़र डाली।
जो कमर से नीचे की ओर तेजी से भीग रहे थे, जैसे पेशाब
महमूद के पैरों से नीचे की ओर धार बहती हुई निकल गई।

नरसिम्हन हँसे, 'चिंता मत करो...' मैं किसी को नहीं बताऊंगा... मुझे यह बात पता है
आपकी उम्र, आपकी कायरता नहीं...'

Machine Translated by Google

क्रोधित महमूद ने उस भयंकर भारतीय योद्धा पर वार करने की पूरी कोशिश की, लेकिन नरसिंह लगातार सुल्तान के साथ खेलता रहा, वह बार-बार वार से बचता रहा, एक ऐसी अद्भुत तितली की तरह तैरता रहा जिसे कभी पकड़ा नहीं जा सकता।

लेकिन इन आंदोलनों के माध्यम से महमूद एक बड़े राजनीतिक संकट के करीब पहुंचने में कामयाब हो गया था। मेज पर। उसने जानबूझकर एक फूलदान काउंटर से नीचे गिरा दिया। जैसे ही फूलदान ज़ोर की आवाज़ के साथ गिरा, महमूद ने दरवाज़े की ओर देखा।

यह सुनकर नरसिंह हँस पड़ा, 'वहाँ से कोई नहीं आ रहा, मूर्ख। तुम्हारे दरवाजे पर जो पहरेदार हैं, वे हमारे हैं। तुम्हें ज़ोर से आवाज़ करनी होगी। शायद नीचे बगीचों में गश्त कर रहे पहरेदारों को आकर्षित करने के लिए। वे अब भी तुम्हारे हैं।' महमूद ने अपने दाहिने हाथ को एक चौड़े चाप में घुमाया, नरसिंह को अपनी बाईं ओर धकेलने की कोशिश करते हुए ताकि वह ... भारतीय को किनारे करके खड़े लैंप

तक पहुँच सके। वे कई किलोग्राम क्रिस्टल ग्लास से बने झूमर की तरह थे। वे निश्चित रूप से इतनी तेज़ आवाज़ करेंगे कि ज़मीन पर, दो मंज़िल नीचे, पहरेदारों तक पहुँच जाए। लेकिन नरसिंह सुल्तान के लिए बहुत तेज़ था। वह पीछे झुक गया, आसानी से महमूद के नवीनतम झूलते हुए वार से बच गया। और एक साथ एक गति में, जो किसी अन्य योद्धा के लिए लगभग असंभव होता और उसने कसकर पकड़ लिया।

महमूद ने भारतीय की पकड़ से अपना हाथ छुड़ाने के लिए संघर्ष किया।
लेकिन अपनी ताकत और क्रूरता के लिए दुनिया भर में मशहूर, वह खूंखार तुर्की योद्धा कामयाब नहीं हो सका। नरसिंह ने महमूद का हाथ और पीछे खींचा। और अपने दाहिने हाथ से ज़ोरदार वार किया, और उसे फिर से हीरे से मारा। कंधे की हड्डी के जोड़ पर लगभग बिलकुल सही जगह पर, कॉलर बोन को साफ़ तौर पर तोड़ दिया और ऊपरी बांह की ह्यूमरस हड्डी को ग्लेनॉइड सॉकेट जोड़ से अलग कर दिया। महमूद चीखा, या कम से कम अपने टूटे जबड़े से उसने कोशिश तो की, लेकिन ज़मीन पर गिर पड़ा, चाकू उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ा। नरसिंह ने चाकू को लात मारकर दूर फेंक दिया।

"मुझे बताया गया है कि यही वो कंधा है जिससे तुमने सोमनाथ शिवलिंग पर हथौड़ा मारा था ," नरसिंहन ने महमूद का चेहरा अच्छी तरह देखने के लिए घुटनों के बल बैठते हुए गुर्राते हुए कहा। "इसे तोड़ना ही था। मुझे यकीन है कि तुम समझ गए होगे।"

महमूद ने अपने बाएं हाथ और बांह का उपयोग करके पीछे की ओर खिसकने की कोशिश की।

Machine Translated by Google

नरसिंह उठे, चीते की तरह फुर्तीले, बैल की तरह स्थिर। उन्होंने आगे बढ़कर
महमूद के शरीर को पीठ के बल लिटाकर वह मुड़ा। उसके पैर महमूद के बाएँ कंधे पर थे।

गजनी के सुल्तान ने नरसिंह को भय भरी आँखों से देखा।
वह इतनी अधिक घबराहट का अनुभव कर रहा था जैसा उसने अपने पूरे जीवन में कभी महसूस नहीं किया था।
कच्चा, आदिम भय.

"यही हाथ," नरसिंह ने महमूद को घुटने से जकड़कर उसे स्थिर करते हुए कहा। उसने महमूद के बाएँ हाथ की ओर इशारा
किया। "इसी हाथ ने हथौड़ा पकड़ा था।"

... क्या ऐसा नहीं था?'

महमूद बेतहाशा अपना सिर हिला रहा था, उसका शरीर डर से ऐंठ रहा था, बचने के लिए छटपटा रहा था। क्योंकि उसे अंदाज़ा था कि आगे क्या होने वाला है।

नरसिंह ने अपनी शक्तिशाली पीठ झुकाई और महमूद का बायाँ हाथ हीरे से कुचल दिया। बार-बार और बेरहमी से। जैसे कोई लोहार लोहे पर हथौड़ा चला रहा हो। कलाई, हथेली और उँगलियों पर सटीक वार किए। इंसान के हाथ में सत्ताईस हड्डियाँ होती हैं। नरसिंह ने यह सुनिश्चित किया कि महमूद के बाएँ हाथ की हर एक हड्डी टूट जाए। कुछ तो चूर-चूर होकर छोटे-छोटे टुकड़ों में बिखर गईं।

महमूद का शरीर काँप रहा था और उन्माद से ऐंठ रहा था। उसके गालों पर आँसू बह रहे थे। पीड़ा चरम सीमा से परे थी। ज़्यादा खून नहीं बह रहा था, क्योंकि नरसिंह महमूद की मांसपेशियों को टुकड़े-टुकड़े नहीं कर रहा था, बल्कि हड्डियों को कुचल रहा था। ज़्यादा शोर भी नहीं था, क्योंकि महमूद के मुँह से ज़्यादा आवाज़ नहीं निकल पा रही थी। यह एक खामोश विध्वंस था।

नरसिम्हन अचानक उठे, 'ओह हाँ... तुमने हथौड़ा दोनों हाथों से पकड़ा था, है न?' भारतीय
दूसरी ओर चला गया, ख़ले की तरह नीचे झुका

और
महमूद के दाहिने हाथ को बुरी तरह कुचल दिया।

'मुझे बताया गया कि आपने अपना गंदा बायां पैर हमारे पवित्र शिवलिंग के आधार पर भी रखा था...
उस अपराधी के पैर को कुचलना ही होगा। लेकिन हम उस कीमती हीरे को तुम्हारे पैरों को छूने नहीं दे
सकते। इसलिए मैं तुम्हारा बायाँ घुटना कुचल दूँगा। यह एक उचित सौदा है, है ना? एक पैर के बदले एक घुटना?'

नरसिंह लेटे हुए महमूद के पैरों के पास गया। अब तक सुल्तान का शरीर हार मान चुका था। उसने पीछे हटने या भागने की कोशिश भी नहीं की।
वह जानता था कि यह सब व्यर्थ है। वह बस अपना सिर हिलाता रहा, बिना आवाज़ के रहम की भीख माँगता रहा। उसका टूटा हुआ जबड़ा और कटी हुई जीभ यह सुनिश्चित कर रही थी कि वह जो भी कहे, वह बकवास निकले। नरसिम्हन यह समझने की कोशिश भी नहीं कर रहा था कि महमूद क्या कहना चाह रहा था।

Machine Translated by Google

चोल योद्धा एक घुटने पर बैठ गया और अपना हाथ ऊपर उठा लिया, जिससे
महमूद को हीरा साफ़ दिखाई दे। और फिर वह काम पर लग गया।
बाएँ घुटने पर हथौड़े से वार। पहले वार से घुटने की हड्डी में कई फ्रैक्चर हो गए। लेकिन नरसिंह यहीं नहीं रुके। वह महमूद के बाएँ घुटने पर और उसके आस-पास लगातार वार करते रहे। बार-बार। बार-बार। बार-बार। फीमर, टिबिया, फिबुला। जांघ और पिंडली की बड़ी और ताकतवर हड्डियाँ।

सभी घुटने के जोड़ पर एक साथ मिले हुए थे। सभी फ्रैक्चर हो गए थे। कुचले हुए थे।
विखंडित.

आखिरकार, नरसिम्हन ने आराम किया। अपने काम से संतुष्ट लग रहे थे।
महमूद की ओर देखा और आँखें घुमाईं। सुल्तान बेहोश हो गया था।

वह कायरतापूर्ण व्यक्ति वह सब नहीं ले सकता जो वह दूसरों को दिया करता था।

भारतीय बगल की मेज पर गया और खून से सना हुआ कागज़ उस पर रख दिया।
उस पर हीरा जड़ा था। उसने चाँदी का जग उठाया और महमूद के टूटे हुए चेहरे पर थोड़ा पानी डाला, जिससे वह बेहोशी की हालत से बाहर आ गया।

जग ज़मीन पर एक तरफ़ रखते हुए नरसिंह घुटनों के बल बैठ गए और फुसफुसाए, "सुल्तान, तुम्हें जागते रहना होगा। यह तो बस मेरी सज़ा थी। अब मैं अपने बादशाह की सज़ा पूरी करूँगा।"

महमूद ज़मीन पर पड़ा था, उसके आँसुओं में पानी मिला हुआ था और उसकी लपटें उसके बालों में बह रही थीं। खामोश सिसकियाँ। खामोश चीखें। खामोश खौफ।

नरसिम्हन ने बड़ी ही सावधानी से एक छोटे से म्यान से एक पतला चाकू निकाला।

"हम हिंदू मानते हैं कि आँखें आत्मा की खिड़की होती हैं," तड़पते हुए नरसिंह ने आगे कहा। "इसलिए तुम्हें वह सब देखना होगा जो तुम्हारे साथ अभी घटित होगा। अगर तुम अपनी आँखें बंद कर लोगे, तो तुम्हारी आत्मा अगले जन्म के लिए अपना सबक भूल जाएगी।"
भयभीत महमूद ने डर के मारे अपना सिर इधर-उधर हिलाया। उसकी आँखें

कसकर बंद कर दिया। उसे अंदाज़ा था कि आगे क्या होने वाला है। नरसिंह ने झुंझलाहट में जीभ चटकाई और अपने विशाल बाएँ हाथ से महमूद का सिर कसकर पकड़ लिया। सुल्तान चीख पड़ा। उसका शरीर अकड़ गया। वह बेतुके स्वर में दया की भीख माँगता रहा।

नरसिम्हन ने चाकू को बहुत ही नाज़ुकता से पकड़ा हुआ था, उसकी छोटी उंगली ऊपर उठी हुई थी। और बहुत
उसने बड़ी सावधानी से, शल्य चिकित्सा की सटीकता से, महमूद की दोनों पलकें काटकर छील दीं। फिर उसने चाकू से चमड़ी उतार दी। वह अपनी कारीगरी को देखता रहा।

पलकें तो नहीं थीं, लेकिन आंखों को कोई नुकसान नहीं पहुंचा था।

भारतीय ने सिर हिलाया। 'अब आप सच से आँखें नहीं मूंद सकते।' चोल सेनापति ने चाकू छिपा दिया और फिर अपनी कमर के दूसरी ओर बँधा कुणाति- युक्त ब्लेड निकाला। उसने याद कर लिया था कि

Machine Translated by Google

उसने अपने सम्राट का संदेश सुना और उसे अच्छी तरह याद कर लिया। और आखिरकार उसे सुनाने का समय आ ही गया।

'महमूद इब्न सेबुकतेगिन,' नरसिम्हन ने बर्बर से कहा। 'गंदा
हे म्लेच्छ नीच! मेरे सम्राट राजेंद्र चोल से यह सत्य सुनो।
तमिलों के गौरव और भारतीयों के रक्षक राजेंद्र चोल की इस सच्चाई को याद रखें। भगवान शिव के सेवक राजेंद्र चोल की इस सच्चाई को जानें। हम हिंदुओं की याददाश्त लंबी होती है। हम याद रखेंगे। हम इंतज़ार करेंगे। लेकिन हम बदला लेंगे। समय हमारा होगा। जगह हमारी होगी। लेकिन हम बदला लेंगे। अगर तुम हमारी भारत माता पर हमला करोगे।

अगर तुम हमारे देवताओं का अपमान करोगे, तो हम बदला लेंगे। धरती पर कोई जगह नहीं है जहाँ तुम छिप सको। तीनों लोकों में
कोई ऐसी जगह नहीं है जहाँ तुम भाग सको।
क्योंकि हम बदला लेंगे। क्योंकि हम हिंदू हमेशा अपने कर्मों का ऋण चुकाते हैं।
तुम हमारी मदद करो, हम तुम्हारी मदद करेंगे। तुम हमें चोट पहुँचाओगे, हम तुम्हें उस तरह से पीड़ा पहुँचाएँगे जिसकी तुमने कल्पना भी नहीं की होगी। हम हिंदू कर्म के नियम हैं । क्योंकि तुम हमें जो दोगे, हम तुम्हें हमेशा वही देंगे। इस सच्चाई से अपनी आँखें मत मूंदना।' नरसिंह ने अपनी दोनों भुजाएँ ऊपर उठाईं और कुणाति चाकू को कसकर पकड़ लिया।

और उसे अपना अपराध याद आ गया। राजकुमारी ओदिरत्ना के प्रति उसका कर्म ऋण।

निर्दोषों के खून के दाग को धोने का सबसे अच्छा तरीका दुष्टों का खून बहाना है।

नरसिंह ने अपनी पीठ और कंधे मोड़े। उसकी बाँहें हथौड़े की तरह नीचे झुकीं। चाकू अंदर धँस गया। गहरा। महमूद के पेट में। सीधे उसके कलेजे में। लेकिन ज़्यादा गहरा नहीं।

इसके बाद भारतीय दानव ने ब्लेड को मांस के अंदर एक गोलाकार आकार में घुमाया।
महमूद लात-घूँसों से तड़प रहा था, हालाँकि अब उतनी ज़ोर से नहीं, क्योंकि उसकी ताकत तेज़ी से कम हो रही थी। खून की धार फूट रही थी। नरसिंह ने चाकू से पेट की गुहा को चीर डाला, हर बड़े अंग को चीर डाला। गुर्दे। पेट। आँतें। कुनाती के टुकड़े हर जगह फैल गए। हर बड़े अंग को बेरहमी से काट दिया गया था, महमूद के बचने की कोई उम्मीद नहीं थी।

संघर्षरत सुल्तान की शक्ति धीरे-धीरे कम होती गई, तथा उसके चारों ओर खून जमा हो गया।

नरसिम्हन ने ब्लेड को और अंदर धकेला और मूठ तोड़ दी।
एम्बेडेड चाकू.

महमूद ज़मीन पर पड़ा था। होश में। काँप रहा था। छटपटा रहा था। तेज़ दर्द में। असहनीय पीड़ा में।

Machine Translated by Google

'तुम्हारा खून बहेगा। लेकिन तुरंत नहीं। तुम ज़्यादा देर तक ज़िंदा रहोगे।'
और कष्ट सहो। और उस कष्ट के प्रत्येक क्षण के साथ, महमूद गजनवी, तुम्हें याद रहेगा कि एक हिंदू कभी नहीं भूलता।'

नरसिम्हन उठे। वे मेज के पास गए और बैग से एक कपड़ा निकाला।
वहाँ। उसने हीरे से खून पोंछा। और फिर जितना हो सका, खुद पर से भी खून पोंछा। अब उसने थैली को अपने कंधे और छाती पर बाँध लिया। फिर उसने शिवलिंग के अंश, यानी उस पत्थर को —जो अब तक मेज पर पड़ा था—आदरपूर्वक अपने माथे से लगाया और उसे सुरक्षित थैली में रख दिया। उसने जल्दी से अब साफ़ हो चुके हीरे को भी थैली में डाल दिया।

फिर उसने थैली से एक चर्मपत्र निकाला और उसे महमूद के मरते हुए शरीर के सबसे निकट की भीतरी दीवार पर चिपका दिया।

कागज पर अरबी और फारसी में एक सरल संदेश लिखा हुआ था।

सिर्फ़ एक अरब। हमेशा एक अरब।

नरसिम्हन ने चारों ओर देखा। सब कुछ वैसा ही था जैसा होना चाहिए।

वह सुल्तान के कमरे की पूर्व दिशा वाली खिड़की के पास गया, और बाहर निकल आया।
और अंधेरे में उतर गया।

नरसिंह किसी छुपकर चलने वाली बिल्ली की तरह चल रहा था। वह शाही प्रांगण में इधर-उधर उड़ता रहा, रात में गश्त लगा रहे विचलित पहरेदारों से बचता रहा, जो दिन में हुए अभिषेक समारोह के कारण अभी भी उत्सव के मूड में थे। वह चारदीवारी के पास पहुँचा और एक ऊँचे चबूतरे पर लगे डैमस्क गुलाबों के एक गुच्छे के पीछे अपना शरीर छिपा लिया। उसने उस चिह्न को पहचान लिया। वह आसानी से ऊँची दीवार पर चढ़ गया। उसने वहाँ रखी एक बड़ी घुमावदार ट्रे ढूँढ़ निकाली, जिसमें रसायनों का एक खास मिश्रण था। जब मलिक अयाज़ ने उसे समझाया था, तब नरसिंह को रसायन विज्ञान पूरी तरह समझ नहीं आया था।

लेकिन उसे याद आया कि शायद उसमें थोड़ा रुबिडियम है। उसे पता था कि उसे क्या करना है। उसने अपनी थैली में रखा छोटा सा डिब्बा उठाया। और पीछे हटकर, रसायनों पर थोड़ा पानी डाला। फिर वह और भी पीछे गया और महल की ओर देखा। ऊपर। एक खास खिड़की की ओर। रानी कौसरी जहाँ की रोशन खिड़की। एक पतली, नाज़ुक आकृति धुंधली रोशनी में उभरी हुई थी—लाल प्राण आभा वाला एक देवदूत।

जिस ट्रे पर नरसिम्हन ने पानी डाला था, उसमें से गाढ़ा बैंगनी धुआँ निकलने लगा।

संकेत दे दिया गया था.
महमूद मर चुका था.

वह जानता था कि अब तक रानी ने भगवान शिव की अपनी कीमती दक्षिणामूर्ति और इस्लामी प्रार्थना चटाई अपने वफादारों को दे दी होगी।

Machine Translated by Google

अंगरक्षक हकीम को पास ही स्थित अरघंदब नदी में विसर्जन करने के लिए कहा। सभी भारतीय अपनी पवित्र और पवित्र वस्तुओं के साथ ऐसा ही करते थे, जब वे उनका उपयोग नहीं कर पाते थे। अब रानी के लिए कोई और चीज़ पवित्र नहीं थी। यहाँ तक कि उनका अपना जीवन भी नहीं।

"अच्छी तरह मरो, मेरी रानी," नरसिंह ने फुसफुसाया। उसे लगा कि उसने रानी को सिर हिलाते हुए देखा है। लेकिन इतनी दूर से वह निश्चित नहीं हो सकता था। उसने अपने दिल को छुआ, उसकी ओर सिर झुकाया, मुड़ा और दीवार से नीचे उतर गया।

वह सोते हुए शहर की अंधेरी गलियों से फुर्ती से आगे बढ़ रहा था। उसे पता था कि उसे कहाँ जाना है। जहाँ उसके साथी उसका इंतज़ार कर रहे थे।

एक मोड़ पर मुड़ते ही वह अचानक रुक गया। भिखारी। सड़क पर सो रहे थे। एक औरत और एक बच्चा। बच्चा, चार-पाँच साल से बड़ा नहीं।
माँ चौंककर उठ बैठी और अपनी बच्ची को अपने पीछे छिपा लिया। यह एक क्रूर शहर था। दुष्ट आदमियों से भरा हुआ। जिनमें से कई को छोटे बच्चों से बहुत लगाव था।

माताओं के लिए एक कठिन शहर।

उसने उस दानव से आँखें मिलाईं। उद्दंड। सुरक्षात्मक।

निर्दोषों के खून के दाग को धोने का सबसे अच्छा तरीका दुष्टों का खून बहाना है।

नहीं ...

यह आधा सच है ...

निर्दोष लोगों के खून के दाग को धोने का एक और भी बेहतर तरीका है,
एक और निर्दोष ...

हाँ, एक धार्मिक योद्धा को दुष्टों को दंड देना चाहिए। लेकिन उससे भी ज़्यादा ज़रूरी है कि उसे कमज़ोरों की रक्षा करनी चाहिए।

क्योंकि धर्म कहता है कि सर्वोच्च शिकारी से कहीं अधिक महान सर्वोच्च रक्षक है।

सर्वोच्च शिकारी बलवानों से भागता है और कमजोरों का शिकार करता है।

सर्वोच्च रक्षक दुष्टों को दण्ड देता है और कमजोरों की रक्षा करता है।

एक और निर्दोष की रक्षा करके निर्दोष खून के दाग को धो लो सोने का वलय लटकन अब उसकी छाती पर नहीं जलता था। ...

महादेव आपकी पुण्य आत्मा को सदैव आशीर्वाद दें, ओदिरत्न।

चोल सेनापति अपने घुटनों पर बैठ गया और स्वर्ण वलय तोड़ दिया
उसके गले में एक लटकन लटक रही थी। उसने उसे आगे बढ़ाया।

'ले लो,' उसने फुसफुसाते हुए कहा। 'ले लो और अपने बच्चे को सड़कों से हटा दो।' भिखारिन हिचकिचाई। उसे आश्चर्य हुआ कि इसमें क्या चाल है, क्योंकि
यह स्पष्टतः एक बहुत ही मूल्यवान वस्तु थी, जिसमें बड़ी मात्रा में सोना था।

Machine Translated by Google

नरसिम्हन ने कहा, 'इसे ले लो और मुझे मेरे अपराध से मुक्त कर दो।' 'कृपया मेरा ले लो।' दान करो और मुझे बचाओ...'

औरत को बात समझ आ गई। उसने अपना काँपता हुआ हाथ बढ़ाया और सोने का कंगन ले लिया। वह मुस्कुराई।

"अल्लाह आप पर अपनी कृपा बरसाए," उसने धीरे से कहा। उसके चेहरे पर आँसू बह निकले। "आप एक अच्छे इंसान हैं..." नरसिंह, कठोर योद्धा, दुष्टों का संहारक,

युद्ध में घायल दैत्य, उन शब्दों को सुनकर रोने लगा जो अथाह दयालु थे।

'तुम अच्छे आदमी हो...' नरसिम्हन

ने हाथ बढ़ाकर बच्ची के सिर पर धीरे से हाथ फेरा। फिर वह जल्दी से अपने पैरों पर खड़ा हुआ और चला गया।

महल परिसर में, जिसे वह पीछे छोड़ आया था, हलचल मचने लगी थी। उसने फिर से उस ऊँचे महल की ओर देखा। शहर के हर कोने से दिखाई देने वाली पहाड़ी पर से उसे आसानी से देखा जा सकता था। उसने दूर खिड़की की ओर देखा जहाँ उसे पता था कि वह है। वहाँ तरह-तरह की सुलगती लपटें धधक रही थीं।

नारंगी. पीला. लाल.

नरसिंह ने अपनी मुट्ठी सीने पर रखी और सिर झुकाकर, एक अद्भुत महिला को आखिरी बार सलाम किया। 'अच्छी तरह मरो, मेरी औरत, कौसरी जहाँ...' और फिर वह घूमकर अँधेरे में भाग गया।

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

अध्याय 28

पुनर्निर्माण का समय

ग्वादर बंदरगाह

एक नकाबपोश आदमी जहाज़ के आगे वाले डेक से लटकी रस्सी की सीढ़ी पर चढ़ गया। सूर्योदय से एक घंटा पहले का समय था।

'यह वही है!' विजयन चिल्लाया। 'यह जनरल है!' नरसिम्हन आसानी से ऊपर
चढ़ गया, उसके पीछे लगभग पंद्रह सैनिक थे जो ग़ज़नी के शहर के दरवाज़ों के बाहर उससे मिले थे और उसके साथ ग्वादर तक गए थे।

'आपने बहुत देर कर दी, सर!' ब्रिगेडियर विजयन ने अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा।
रेलिंग पार करके हुड वाले आदमी की तरफ़ हाथ बढ़ाया। नरसिम्हन ने उसका हाथ पकड़ा और खुद नाव पर चढ़ गए। उन्होंने अपना हुड पीछे फेंका और विजयन को कसकर गले लगा लिया। दोनों आदमी खुशी और राहत से एक-दूसरे की पीठ थपथपा रहे थे।

'तुम्हें लगा था कि तुमने मुझे खो दिया है, है ना?' नरसिम्हन ने आँखों में चमक के साथ पूछा।

'कोई संभावना नहीं,' पांड्या ने कहा, उनकी आवाज मजाकिया थी लेकिन उनकी आंखें भावुक थीं।
'तुम इससे भी बदतर हालात से गुज़र चुके हो और बच निकले हो। वह बर्बर महमूद तुम्हें कभी बर्बाद नहीं कर सकता!'

'मुझे पता है, मुझे पता है!' अमल उन दोनों आदमियों की ओर बढ़ा। 'अब तो वह बिल्कुल पक्का लग रहा है। तुम्हें उसे दिन-रात डेक पर टहलते, तुम्हारी वापसी के किसी भी संकेत के लिए गोदी की ओर देखते हुए देखना चाहिए था। उसे तुम्हारे लिए तड़पते देखकर मुझे जलन हो रही थी!' विजयन शर्मिंदा होकर हँसा, जबकि नरसिम्हन गर्मजोशी से मुस्कुराया। उसने चारों ओर देखा और अमल और उसके भाइयों—आमिर
और अल्ताफ—के प्रसन्न चेहरे देखे, जो इकबाल और पूर्व गुलामों को भारत में छोड़कर ग्वादर लौट आए थे। दूर किनारे पर, पुलकित, ध्रुव, ज़ैन और दसर्णा खुशी से भरे चेहरों के साथ आगे बढ़े। उनमें से प्रत्येक ने एक के बाद एक महान चोल नायक का अभिवादन किया।

Machine Translated by Google

'मैं थोड़ी देर में वापस आऊंगा,' अमल ने कहा और जाने के लिए मुड़ गया।
'ज़रूर,' नरसिम्हन ने कहा।

"बधाई हो, जनरल!" पुलकित ने कहा। "मिशन सफल! पूरे देश में अफ़वाहें फैल रही हैं। कुछ लोग कहते हैं कि सुल्तान की हत्या शहज़ादे शाहिद ने अरबों के साथ मिलकर की थी। कुछ लोग कहते हैं कि सुल्तान किसी अजीब बीमारी से मरा।"

नरसिम्हन ने टिप्पणी की, 'अजीब विपत्ति?' चोल सेनापति और
उसके साथ यात्रा कर रही पलटन ने, अत्यधिक सावधानी बरतते हुए, ग़ज़नी और ग्वादर के बीच के सभी प्रमुख आबादी वाले केंद्रों का चक्कर लगाया था। उन्होंने स्थानीय लोगों से भी बात करने से परहेज़ किया था। नतीजा यह हुआ कि उन्होंने ग़ज़नवी साम्राज्य में फैली किसी भी अफ़वाह के बारे में नहीं सुना था। 'कैसी मुसीबत?

सिफिलिस?'

पुलकित और विजयन हँस पड़े। सिफिलिस एक यौन संचारित रोग था।
जो आमतौर पर भ्रष्ट पुरुषों और महिलाओं को ही प्रभावित करता था। और जैसा कि सभी जानते थे, ग़ज़नवी तुर्क घृणित रूप से भ्रष्ट हो सकते थे, और महमूद उनमें सबसे पतित था, वस्तुतः इस विकृति के पिरामिड के शीर्ष पर।

'नहीं, नहीं,' विजयन ने कहा। 'कुछ लोग दावा कर रहे हैं कि यह मलेरिया है।' 'मलेरिया? कंधार के तेज़

हवाओं वाले पहाड़ों में उसे मलेरिया कैसे हो सकता है? इस मौसम में मच्छर नहीं होते।' 'तो ग्वादर की गलियों में चर्चा है कि मलेरिया की कहानी राजकुमार शाहिद ने फैलाई है, क्योंकि वह नहीं चाहते कि जो लोग महमूद

के प्रति इस्लाम की मूल अरबी व्याख्या से ज़्यादा वफ़ादार हैं, वे उनके ख़िलाफ़ जाएँ। और "अरब हत्या की साज़िश" का विचार राजकुमार मोहम्मद ने फैलाया है, क्योंकि वह चाहते हैं कि तुर्क अपने प्रति "अरब कट्टरता और नफ़रत" के ख़िलाफ़ उठ खड़े हों।'
'बिल्कुल सही

··· इसलिए गजनवी के बीच के धार्मिक कट्टरपंथी राजकुमार शाहिद के पीछे इकट्ठा होंगे और उनके बीच के तुर्क नस्लवादी राजकुमार मोहम्मद के पीछे इकट्ठा होंगे।'

'हाँ,' ज़ैन ने कहा। 'अरब भी इस नतीजे से खुश हैं।'
क्योंकि हमारे लोग इतने सभ्य हैं कि वे बर्बर ग़ज़नवी तुर्कों से जीत नहीं सकते। और हममें से कुछ अरब लोग तो इस बात से डरते हैं कि तुर्क हमसे हमारे इस्लाम का नियंत्रण छीन लेना चाहते हैं। मैं कहता हूँ, उन्हें आपस में लड़ने दो।'

पुलकित ने कहा, "यह तो हो ही रहा है। शुरुआती हत्याएँ शुरू हो चुकी हैं। बस कुछ ही हफ़्तों की बात है कि तुर्कों के बीच गृहयुद्ध छिड़ जाए।"

Machine Translated by Google

विजयन ने आगे कहा, "अफ़वाह है कि सुल्तान का भतीजा सालार मकसूद उत्तर भारत से जल्दी-जल्दी लौट रहा है। युद्ध के पागल कुत्ते एक-दूसरे पर टूट पड़े हैं।" नरसिम्हन मुस्कुराए। "हमारा काम पूरा हो गया।" "जनरल," अमल ने कहा, जो यज़ादेह के साथ उन आदमियों की ओर वापस आ रहा था,

जब दो सैनिक एक भारी संदूक को डेक पर ले जा रहे थे। संदूक चाँदी के आवरण में

लिपटा हुआ था। तीसरे सैनिक ने जहाज़ के डेक पर एक तह करने योग्य मेज़ रखी, और संदूक उस पर रख दिया गया। नरसिम्हन अंदाज़ा लगा सकते थे कि संदूक में क्या है। उन्होंने अपने जूते उतार दिए।

अमल ने ट्रंक को ध्यान से खोला। अंदर, आरामदायक बेस
उस पर भगवा रंग का साटन का कपड़ा बिछा हुआ था। उस पर, सभी टूटे हुए टुकड़ों के साथ यथासंभव निकटता
से, पुनः संयोजित सोमनाथ शिवलिंग रखा हुआ था। नरसिंह ने अपनी थैली में हाथ डाला और अपने पास रखे अंश को निकाला । उसने जल्दी से अनुमान लगाया कि टुकड़ा कहाँ रखना चाहिए और उसे सही जगह पर रख दिया। फिर उसने अपने हाथों से पत्थरों को छुआ और अपने हाथों को अपनी आँखों के पास ले गया।

नरसिम्हन ने नम आँखों से अपने साथियों की ओर देखा। 'हर हर महादेव।' एक प्राचीन भारतीय उद्घोष जो
अनादि काल से

चला आ रहा है। जिसने हमेशा उनकी आत्माओं को रोमांचित किया। हर हर महादेव, हम सब महादेव हैं, हम सब
भगवान हैं। ...

... ...

अमल, विजयन, पुलकित, ध्रुव, दशार्ण और अन्य सभी उपस्थित
सबने मिलकर कहा, 'हर हर महादेव।'

'आप जानते हैं, जनरल,' ज़ैन ने कहा, 'मलिक अयाज़ के निर्देश एकदम सही थे।
हमें पवित्र अवशेष बहुत आसानी से मिल गये।'

"वह अच्छा आदमी है। क्या वह अभी भी ग़ज़नी में है?" "नहीं,"

पुलकित ने कहा। "हमने सुना है कि वह लाहौर भाग गया है।"
गृहयुद्ध में कौन जीतेगा, यह जानने का इंतज़ार है।' 'और शायद आज़ादी

की घोषणा करने की उम्मीद है, शायद...' नरसिम्हन ने कहा। 'वह एक अच्छे इंसान हैं। और एक समझदार
इंसान।' 'हम रानी कौसरी जहाँ के बिना यह ज़रूर नहीं कर पाते,' विजयन ने कहा।

'हममें से किसी ने भी यह नहीं सोचा था...'

कि वह अंततः हमारी तरफ़ होगी। हमने आपके भेजे
अग्रिम स्काउट से उसके बलिदान के बारे में सुना।' 'वह एक अच्छी महिला थी...' नरसिंह ने कहा। 'भगवान उसे आशीर्वाद दें

ताकि उसका अगला जीवन कम दुखद और दुःख-ग्रस्त हो।' 'आमीन,' अमल ने कहा।

Machine Translated by Google

‘सुम्मा अमीन,’ विजयन ने कहा। ‘अल्लाह और भगवान शिव उनकी पुण्य आत्मा को शांति दें।’ ‘क्या इकबाल और बाकी पूर्व गुलाम सुरक्षित भारत

पहुँच गए हैं?’ नरसिम्हन ने अमल के भाई अल्ताफ से पूछा।

'जी हाँ, जनरल,' अल्ताफ ने जवाब दिया। 'हम उतरने के तुरंत बाद वापस लौट आए।' उन्हें गुजरात में सुरक्षित पहुँचाया। और यहाँ अमल आपा और विजयनार के लौटने का इंतज़ार किया।' 'और हमने यज़ादेह से भी चोल भूमि पर हमारे साथ

आने का अनुरोध करने का फ़ैसला किया,' जनरल,' विजयन ने कहा। 'शायद वह तमिल क्षेत्र में एक यज़ीदी मंदिर स्थापित कर सकती हैं।' 'क्यों नहीं,' नरसिम्हन मुस्कुराते हुए बोले। 'हमारा

दिल हमेशा उन सभी के लिए खुला है जो भारत का सम्मान करते हैं, यज़ीदियों सहित।' फिर चोल सेनापति ने गहरी साँस ली और ऊँची आवाज़ में बोले। 'खैर, हम सम्राट को इंतज़ार नहीं करा सकते।

तुम सबको हमारी मंज़िल पता है। चलो! लंगर की रस्सियाँ काट दो!'



सोमनाथ, गुजरात, भारत

महमूद की मृत्यु को छह महीने हो चुके थे। ग़ज़नी में गृहयुद्ध अभी भी ज़ोरों पर था। तुर्क भाई-भाई के बीच खून-खराबे की आग में जल रहे थे। उनके आस-पास के सभी लोग, जिनमें भारतीय भी शामिल थे, तुर्कों की अंतहीन हिंसा से कुछ समय के लिए राहत महसूस कर रहे थे।

हत्या का मिशन शानदार ढंग से सफल हुआ था।

भारतीय उपमहाद्वीप के महान सम्राट सोमनाथ मंदिर में एकत्रित हुए थे। चोल वंश के राजेंद्र चोल, जो दुनिया के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति थे, जिन्होंने दक्षिण भारत, पूर्वी भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के अधिकांश हिस्सों पर शासन किया था। परमार वंश के सम्राट भोजदेव, जिन्होंने मध्य भारत के अधिकांश हिस्से पर शासन किया था, जिनके शासन में मध्य प्रदेश का अधिकांश भाग और छत्तीसगढ़, गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र के कुछ हिस्से शामिल थे। चालुक्य वंश के सम्राट जयसिंह, जिन्होंने कर्नाटक, महाराष्ट्र और तेलंगाना के अधिकांश हिस्सों पर शासन किया था। और सोलंकी वंश के सम्राट भीमदेव, जिन्होंने गुजरात के अधिकांश भाग और राजस्थान के कुछ हिस्सों पर शासन किया था। सोमनाथ मंदिर तकनीकी रूप से सोलंकियों के क्षेत्र में आता था।

Machine Translated by Google

ये सभी साम्राज्य भले ही भारतीय रहे हों, लेकिन अतीत में कभी न कभी इन सभी ने आपस में युद्ध किया था। हालाँकि उनके बीच अतीत में शत्रुता रही होगी, लेकिन जो चीज़ उन्हें एकजुट करती थी, वह थी भगवान शिव के प्रति उनकी भक्ति। और वे सोमनाथ मंदिर के खंडहरों पर संसाधनों का योगदान करने और मंदिर के पुनर्निर्माण की योजना को अंतिम रूप देने के लिए एकत्रित हुए थे।

राजेंद्र चोल ने कहा, "काश हम सब एक होते, तो वह बर्बर महमूद हमारे भगवान के मंदिर पर अपने गंदे हाथ रखने की हिम्मत कभी नहीं कर पाता।" सभी सम्राटों और उनके साम्राज्यों ने अपने-अपने तरीके से तुर्कों से युद्ध किया था। अपनी ज़मीन, अपनी प्रजा

और अपने देवताओं की रक्षा के लिए। लेकिन वे हमेशा अलग-अलग लड़े थे। कभी एक झंडे के नीचे नहीं। कभी नहीं।

'मैं सहमत हूँ,' सम्राट जयसिंह ने कहा। 'अगर हमारे पूर्वज एक साथ होते और
अगर हम हिंदू शाही पठानों और बौद्ध-हिंदू बलूचों का समर्थन करते, जो भारतीय उपमहाद्वीप की सीमाओं की रक्षा करते थे, तो तुर्क कभी भी घुसपैठ नहीं कर पाते। हमें आपस में लड़ने के बजाय अपने असली दुश्मन से लड़ना चाहिए।' जबकि सम्राट भोजदेव ने हिंदू शाही का समर्थन करने के लिए सैनिक भेजे थे।

महमूद तुर्क के विरुद्ध राजा आनंदपाल की सेना में, आनंदपाल के निकटतम पड़ोसियों ने भी ऐसा नहीं किया था। गुजरात के सोलंकी राजाओं को भी ऐसी ही स्थिति का सामना करना पड़ा था। चालुक्य सम्राट जयसिंह ने गजनी की सेना से लड़ने के लिए अलग से अपने सैनिक भेजे थे, और चोल तथा परमारों ने एक और सैन्य दल भेजा था, यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण था कि भारतीय राजाओं के लक्ष्य तो सही थे, लेकिन वे मिलकर काम नहीं कर रहे थे। क्योंकि इनमें से कोई भी सैन्य दल संयुक्त प्रयास नहीं था।

"सच है," सम्राट भीमदेव सोलंकी ने सहमति जताई। "हमारी एकता की कमी हमें दुश्मनों का आसान शिकार बनाती है।" विभिन्न सम्राटों के अधीन कई लोग, जो गजनी अभियान

के दौरान एक-दूसरे से परिचित हुए थे, उस सभा में पहले ही एक-दूसरे से मिल चुके थे। नरसिंह, पुलकित, विजयन, अमल, दसर्ण, ध्रुव, इकबाल, यज़ादेह, और भी कई। पुरानी यादें ताज़ा हो रही थीं। पुराने रिश्ते फिर से ताज़ा हो रहे थे।

सभी ने विजयन और अमल को उनकी हालिया शादी पर बधाई दी थी। ध्रुव, इकबाल और उनके बेटे के साथ अपनी पहली व्यापारिक यात्रा पर निकलने वाले थे।
सम्राट जयसिंह ने अपने छोटे भाई पुलकित की जान बचाने वाले अपने सैनिकों के लिए राजेंद्र चोल और भोजदेव परमार को धन्यवाद दिया था।

पुजारी और उनके सहायकों ने नए मंदिर के शिलान्यास समारोह की तैयारियां लगभग पूरी कर ली थीं।

Machine Translated by Google

सोमनाथ मंदिर। सम्राट पुरोहितों के मार्गदर्शन में अनुष्ठान संपन्न कराते थे ।

सम्राट भोजदेव ने कहा, 'मैं एकता के मुद्दे पर केवल आंशिक रूप से सहमत हूं।'
सबने सुना। भोजदेव परमार अपने साथ के अन्य तीन लोगों की तरह सिर्फ़ एक महान सम्राट और प्रचंड योद्धा ही नहीं थे। वे एक विद्वान भी थे। उन्होंने खगोल विज्ञान, चिकित्सा, रसायन विज्ञान, धातु विज्ञान और वास्तुकला के साथ-साथ दर्शन और काव्य जैसे विविध विषयों पर चौरासी पुस्तकें लिखी थीं। एक सच्चे बहुश्रुत और प्रतिभाशाली। 'हम सभी ने भारत के दुश्मनों, तुर्कों से लड़ाई लड़ी है। और हाँ, हम एक-दूसरे से भी लड़ते हैं। इसलिए आप कह सकते हैं कि हममें एकता की कमी है। लेकिन क्या तुर्क भी आपस में लड़ते नहीं रहते? और उनकी आंतरिक लड़ाइयाँ उस चरम सीमा तक पहुँच जाती हैं जिसकी हम यहाँ भारत में कल्पना भी नहीं कर सकते। बेटे अपने पिताओं को यातनाएँ देते और मार डालते हैं। भाई सरेआम ज़िंदा भाइयों की खाल उतार लेते हैं।

पुरुष महिलाओं और बच्चों की हत्या कर रहे हैं, कभी-कभी अपने ही बड़े परिवार के लोगों की। अगर हमारे बीच एकता का अभाव है, तो कोई यह तर्क दे सकता है कि तुर्कों में एकता का और भी ज़्यादा अभाव है। और फिर भी वे अक्सर हम भारतीयों को हरा देते हैं। मुझे नहीं लगता कि हमारी एकता का अभाव हमारी मुख्य कमज़ोरी है। यह कमज़ोरी ज़रूर है, लेकिन हमारी मुख्य कमज़ोरी नहीं है।' तीनों सम्राट चुप रहे। उन्होंने पहले कभी इस तरह नहीं सोचा था। वे हमेशा यही मानते रहे थे कि भारतीयों में एकता का अभाव ही उन्हें युद्ध हारने का कारण बनता है। एक अधिकारी राजेंद्र चोल के पास यह सूचना

देने आया कि समारोह की तैयारियाँ पूरी हो चुकी हैं।

लेकिन शक्तिशाली चोल ने उन्हें प्रतीक्षा करने और सम्राटों को कुछ क्षण एकांत देने का संकेत दिया।

'तो फिर आपको क्या लगता है कि हमारी मुख्य कमजोरी क्या है?' राजेंद्र चोल ने पूछा।

'शत्रुबोध,' भोजदेव परमार ने कहा।

'शत्रुबोध?' भीमदेव सोलंकी ने पूछा।

'हाँ। शत्रुबोध। शत्रु का ज्ञान। महान आचार्य चाणक्य
इस बारे में बात की थी। भोजपाल विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले पंकज नामक एक युवा विद्वान ने भी इस बारे में लिखा है। मैं जो आपको बता रहा हूँ वह उनके सिद्धांत पर आधारित है। हम तुर्कों को मूर्ख बर्बर समझते हैं, जो केवल मूक जानवरों की तरह लड़ने में सक्षम हैं। और कुछ नहीं। लेकिन मैं कहता हूँ कि वे एक मामले में हमसे ज़्यादा चतुर हैं: शत्रुबोध। उन्हें अपने दुश्मनों और उनके तौर-तरीकों की पूरी जानकारी है। वे अपने दुश्मनों को अच्छी तरह समझते हैं। वे हमारे जीवन जीने के तरीके का अध्ययन करते हैं ताकि यह जान सकें कि हमें कैसे हराया जाए ताकि हम हमेशा हारते रहें। आपको क्या लगता है, वे हमारे देवताओं की मूर्तियों को क्यों तोड़ते हैं और फिरौती के लिए उन्हें चुराते क्यों नहीं हैं? अगर वे सिर्फ़ पैसों के बारे में सोच रहे थे, तो फिरौती

Machine Translated by Google

ज़्यादा फ़ायदेमंद है, है ना? लेकिन वे शत्रुबोध के उस्ताद हैं। वे हमारे देवताओं की मूर्तियाँ तोड़ते हैं, ताकि हमारी आत्मा टूट जाए।'

भोजदेव परमार ने आगे कहा, 'उनके दुश्मनों का भी एक पदानुक्रम है।'
सबसे निचले स्तर पर, उनके मुख्य शत्रु हिंदू, बौद्ध, जैन और यहां तक कि यजीदी और पारसी भी हैं, क्योंकि वे हमें मूर्तिपूजक मानते हैं। हम उनके शत्रुओं की सूची में सबसे बुरे प्राणी हैं। ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे वे हमारे साथ शत्रु जैसा व्यवहार न करें। हमारा अस्तित्व ही उनके लिए अपमानजनक है। कुछ हद तक, वे भारतीय मुसलमानों, और यहूदियों और ईसाइयों को भी शत्रु मानते हैं। क्योंकि वे भारतीय नस्ल के प्रति नस्लवादी घृणा रखते हैं और उन यहूदियों और ईसाइयों से गहरी नफरत करते हैं जिन्होंने अपने धर्म को "सही संस्करण" में अपडेट नहीं किया है। इस समूह से बेहतर स्थिति में फ़ारसी मुसलमान हैं। क्योंकि वे इस्लाम का पालन करते हैं, और तुर्क मानते हैं कि फ़ारसी नस्ल भारतीय नस्ल से बेहतर है। फ़ारसी मुसलमानों की तुलना में अधिक अनुकूल स्थिति में अरब मुसलमान हैं, क्योंकि उन्हें मूल मुसलमान माना जाता है। और शीर्ष पर तुर्क मुसलमान हैं। संक्षेप में, यह तुर्क दृष्टिकोण है।'

"हम्म," राजेंद्र चोल ने कहा। "यह एक दिलचस्प अंतर्दृष्टि है। शायद हमारा
गलती यह है कि हम सोचते हैं कि सभी धर्म एक जैसे हैं, सभी संस्कृतियाँ एक जैसी हैं, सभी लोग एक-दूसरे से प्रेम करना चाहते हैं और बस राजनीति ही उन्हें बाँटती है। हम इस ला-ला लैंड में रहते हैं जहाँ हम सोचते हैं कि एक बेहतर दुनिया के लिए हमें बस प्रेम और ताज़ी हवा की ज़रूरत है। लेकिन तुर्क स्पष्ट और निर्दयी हैं, खासकर जब बात उनके अपने समूह और उनके दुश्मनों की आती है।' 'इसके अलावा,' भोजदेव परमार ने आगे कहा, 'उनके आंतरिक झगड़े और

गृहयुद्धों में, वे कभी भी अपने ही शत्रु के विरुद्ध शत्रु का समर्थन नहीं करेंगे।
कभी नहीं। उदाहरण के लिए, वे किसी तुर्क के खिलाफ लड़ाई में किसी भारतीय का समर्थन कभी नहीं करेंगे, भले ही उस भारतीय ने इस्लाम कबूल कर लिया हो। वे इस बारे में पूरी तरह आश्वस्त हैं कि उनका समूह कौन है और उनके दुश्मन कौन हैं। हम नहीं। हम तुर्कों को भी हम भारतीयों से अलग नहीं, बल्कि एक और समूह ही मानते हैं।

वसुधैव कुटुम्बकम। हमारा मानना है कि पूरी मानवता एक परिवार है। कुछ भारतीय राजाओं को लगता है कि एक भारतीय के विरुद्ध एक तुर्क के साथ गठबंधन करने में कोई बुराई नहीं है। यह शत्रुबोध के अभाव को दर्शाता है। यह समझ का अभाव है कि आपका असली दुश्मन कौन है।

जयसिंह चालुक्य ने पूछा, 'तो आपके अनुसार इसका समाधान क्या है?'

हमें शत्रुबोध के ज्ञान और दर्शन को गहराई से सीखना चाहिए । मैं भोजेश्वर नामक एक विशाल मंदिर परिसर का निर्माण कर रहा हूँ। यह दुनिया के सबसे बड़े मंदिरों में से एक होगा। और इसके केंद्र में भगवान शिव का एक विशाल मंदिर होगा। लेकिन हम परिसर के भीतर एक संस्थान भी स्थापित करेंगे, जहाँ शिक्षा दी जाएगी।

Machine Translated by Google

स्वयंबोध, शत्रुबोध, परबोध और युगबोध के दर्शन । यह दुनिया भर में हो रहे महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक बदलावों का दौर है। अराजकता का दौर। इस अराजकता के दौरान पुरानी वैश्विक व्यवस्था ध्वस्त हो जाएगी, और एक नई व्यवस्था का उदय होगा। अगर हम भारतीय इन चार महत्वपूर्ण क्षेत्रों में पारंगत नहीं हुए, तो इस दौर में हम नुकसान उठाने वालों में शामिल होंगे," भोजदेव परमार ने कहा।

राजेंद्र चोल ने कहा, 'मित्र, तुम्हें यह परिसर अवश्य बनाना चाहिए।' 'यह
भारत के भले के लिए हो।' 'मैं बहराइच नामक

एक छोटे से राज्य के राजकुमार सुहेलदेव के जीवन पर भी नज़र रख रहा हूँ। बहुत होशियार युवक। तुर्कों के बारे में शत्रुबोध के बारे में उनकी राय काफ़ी स्पष्ट है ।' 'सुहेलदेव,' जयसिंह ने कहा। 'मैं उनकी कहानी का दिलचस्पी से अनुसरण करूँगा। एक बात तो तय है कि

हम निश्चित रूप से यह मान सकते हैं कि जब उनका गृहयुद्ध समाप्त हो जाएगा, तो तुर्क एक बार फिर अपना ध्यान हमारी ओर लगाएंगे।'

भोजदेव परमार ने कहा, "वे ज़रूर आएंगे। हम उनके हमलों को केवल टाल सकते हैं, उन्हें पूरी तरह रोक नहीं सकते। क्योंकि जब भी उन्हें मौका मिलेगा, वे हम पर आक्रमण कर देंगे—वे ऐसे ही हैं। हमें उनके जैसे शत्रुओं से सदैव सतर्क रहना होगा।" एक चोल अधिकारी की फुसफुसाहट सुनाई दी, शुभ मुहूर्त के लिए।

शिलान्यास समारोह शुरू हो चुका था। 'महाराज...' 'हाँ, हाँ।' राजेंद्र चोल ने सिर हिलाया। 'आओ, मेरे

दोस्तों। आइए, हम शिलान्यास करें।'
हम सब मिलकर हमारे भगवान के एक महान मंदिर की आधारशिला रखेंगे। यह मंदिर सदैव बना रहे।' महान चालुक्य सम्राट जयसिंह ने

शाम के आकाश की ओर देखा।
जैसे ही सूरज धीरे-धीरे क्षितिज में डूब गया, उस पर लाल रंग की धारियाँ फैल गईं।

उन्होंने धीरे से श्री रुद्रम स्तोत्र का एक श्लोक या छंद गाया।
यजुर्वेद शास्त्र, जो महादेव को समर्पित था, क्योंकि उनका एक नाम रुद्र था।

असौ यस्ताम्रो अरुण उता बभ्रुः सुमंगलः | ये चेमम् रुद्र
अभितो दिक्षु श्रीतः सहस्रशो वैश्यं हेदा इमहे ||

वह उदय होते समय लाल होते हैं, बाद में सुनहरे-पीले हो जाते हैं, वह अंधकार को दूर करते हैं, वह शुभ हैं, उनके अन्य रूप प्रकाश की किरणों की तरह सभी

दिशाओं में फैलते हैं, वह रुद्र हैं, और उनका एक रूप तेजस्वी सूर्य है।

हम उनको नमन करते हैं।

जयसिंह के उत्तम उच्चारण पर अन्य तीन सम्राट मुस्कुराये।
श्लोक। और दूर से आती सूर्य की कोमल किरणों को घूरता रहा।

Machine Translated by Google

सूर्य नियमित रूप से अस्त हो सकता है। यह ऋतु चक्र का अटूट नियम है, जो ब्रह्मांड की प्राकृतिक व्यवस्था का सिद्धांत है। लेकिन ऋतु चक्र का एक और अटूट नियम यह भी है कि सूर्य हमेशा नियमित रूप से अस्त होता है और नियमित रूप से उगता भी है।

देवता कभी-कभी पीछे हट सकते हैं। और ऐसे समय में उन्हें ऐसा लग सकता है कि
भक्तों को लगता है कि उनकी दुनिया खत्म होने वाली है। देवताओं ने उन्हें त्याग दिया है। लेकिन प्रकृति का पवित्र नियम है कि जब सही समय आता है, तो देवता हमेशा लौट आते हैं।

आस्था या विशवास होना।

क्योंकि भगवान के बिना भक्तों का अस्तित्व निरर्थक है।
लेकिन साथ ही, भक्तों के बिना, देवता भी अपना उद्देश्य खो देते हैं। शायद सबसे महान प्रेम कहानी भक्तों और उनके देवताओं के बीच की है।

सम्राटों ने अपने हाथ जोड़े और सूर्य की ओर झुके।

उनके महानतम प्रेम की याद दिलाएँ। उनकी भक्ति का सर्वोच्च विषय। उनके ज्ञान का सर्वोत्तम स्रोत। उनकी शक्ति का सर्वोच्च स्रोत।

शिव.

और फिर उन्होंने मंदिर के खंडहरों को देखा। वहाँ काम बाकी था।

Machine Translated by Google



Machine Translated by Google

उपसंहार

एक भविष्यवाणी .

कांची, तमिलनाडु, भारत

महमूद की मृत्यु को एक साल हो चुका था। ग़ज़नवी साम्राज्य अभी भी लड़खड़ा रहा था, एक क्रूर गृहयुद्ध के कारण घुटनों के बल गिर गया था।
इस बीच, पश्चिमी भारत में सोमनाथजी में मंदिर पुनर्निर्माण का कार्य तेजी से और अच्छी तरह से चल रहा था।

राजकुमार राजाधिराज, राजेंद्र चोल के पुत्र और राजकुमार जया, पुत्र
भोजदेव परमार के पुत्र, सोमनाथ मंदिर से संबंधित एक महत्वपूर्ण कार्य हेतु, एक विशेष मिशन पर कांची पहुँचे थे। उनके साथ चालुक्य वंश के राजकुमार पुलकित और सेनापति नरसिंह भी थे।

राजाधिराज चोल ने कहा , "लेकिन मैं समझ नहीं पाया, महान शंकराचार्यजी । क्या आप यह कह रहे हैं कि हमें पुनर्निर्मित सोमनाथ मंदिर में शिवलिंग के खंडित टुकड़ों का उपयोग नहीं करना चाहिए ?"

आदि शंकराचार्य, प्रथम शंकराचार्य, जो लगभग तीन सौ वर्ष पहले हुए थे, ने धर्म की अनेक धाराओं में सामंजस्य स्थापित किया था ।
कुछ लोगों का दावा है कि आदि शंकराचार्य बहुत पहले, लगभग एक हज़ार चार सौ साल पहले हुए थे। महान आदि शंकराचार्य की वास्तविक प्राचीनता तीन सौ साल थी या एक हज़ार चार सौ साल, यह तो महादेव ही जानते होंगे, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि अधिकांश लोगों के मन में, उन्हें अब तक के सबसे महान हिंदुओं और सर्वश्रेष्ठ गुरुओं में से एक माना जाता था। उन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप में विभिन्न शंकराचार्य पीठों या मठों की स्थापना की थी।

ये पश्चिम में द्वारका, उत्तर में जोशीमठ, पूर्व में पुरी और दक्षिण में श्रृंगेरी में स्थित थे। इन मठों की स्थापना वैदिक ज्ञान के संरक्षण और प्रसार तथा कठिन समय में धार्मिक जीवन पद्धति का मार्गदर्शन करने के लिए की गई थी। लेकिन कई लोगों का मानना था कि एक पाँचवाँ पीठ भी था। कांची में, भारत के दक्षिण में, तमिल भूमि में, पलार नदी के पास। ऐसा कहा जाता है कि यहीं पर प्रथम शंकराचार्य ने अपना अंतिम समय बिताया था।

Machine Translated by Google

उनके नश्वर जीवन के कई दिन। लेकिन यहाँ भी पारंपरिक धार्मिक सांत्वना अनेक सत्यों के साथ मिली, क्योंकि अन्य लोगों का दावा था कि आदि शंकराचार्य ने अपना शरीर केदारनाथजी के निकट, भारत के उत्तरी भाग में, उच्च हिमालय में बसे, त्याग दिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि मृत्यु के बाद भी, आदि शंकराचार्य ने भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों को एक करने का प्रयास किया था।

आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित इन मठों में से प्रत्येक का नेतृत्व एक शंकराचार्य करते थे, जिन्हें प्रथम शंकराचार्य का उत्तराधिकारी माना जाता था। और इन जीवित शंकराचार्यों की आध्यात्मिक स्थिति अधिकांश हिंदुओं, विशेषकर भगवान शिव के उपासकों की दृष्टि में, अद्वितीय थी।

कांची के शंकराचार्य ने उत्तर दिया, 'नहीं, मेरे बच्चे, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए।'

"आदरणीय शंकराचार्यजी, मैं जानता हूँ कि महानिर्वाण तंत्र के सिद्धांतों में खंडित मूर्तियों को जल में विसर्जित करने और उनकी पूजा न करने की बात कही गई है," जय परमार ने कहा, क्योंकि उन्होंने अपने विद्वान पिता से खंडित मूर्तियों के संबंध में उचित अनुष्ठानों के बारे में सीखा था । "लेकिन कई अनुष्ठानों में यह भी माना जाता है कि यदि मूल मूर्ति बहुत शक्तिशाली थी, तो हम सभी पुनर्स्थापित टुकड़ों की मरम्मत करके फिर से एक विशेष प्राण प्रतिष्ठा कर सकते हैं , ताकि भक्तगण मरम्मत के बाद उसी मूर्ति की पूजा कर सकें।" प्राण प्रतिष्ठा एक अनुष्ठान है जिसमें प्राण शक्ति का आह्वान किया जाता है और मूर्ति के भीतर स्थापित किया जाता है, जिससे उसे अनिवार्य रूप से एक देवता के रूप में जीवंत किया जाता है।

कांची शंकराचार्य ने कहा, ‘आप ऐसा कर सकते हैं।’ ‘लेकिन आपको ऐसा नहीं करना चाहिए।’ ‘लेकिन क्यों?’ पुलकित चालुक्य ने पूछा।

शंकराचार्य पीछे झुके और गहरी साँस ली। उन्होंने नरसिंह की ओर देखा, जो उनसे मिलने आए चार लोगों में सबसे वृद्ध थे।

जनरल ने लंबी उम्र जी थी, सफलता की ऊँचाइयाँ और दुःख की गहराइयाँ देखी थीं। हर व्यक्ति अपने जीवन में सबसे निचले स्तर, सबसे निचले बिंदु का अनुभव करता है। जब सब कुछ गलत होता हुआ प्रतीत होता है। अगर आप उन भयानक अनुभवों से उबर जाते हैं, तो आप एक अलग इंसान बनेंगे। मौलिक रूप से अलग।

जैसे नरसिम्हन अब थे। कुछ बातें ऐसी होती हैं जो सिर्फ़ समय, ज़िंदगी और आघात ही आपको सिखा सकते हैं। युवावस्था की ऊर्जा को पीड़ा की आग में तपना पड़ता है ताकि वह ज्ञान की गर्म चमक में परिपक्व हो सके।

और जैसा मनुष्यों के साथ है, वैसा ही सभ्यताओं के साथ भी है।

"मेरे बच्चों, ज़्यादातर सभ्यताएँ एक चक्र से गुज़रती हैं," वृद्ध और बुद्धिमान शंकराचार्य ने उन चारों से कहा। "वे उठते हैं, वे ऊँची उड़ान भरते हैं, वे लड़खड़ाते हैं, वे गिरते हैं। और अक्सर, वे कभी उबर नहीं पाते। वे अंतहीन क्षय में मर जाते हैं, समय की रेत में दफन हो जाते हैं। उनकी शक्ति जितनी ज़्यादा शक्तिशाली होती है,

Machine Translated by Google

जितनी ज़्यादा उपलब्धियाँ, उतने ही विशाल उनके अवशेष। ऐसा ज़्यादातर सभ्यताओं के साथ होता है। लेकिन कुछ अलग होती हैं... वे गिरती हैं, पर मरती नहीं। वे उठती हैं, धूल झाड़ती हैं और फिर से उठ खड़ी होती हैं। असली ताकतवर वे नहीं होते जो किसी चक्र के शिखर पर ऊँची उड़ान भरते हैं और हमेशा के लिए उसी शिखर पर बने रहने की उम्मीद करते हैं। असली ताकतवर वे होते हैं जो निराशा और विनाश की गहराइयों से वापस आते हैं। असली ताकतवर वे सभ्यताएँ होती हैं जो मृतकों में से वापस आ सकती हैं। फ़राओ ओज़िमंडियास भले ही राजाओं का राजा रहा हो, लेकिन उसे इसका एहसास नहीं था। उसकी महान संस्कृति, प्राचीन मिस्र के खेमित की संस्कृति, मर चुकी है और शायद कभी उबर नहीं पाएगी। लेकिन हमारी संस्कृति, भारत की संस्कृति, अभी भी ज़िंदा है। हमारे बारे में असली खास बात यह नहीं है कि हम कितनी ऊँचाई तक उड़ते हैं, बल्कि यह है कि हम मृत्यु से उबरते हैं और पुनर्जन्म लेते हैं। ऐसा कई बार हुआ है। हमारी धरती की आखिरी मृत्यु महाभारत के महायुद्ध के दौरान हुई थी, जिसने हमारी वैदिक संस्कृति के शिखर को समाप्त कर दिया था। लेकिन हम उबर गए... हम मृतकों में से वापस आ गए

... और हमने पिछले ढाई हजार वर्षों में कुछ ऐसा ही असाधारण निर्माण किया है, जो हमारे वैदिक अतीत पर आधारित है, लेकिन इसमें बहुत कुछ जोड़ा गया है। विश्व हमें इतिहास की सबसे महान संस्कृति, भारतवर्ष की शानदार भूमि के रूप में सराहता है।' ...

'लेकिन इसका सोमनाथ मंदिर से क्या संबंध है , महान? शंकराचार्य?' राजाधिराज चोल ने पूछा।

शंकराचार्य ने देखा कि नरसिंह प्रश्न नहीं पूछ रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो उसने संदेश पहले ही समझ लिया हो। हालाँकि, युवा पुरुष, उस युवा ऊर्जा से ओतप्रोत थे जो विकास को संभव बनाती है, लेकिन उन्हें यह पता नहीं था कि उन्हें क्या और कहाँ बढ़ना चाहिए, इसलिए उन्हें अपने सवालों के जवाब चाहिए थे।

शंकराचार्य ने कहा, "सोमनाथ मंदिर का विध्वंस हमारे लिए एक संदेश था। यह संदेश तीन सौ साल पहले मुहम्मद बिन कासिम के हाथों मुल्तान के सूर्य मंदिर के पतन से कहीं ज़्यादा स्पष्ट था।"

'क्या संदेश, महान गुरु?' जया परमार ने पूछा।

'हमारे सामने कठिन समय आ गया है। हमारा पतन शुरू हो गया है।' 'लेकिन हम जीत गए, आदरणीय पावन,' पुलकित चालुक्य ने उलझन में कहा। 'हमने महमूद को मार डाला, और हमारा बदला पूरा हो गया। और जब तुर्क दोबारा आएंगे, तो हम उन्हें फिर से हरा देंगे।'

शंकराचार्य ने कहा, "हम कभी-कभी उन्हें हरा देंगे, लेकिन कभी-कभी हार भी जाएँगे। मैंने नक्षत्रों का अध्ययन किया है। मैंने कुंडली और राशियों का गहन अध्ययन किया है। हम भारतीयों के सामने एक हज़ार साल का कठिन समय है। हर सभ्यता जो आगे बढ़ेगी, उसे इस पतन का अनुभव करना होगा। और जैसा कि मैंने आपको बताया, हम कई बार इन चक्रों से गुज़र चुके हैं। हम पतन के दौर में प्रवेश कर रहे हैं।"

Machine Translated by Google

इस विशेष चक्र का चरण। हम तीन चरणों में एक हज़ार साल तक लगातार हमले देखेंगे। पहला चरण शुरू हो चुका है। तुर्क वापस आते रहेंगे। और एक समय ऐसा आएगा जब वे भारत के अधिकांश हिस्से पर विजय प्राप्त कर लेंगे, यहाँ तक कि उस पर शासन भी कर लेंगे। दूसरे चरण में, और भी दूर पश्चिम से, गोरी चमड़ी वाले यूरोपीय लोगों की एक जाति आक्रमण करेगी और हम पर विजय प्राप्त करेगी।'

तीनों राजाओं का मन कठोर हो गया। उनके मन में भारत अजेय था। वे कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि विदेशी भारत पर शासन करेंगे।

शंकराचार्य ने आगे कहा, 'ये विदेशी लगभग एक हज़ार साल तक हम पर राज करेंगे। भारत का उत्तरी भाग युद्ध करता रहेगा। और विदेशियों के विरुद्ध उत्तर भारतीयों की वीरता दक्षिण भारतीयों को अपेक्षाकृत सुरक्षित रखने में सहायक होगी। क्योंकि विदेशी उत्तर से युद्ध करने में इतने व्यस्त होंगे कि दक्षिण पर आक्रमण करने और उसे तहस-नहस करने की क्षमता नहीं रख पाएँगे। अगले एक हज़ार वर्षों में, भारत में आप जितने दक्षिण में होंगे, हमारी प्राचीन संस्कृति को उतना ही अधिक जीवित रख पाएँगे। उत्तर में हमारे लगभग सभी प्राचीन मंदिर नष्ट हो जाएँगे। लेकिन दक्षिण में मंदिर खड़े रहेंगे। इसलिए, अराजकता और हिंसा के इस आने वाले हज़ार साल के काल में, खंडित शिवलिंग के टुकड़ों को यहीं, जहाँ तक हो सके, दक्षिण में सुरक्षित रखा जाना चाहिए। मैं आपको तमिल अग्निहोत्री पुजारियों के एक समूह के बारे में बताऊँगा जो सोमनाथ के शिवलिंग के टुकड़ों पर आवश्यक सभी अनुष्ठान निरंतर करते रहेंगे , ताकि मूर्ति के खंडित टुकड़ों में ऊर्जा प्रबल बनी रहे ।' 'लेकिन जो लोग खंडित मूर्तियों की पूजा करते हैं, उन्हें आध्यात्मिक कष्ट होता है,' राजाधिराज चोल ने कहा। 'क्या तमिल अग्निहोत्रियों को तकलीफ़ नहीं होगी?' 'हाँ, होगी। और यह एक ऐसी क़ीमत है जो उनका समुदाय चुकाने को तैयार है।'

भगवान शिव के लिए। और एक हज़ार साल बाद, जब सही समय आएगा, वे इन टुकड़ों को शंकर नामक एक तमिल ऋषि के पास ले जाएँगे। जो शिवलिंग के टुकड़ों की फिर से प्राण-प्रतिष्ठा करेंगे। तभी सोमनाथ मंदिर का वास्तविक पुनरुद्धार होगा। तभी भारत का पतन समाप्त होगा। और हम फिर से उत्थान शुरू करेंगे। तब तक, खंडित शिवलिंग का एक छोटा सा टुकड़ा सोमनाथ में बेल के पेड़ के नीचे दबाकर रखा जा सकता है, ताकि यह मंदिर के बार-बार पुनरुद्धार के लिए आध्यात्मिक पोषण प्रदान करे।' 'हमें कैसे पता चलेगा कि सही समय कब है?' पुलकित चालुक्य ने पूछा।

'वह समय सही होगा जब राम अयोध्या लौटेंगे।' राजकुमार असमंजस में थे।

राजाधिराज चोल ने पूछा, 'लेकिन भगवान राम तो
अयोध्या में। वहां उनका सबसे बड़ा मंदिर, राम जन्मभूमि, मजबूती से खड़ा है।'

Machine Translated by Google

कांची शंकराचार्य उदास होकर मुस्कुराए, 'हमारे यहाँ और भी बहुत दुख हैं।'
मेरे बच्चों, हमसे आगे। तुम वह दिन नहीं देख पाओगे जब राम अयोध्या छोड़कर चले जाएँगे। लेकिन तुम्हारे वंशज ज़रूर देखेंगे।' राजकुमार चुप रहे। वे राम के बिना अयोध्या की कल्पना भी
नहीं कर सकते थे।

'लेकिन वह लौटेंगे। रामलला लौटेंगे ।' कांची शंकराचार्य की आवाज़ भावुकता से काँप उठी जब उन्होंने राम को एक छोटे बच्चे के रूप में बताया, क्योंकि राम जन्मभूमि मंदिर में उनकी मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा इसी तरह हुई थी। 'हम भारतीय उन्हें वापस लाएँगे। एक हज़ार साल बाद।' 'हम इतने लंबे समय तक कष्ट सहेंगे?' जया परमार ने पूछा।

शंकराचार्य ने आह भरी, क्योंकि वे इतने बड़े हो चुके थे कि उन्हें काले बादलों की बजाय आशा की किरण दिखाई दे रही थी। "भारत माता को तो कष्ट ही होगा। लेकिन बाकी सभी प्राचीन संस्कृतियाँ लुप्त हो जाएँगी। एक हज़ार साल बाद, कांस्य युग से पहले की एकमात्र संस्कृति जो जीवित रहेगी, वह हमारी ही होगी।"

'क्या हमारे पुनर्निर्मित सोमनाथजी मंदिर को किसी अन्य द्वारा फिर से नष्ट कर दिया जाएगा?
पुलकित चालुक्य ने पूछा, "आक्रमणकारी कौन था?" शंकराचार्य ने सोमनाथ मंदिर के "बार-बार पुनरुद्धार" के बारे में
जो कहा था, वह उन्हें समझ आ गया था।

'हाँ, होगा।' शंकराचार्य की आँखों में आँसू आ गए थे। 'लेकिन हम करेंगे।'
इसे फिर से बनाओ। और फिर से। और दूसरे मंदिरों का भी। यह हम मूलनिवासियों द्वारा इन विदेशियों के विरुद्ध एक प्रचंड प्रतिरोध होगा। हमें दुखद हार का सामना करना पड़ेगा। हालाँकि, हम कई लड़ाइयाँ भी जीतेंगे। और सबसे महत्वपूर्ण बात, हम कभी आत्मसमर्पण नहीं करेंगे। हमारी मातृभूमि, हमारी धार्मिक संस्कृति, जीवित रहेगी। और एक हज़ार साल बाद, उत्थान शुरू होगा।'

नरसिम्हन अंततः आगे झुके और पहली बार एक प्रश्न पूछा। 'महान गुरु शंकराचार्यजी, आपने शुरू में पतन के हज़ार साल के काल में तीन चरणों के आक्रमणों की बात की थी। पहला तुर्कों द्वारा होगा। दूसरा कुछ गोरी चमड़ी वाले यूरोपीय लोगों द्वारा। तीसरे चरण में हम पर कौन आक्रमण करेगा?' शंकराचार्य मुस्कुराए। जीवन में कष्ट सह चुके उस बुद्धिमान वृद्ध व्यक्ति पर भरोसा करें कि वह सबसे प्रासंगिक प्रश्न पूछे। 'तीसरा चरण सबसे हृदयविदारक होगा। क्योंकि पहले दो चरणों में, हम पर आक्रमण करने वाले विदेशी होंगे। लेकिन तीसरे चरण में, हमारे
अपने लोग, हमारे कुछ भारतीय साथी, हम पर आक्रमण करेंगे।' शंकराचार्य ने अपना बायाँ हाथ उठाया। 'ये लोग हमारे अपने होंगे, लेकिन वे मानसिक और भावनात्मक रूप से भारत से अलग हो जाएँगे। हमसे जुड़ी हर चीज़ से नफ़रत करेंगे। हमेशा विदेशियों का पक्ष लेंगे। हमारी सभ्यता की हर खामी पर ऐसे प्रहार करेंगे मानो हम

Machine Translated by Google

अद्वितीय रूप से त्रुटिपूर्ण, मानो हर दूसरी सभ्यता परिपूर्ण हो। यह सबसे कठिन दौर होगा।' शंकराचार्य ने अपना दाहिना हाथ उठाया। 'कठिन इसलिए क्योंकि भारत से प्रेम करने वाले

लोग इन आत्म-द्वेषियों से नहीं लड़ पाएँगे। आप अपने शरीर पर इसलिए प्रहार नहीं करते कि उसके किसी अंग में कोई बाहरी संक्रमण लग गया है।'

भारत प्रेमियों को भारत-द्वेषियों पर आक्रमण नहीं करना चाहिए, बल्कि उन्हें मातृभूमि से प्रेम करने के लिए आकर्षित करना चाहिए।'

शंकराचार्य ने अपने बाएँ हाथ को अपने दाहिने हाथ से थामा, मानो दायाँ हाथ बाएँ हाथ को सांत्वना दे रहा हो। 'दूसरी तरफ़ जो हैं, वे आख़िरकार हमारे अपने ही हैं, भले ही वे खो गए हों। हमें उनसे घृणा नहीं करनी चाहिए, भले ही वे हमसे घृणा करते हों। हमें उन्हें प्रेम, दया और समझदारी से घर वापस लाना होगा। यह एक कठिन संघर्ष होगा, लेकिन हमारे भारत प्रेमी अंततः सफल होंगे। भारत-द्वेषियों को परिवार में वापस लाया जाएगा।' 'लेकिन हमें इस पतन से क्यों गुज़रना होगा?' राजाधिराज चोल ने पूछा।

'क्योंकि यही प्रकृति का नियम है। जो कुछ भी ऊपर उठता है, उसे कभी न कभी गिरना भी पड़ता है। और उससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि आप अपनी सफलताओं से ज़्यादा अपनी हार से सीखते हैं, आप खुशी से ज़्यादा दुःख में बढ़ते हैं।

आज से एक हज़ार साल बाद जो भारतीय हमारी धरती पर बसेंगे, उन्हें एक हज़ार साल के पतन का विश्लेषण करना होगा। उन्हें समझना होगा कि उनके पूर्वज क्यों हारे, ताकि वे उन गलतियों को न दोहराएँ। और उन्हें यह सीखना होगा कि भारतीय संस्कृति की क्या खासियत है कि यह एक हज़ार साल के अथक सैन्य, बौद्धिक, वित्तीय और सांस्कृतिक हमलों से बची रही। जब वे सही निष्कर्ष निकालेंगे और सही सबक सीखेंगे, तो वे अगले उत्थान को कहीं बेहतर ढंग से संभाल पाएँगे।' नरसिम्हन हल्के से मुस्कुराए। 'यह हमारे वंशजों के लिए एक बड़ा काम है।' 'हाँ, यह है।' कांची शंकराचार्य ने तब समय और स्थान की विशाल खाई के पार, एक हज़ार साल के पार देखा। उन्होंने तुम्हारी तरफ देखा, प्रिय पाठक, और फुसफुसाए, 'एक हज़ार साल लगभग पूरे हो गए हैं, मेरे बच्चे। यह भारत माता के उत्थान का समय है। यह धर्म के उत्थान का समय है। काम पर लग जाओ।'

...

ॐ नमः शिवाय।

ब्रह्माण्ड भगवान शिव को नमन करता है। मैं भगवान शिव को नमन करता हूँ।

Machine Translated by Google



संदर्भ

प्रस्तावना: सोमनाथ पर अंतिम मोर्चा

1. फ़रिश्ता। 1829. तारीख-ए-फ़रिश्ता (गुलशन-ए-इब्राहिमी)। उदय के इतिहास में
   भारत में मुसलमानी सत्ता, अनुवादक: जॉन ब्रिग्स। लंदन: लॉन्गमैन, रीस, ओर्मे, ब्राउन और ग्रीन।

2. कुरान.कॉम. 'तफ़सीर सूरह अल-अनफाल - 41'। 30 जुलाई 2025 को एक्सेस किया गया । https:// quran.com/
   8:41 /tafsirs/en-tafsir-maarif-ul-kuran।
3. इस्लाम प्रश्नोत्तर. 'गुलाम महिलाओं के साथ अंतरंगता पर क्या हुक्म है?' 30 जुलाई 2025 को एक्सेस किया गया. https://islamqa.info/en/answers/13737/
   what-is-the-ruling-on-intimacy-with-slave-women.
4. ऑक्सफ़ोर्ड रेफरेंस। 'घनीमा'। 30 जुलाई 2025 को एक्सेस किया गया। https://
   www.oxfordreference.com/display/10.1093/oi/authority.20110803095850460.)
5. उर्दू शब्द 'घनीमत' (□□□□□ (अरबी शब्द 'घनीमा' (□□□□□□) से लिया गया है और दोनों शब्द लूट, लूट या युद्ध की लूट से संबंधित समान अर्थ साझा करते हैं। रेख्ता
   शब्दकोश देखें । 'माल-ए-गनीमत'। 30 जुलाई 2025 को एक्सेस किया गया। https://www.rekhtadictionary.com/meaning-of-maal-e-
   ganiimat.
6. जौकोव्स्की पुरातत्व एवं प्राचीन विश्व संस्थान, ब्राउन विश्वविद्यालय। 'दार अल-इस्लाम/दार अल-हरब, इस्लामी पुरातत्व शब्दावली 2007'। 30 जुलाई 2025 को
   अभिगमित। https://www.brown.edu/Departments/Joukowsky_Institute/courses/islamicarchaeologyglossary
   2007/4005.html।
7. कुरान.कॉम. 'तफ़सीर सूरह अलबयिनह - 98:6 से 98:8'। 30 जुलाई 2025 को एक्सेस किया गया। https://quran.com/al-bayyinah/
   8/tafsirs।
8. फ़चिन, टॉम और ज़ोहैर अब्दुल-रहमान। 'मूर्तिपूजा सबसे बड़ी बुराई क्यों है'। हठधर्मिता
   डिसरप्टेड (पॉडकास्ट)। 11 अगस्त 2023. यक़ीन इंस्टीट्यूट फॉर इस्लामिक रिसर्च। 30 जुलाई 2025 को एक्सेस किया गया। https://yaqeeninstitute.org/watch/
   series/why-idolatry-is-the-greatest-evil-dogma-disrupted-podcast.
9. मुहम्मद, अबू सलमान और अदनान चिश्ती अत्तारी मदनी। 'शिर्क क्या है'। इस्लामी मान्यताएँ और जानकारी। सफ़र-उल-मुज़फ़्फ़र 1442, अक्टूबर 2020। 30 जुलाई 2025
   को अभिगमन तिथि। https://www.dawateislami.net/magazine/en/islamic-beliefs-and-information/what-is-shirk.
10. इस्लाम प्रश्नोत्तर। 'मूर्तियों को नष्ट करने का दायित्व'। 30 जुलाई 2025 को अभिगमित। https://islamqa.info/en/
    answers/20894/obligation-to-destroy-idols.

Machine Translated by Google

11. नाज़िम, मुहम्मद। 2014. ग़ज़ना के सुल्तान महमूद का जीवन और समय। कैम्ब्रिज:
कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस. (मूलतः 1931 में प्रकाशित)
12. मुंशी, कनैयालाल मानेकलाल। 1952. सोमनाथ: शाश्वत तीर्थ। बम्बई: भारतीय विद्या
भवन.
13. मजूमदार, अशोक कुमार। 1956. गुजरात के चौलुक्य: दसवीं शताब्दी के मध्य से तेरहवीं शताब्दी के अंत तक गुजरात के इतिहास और संस्कृति का सर्वेक्षण। बम्बई: भारतीय विद्या भवन।

अध्याय 5: दो सम्राट और उनके स्वामी

1. इस्लाम प्रश्नोत्तर। 'मूर्तियों को नष्ट करने का दायित्व'। 30 जुलाई 2025 को अभिगमित। https://islamqa.info/en/answers/20894/obligation-to-destroy-idols.
2. सूरा कुरान.कॉम. 'सूरह काफिरुन अया 6, अर्थ का अंग्रेजी अनुवाद अयाह'। एक्सेस किया गया 30 जुलाई 2025. https://surahquran.com/english-aya-6-sora-109.html.

अध्याय 7: योजनाएँ और तीर्थयात्री

1. खोसा, आशा। 'विदेशी शासकों, उलेमाओं और सैयदों ने पसमांदा को हाशिये पर रखने में अहम भूमिका निभाई।' आवाज़: द वॉयस, 31 मई 2023। अभिगमन तिथि: 30 जुलाई 2025। https://www.awazthevoice.in/opinion-news/foreign-rulers-ulema-syed-played-key-role-in-keeping-pasmanda-on-the-margins-21774.html.
2. फ़ैज़ी, फ़ैयाज़ अहमद। 'पसमांदा मुसलमान सोशल मीडिया का इस्तेमाल उन लोगों का मुकाबला करने के लिए कर रहे हैं जो अपने अधिकारों का बचाव कर रहे हैं। मध्यकालीन तालिबान'। दिप्रिंट, 14 अक्टूबर 2021. अभिगम्य 30 जुलाई 2025. https://theprint.in/opinion/pasmanda-muslims-are-using-social-media-to-counter-those-defending-the-medieval-taliban/749708/.
3. संगम वार्ता. 'पसमांदा मुस्लिम कट्टरता: एक अशरफिया खतरा |' फ़ैयाज़ अहमद फ़ैज़ी |' यूट्यूब, 30 सितंबर 2021. 30 जुलाई 2025 को एक्सेस किया गया। https://www.youtube.com/watch?v=TavDzjCus0o .

अध्याय 12: पलायन की कीमत

1. पुलित्ज़र पुरस्कार विजेता अमेरिकी इतिहासकार और दार्शनिक विल डुरंट ने अपनी पुस्तक "द स्टोरी ऑफ़ सिविलाइज़ेशन", खंड 1 (अवर ओरिएंटल हेरिटेज) (न्यूयॉर्क: साइमन एंड शूस्टर, 1935), पृष्ठ 459-60 में लिखा है: "भारत पर (तुर्की/फ़ारसी/अरबी) मुसलमानों की विजय संभवतः इतिहास की सबसे रक्तरंजित कहानी है। यह एक निराशाजनक कहानी है,

   क्योंकि इसका स्पष्ट नैतिक अर्थ यह है कि सभ्यता एक अस्थिर चीज़ है, जिसकी व्यवस्था और स्वतंत्रता, संस्कृति और शांति का नाज़ुक ढाँचा कभी भी बाहर से आक्रमण करने वाले या भीतर से बढ़ते बर्बर लोगों द्वारा नष्ट किया जा सकता है। इस्लामी इतिहासकारों और विद्वानों ने 800 से 1700 ईस्वी के दौरान इस्लाम के योद्धाओं द्वारा किए गए हिंदुओं के कत्लेआम, हिंदुओं के जबरन धर्मांतरण, हिंदू महिलाओं और बच्चों का अपहरण करके दास बाज़ारों में ले जाने और मंदिरों के विनाश को बड़े संतोष के साथ दर्ज किया है। इस काल में लाखों हिंदुओं को तलवार के बल पर इस्लाम में परिवर्तित किया गया..."

काफिरों से वसूले गए कर

Machine Translated by Google

सुल्तानों ने अपनी मौज-मस्ती में इसे निराशा में ⋯ जो बच गए वे गरीबी, दीनता और
बिताया।'
इसी खंड के पृष्ठ 459 पर लिखा है: 'लेन-पूल कहते हैं, पहली बार हम एक मुसलमान सरकार को गैर-मुसलमानों पर व्यवस्थित
अत्याचार करते हुए देख रहे हैं।' इसका उल्लेख लेन-पूल, स्टेनली, 1893 में किया गया है। मुसलमान शासन के अधीन मध्यकालीन भारत।

लंदन: मेथ्यून एंड कंपनी, पृष्ठ 205 पर।

2. बेल्जियम के इंडोलॉजिस्ट और इतिहासकार कोएनराड एल्स्ट ने अपनी पुस्तक नेगेटिविज्म इन इंडिया: कंसीलिंग द रिकॉर्ड ऑफ इस्लाम (दिल्ली: वॉयस ऑफ इंडिया, 1992) में विदेशी इस्लामी (तुर्की, फारसी, अरब) आक्रमणकारियों के बारे में निम्नलिखित बातें कही हैं: 'हिंदुओं के नरसंहार, हिंदू मंदिरों के विनाश, हिंदू महिलाओं के अपहरण और जबरन धर्म परिवर्तन पर इस्लामी रिपोर्टों में
हमेशा ही बहुत खुशी और गर्व व्यक्त किया जाता है। इन रिपोर्टों में कोई संदेह नहीं है कि बुतपरस्ती का हर तरह से विनाश [विदेशी आक्रमणकारी] मुस्लिम समुदाय का ईश्वर-प्रदत्त कर्तव्य माना जाता था... महिलाओं और बच्चों के साथ बलात्कार, अपहरण और उनकी मूर्तियों को नष्ट करना, ऐसे कृत्य जिन्हें मुस्लिम इतिहासकारों ने बड़े हर्षोल्लास के साथ दर्ज किया है, सामाजिक स्थिति से सीमित नहीं थे; उच्च जाति के काफिर और निम्न जाति के काफिर दोनों को समान रूप से कष्ट सहना पड़ा।' एल्स्ट का तर्क है कि हिंदुओं को 'काफिर' के रूप में देखने वाली विचारधारा ने विनाश, जबरन धर्मांतरण और गुलामी के ऐसे कृत्यों के लिए धार्मिक औचित्य प्रदान किया, जिससे गैर-मुसलमानों के खिलाफ हिंसा - जिसमें विजेताओं द्वारा महिलाओं की यौन गुलामी भी शामिल है - को अलग-थलग अपराधों के बजाय रणनीति का एक स्वीकृत तत्व बना दिया गया।

अध्याय 16: न्याय की कीमत

1. बरनी, ज़ियाउद्दीन। 1867. तारीख-ए-फ़िरोज़ शाही। भारत के इतिहास में , जैसा कि इसके अपने लोगों ने बताया है
इतिहासकार, अनुवादक: हेनरी मियर्स इलियट और जॉन डाउसन, संपादक: ज़फ़र हसन। लंदन: ट्रुबनर एंड कंपनी, पृ. 105-10.

2. बदायूँनी, अब्दुल कादिर। 1898. मुंतखाबु-त-तवारीख, खंड। 2, ट्रांस. जॉर्ज रैंकिंग. कलकत्ता:
एशियाटिक सोसाइटी, अध्याय 10-12.
3. फ़रिश्ता। 1829. तारीख-ए-फ़रिश्ता (गुलशन-ए-इब्राहिमी)। उदय के इतिहास में
भारत में मुसलमानों की शक्ति, खंड 2, अनुवादक: जॉन ब्रिग्स। लंदन: लॉन्गमैन, रीस, ओर्मे, ब्राउन और ग्रीन, पृ. 80-85।

अध्याय 20: पिछले पापों का ऋण

1. सुन्नाह.कॉम. '(41) अध्याय: भारत का युद्ध अभियान'. सुनन-नसाई 3175, पुस्तक
जिहाद का। 30 जुलाई 2025 को अभिगमित। https://sunnah.com/nasai:3175.
2. इस्लाम प्रश्नोत्तर। 'भारत विजय के बारे में हदीस'। 30 जुलाई 2025 को अभिगमित। https://islamqa.info/en/answers/145636/hadith-about-the-conquest-of-india.
3. रेख़्ता शब्दकोष। 'गज़वा'। 30 जुलाई 2025 को अभिगमित। https://rekhtadictionary.com/meaning-of-gazwa.
4. रेख़्ता शब्दकोष। 'हिंद'। 30 जुलाई 2025 को अभिगमित। https://rekhtadictionary.com/meaning-of-hind-1.

Machine Translated by Google

अध्याय 22: असंभावित सहयोगी

1. 'हिंदू कुश' के अर्थ के बारे में इब्न बतूता का कथन हार् गिब द्वारा आधिकारिक अंग्रेजी अनुवाद में पाया जा सकता है - इब्न बतूता की यात्राएँ, खंड 3, हकलूइट सोसाइटी द्वारा जारी कार्य, दूसरी श्रृंखला, संख्या 117 (कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1971), पृष्ठ 580: 'इसके बाद मैं बरवान शहर की ओर बढ़ा, जिसके रास्ते में एक ऊँचा पहाड़ है, जो बर्फ से ढका हुआ है और बहुत ठंडा है; वे इसे हिंदू कुश कहते हैं, अर्थात हिंदू-हत्यारा, क्योंकि भारत से लाए गए अधिकांश दास ठंड की तीव्रता के कारण मर जाते हैं।'

Machine Translated by Google

अमीश की पुस्तकें

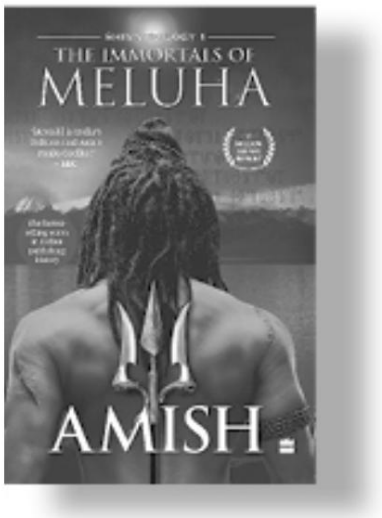
शिव त्रयी

भारतीय प्रकाशन के इतिहास में सबसे तेजी से बिकने वाली पुस्तक श्रृंखला

मेलुहा के अमर

(त्रयी की पुस्तक 1)

1900 ईसा पूर्व। जिसे आधुनिक भारतीय गलती से सिंधु घाटी सभ्यता कहते हैं, उस काल के निवासी मेलुहा की भूमि के रूप में जानते थे—एक लगभग पूर्ण साम्राज्य जिसकी स्थापना कई शताब्दियों पहले भगवान राम ने की थी। अब उनकी प्रमुख नदी सरस्वती सूख रही है, और उन्हें पूर्व से अपने शत्रुओं के आतंकवादी हमलों का सामना करना पड़ रहा है। क्या उनका भविष्यवाणी किया गया नायक, नीलकंठ, बुराई का नाश करने के लिए प्रकट होगा?



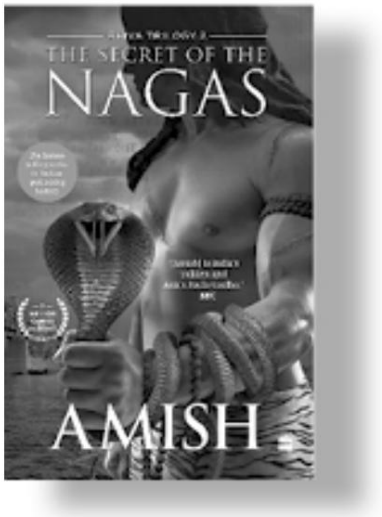
नागाओं का रहस्य

(त्रयी की पुस्तक 2)

दुष्ट नाग योद्धा ने अपने मित्र बृहस्पति की हत्या कर दी है और अब उसकी पत्नी सती का पीछा कर रहा है। शिव, जिन्हें दुष्टों का विनाशक माना जाता है, तब तक चैन से नहीं बैठेंगे जब तक कि वे अपने राक्षसी शत्रु को न पा लें। बदला लेने की उनकी प्यास उन्हें

Machine Translated by Google

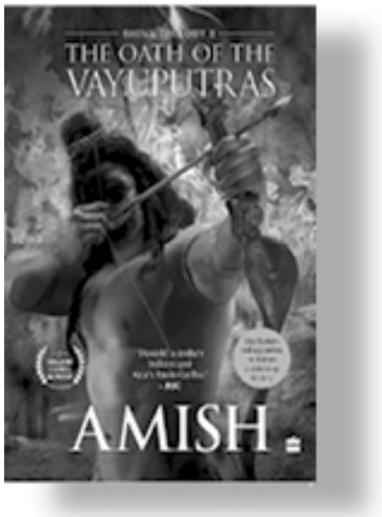
नागों, यानी सर्प जाति के द्वार पर। शिव त्रयी के दूसरे भाग में भयंकर युद्ध लड़े जाएँगे और अविश्वसनीय रहस्यों का खुलासा होगा।



वायुपुत्रों की शपथ

(त्रयी की पुस्तक 3)

शिव नागों की राजधानी पंचवटी पहुँचते हैं और अपने असली दुश्मन के खिलाफ धर्मयुद्ध की तैयारी करते हैं। नीलकंठ को हारना नहीं चाहिए, चाहे इसके लिए उसे कोई भी कीमत चुकानी पड़े। अपनी हताशा में, वह वायुपुत्रों की ओर रुख करते हैं। क्या वह सफल होंगे?
और बुराई से लड़ने की असली कीमत क्या होगी? जानने के लिए इस बेस्टसेलिंग सीरीज़ का आखिरी भाग पढ़ें।



Machine Translated by Google

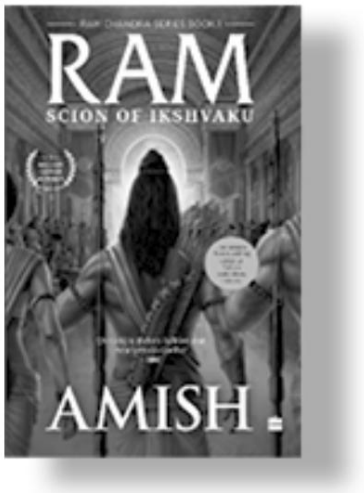
राम चंद्र श्रृंखला

भारतीय प्रकाशन के इतिहास में दूसरी सबसे तेजी से बिकने वाली पुस्तक श्रृंखला

राम: इक्ष्वाकु के वंशज

(श्रृंखला की पुस्तक 1)

वह अपने देश से प्यार करता है और अकेले ही कानून के लिए खड़ा है। अपने भाइयों, अपनी पत्नी सीता और अराजकता के अंधकार के खिलाफ लड़ाई में। वह राजकुमार राम हैं।
क्या वह दूसरों द्वारा लगाए गए कलंक से ऊपर उठ पाएगा? क्या सीता के प्रति उसका प्रेम उसे उसके संघर्ष में सहारा देगा? क्या वह उस राक्षस रावण को हरा पाएगा जिसने उसका बचपन नष्ट किया था? क्या वह भगवान विष्णु की नियति को पूरा कर पाएगा? अमीश की राम चंद्र सीरीज़ के साथ एक महाकाव्य यात्रा शुरू करें।

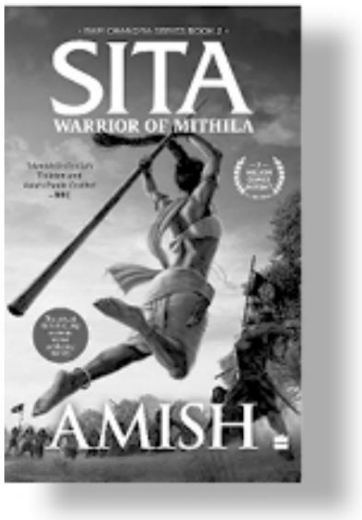


सीता: मिथिला की योद्धा

(श्रृंखला की पुस्तक 2)

एक लावारिस बच्ची खेत में मिलती है। उसे मिथिला के शासक, एक शक्तिहीन राज्य, जिसे सभी ने नज़रअंदाज़ कर दिया है, गोद ले लेते हैं। किसी को यकीन नहीं होता कि यह बच्ची कुछ खास कर पाएगी। लेकिन वे गलत हैं। क्योंकि वह कोई साधारण लड़की नहीं है। वह सीता है। एक अभिनव बहु-रेखीय कथा के माध्यम से, अमीश आपको रामचंद्र श्रृंखला की महाकाव्य दुनिया में और गहराई से ले जाते हैं।

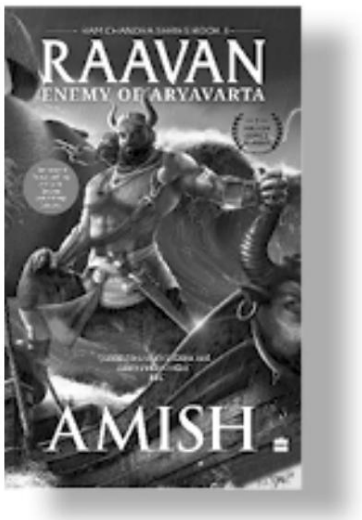
Machine Translated by Google



रावण: आर्यावर्त का शत्रु

(श्रृंखला की पुस्तक 3)

रावण मनुष्यों में सबसे महान बनने, विजय प्राप्त करने, लूटने और उस महानता को हथियाने के लिए दृढ़संकल्पित है जिसे वह अपना अधिकार समझता है। वह विरोधाभासों, क्रूर हिंसा और विद्वत्तापूर्ण ज्ञान का प्रतीक है। एक ऐसा व्यक्ति जो बिना किसी प्रतिफल के प्रेम करेगा और बिना किसी पश्चाताप के हत्या करेगा। रामचंद्र श्रृंखला की इस तीसरी पुस्तक में, अमीश लंका के राजा रावण पर प्रकाश डालते हैं। क्या वह इतिहास का सबसे बड़ा खलनायक है या बस एक ऐसा व्यक्ति जो हमेशा एक अँधेरे में रहता है?

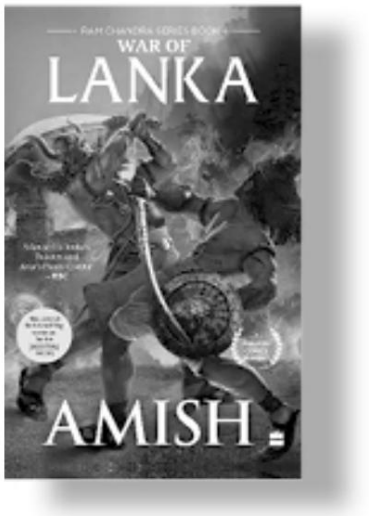


लंका का युद्ध

Machine Translated by Google

(श्रृंखला की पुस्तक 4)

जैसे ही रावण सीता का अपहरण करता है, राम क्रोध और दुःख से उबल पड़ते हैं। लंका युद्ध आसन्न है; आखिरकार, यह धर्म का युद्ध है। क्या राम क्रूर और अजेय प्रतीत होने वाले रावण को हरा पाएँगे? या लंका एक घिरे हुए बाघ की तरह पलटवार करेगी? और, सबसे महत्वपूर्ण बात, क्या असली विष्णु का उदय होगा? रामचंद्र श्रृंखला की इस चौथी पुस्तक में, राम, सीता और रावण की कथाएँ आपस में टकराती हैं और एक भीषण युद्ध में फूट पड़ती हैं।

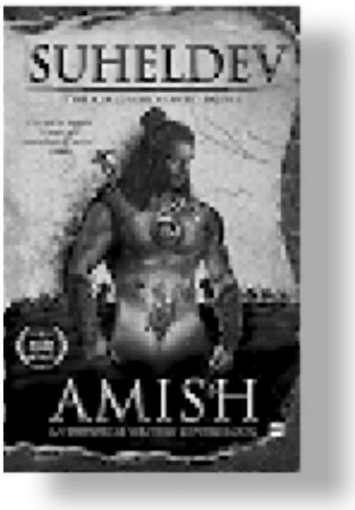


भारतीय इतिहास

सुहेलदेव की कथा: वह राजा जिसने भारत को बचाया

महमूद ग़ज़नी के लगातार हमलों ने भारत के उत्तरी क्षेत्रों को कमज़ोर कर दिया था। फिर तुर्कों ने देश के सबसे पवित्र मंदिरों में से एक, सोमनाथ के भव्य भगवान शिव मंदिर पर हमला कर उसे नष्ट कर दिया। इस सबसे कठिन समय में, एक योद्धा राष्ट्र की रक्षा के लिए उठ खड़ा हुआ। राजा सुहेलदेव - एक प्रखर विद्रोही, करिश्माई नेता, समावेशी देशभक्त। साहस और वीरता के इस महाकाव्य को पढ़ें जो उस वीर योद्धा और बहराइच के शानदार युद्ध की कहानी कहता है।

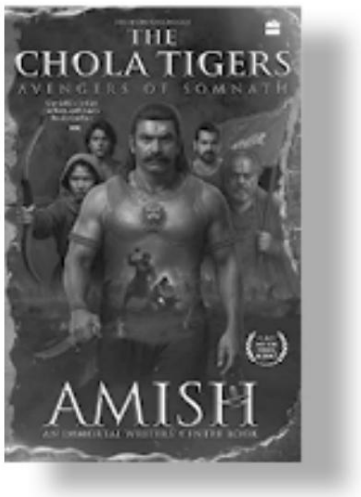
Machine Translated by Google



चोल टाइगर्स: सोमनाथ के एवेंजर्स

महमूद ग़ज़नी का मानना है कि उसने भारत की आत्मा को कुचल दिया है—सोमनाथ मंदिर का शिवलिंग खंडित पड़ा है और हज़ारों लोग मारे गए हैं। लेकिन विनाश की राख के बीच, पाँच लोग—एक तमिल योद्धा, एक गुजराती व्यापारी, भगवान अय्यप्पन का एक भक्त, मालवा का एक विद्वान-सम्राट और धरती का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति, सम्राट राजेंद्र चोल—आक्रामक के राज्य के केंद्र पर प्रहार करने का संकल्प लेते हैं। चोल साम्राज्य के वैभव से लेकर ग़ज़नी के रक्तरंजित दरबार की छाया तक, द चोल टाइगर्स प्रतिशोध की वह अनकही कहानी है जो धर्म बन गई।

Machine Translated by Google

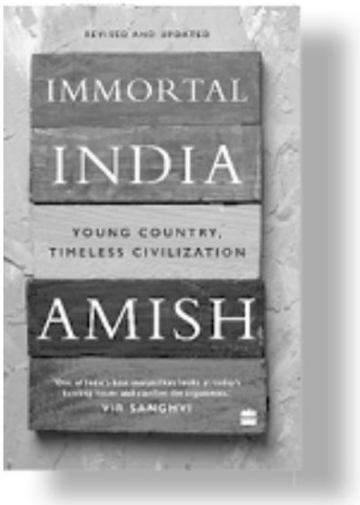


गैर-काल्पनिक

अमर भारत: युवा देश, कालातीत सभ्यता

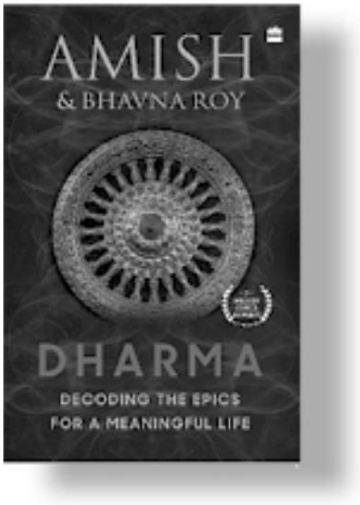
देश के कहानीकार अमीश के साथ भारत की खोज करें, जो आपको तीखे लेखों, सूक्ष्म भाषणों और बुद्धिमान बहसों की एक श्रृंखला के माध्यम से, इस देश को अभूतपूर्व तरीके से समझने में मदद करते हैं। अमर भारत में, अमीश एक प्राचीन संस्कृति के विशाल परिदृश्य को एक आकर्षक आधुनिक दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत करते हैं।

Machine Translated by Google



धर्म: सार्थक जीवन के लिए महाकाव्यों का अर्थ समझना

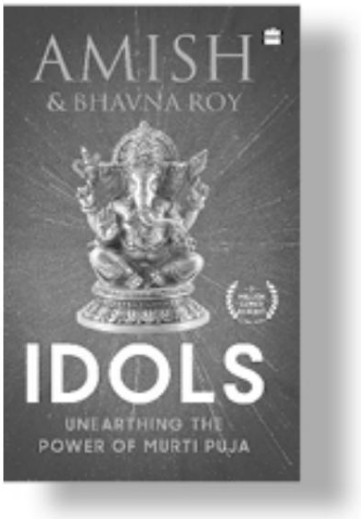
इस विधा-आधारित पुस्तक में, जो एक श्रृंखला की पहली पुस्तक है, अमीश और भावना प्राचीन भारतीय महाकाव्यों के अमूल्य भंडार के साथ-साथ अमीश के मेलुहा के विशाल और जटिल ब्रह्मांड में गोता लगाते हैं, ताकि भारतीय दर्शन की कुछ प्रमुख अवधारणाओं का अन्वेषण किया जा सके। इस पुस्तक में हमारे कई दार्शनिक प्रश्नों के उत्तर हैं, जो हमारी पसंदीदा कहानियों की सरल और बुद्धिमत्तापूर्ण व्याख्याओं के माध्यम से प्रस्तुत किए गए हैं।



मूर्तियाँ: मूर्ति पूजा की शक्ति का अन्वेषण

Machine Translated by Google

बेस्टसेलिंग पुस्तक "धर्म" के इस सहयोगी खंड में, अमीश और भावना मिथकों और धार्मिक ग्रंथों की सरल, विविध और सूक्ष्म व्याख्याओं के माध्यम से मूर्तिपूजा से जुड़े ज्वलंत प्रश्नों को उठाते हैं। वे इस गहन और विचारोत्तेजक पुस्तक में इष्ट देवता के प्रतीकात्मक सार को उजागर करते हैं, भक्ति के लाभों में गोता लगाते हैं और लोगों व समाज के लिए धर्म के महत्व को उजागर करते हैं।



Machine Translated by Google

HarperCollins *Publishers* India

At HarperCollins India, we believe in telling the best stories and finding the widest readership for our books in every format possible. We started publishing in 1992; a great deal has changed since then, but what has remained constant is the passion with which our authors write their books, the love with which readers receive them, and the sheer joy and excitement that we as publishers feel in being a part of the publishing process.

Over the years, we've had the pleasure of publishing some of the finest writing from the subcontinent and around the world, including several award-winning titles and some of the biggest bestsellers in India's publishing history. But nothing has meant more to us than the fact that millions of people have read the books we published, and that somewhere, a book of ours might have made a difference.

As we look to the future, we go back to that one word—a word which has been a driving force for us all these years.

Read.



Machine Translated by Google

Machine Translated by Google यह फ़ाइल Z-लाइब्रेरी परियोजना से डाउनलोड की गई थी



ज्ञान और संस्कृति तक पहुँचने का आपका प्रवेश द्वार। सभी के लिए सुलभ।

z-लाइब्रेरी.sk z-lib.gs z-lib.fm go-to-library.sk

आधिकारिक टेलीग्राम चैनल

जेड-एक्सेस

https://wikipedia.org/wiki/Z-लाइब्रेरी